'विदेह' ३०७ म अंक ०१ अक्टूबर २०२० (वर्ष १३ मास १५४ अंक ३०७)

ऐ अंकमे अछि:-

२. गद्य

३. पद्य

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।



VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Google समूह View Videha googlegroups (since July 2008)



view Videha Facebook Official Group (since January 2008)-for announcements

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

१. *गजेन्द्र ठाकुर*

....

संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री

[STUDY MATERIALS FOR UPSC (UNION PUBLIC SERVICE COMMISSION) & BPSC (BIHAR PUBLIC SERVICE COMMISSION) EXAMS- MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL) AND OTHER OPTIONALS AND GENERAL STUDIES (ENGLISH MEDIUM)]

यू. पी. एस. सी. (मेन्स) २०२० ऑप्शनल: मैथिली साहित्य विषयक टेस्ट सीरीज

यू.पी.एस.सी. क प्रिलिमिनरी परीक्षा २०२० सम्पन्न भऽ गेल अछि। जे परीक्षार्थी एहि परीक्षामे उत्तीर्ण करताह आ जँ मेन्समे हुनकर ऑप्शनल विषय मैथिली साहित्य हेतन्हि तँ ओ एहि टेस्ट-सीरीजमे सम्मिलित भऽ सकैत छथि। टेस्ट सीरीजक प्रारम्भ प्रिलिम्सक रिजल्टक तत्काल बाद होयत। टेस्ट-सीरीजक उत्तर विद्यार्थी स्कैन कऽ editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकैत छथि, जँ मेलसँ पठेबामे असोकर्ज होइन्हि तँ ओ हमर ह्वाट्सएप नम्बर 9560960721 पर सेहो प्रश्नोत्तर पठा सकैत छथि। संगमे ओ अपन प्रिलिम्सक एडमिट कार्डक स्कैन कएल कॉपी सेहो वेरीफिकेशन लेल पठाबथि। परीक्षामे सभ प्रश्नक उत्तर नहि देमय पड़ैत छैक मुदा जँ टेस्ट सीरीजमे विद्यार्थी सभ प्रश्नक उत्तर देताह तँ हुनका लेल श्रेयस्कर रहतन्हि। विदेहक सभ स्कीम जेकाँ ईहो पूर्णतः निःशुल्क अछि।- **गजेन्द्र ठाकुर**

Videha e-Learning

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL)

UPSC MAITHILI OPTIONAL SYLLABUS

BPSC MAITHILI OPTIONAL SYLLABUS

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (ऐच्छिक)

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (अनिवार्य)

मैथिली प्रश्नपत्र- बी.पी.एस.सी.(ऐच्छिक)

मैथिलीक वर्तनी

१

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क **मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि,** से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि|

IGNOU इग्नू BMAF-001

....

MAITHILI (OPTIONAL)

<u>TOPIC 1</u> (Place of Maithili in Indo-European Language Family)

<u>TOPIC 2</u> (Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

<u>TOPIC 3</u> (ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददास सिलेबसमे छथि आ रसमय कवि चतुर चतुरभुज विद्यापति कालीन कवि छथि। एतए समीक्षा शृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व चारू गोटेक शब्दावली नव शब्दक पर्याय संग देल जा रहल अछि। नव आ पुरान शब्दावलीक ज्ञानसँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददासक प्रश्नोत्तरमे धार आओत, संगहि शब्दकोष बढ़लासँ खाँटी मैथिलीमे प्रश्नोत्तर लिखबामे धाख आस्ते-आस्ते खतम होएत, लेखनीमे प्रवाह आएत आ सुच्चा भावक अभिव्यक्ति भए सकत।)

<u>TOPIC 4 (बद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)</u>

<u>TOPIC 5 (वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति)</u>

<u>TOPIC 6 (वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- विद्यापति)</u>

<u>TOPIC 7 (वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा- बानगी)</u>

<u>TOPIC 8 (वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोक गाथा नृत्य नाटक संगीत)</u>

<u>TOPIC 9 (वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- यात्री)</u>

<u>TOPIC 10 (वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली रामायण)</u>

<u>TOPIC 11 (वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)</u>

TOPIC 12 (वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द विचार)

....

GENERAL STUDIES (PRELIMINARY & MAINS)

GS (Pre)

TOPIC 1

....

GS (Mains)

....

NCERT-ENVIRONMENT CLASS XI-XII

NCERT PDF I-XII

TN BOARD PDF I-XII

ALL INDIA RADIO ENGLISH NEWS

ALL INDIA RADIO NEWS ARCHIVE

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

ALL INDIA RADIO TALKS AND CURRENT AFFAIRS

RAJYA SABHA TV NEWS DISCUSSIONS

....

OTHER OPTIONALS

....

IGNOU eGYANKOSH

....

....

(अनुवर्तते)

-गजेन्द्र ठाकुर

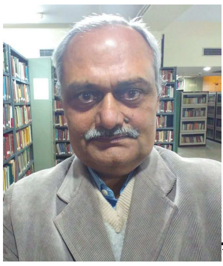
विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

२. गद्य

२. गद्य

**रबीन्द्र नारायण मिश्र- धारावाहिक उपन्यास-लजकोटर**

लजकोटर

(प्रवासीक जीवनपर आधारित)

(७ म खेप)

-7-

पाँचो आदमी जकरा पुलिस पकड़ने छल से अपने ओहिठामक छल । भोरभेने जखन ई समाचार छपलआ ओहिमे ई बात प्रमुखतासँ आएल जे ई कोना भेलैकजे सभटा अपराधी ऐकहिठामक छथि तँ लोकसभक माथा ठनकलैक । लोकसभआपसमे चर्चा करए हेतु बैसार केलक । तरह-तरहक भाषणबाजी सेहो भेलैक ,काजक गप्प सेहो भेलैक । ई तय भेलैक जे चुप नहि बैसल जाएत । एहि मामलाकेँ उच्चस्तरधरि लए जाएल जाएत जाहिसँ सहीबात सभक सामने आबि सकए । मामला ततेक गनगनेलैकजे पुलिस अधिकारीसभकेँ जबाब दैत-दैत आफद भए गेलैक । उच्चस्तरीय जाँच-पड़ताल भेल आ ई बात सिद्ध भए गेल जे पाँचोआदमी बेफजुलमे फँसादेल गेल छल जाहिसँ असलीअपराधी बाँचि जाए । सरकार ओकरासभक खिलाफ केस आपस लेबाक आदेश देलक । ओ सभ हाजतिसँ छुटि-छुटि अपन-अपन घर आएल । सभक हालत खराप छल । पुलिसक मारिसँ गत्र-गत्र दुखा रहल छलैक । हालत ठीक नहि रहबाक कारण पाँचो आदमीकेँ पुलिसक हाजतिसँ सोझे अस्पताल लए गेल ।ओहिमेसँ एकटाअस्पताल जाइत-जाइत दम तोड़ि देलक ।

आओर दूटाक हालत बहुत खराप छलैक । दुनूकेँ आइसीयूमे भर्ती कराओल गेल । शेषदूटाकेँ जाहिमे किशुनो सेहो छल , आपत्तिकालीन विभागमे राखल गेल । आइसीयूमे भर्ती दुनूगोटे भोर होइत -होइत दम तोड़ि देलक । बाँचल दुनूगोटेके बचेबाक हेतु अस्पताल एड़ी-चोटीक पसीना बहा रहल छल मुदा

ISSN 2229-547X VIDEHA

ओहोसभ बेसुध छल । ई समाचार करेंट जकाँ सौंसे दिल्लीमे पसरि गेल । सरकारी अस्पतालक बाहर जबरदस्त सुरक्षा बंदोबस्त कएल गेल ।तथापि लोकक हुजुम रोकल नहि जा सकल । सभ उन्मत्त भेल अस्पतालमे घुसि गेल ।लाठिचार्ज भेलैक । कतेको लोक घायल भेल । मुदा हालत काबूमे नहि आबि रहल छलैक । तीनू बेकसूर लोकक लहासकेँ अपना कब्जामे कए हजारो लोकक हुजुम चलि रहल छल । तरह-तरहक नारा लगा रहल छल ।

ताबतेमे किओ खबरि देलक जे एकटा आओर आदमी नहि रहल । ओकर नाम-ठेकाना पुलिसकेँ पता नहि चलि रहल छलैक । हमरा ई समाचार सुनि ठकबिदोर लागि गेल । कहीं ओ किशुने ने होअए?मुदा ई खबरि सही नहि छल । पुलिस तुरंत एहि समाचारक खंडन केलक ,संगहि इहो कहलक जे अस्पतालमे भर्ती दुनू गोटेक हालतमे सुधार भेलनि अछि आ भए सकैत अछि जे साँझधरि हुनका सभकेँ छोड़ि देलि जानि । सरकारक तरफसँ मृत व्यक्तिक परिवारकेँ पाँच-पाँच लाख मुआबजाक एलान सेहो कएल गेल आ इहो आश्वासन देल गेल जे एहि घटनाक जाँच हेतु एकटा न्यायाधीशक अध्यक्षतामे आयोगक गठन कएल गेल अछि जे तीन मासमे अपन प्रतिवेदन देत आ दोषी व्यक्ति चाहे ओ जे हो,बखसल नहि जाएत । माइकपर वारंबार ई घोषणा होइत रहल। ओहि भीड़मेसँ दु-तीन गोटे सकरकारक समर्थनमे बजैत सभकेँ बुझबए लगलाह जे आब बेसी गरमेबाक गप्प नहि थिक कारण सरकार जे कए सकैत अछि से तँ भइए रहल अछि आ फेर जखन किछु गलती भेलैक अछि तँ ओकर निमेरा करएमे सेहो किछु समय तँ लगबे करतैक । किछु गोटे हुनकर सभक बातक समर्थन केलथि ।ऊपरसँ पुलिसप्रशासन लागले छल। कहुना कए मामिला थम्हल ।

तीनू मृत व्यक्तिक लहासकेँ पुलिसक संरक्षणमेयमुनाकातमे डाहि देल गेल । लोकसभ अपन-अपन घर आपस भए गेल । हमहुँ अपन डेरापर अएलहुँ । पता लागल जे पुलिस कए बेर हमरा तकैत ओतए आएल छल । से सुनि मोन अधीर भए गेल । ई कोन नव लफरा भेल? हम की केलिऐक जे पुलिस पछोड़ कए रहल अछि ?

डेरा पहुँचले रही कि विजयक फोन आएल -" किशुनक हालत सुधरि रहल छैक । काल्हि दसबजे अहाँ थाना आबि जाएब। ओहिठामसँ संग अस्पताल चलब ।"

"हम नहि आबि सकब कारण हमरा काजपर जेबाक अछि । फेर हम कहिआधरि एकरासभक चक्करमे पड़ल रहब। हमर हालत तँ अपने पातर चलि रहल अछि । कारखाना बंद होबएपर छैक ।कै गोटे काज छोड़ि गेल । हमरो कै बेर मालिक कहि चुकल अछि । अहीं कहू जे हम की करू?"

ISSN 2229-547X VIDEHA

"काल्हि कहुना कए आउ । फेर सभबातपरविचार करब।नहि होअएतँ छुट्टी लए लिअ।

"ठीक छै । हम आएब ।"- से कहिते रहिऐक कि फोन कटि गेलैक।

प्रात भेने हम थाना पहुँचलहुँ तँ विजय ओतहि छलाह ।विजय संग पुलिसक जीपसँ हम दुनूगोटे अस्पताल बिदा भेलहुँ ।रस्ते- रस्ते गप्पक क्रममे ओ कहए लगलाह-

‘‘देखू, अहाँ अपन लोक छी,तैँ कहि रहल छी । ई महानगर छैक,एहिठाम अपन काजसँ काज मतलब राखी। किओ ककरो नहि छैक । झूठ-फूसमे फँसा देत आ किओ काज नहि आओत । फेर एकरसभककोनो ठेकान नहि छैक । अहीसंगे रहत आ अहींक जड़िकाटएमे लागि जाएत ।जाति-पाँतिक एतहु चला-चलती छैक । जकरेसँ गप्प करए लागब ने सएह पहिने जाति अखिआसए लागत । एहन हालतमे अहाँ कथीलेल लफरासभमे पैर देने रहैत छी ।अपन काज करू,घर जाउ । हमरासँ जे मदति भए सकत से हम करबेकरब आ कइए रहल छीमुदा जखन तेहन कोनो मामिलामे फँसि जाएब तखन हमही की कए लेब? बात बुझलिऐक कि नहि?"

"अहाँ अनुभवी लोक छी । सोचिए कए किछु कहैत होएब मुदा किशुन आ मालती आन नहि अछि । किशुन तँ हमर इसकूलक संगी अछि, मालती ओकर घरनी छैक ।एनामे हम केना हटि सकैत छी, ओहो जखन कि ओ सभ घोर संकटसँ गुजरि रहल अछि । समस्याक समाधान भए जाइक, तँ हम स्वयं एहि लफरासभसँ कात भए जाएब ।"

" एहि समस्याक समाधान करब कुकुरक पोंछ सोझ करब थिक । किशुन तँ अहींक सिकाइत करैत रहए आ अहाँ चललहुँ अछि ओकरा शुभचिंतक बनए?"

"किशुनक गप्प छोड़ू । मालतीक की दोख छैक?"

"दोख छैक किएक नहि? एतेक सुन्दर होएबे सभसँ बड़का दोख छैक । सीता महरानीकेँ रावण किएक तंग केलकनि? रामक कोन दोख रहनि ? आ सीता महरानी तँ एकदम निर्दोष रहथि मुदा कतेक कष्ट काटलनि?कहबी छैक-विधि वाम के करनी कठिन जस सिअहि किन्हि बाबरो। बात बुझि रहल छिऐक कि नहि ?"

विजय स्पष्ट कहलक जे मालतीक चिंता करबाक काज नहि अछि । ओ स्वयं मालतीक व्यवस्था कए रहल अछि । ओ इहो कहलक जे मालती आब ओकरे लग रहत । ओ फटकिएसँ एकटा घरदिस

ISSN 2229-547X VIDEHA

इसारा करैत कहलक जे मालती एतहि छथि । विजयक जीप ओहिघरक लगीचमे छल । हम देखलहुँ जे मालती घरक आगा रौदमे पटिआपर बच्चासंगे छथि । पता नहि ओ हमरा देखलक कि नहि मुदा हम तँ नीक जेना देखलिऐक आ बुझबो केलिऐक । हमर मोनकेँ विजय पढ़ि रहल छलाह । ओ हमरा छगुन्तामे देखि हँसए लगलाह ।

असलमे विजय असगरे छल ।ओकरा मालती नीक लागि गेल रहैक । बहुत दिनसँ ओ गुनधुनमे छल ।अवसर देखि ओ अपन काज कए गेल ।हम ओकरासंगे मुँहा ठुठ्ठी करब ठीक नहि बुझि चुप रहि गेलहुँ।किछु नहि बाजि सकलहुँ।विजय संगे हम अस्पताल पहुँचलहुँ । विजय फटकिए रहि गेल ।

किशुनकेँ संगे जे दोसर आदमी छल से कहि नहि कखन आ ककरा संगे अस्पतालसँ चलि गेल । किशुनकेँ जेबा जोगर हालत नहि रहैक । डाक्टरक हिसाबे किशुनकेँ अखन किछुदिन अस्पतालमे रहए पड़त ।हमरा देखितहि ओ भोकासी पाड़ि कए कानए लागल ।हम ओकरा तरह-तरहसँ बुझेलिऐक । ओ रहि -रहि कए मालतीक हाल पुछैत रहल । हम की कहितिऐक? झूठ बाजि नहि सकैत छलहुँ आ सच कहि नहि सकैत छलिऐक । कहुना कए ओकरा बुझासुझा कए हम अपन डेरा आपस आबि गेलहुँ ।

डेरामे पैर रखनहि छलहुँ कि गामसँ फोन आएल ।

" हम दिनेश बजैत छी।"

" गोर लगैत छी काका? की समाचार ?"

"समाचार ठीक नहि अछि ।"

"की भेलैक?"

"तोहर माए बहुत दुखित छथि । हालत ठीक नहि छनि।"

"की भेलैक?"

"जल्दिए आबह । अएलापरसभबात बुझेतह ।"

से कहि ओ फोन राखि देलथि । हमर मोन एकदम परेसान भए गेल । एहिमास गाम टाको नहि पठओने रहिऐक । किसुन आ मालतीक लफड़ामे पड़ि कै दिन काजोपर नहि जा सकलहुँ । सभटा व्यवस्था गड़बड़ा गेल छल । ऊपरसँ ईनव संकट । तुरंत रेलक टिकटक ओरिआनमे लागि गेलहुँ । कहुनाक

तत्कालमे टिकट भेटल। बारह बजे एकटा ट्रेन छलैक जाहिमे आरएसीमे टिकट भेल । जे भेल, जेबाक तँ छलहे, से बिदा भए गेलहुँ ।

एगारह बजे रातिमे एसगर टीसन दिस बिदा भेलहुँ । रस्ता भम्म पड़ि रहल छल । कतहु कोनो सबारी नहि छल । ताबे एकटा कार जाइत देखाएल। हाथ देलिऐक । ओ कार रोकि देलक। हमर हालत देखि ओ हमरा कारमे बैसा लेलथि। मोनमे डरो होअएजे पता नहि केहन आदमी अछि । मुदा ओ नीक लोक छल। हमरा सोझेटीसनपर उतारि देलक आ अपने आगा बढ़ि गेल ।

ऐ रचनापर पाठकक मंतव्य:

'लजकोटर'

श्री रबीन्द्र नारायग मिश्रजी द्वारा विरचित 'लजकोटर' उपन्यासक धारावाहिक पोस्ट पढबाक अवसर भेटल। प्रथमहि दू पाँती पढलाक बाद उक्त पोस्ट अपन साहित्यिक चुम्बकीय प्रवृतिक करणेँ तेना ने आकृष्ट कलक जे सम्पूर्ण पोस्ट एकहि निसांसमे पढि गेलहुँ।

समाजक वर्तमान परिवेशक सापेक्ष चित्रणक संग उपन्यासकार उपन्यासक एहि अंशकेँ गढलनि अछि। चारि पात्रक चारित्रिक विश्लेषण, सम्वाद शैली, उत्कृष्ट कथा विन्यास, कौतुहलता, औत्सुक्यक प्रवृत्ति , गतिशीलता तथा परिस्थिति जन्य वातावरण निर्माण द्वारा सम्पूर्ण उपन्यासक उद्येश्यक आपूर्ति एहि छोटसन अंशमे समाहित अछि। चारि पात्रक छोट सन कथानक अपनामे पूर्णता प्रदान करैछ, जे एक दिस जँ समाजक विद्रुपता ,विभत्सताकेँ उद्- घाटित करैछ ,तँ दोसर दिस समाजक परोपकारी प्रवृत्ति तथा मानवीय संवेदनाकेँ सेहो प्रदर्शित करैत अछि।

पात्रक रूपमे मालती, किसुन, विजय चायवला तथा लेखक स्वयं समाजक चारि विचारधाराकेँ प्रदशर्शित करैछ।एक दिस जँ साकारत्मक,भूमिकामे उपन्यासकार मालती आ स्वयंकेर चरित्रक चित्रांकन करैत छथि तँ दोसर दिस किसुन एवं विजयक चरित्रकेँ खलनायकक रूपमे देखाओलन्हि अछि। संम्पूर्ण कथानक मिथिलाक विभत्स रूप, गरीबी, बेरोजगारी, लाचारी श्रमशक्ति एवं प्रतिभा पलायनकेँ उद् घाटित करैछ।

गाम छोड़ि किसुन गुजर करबाक लेल दिल्ली रोजगार हेतु जाइत छथि, मुदा ओत' गलत सतसंगमे आबि, कोना कुमार्ग पकड़ि अपना संग अपन परिवार, एतए धरि जे दू दिनक अपन एक मात्र नवजात शिशुकेँ सेहो संकटक महाजालमे ओझरा दैत छथि; जकरासँ मुक्त होएब असंभव भ'जाइत अछि।

सम्पूर्ण कथानक घुमा-फिराकेँ मुख्यपात्र किसुनक इर्द-गीर्द घुमैत अछि ,मुदा संवादक्षीणता किसुने द्वारा देखाओल गेल अछि।

ग्रामीण परिवेशक पात्र द्वारा कथाक वातावरण एकटा महानगरमे विकसित कएल गेल अछि, जे कतहु-कतहु कथानकमे काल्पनिकता गढि दैत अछि ,जे दिल्ली सन महानगरक हेतु आजुक समयमे लेखक लालटेनक उपयोग क' कथाकेँ पचास साल पाछू खीचिकेँ ल' जाइत अछि। पुनः मोवाइलक इजोत आधुनिक समयक भान करबैछ, जे कथानकेँ व्याघात उत्पन्न करैत अछि। मानवीय संवेदनाक संग जत' कथानककेँ आगू बढेबाक प्रयास भेल अछि ,ओतहि विजयसन स्वार्थी आ कुटिल पात्र द्वारा लेखक व्यंगक पुट सेहो उपस्थित करबामे सफल भेल छथि। कथ्यात्मक आ सम्वाद शैलीमे सम्पूर्ण कथानक सोझ डाँरिएँ आगू बढैछ ,जे एकटा प्रोढ लेखक वा कथाकारेसँ संभव भ' सकैछ, मुदा कथानमे समस्या तँ उत्पन्न कएल गेल मुदा ओकर निदान करबामे लेखक सफल नहि भ'सकलाह। तँ एकरा एकटा दुखान्त कथानके कहल जा सकैछ।

उक्त कथांशमे समाजमे नैतिक मूल्यक ह्रास, मानवीय संवेदनहीनता, चारित्रिक दोषक संदेह तथा कुमार्ग पर अभिगमनक उद्'घाटन जँ किसुन विजय आ मोछ टेरैत पुलिससभक चरित्र द्वारा प्रदर्शित कएल गेल अछि, तँ चायवला आ लेखक स्वयं साकारात्मक चरितक भूमिकामे सहानुभूति ,परोपकार आ सहृदय चरित्रक प्रतीक छथि।मुदा मालतीक चरित्रक माध्यमे उपन्यासकार आजुक परिवेशमे जत' सभतरि नारी सशक्तिकरणक ढोल पीट जा रहल अछि, ओतहि एकटा लाचार, दीनहीन,बेसहारा, अशिक्षित, पराश्रित अबला मैथिलानीक भूमिकामे मालतीक चरित्रक चित्रांकन कएलन्हि अछि, जे बेबस आ लाचार अछि अपन एक दिन पूर्व जन्मल पिहुआक जीवन रक्षा करबामे। उक्त कथानकक माध्यमे लेखक नारी सम्मान, नारी रक्षा आ नारी सशक्तिकरणक ढोल पीटय बालाक मुँह पर एकटा निस्सन चोटक प्रहार करैत छथि ; मिथिलाक सुदूर गाम-घरक महिलाक दशा पर समाजकेँ सोचबाक हेतु बाध्य करैत छथि,जे एकटा परिपक्व आ स्थापित लेखकेसँ संभव भ'सकैछ।

सम्पूर्ण अंश पढलाक संताँ जेना बुझाइछ जे उक्त घटना एकटा भोगल यथार्थ हो, जकरा उपन्यासकार कनेक रंग-टीप क' अपन काव्य प्रतिभाक माध्यमे एकटा उपन्यासक 'केनवाश'मे कसि रहल छथि। नीक कथानकक संग 'लजकोटर' अपन एक-एक डेग बढा रहल अछि। हमरा आशे नहि पूर्ण विश्वास अछि जे एक

ISSN 2229-547X VIDEHA

दिन ई उपन्यास पिंट मीडियासँ पुस्तकाकर रूपमे पाठकलोकनिकेँ सेहो उपलब्ध हेतनि आ मैथिली उपन्यास साहित्य मध्य 'लजकोटर' मीलक पाथर सिद्ध हएत। ढेर रास शुभकामनाक संग उपन्यासकारकेँ साधुवाद।

विजयेन्द्र झा, मुजफ्फरपुर

22.09.2020

(विजयेन्द्रजी मुझफ्फरपुरक कालेजमे मैथिलीक ब्याख्याता छथि।)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**प्रियंवदा तारा झा**

दूटा बीहनि कथा

१

दूरक ढोल सोहाओन

जहिया सऽ लाल काकी बड़का बेटा-पुतहु लग सऽ रहि कऽ आयल छथि , किछु बदलल जकां छथि। ओ पहिलुक्का रुआब जेना कत्तहु हेरा गेल होइन्ह। छोटकी पुतहु सुधाके छगुनता लागि गेलैन्ह, सासुके एतेक शान्त देखि कऽ।

सुधा जाहि दिन सऽ सासुरमे पैर देलैन्ह , अपना लेल प्रशंसाके कोनो बोल नहिं पौलन्हि। कतबो प्रयास कयला उत्तर सासुके संतुष्ट नहिं कऽ सकलीह। लाल काकी हरदम बड़की पुतहुके गुणगानमे लागल रहैत छलीह। एहन दीब , एहन संस्कारी, साक्षात् अन्नपूर्णा छथि बड़की कनियां। हुनकर तऽ कोनो जोड़े नहिं। हमरा मुंह सऽ बजबा सऽ पहिने मोनक गप्प बूझि जाइत छथि।

असकरे सबटा काज करैत सुधाके मोनमे अबैन्ह , सालमे दू-चारि दिन आबि कऽ एतेक मोनमे बसल छथिन्ह, आ जे चौबीसो घंटा लागल रहैत छैक , तकर खाली कुचेष्टा।

अखन पिछले मास भैया एलखिन्ह तऽ लालकाकीके अपना संगे लऽ गेलखिन्ह। काकी गेली तऽ बड़ड हुलसि कऽ , मुदा पंद्रहे दिनमे छोटका बेटाके बजा कऽ संगे वापसो आबि गेलीह। आब बड़की कनियांके गुणगानो नहि। बुझाइत अछि लाल काकीके , 'दूरक ढोल सोहाओन ' के अर्थ बुझबामे आब भांगठ नहि रहलैन्ह।

२

विकल्प

भोरे सऽ गुनधुनमे लागल छथि मीता , निश्चय करैत छथि, फेर डेग पाछू भऽ जाइत छैन्ह। मोनके बुझबै छथि , हम कोनो अधलाह गप्प नहिं सोचि रहल छी , तखन एतेक द्वन्द्व कियैक ?

अही साल मीता दिल्लीमे एकटा छोट-छीन घऽर कीनने छथि, तकर किस्त चुकबैत , बच्चा सबहक शिक्षा केर मोट खर्च आर्थिक तनावक कारण बनि गेल छैन्ह। दुन्नू गोटे जे कमाइत छथि, से जेना पहिले सप्ताहमे ओरा जाइत छैन्ह।

एकटा सुगम उपाय बेर-बेर दिमागमे अबैन , कियैक ने नैहरमे खाली पड़ल कोनो जमीनके हटा कऽ कनी हल्लुक भऽ जाइ। हमहू तऽ ओही ठामक अंश छी , किछु तऽ हमरो अधिकार अछि ओतय। भाइजीके तऽ बाबू अपने मोने मदति केने रहथिन्ह।

यैह विचारि भाइ सऽ गप्प करबा लेल विदा भेलीह , मुदा बकार नहिं फुटलैन्ह। समान अधिकारपर धाराप्रवाह भाषण देबऽ वाली चुपचाप अधिकारके सौहार्दपर वारि घुरि गेलीह। अधिकार वा स्नेह ई विकल्प अखनहुं समानताक सत्य छैक , नारी जातिक लेल।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

आशीष अनचिन्हार

दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे कहिया लीखल जेतै

आइसँ 5 बर्ख पहिने गंगेश गुंजन जी दुष्यंत कुमारक एकटा शेर दऽ कऽ कहने रहथिन जे मनोरथ अछि मैथिलीमे एहि 'मिजाज' ओ एहि वज्नक शेर हो। कहिया धरि एहन शेर एतै सेहो पुछने रहथिन। वज्न मने बहर भेल आ से मैथिली गजलमे पहिनेसँ अछि। रहलै दुष्यंत कुमारक शेर सनक मिजाज केर बात तँ हम तथ्यात्मक गिनती केलहुँ जे कहिया धरि एहन शेर लिखेतै मैथिलीमे। गिनती हम करब ताहिसँ पहिने दुष्यंतजीक ओ शेर हम प्रस्तुत करी जे गुंजनजी देने रहथि--

"उनकी अपील है कि उन्हें हम मदद करें
चाकू की पसलियों से गुज़ारिश तो देखिये"

निश्चित तौरपर नीक आ उत्तम शेर छै ताहिमे संदेह नै। तँइ गुंजनजी सेहो प्रस्तुत करबा लेल बाध्य भेलाह। तँ आब हम मूल बात दिस चली। हम अपन गिनती लेल दू टा मानक लेलहुँ अछि। पहिल दुष्यंतजीक गजल संग्रह प्रकाशन आ दोसर आधुनिक खड़ी बोली हिंदीमे लिखल शुरूआती गजल आ से हमरा भारतेंदु हरिश्चंद्रजी लगसँ भेटैए (जन्म- 9 सितंबर 1850- मृत्यु 6 जनवरी 1885)। भारतेन्दुजीक गजल सेहो छनि मुदा कोन बर्खमे प्रकाशित भेलनि से हमरा ज्ञात नै ताही लेल हम हुनकर मृत्यु वर्षकेँ अंतिम मानि आगू बढ़ि रहल छी। आब जानी दुष्यंत कुमारजीकेँ। दुष्यंतजीक जन्म- 01 सितम्बर 1933 आ मृत्यु- 30 दिसम्बर 1975 केँ भेलनि। एही बर्ख (1975) मे हिनक गजल संग्रह- 'साये में धूप' केर प्रकाशन भेलनि। एहि ठाम कने रुकि हम भारतेंदु आ हुनकर ठीक बादक किछु चूनल हिंदी गजलकारक किछु शेर देखी–

अजब जोबन है गुल पर आमद-ए-फ़स्ल-ए-बहारी है
शिताब आ साक़िया गुल-रू कि तेरी यादगारी है

एकर बहर अछि 1222-1222-1222-1222

ISSN 2229-547X VIDEHA

आ गई सर पर क़ज़ा लो सारा सामाँ रह गया
ऐ फ़लक क्या क्या हमारे दिल में अरमाँ रह गया
एकर बहर अछि 2122-2122-2122-212

आब सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जीक शेर देखू-

भेद कुल खुल जाए वह सूरत हमारे दिल में है
देश को मिल जाए जो पूँजी तुम्हारी मिल में है

एकर बहर अछि 2122-2122-2122-212

आब जयशंकर प्रसाद जीक ई शेर देखू--

सरासर भूल करते हैं उन्हें जो प्यार करते हैं
बुराई कर रहे हैं और अस्वीकार करते हैं

एकर बहर अछि 1222-1222-1222-1222 आ ठीक एही बहरमे शमशेर बहादुर सिंहजीक ई शेर देखू--

जहाँ में अब तो जितने रोज अपना जीना होना है,
तुम्हारी चोटें होनी हैं हमारा सीना होना है।

पं.कृष्णानंद चौबीजीक ई शेर देखू--

आपका मक़सद पुराना है मगर खंज़र नया
मेरी मजबूरी है मैं लाऊँ कहाँ से सर नया

एकर बहर अछि 2122-2122-2122-212 आ ठीक एही सभहक बीचमे दुष्यंत कुमारजीक गजल छल।

ISSN 2229-547X VIDEHA

दुष्यंतजीक गजल संग्रहक हरेक गजल बहरमे अछि मुदा एकटा गजलक बहरपर बेर-बेर ओझराहटि हिंदी ओ मैथिलीक गजलकार दिससँ देखल जाइए आ ओहि गजलक मतला छै--

होने लगी है जिस्म में जुम्बिश तो देखिए
इस परकटे परिंदे की कोशिश तो देखिए

अही गजलक एकटा शेर गुंजनजी देने रहथिन जकरा हम उपरमे देने छी। जखन कोनो हिंदी-उर्दू गजल देवनागरीमे लिखाइ छनि तखन ओझराहटि आर बेसी बढ़ि जाइत छै। कमसँ कम हिंदीमे तँ बहुत घमर्थन छै जे हिंदी गजल लेल उर्दू शब्दक मूल ध्वनि लेल जाए कि हिंदी ध्वनि। हिंदीक बहुत गजलकार उर्दू ध्वनिक आग्रही छथि तँ बहुत हिंदीक ध्वनिक। दुष्यंतजी अपने सेहो एही ध्वनिक ओझरीमे छलाह तँइ बहुत बेर ओ अपन गजलमे शहर केर मूल ध्वनि शह्र=21 लेने छथि तँ हिंदी ध्वनि श-हर=12 सेहो। अही कारणसँ उर्दू गजलकार सभ दुष्यंत कुमार केर आलोचना केलकनि आ हिंदी बला सभ बुझलकै जे दुष्यंतजीकेँ नीचा देखाबए लेल उर्दू बला सभ एना कऽ रहल छै। एहि गजलक बहर बूझब हुनका लेल आसान हेतनि जे कि मुजाइफ बहर बुझि गेल छथि आ जे नै बुझने छथि से निच्चाक दूटा शेरक तक्ती देखथि-

होने लगी है जिस्म में जुम्बिश तो देखिए=2212-12-11-22-12-12
इस परकटे परिंदे की कोशिश तो देखिए=2212-12-11-22-12-12

उनकी अपील है कि उन्हें हम मदद करें=2212-12-11-22-12-12
चाकू की पसलियों से गुज़ारिश तो देखिये=2212-12-11-22-12-12

अहाँ सभ चाही तँ पूरा गजल एहि बहरपर बैसा कऽ देखि सकैत छी। कुल मिला कऽ साबित भेल जे दुष्यंतजीक ईहो गजलमे बहर अछि। बिना बहरक गजल भइए ने सकैए। हमरा गुंजनजीक उद्येश्यपर संदेह नै मुदा हमर पापी मोन सोचलक जे कहीं गुंजनजी एहि शेरकेँ अही दुआरे तँ प्रस्तुत नै केलाह जे हुनको बुझाइत छलनि जे एहि गजलमे बहर नै भऽ सकैए। माफी चाहब ई हमर पापी मोनक संदेह छल वा अछि। आब एहि संदेह सभकेँ कात करैत मूल बातपर आबी। जेना कि देखलहुँ जे भारतेंदु आ हुनक बाद काँच-पाकल कथ्यक संग मुदा अनिवार्य रूपे बहरयुक्त हिंदी गजल दुष्यंत सन परिपक्व गजलकार धरि यात्रा केलक आ ताहिमे ओकरा लगभग 90 बर्ख समय लगलै (भारतेंदुजीक मृत्युसँ दुष्यंतजीक गजल संग्रहक प्रकाशन)। एहन नै छलै जे दुष्यंतजीसँ पहिने जे नाम देलहुँ से हिंदीमे अनाम छलाह ओ सभ स्थापित आ

युगांतकारी साहित्यकार छलाह , गजलक सभ नियम पालन करैत छलाह, हिंदी गजलकार मानसिक रूपें सचेष्ट छलाह तकर बादो हिंदी गजलकेँ दुष्यंत सन मिजाज पेबामे 90 बर्ख लागि गेलै। एकर विपरीत मैथिलीक शुरूआती गजल बहरयुक्त रहल मुदा बादक अज्ञानी पीढ़ी प्रचारित केलक जे मैथिलीमे गजल भइए ने सकैए, गजलमे बहर होइते नै छै, बहुत बादक पीढ़ी सभ तँ ईहो कहए लागल जे दुष्यंत कुमार बहर तोड़ि देलाह, तँ अदम गोंडवी बहर फोड़ि देलाह आदि। आ एहि चक्करमे लगभग 1950क बाद मैथिलीमे बिना बहरक गजल चलल जे 2008 मे विजयनाथ झाजीक गीत-कविता-गजल संग्रह 'अहींक लेल' संग बंद भेल संगे-संग 2008हि मे गजल लेल समर्पित शोध पत्रिका 'अनचिन्हार आखर' केर स्थापना भेल। आ तकर बाद लगातार मैथिलीमे बहरयुक्त गजल लिखा रहल अछि। एहिठाम ई कहब अनुचित नै जे पछिला पीढ़ीक बिना बहर बला सभ बहुत प्रयास केला जे युवा बहरयुक्त गजल नै लीखए आ ताहि लेल ओ पुरस्कार, लिस्टमे नाम देब, एक पन्नाक समीक्षा लीखि देब प्रलोभन देबाक सन काज सेहो केलाह आ किछु अंशमे सफल सेहो भेलाह मुदा जेना-जेना मैथिलीक युवा लग उर्दू-हिंदी गजलक तक्ती होइत गेलै तेना-तेना ओ सभ मानए लगलाह जे बिना बहरक गजल नै होइत छै आ ओ सभ अपन गजलमे बहर लेबाक लेल आवश्यक मेहनति करए लगलाह। चूँकि शुरूआती गजलक बाद लगभग 50 साल मैथिलीमे बिना बहर बला गजल रहलै तँइ हम 2008केँ मानक बर्ख मानि रहल छी आ एकरे आधार मानि रहल छी। आबि मानि लिअ मैथिलीक गजलकार हिंदिए गजलकार सन बहुपठित, नियमक पालन करए बला. प्रयोगी हेताह तइयो लगभग बर्ख 2090 सँ लऽ कऽ बर्ख 2100 धरिक बीचमे मैथिलीमे दुष्यंत कुमार सनक गजलकार हेबाक संभावना अछि वा कही जे ओहने मिजाजक गजल लिखल जेबाक संभावना अछि। एहिठाम गंगेशजी आपत्ति कऽ सकै छथि जे हम दुष्यंत नै दुष्यंतक गजलक मिजाज कहने छी। मुदा पहिने दुष्यंत तखन ने हुनकर मिजाज। बहुत गोटे प्रश्न उठा सकै छथि जे एतेक समय किए लगतै। मुदा हमरा जनैत ओ सभ कोनो विधाक विकाससँ अपरिचित छथि। विधाक विकास एक-दू सालक खेल नै छै। हम ईहो मानै छी जे वर्तमान समयक सभ मैथिली बहरयुक्त गजलकार प्रतिभाशाली छथि मुदा भारतेंदु, जयशंकर प्रसाद, निराला आदिक दसो प्रतिशत नै छथि। जखन भारतेंदु, जयशंकर प्रसाद, निराला सभकेँ रहैत 90 बर्ख लगलै तँ इम्हर बलाकेँ कतेक लगतै। बहुत संभव जे किछु लोक हमर आकलनकेँ गलत मानथि। हुनका बुझाइत हेतनि जे मैथिलीक गजलकार सभ बहुत प्रतिभाशाली छथि मुदा हमरा मोनमे एहन कोनो खुशफहमी नै अछि। ई 90-100 बर्खक गैप सदिखन रहत। मानू जे जँ एखनो जँ बहरयुक्त गजल बंद भऽ जाए आ फेर बीस बर्ख बाद फेरसँ बहरयुक्त गजल चालू हुअए तँ ओहि समयमे ई 90-100 बर्ख जोड़ल जेतै। तँ जेहन भाव हो काँच-पाकल से सभ बहरमे लीखी आ प्रतीक्षा करी निश्चित तौरपर मैथिलीमे सेहो दुष्यंतक गजलक मिजाज सन गजल लिखेतै। 2030 धरिक कोनो बहरयुक्त गजलकारमे दुष्यंतक मिजाज धारण करबाक क्षमता आएत से बहुत

ISSN 2229-547X VIDEHA

संभव। एखनुक कोनो-कोनो बहरयक्त गजलकार सेहो दुष्यंतक मिजाजमे आबि जाइत छथि मुदा ओ स्थायी नै भऽ पबै छै, भइयो नै सकैए कारण ओहि मिजाज लेल जे भूमि चाही से एखन दूर अछि। खुशीक बात अतबे जे बेसी दूर नै अछि। जँ ई मिजाज स्थायी भऽ जाए तँ बहुत संभव जे एखुनके कोनो बहरयुक्त गजलकार दुष्यंतक मिजाज गजलमे आनि लेताह।

जँ हिंदी गजलमे दुष्यंतक गजलक मिजाज केर पृष्ठभूमि ताकल जाए तँ ओ निरालाक गजल हेतै। दुष्यंत कुमार शेर यथा--

सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मक़सद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए
XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX
यहाँ तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियाँ
मुझे मालूम है पानी कहाँ ठहरा हुआ होगा

आ एहने सन बहुत रास शेर केर पृष्ठभूमि निरालाक ओ शेर अछि जे हम उपर देलहुँ। जँ मैथिलीमे देखल जाए तँ निरालाक समानांतर कविवर सीताराम झाजीक ई शेर अछि--
हम की मनाउ चैती सतुआनि जूड़शीतल
भै गेल माघ मासहि धधकैत घूड़ तीतल

मतलाक बहर अछि 2212+ 122+2212+ 122 मुदा अफसोच जे एहि पृष्ठभूमिक समुचित उपयोग मैथिलीक कथित गजलकार सभ नै कऽ सकलाह। भावक कोन कमी छै एहि शेरमे आ सेहो बहर सहित। जखन हिंदीक शीर्ष रचनाकार सभ बहरक पालन कऽ सकैत छलाह तखन ई मैथिली बला सभ कोन देवताक अवतार छलाह? आ तँइ सीतारामजीक भाव केर आधारपर मैथिलीमे एखन धरि दुष्यंतक गजलक मिजाज नै आबि सकल अछि आ ताहि लेल ओ कथित गजलकार सभ दोषी छथि जे कहलाह मैथिलीमे गजल भइए ने सकैए, गजलमे बहर होइते नै छै, दुष्यंत कुमार बहर तोड़ि देलाह, तँ अदम गोंडवी बहर फोड़ि देलाह आदि। एहन कहए बला सभ मैथिली गजलकेँ कतेक नोकसान केलाह से आकलन करब बहुत कठिन तँ नै मुदा दुखदायी छै। दुख होइत छै ई देखि जे एकटा नीक विधाकेँ मैथिलीमे कोना भुस्साथरि बैसाएल गेलै।

ISSN 2229-547X VIDEHA

गंगेशजी अपन पोस्टमे आशंका जतेने छथि जे दुष्यंतक गजलक मिजाजक शेर पढ़ि सकब आ कि............ हम जँ ऋृषि रहितहुँ तँ हम अपन बाँचल उम्र हुनका नामे कऽ दितियिन ई दिन देखबाक लेल मुदा से संभव नै। हम बस शुभकामने टा दऽ सकैत छियनि जे ओ देखि कऽ जाथि। हलाँकि नव गजलकार सभ ई जरूर सोचथि जे जँ हमर पूर्वज लगातार बहरमे लिखने रहितथि तँ निश्चित तौरपर 90 केर दशकमे मैथिलीयोमे दुष्यंतक मिजाज सन गजल आबि गेल रहितै। भावक कमी मैथिलीमे कहियो नै रहलै आ ने भावकेँ पकड़बाक कलामे। मुदा दोष केकर................. हमरा लेल केकरो दोष निरूपति करबासँ बेसी आसान रहैए अपन हिस्साक काज कऽ लेब से एहू ठाम हम केलहुँ। आब पाठक आ सचेष्ट गजलकार जानथि।

परिशिष्ट (एहिमे गुंजनजीक मूल पोस्ट दऽ रहल छी)–

Gangesh Gunjan

8 July 2015 ·

" उनकी अपील है कि उन्हें हम मदद करें

चाकू की पसलियों से गुज़ारिश तो देखिये"

(दुष्यंत कुमार)

हमर बड़ मनोरथ जे एहि मिज़ाज आ वज़नक शे’र अपन मैथिलीओ मे होइत ! कहि सकितय कोय । आस तँ नव तुरिये मे क’ सकैत छी। देखी, से दिन पढ़ि क’ जाइ छी कि ...

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC:13 (संघ लोक सेवा आयोगक मैथिली ऐच्छिक- पत्र-१, भाग-१, ६अम क्रमक सिलेबसक लेल)

टॉपिक एकसँ १२ लेल जाउ एहि लिंकपर:

http://videha.co.in/aboutme.htm

तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास- गजेन्द्र ठाकुर

(भाग-१)

लिपि? आ लिपि छी की? लिपिक उद्भव।

एजिप्टक लोक कहै छथि जे हुनकर लिपिक आविष्कार टोथ देवता केलनि, मेसोपोटामियाक लोक कहै छथि जे हुनकर लिपि नीबो देलनि, ग्रीसक लोक ग्रीक लिपिक आविष्कारक हर्मीजकेँ मानै छथि आ भारतमे एकर श्रेय ब्रह्माकेँ जाइ छनि।

पाषाणकालक लोक मारते रास चित्र लिखलनि आ ओहीसँ चित्रलिपिक प्रेरणा भेटल। मुदा ई चित्र सभ चित्रलिपि नहि छल, कारण एकचित्रक सम्बन्ध दोसर सँ नहि छल आ सभटा चित्र फराक-फराक छल। मुदा ओहिसँ पाछाँ जा कऽ चित्रलिपिक प्रेरणा भेटले होएत।

पहिल-लिपि: चित्रलिपि

एखन धरिक खोजबीनसँ पता चलैए जे चित्रलिपिक विकास भेल- टिग्रिस-यूफ्रेट्सक कात- मेसोपोटामिया- (सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे), नील नदीक कात (एजिप्टमे) आ क्रीट (ग्रीस) मे।

उपरका खोह आ धारक कातक पाथरपर लिखल चित्र आ चित्रलिपिमे अन्तर बिकछेबाक खगता अछि। अहाँ हमरासँ प्रेम करै छी तँ हमर चित्र लिख देलहुँ, कोनो शिकार करै छी तँ से चित्र लिखलहुँ। से अहाँ भेलहुँ लिखिया। से भारतोमे बहुत ठाम छल, मुदा लिखिया लिपिकार चोट्टहि नहि बनि जाएत। लिपिकार जे चित्र बनेलक से कलकारी लेल नहि वरण् खगता लेल। से एतऽ सूर्य बनेबाक लेल वृत्त बना दियौ, पूरा

चित्र बनेबाक खगता एतऽ नै अछि, फेर दूटा एहने चित्रक सम्बन्ध स्थापित करू, दूसँ तीन.. आ चित्र लिपि तैयार।

से चित्रकार चित्र लिखलक, आ लिपिकार बनेलक। लिपिकारकँ लिखिया नहि कहि सकैत छिऐ। आ से भेल टिग्रिस-यूफ्रेट्सक कातक (असीरिया, बेबीलोन आ सुमेरमे), नील नदीक कातक (एजिप्टमे) आ क्रीट (ग्रीस) मे ईजियन आ मिनोअन सभयताक लोक।

चित्रलिपि: चित्रात्मक चित्रलिपि आ विचार/ भावनात्मक चित्रलिपि

बाहरसँ दुनू चित्रलिपि अछि मुदा चित्रात्मक चित्रलिपि चित्रक मात्र बोध करबैत अछि जेना वृत्त सूर्यक बोध करेलक। मुदा जखन एकर प्रयोग गुमार लेल होमए लागल तँ ई भऽ गेल विचार आकि भावनाक प्रतीक आ ओहि लिपिक नाम भेल विचार/ भावनात्मक चित्रलिपि। आब कलाकारीसँ बेशी खगता महत्त्वक भेल आ ताहि लेल चेन्हक आकार सेहो छोट भऽ गेल। आइयो चीन आ जापानमे विचार/ भावनात्मक चित्रलिपिक प्रयोग होइत अछि। मुदा पध-आधारित लिपि चीनमे खतम भऽ गेल, मुदा जापानमे ओ आइयो प्रयोगमे अछि।

चित्र-ध्वनि लिपि

भाषाक उद्भव आ विकास भेल। जेना ओतए ध्वनिसँ सम्बन्धित शब्द प्रवेश केलक तहिना लिपिमे सेहो भेल। आ चित्र-ध्वनि लिपिक विकास भेल। एहिमे विचार-भावनाक संग ध्वनिक प्रवेश सेहो भेल आ पाछाँ जा कऽ ओ ध्वन्यात्मक लिपि बनल।

ध्वन्यात्मक लिपि

ध्वन्यात्मक लिपिमे ध्वनि आ वस्तु-व्यक्तिक बीच सम्बन्ध स्थापित करैत चिन्ह बनल। ध्वन्यात्मक लिपिमे ध्वनि वा ध्वनि-समूह लेल चिन्ह बनल। ध्वन्यात्मक लिपिमे पोलीफोन (एक चिन्हक अनेकार्थ वा ध्वनि) आ होमोफोन (अनेक चिन्ह द्वारा एक ध्वनि वा अर्थ) मिला कऽ सेहो अर्थ/ ध्वनि-निर्णय नहि कऽ पबैत छल आ ताहि लेल तेसर ध्वनि-चिन्ह डिटरमिनेटिवक व्यवस्था भेल आ फेर अर्थ वा ध्वनि निर्णय सम्भव भेल।

एहि लिपिसँ पद-आधारित आ व्यंजन-प्रधान लिपि बनल।

स्थान-लाघव आ प्रयत्न लाघव

ISSN 2229-547X VIDEHA

एतए प्रयत्न-लाघवक चर्च करब आवश्यक अछि। प्रयत्न लाघव लेल कम प्रयाससँ अपेक्षित परिणामक प्राप्ति। माने भाषाक सम्बन्धमे कम शब्दमे सुस्पष्ट विचार व्यक्त करब, पैघ-ध्वनि लेल छोट सर्वमान्य ध्वनिक प्रयोग करब आ ओही हिसाबसँ लिपिक सन्दर्भमे पैघ चेन्ह लेल छोट चेन्हक प्रयोग करब। ओहिना स्थान-लाघव लिपिमे स्थान-कटौती लेल प्रयुक्त होइत अछि। टॉपिक १२ मे शब्द विचारमे लिपि-उच्चारण सम्बन्धी विशेष जानकारी भेटत। से प्रयत्न लाघवसँ कखनो काल ध्वनि अनचिन्हार भऽ जाइत अछि, आ ओकर रूपान्तर लिपिमे प्रत्न-लाघव आ कखनो काल स्थान-लाघ्वक संग होइत अछि।

पद-आधारित लिपि

पद आधारित लिपिमे प्रयत्न-लाघव आ स्थान-लाघव नहि रहैत अछि। एकरा एना बुझू जे तमिल लिपि अछि सिलेबल आधारित लिपि, रोमन लिपि अछि अल्फाबेट लिपि आ तिरहुता आ देवनागरी अछि अल्फा-सिलेबिक लिपि। माने जतऽ संयुक्ताक्षर नहि अछि से भेल अल्फाबेट आधारित लिपि। माने अंग्रेजी, जे रोमन लिपिमे लिखल जाइत अछि, मे संयुक्ताक्षर नहि होइत अछि, मात्र २६ टा अल्फाबेट होइत अछि, से ओ भेल अल्फाबेट आधारित लिपि। तमिलमे सिलेबल आधारित लिपि अछि। से ओ भेल सिलेबल आधारित लिपि। तिरहुता आ देवनागरी लिपिमे दुनू तत्त्व अछि से ओ भेल अल्फा-सिलेबिक लिपि। एहि तीनूक तुलना मोटा-मोटी वार्णिक (अंग्रेजी), मात्रिक (तमिल) आ वार्णिक आ मात्रिक (तिरहुता आ देवनागरी) छन्दसँ कएल जा सकैत अछि। मुदा एतऽ एकटा पेंच अछि, अंग्रेजीमे वर्णक गणनासँ जे मीटर निर्माण करब तँ लय नहि बनत से ओतऽ सिलेबल आधारित गणना करए पड़ैत अछि, आ किएक तँ ध्वनिक सम्बन्ध मात्र सिलेबलसँ छै, शब्दकेँ सिलेबलमे तोड़ल जाइत अछि। जापानी लिपि पद-आधारित अछि से ओतऽ ई झमेल नहि अछि, आ ओतऽ ध्वनिक ईकाई लेल जे शब्द प्रयुक्त होइत अछि तकर अनुवाद मोटामोटी सिलेबलमे कएल जा सकैत अछि आ ओही आधारपर हाइकूमे १७ टा ध्वनि पुरेबा लेल गणना होइत अछि । तिरहुता, देवनागरी आ ब्राह्मीमे जे बाजल जाइए सएह लिखल जाइए, आ एतऽ पाणिनीपूर्व आ पणिनिक परम्परामे ध्वनि आधारित सन्धिक निअम बनल अछि। कर्मधारय समासक विग्रह पदात्मक होइत अछि, महादेव भेला महान् देव, आ जँ दूसँ बेशी पद अछि तँ से भेल बहुव्रीहि- जेना लम्बोदर (नमगर जिनकर उदर से, माने गणेश)। अंग्रेजी (रोमन लिपि) मे बजबा काल सन्धि होइत अछि मुदा लिखबा काल नहि, मुदा ओतहुओ दीर्घ लेल डबल ए, डबल बी आदि प्रयुक्त होइते अछि, पंकचुएशन सेहो ई काज करैत अछि, हँ ओतऽ ट्रिपल ए नहि होइत अछि, मुदा हमहूँ सभ तँ दीर्घक बाद प्लुतकेँ छोड़िये देने छी। आ तही कारणसँ मैथिलीमे विभक्ति सटा कऽ लिखल जाइत अछि। तिरहुता आ देवनागरी लिपिमे दुनू तत्त्व अछि से मात्रिक आ वार्णिक दुनू छन्द एहिमे गणना कएल जा सकैत अछि। टॉपिक १ मे पृष्ठ १८ सँ गणना (मात्रिक आ वार्णिक) सम्बन्धी विशेष जानकारी

भेटत। सिलेबल जेना शब्दसँ सम्बन्धित अछि पद तहिना समाससँ पहिलमे ध्वनि प्रमुख अछि आ दोसरमे पद (अर्थ)। से वएह पद आधारित लिपि ध्वन्यात्मक लिपिक विकास छल। जकर प्रमाण ऐतिहासिक रूपसँ उपलब्ध अछि, आ जतऽ सँ लिपिक असली विवेचन सम्भव अछि। आ चित्र-लिपिक रूपमे जाहि तीन गोट लिपिक चर्च भेल माने टिग्रिस-यूफ्रेट्सक धारक कात (सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे), नील धारक कात (एजिप्टमे) आ क्रीट (ग्रीस) मे एहिमेसँ टिग्रिस-यूफ्रेट्सक धारक कातमे सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे जे सभ्यता सभ क्रमसँ आएल ओहिमे पहिने सुमेरमे क्यूनीफॉर्म लिपिक प्रारम्भ भेल ४००० शताब्दी बी.सी.ई. (बिफोर कॉमन एरा)मे। बेबीलोन लोकनि सुमेरसँ ई लिपि सिखलनि आ हुनकासँ असीरिया लोकनि। माटिक सानल आ लोथ बनाएल पट्टीपर सुखेलासँ पहिनहिये नोकबला स्टायलससँ, मोटा-मोटी ३५० टा अक्षरसँ, ई क्यूनीफॉर्म लिपि लिखल जाइ छल जखन आ फेर रौदमे सुखाएल वा चूल्हिमे पकाएल जाइत छल। आधुनिक कालमे एकरा पढ़बाकश्रेय एकटा अंग्रेज हेनरी रौलिनसनकेँ जाइ छनि। तेसर चरणक बाद धरि ई पद-आधारित बनि गेल छल। एजिप्टमे हायरोग्लाइफिक (हायरोग्लिफिक, हायरेटिक आ डेमोटिक) लिपि क्यूनीफॉर्म लिपिक समकालीन छल। एहिमे २४ टा चिन्ह रहैक जाहिमे सभटा व्यंजन रहैक। स्वर रहबे नहि करैक, से बहुत रास झमेल आ अस्पष्टता आबि जाइ छलैक, से ओकर निवारणलेल ओ लोकनि आर विशेष चेन्ह आ चित्रक प्रयोग करैत छलाह। ओ सभ लाल मोशि-कलमसँ पेपीरस पातपर लिखैत छलाह, ओही पेपीरससँ पेपर बनल अछि। क्यूनीफॉर्म आ हाइरोग्लाइफिक ई दुनू लिपि दहिनसँ वाम दिश लिखल जाइत छल। एहि दुनू लिपिक समकालीन लिपि छल चीनक लिपि से ऊपरसँ नीचाँ लिखल जाइत छल। पहिने एकटा शब्द लेल एकटा चिन्ह छल, मुदा फेर एकटा विचार लेल एकटा शब्दक प्रयोग होमए लागल। चीनक लिपिमे कोनो अल्फाबेट नहि अछि, ४०,००० चिन्ह अछि। एकर अलाबे एलमाइट सभ पहिने देशज रेखात्मक आ चित्र-प्रचुर अक्षरक प्रयोग केलनि मुदा फेर ओ लोकनि सेहो क्यूनीफॉर्म लिपि पकड़ि लेलनि मुदा ओतऽ ११३ चेन्ह जाहिमे ८०सँ बेशी पद-आधारित चेन्ह छल, केर प्रयोग ओ केलनि।

से एजिप्टक बदला लिपिक आविष्कारक मेसोपोटामिया (सुमेर, बेबीलोन आ असीरिया) क लोक रहथि, जे लिखबाक कलाक आविष्कर्ता छथि। जेना ऊपर चर्च भेल अछि, ओ लोकनि पहिने चित्र लिखलन्हि, आ किएक तँ चित्र बनेबामे बेसी समयक नोकशानी होइत छलन्हि से ओ लोकनि प्रयत्न-लाघव आ स्थान-लाघवसँ चित्रकेँ चेन्ह बना देलन्हि, चेन्हमे समानता आ समरूपता आनि रेखात्मक पद्धतिक लिपि बनेलन्हि। फेर ई चेन्ह ध्वनिकेँ प्रदर्शित करए लागल, आ एहि तरहक मोटामोटी ३५० टा चेन्ह बनल।

ISSN 2229-547X VIDEHA

सीरिया-साइप्रस आ फिलिस्तीनमे जे खाँटी वर्ण आधारित लिपि बनल ताहूमे, फेर मिनोअन सभ्यतामे जे लिपि आविष्कृत भेल ओहिमे पद-आधारित लिपिक प्रभाव पड़ल। पद-आधारित लिपिक दूटा रूप चीनमे छल मुदा तकर प्रयोग चीनमे बन्द भऽ गेल मुदा जापानमे ई प्रयोगमे अछि जकर किछु चर्च ऊपर आएल अछि।

व्यंजन प्रधान लिपि

एकरा वर्णमाला वा वर्ण आधारित लिपि सेहो कहि सकैत छी। आन लिपि सभमे चेन्ह सभक संख्या ततबा बढ़ि गेल जे शिशु लेल ओकर सीखब असम्भव भऽ गेल। एहि लिपिक विकासक कारण छल प्रयत्न लाघव। एक्के लिपिमे अनेक भाषा लिखब सम्भव भऽ गेल।

टिग्रिस-यूफ्रेट्सक कात- मेसोपोटामिया- (सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे)क क्यूनीफॉर्म लिपि वर्णमाला नहि बनि सकल। एहि लिपिक सम्बन्ध सेमेटिक भाषासँ हेबाक प्रमाण अछि। चित्रात्मक फेर विचारात्मक, फेर ध्वन्यात्मक लिपि ई बनि सकल। मुदा ध्वन्यात्मक लिपि सेहो संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आ क्रिया-विशेषणक आवश्यकताकेँ किछु सुधारक संग पूर्ण कऽ सकल। फेर ई पद-आधारित बनल आ एतहि एकर विकास खतम भऽ गेलैक।

बादमे जा कऽ जुरुथ्रुष्टक अनुयायी लोकनि मेसोपोटामियामे अपन लिपिकेँ व्यंजन प्रधान बनेलन्हि जकरा अर्द्ध-वर्णमाला कहि सकैत छी। मुदा ओहिमे कृत्रिम हेबाक प्रवृत्ति बढ़ल, आ ई प्रवृत्ति ब्राह्मीमे सेहो भाषा-वैज्ञानिक लोकनिकेँ देखा पड़ैत छन्हि।

क्रीटमे सेहो चित्र-प्रचुर रेखाकृतिसँ आगाँ बढ़ि १३५ चेन्हबला भावना-प्रधान आ ध्वनि-प्रधान लिपि बनेलन्हि। हिनकर लिखब वामसँ दहिन आ दहिनसँ वाम दुनू छल।

उतरबरिया सेमेटिक वर्णमाला

सीरिया-साइप्रस आ फिलिस्तीनमे मूल वर्णमालाक आविष्कार दोसर शताब्दी बी.सी.ई. मे भेल जकर नाम उत्तरबरिया सेमेटिक वर्णमाला छल। आ तकर बाद आनो-आन मूल वर्णमाला आविष्कृत भेल जेना आरामाइक, फिनीशिअन, ग्रीक आ ब्राह्मी आ ई लिपि सभ अनचोक्के आविष्कृत नहि भेल होएत वरण ओतहु वएह प्रक्रिया भेल हएत जे मेसोपोटामियाक लिपि संग भेल छल। मुदा एक स्तरक बाद मेसोपोटामियाक क्यूनीफॉर्म लिपि पद-आधारित लिपि बनि अपन खिस्सा खतम केलक ई लिपि सभ पूर्ण वर्णमाला बनि गेल।

भारतमे लिपि आ लेखनकला

नागार्जुनकोण्डासँ प्राप्त दोसर शताब्दीक एकटा मूर्तिमे राजा शुद्धोधनक दरबारक दृश्य अंकित अछि जाहिमे तीनटा भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माता रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कऽ रहल छथि। हिनका सभक नीचाँ बैसल लिपिकार तकरा लिपिबद्ध कऽ रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई आइ धरिक सभसँ पुरान चित्र आधारित प्रमाण अछि। एहिसँ अतिरिक्त पुरान प्रमाण हड़प्पा संस्कृति, अशोकक अभिलेख आदि तँ अछिये। अशोकक अभिलेख आ हड़प्पा संस्कृतिक बीचमे सेहो मारते रास अभिलेख भेटलाछि जेना सोहगौराक ताम-पत्र अभिलेख, पिपरहबाक बौद्ध-भीड़ अभिलेख, महास्थान आ बर्लीक पाथर अभिलेख, आ भट्टिप्रोलुक अभिलेख।

भारतमे हड़प्पा सभ्यतामे पहिल बेर लिपिक प्रयोग भेल मुदा ओ एखन धरि पढ़ल नहि जा सकल अछि। एकर अभिलेख सभ छोट-छोट छैक सभसँ पैघ अभिलेखमे २६ टा चेन्ह छैक। धोलावीर (गुजरात) मे नग्रक द्वारपर एकटा साइनबोर्ड हेबाक प्रमाण अछि जाहिमे ९ टा चेन्ह छैक।

ब्राह्मी आ खरोष्ठी

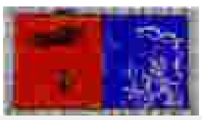
ब्राह्मी वामसँ दहिन आ खरोष्ठी दहिनसँ वाम दिशामे लिखल जाइत अछि। मुदा दुनू भारतक वर्णमाला पद्धतिक आधारपर विकसित भेल अछि। अशोकक अभिलेख ब्राह्मी आ खरोष्ठी (मानसेहरा आ शाहबाजगढ़ी) दुनूमे भेटल अछि आ एकरा एकटा अंग्रेज जेम्स प्रिंसेप १८३७ सी.ई. मे ब्राह्मी पढ़बामे सक्षम भेलाह। खरोष्ठी पढ़बाक श्रेय सम्मिलित रूपसँ कर्नल मसोन आ जेम्स प्रिंसेप कें देल जाइत अछि। एहि अभिलेख सभमे अशोकक नाम पियदस्सी लिखल छैक आ किछुमे असोक (अशोकक पालि-प्राकृत रूप) सेहो। अशोकक अभिलेखमे लिपिकरक चर्च अछि।

ब्राह्मी लिपि बहुत दिन धरि विकसित आ परिष्कृत/ परिवर्द्धित होइत प्रयोगमे रहलाअ एहिसँ भारतक आन लिपि सभक उत्पत्ति भेल मुदा खरोष्ठी लिपि अपने संग खतम भऽ गेल। अशोकक अभिलेखक अतिरिक्त इण्डो-ग्रीक राजा सभ एकर प्रयोग अपन मुद्रापर केलन्हि जाहिमे तर आ ऊपरमे ग्रीक आ ्खरोष्ठी लिपिमे राजाक नाम लिखल रहैत छल।

नारद-स्मृतिमे लिपिकेँ उत्तम आँखि कहल गेल अछि आ एकर सृजन **ब्रह्मा** केलनि तकर चर्च अछि।

बृहस्पति स्मृतिमे चर्च अछि जे छह मासक बाद स्मृति धोखा देमऽ लगैत अछि से पातपर लिखल आखरक सृजन **ब्रह्मा** केलनि।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

चीनक विश्वकोष फा-वां-शु-लिनमे सेहो चर्च अछि जे वामसँ दहिन लिखल जाएबला लिपिक सृजनकर्त्ता ब्रह्मा छथि।

एहि लिपिक नाम ब्रह्मी लिपि छल आ से पाणिनी पूर्व व्याकरणाचार्य द्वारा स्वीकृत छल, मुदा पाणिनी व्याकरणक अनुरूप ब्रह्मी अशुद्ध अछि। से एहि लिपिक नाम ब्राह्मी पड़ल। पाणिनी अष्टाध्या आ अमसिंह अमरकोषमे लिपि आ लिबिक चर्च करैत छथि। पाणिनी पूर्व आचार्य यास्क अपन निरुक्तमे बहुत रास पूर्व आ समकालीन व्याकरणाचार्यक नाम गणबैत छथि। वर्णक गणना आधारित छन्द आ व्याकरणाचर्य सभक उपस्थिति अपरोक्ष रूपसँ लेखनकलाक उपस्थितिक आभास करबैत अछि। तीन हजार वर्ष पूर्व झेलम आ चेनाबक बीच गांधार (अखन ओतऽ यूसुफजई पठान निवास करैत छथि) इलाकामे दक्षक संघराज्य छल, एहि इलाकामे काबुल धार पच्छिमसँ आबि कऽ सिन्धु धारमे संगम करैत अछि। ओहि संगमसँ चारि माइल उत्तर लहुर गाम, जे पाणिनीक नानी गाम छल, मे पाणिनीक जन्म भेल, ओइ गामक नाम ओइ कालमे शलातुर रहैक। चीनी यात्री ह्वेनसांग (युआन च्वांग), सातम शताब्दीमे. एहि गामक विद्वान ब्राहमण व्याकरणाचार्यक चर्च केने छथि। माने परम्परा आगाँ-पाछाँ काएम छल।

जैनक भगवती सूत्र एहि **ब्राह्मी** लिपिकेँ नमस्कार करैत अछि।

लिपिक आधार- अक्षर, वर्ण आ मात्रा आ तकर साक्ष्य

ऋगवैदिक ऋचा वर्णवृत्तमे अछि, मात्रिक छन्दमे नहि। वार्णिक छन्दमे अक्षरक गणना होइत अछि।

छान्दोग्य उपनिषदमे अक्षर शब्द उल्लेख अछि दीर्घ स्वरक सेहो।

तैत्तरीय उपनिषदमे वर्ण आ मात्रा दुनूक चर्चा अछि।

ऐतरेय आरण्यकमे स्वर आ व्यंजन दुनूक चर्चा अछि।

पंचविंश ब्राह्मणमे सभसँ छोट दक्षिणा १२ कृष्णल आ सभसँ पैघ दक्षिणा ३,९३,०१६ कृष्णल सुवर्णक चर्चा अछि।

कौटिल्यक अर्थशास्त्र चूड़ाकर्म संस्कारक बाद लिपि आ अंकक प्रशिक्षणक निर्देश करैत अछि। राजाकेँ मन्त्रिपरिषदक संग पत्राचार आ गुप्तचरक कूटलिपिमे संदेश पठेबाक चर्च अछि। अर्थशास्त्र कहैत अछि जे लिपिकार तेजीसँ लिखबामे निपुण होथि, साफ-साफ लिखथि आ लेख पढ़बामे सेहो समर्थ होथि।

बौद्ध ग्रन्थ सुत्तंतमे अक्खरिका क्रीड़ाक चर्च अछि, जाहिमे अकासी अक्षर बनेबाक स्पर्धा रहैत अछि। बौद्ध भिक्षु लेल एहि क्रीड़ाक निषेध अछि मुदा विनय-पिटक लेखल-कला सिखबाक अनुमति बौद्ध-भिक्षुकेँ दैत अछि। कटाहक जातकमे जाली पत्र देखाकेँ ठकबाक चर्च अछि तँ महासुतसोम जातकमे तक्षशिलाक अध्यापक अपन पुरान शिष्यकेँ पत्र लिखै छथि। कण्ह जातक अक्खर (अक्षरक पालि-प्राकृत रूप) क प्रयोग करैत अछि। महावग्गमे अंक-शब्दक प्रशिक्षण आ कटाहक जातकमे शीतलपाटीक चर्चा अछि जाहिपर लिखब सिखाओल जाइत छल। ललितविस्तर बुद्धक लिपिशाला, हुनकर शिक्षक विश्वामित्र, चाननक शीतलपाटी आ सोनाक लेखनीक चर्चा करैत अछि, एतऽ ६४ टा लिपिक वर्णन अछि जतऽ राजनैतिक सीमाक हिसाबसँ अंगक लिपि, मगधक लिपि वङ्गक लिपिक चर्च अछि मुदा विदेहक लिपिक स्थानपर पूर्व विदेह लिपि लिखल अछि। एकर कारण अछि जे वज्जि विदेहपर अधिकार कऽ लेने छल आ वज्जि आ विदेहक लिपि संयुक्त रूपसँ विदेह लिपि छल। अजातशत्रु तेसर शताब्दीमे वज्जिकेँ जीति मगधमे राजनैतिक रूपसँ मिला लेलन्हि, मुदा सांस्कृतिक रूपसँ ओ अपन अस्तित्व बचेने रहल। ललित विस्तर तेसर शताब्दीक ग्रंथ थिक आ ताहि द्वारे ओ मगध लिपिक संग पूर्व विदेह लिपिक वर्णन करैत अछि। ई प्रवृत्ति बादमे गुप्तकालक तीरभुक्ति (तिरहुत) प्रान्तमे सुदृढ़ रूपसँ सोझाँ आएल आ पूर्वविदेह लिपिक नामकरण भेल तिरहुता। ललितविस्तरमे बाल अवस्थामे बुद्ध-सिद्धार्थक वर्णमाला प्रशिक्षणक चर्च अछि आ ओहिमे वार्णिक अक्षरक काँति आ अलंकरणक योजनाक चर्च अछि जे ब्राह्मी लिपिक अछि।

उतरबरिया सेमेटिक वर्णमाला आ ब्राह्मीक बीचमे अलेफ् आ अ, बेथ् आ ब्, गिमेल् आ ग, दालेथ् आ द, हे आ ह, वाव् आ व, जाइन् आ ज, चेथ् आ घ, थेथ् आ थ, योध् आ य, काफ् आ क, लामेध् आ ल, मेम् आ म, नुन आ न, सामेख आ स, आइन् आ ए, फे आ प, साधे आ च, कॉफ् आ ख मे अद्भुत समानता अछि आ मानवक मस्तिष्क कोना दूर रहलोपर एक्के रङ अछि तकर द्योतक अछि। बूलरकेँ भ्रम भेलन्हि जे ब्राह्मी लिपि उतरबरिया सेमेटिक लिपिक अनुकरण केलक। ई ओ काल छल जखन हड़प्पा आ मोहनजोदाड़ोकेँ सेहो मेसोपोटामियाक आउटपोस्ट ताधरि मानल जाइत जाधरि भारतक आन भागमे उत्खनन नहि भऽ गेलै आ हड़प्पा संस्कृतिक देशज रूप प्रकट नहि भऽ गेलैक (हर्मन कुल्के आ दीतमार रोथरमण्ड, अ हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, २००४, पृ. १९, मुदा ओ पृ.५४ पर अखनो भ्रममे छथि जे खरोष्ठी अरामेइक लिपिक आधारपर बनल जे तखन फारसक आधिकारिक लिपि छल। अरामाइकमे मात्र २२ टा अक्षर छैक, स्वरक अपूर्णता अछि, ह्रस्व-दीर्घक भेद नहि अछि, स्वरक मात्राक सेहो अभाव अछि से ओ भारतीय भाषा लेल अयोग्य अछि, खरोष्ठीमे ई सभ गुण अछि, संगे दीर्घ-गुण-वृद्धि ध्वनि लेल भेदक चिन्ह सेहो अछि, प्राकृत अभिलेख लेल ई ब्राह्मी सन सक्षम छल, मात्र दहिन-वाम रहने ई विदेशी नहि भऽ जाएत। खरोष्ठी दहिनसँ वाम लिखल जाइत अछि मुदा एकर वर्णमाला भारतीय अछि, दहिनसँ वाम लिखल जएबाक कारण किछु विद्वान

लोकनिकेँ एहिमे फारसक प्रभाव देखाइ पड़ैत छनि, मुदा सत्य तँ यएह अछि जे ब्राह्मी आ खरोष्ठी लिपिमे एक्के वर्णमालाक प्रयोग भेल अछि।)। जेना सङीतमे भारतक सारेगामा क सात टा सुर आ पश्चिमी ऑक्टेव (ओत्तहु साते टा छैक, ऑक्टेव माने आठम सँ पुनः पुनरावृत्तिक मात्र ई प्रतीक अछि) ई सिद्ध करैत अछि जे भाषा कोनो हुअए कान वएह छैक मनुक्खबला। ब्रेल आ इण्टरनेशनल फोनेटिक अल्फाबेट ध्वनिक संग मस्तिष्क (ब्रेल) क सेहो संप्रेषण मोटामोटी एक्के हेबाक प्रमाण दैत अछि (देखू अनुलग्नक) से पहिने तँ किछु विद्वान एकरा बैक्ट्रो-पालि आ आरियानो-पालि विदेशी लिपि बुझि कऽ कहलन्हि, कनिंघम एकरा गांधारी कहलन्हि, मुदा ललितविस्तर आ चीनक विश्वकोष फा-वां-शु-लिनक प्रमाण अकाट्य छल आ ओतऽ वर्णित एकर नाम खरोष्ठी सर्वमान्य भेल। चीनी साक्ष्य ब्राह्मीक उद्भव ब्रह्मा द्वारा आ खरोष्ठीक सर्जन ब्राह्मण आचार्य खरोष्ठ द्वारा भेल मानलक अछि। तेसर शताब्दीक बाद अभिलेख संस्कृतमे लिखल जाए लागल, प्राकृतक प्रयोग बन्द भऽ गेल। प्राकृत लेल ब्राह्मी आ खरोष्ठी दुनू सक्षम छल मुदा संस्कृतक सन्धियुक्त अलंकृत क्लिष्ट शब्द, पद आ समास लेल मात्र ब्राह्मी। से एक बेर जे एकर प्रयोग बन्द भेल तँ प्राकृतसँ निकलल भाषा सभ लेल सेहो ब्राह्मीसँ निकलल लिपिक प्रयोग प्रारम्भ भऽ गेल।

ब्राह्मीक एरागुडीक अशोकक अभिलेख २६ पाँतीमे अछि। वाम दहिन लेखनक पूर्ण रूपसँ पालन नहि भेल अछि, ओना बेशी पाँती वाम-दहिन अछि। किछु वाम-दहिन पाँतीमे किछु अक्षर वाम-दहिन तँ किछि दहिन वाममे अंकित अछि, किछि ऊपर नीचाँ सेहो अछि। ८ पाँती दहिन-वाम अछि। एक पाँतीमे मात्र एक अक्षर अछि। से दहिन वाम रहने विदेशी प्रभाव सिद्ध नहि होइत अछि। खरोष्ठी सन जापानी सेहो दहिन वाम लिखल जाइत अछि।

ललितविस्तरक प्रसंग सेहो इशारा करैत अछि जे व्याकरणक विशेषताकेँ पूर्ण करब ब्राह्मीक उद्देश्य छल, मुदा ई आग्रह ऋगवेदसँ अर्थशास्त्र तक अछि, आ भारतीय परिप्रेक्ष्यमे ब्राह्मी आ ओहिसँ निकलल लिपि ओहि आग्रहकेँ पूर्ण करैत अछि, आ एकर परिष्कृत रूपकेँ कृत्रिम नहि वरण् स्वाभाविक मानल जेबाक चाही। से किछु विद्वान ब्राह्मीक व्याकरण सम्बन्धी आवश्यकताकेँ पूर्ण करए लेल भेल परिष्करणकेँ विदेशी अक्षरकेँ भारतीय प्रारूपमे आनब कहलन्हि अछि (बूलर, ऑन द ओरिजिन ऑफ द इण्डियन ब्राह्मी अल्फाबेट, १८९८), मुदा कनिंघम एकरा भरतीय चेन्ह सभसँ बहार भेल मानलन्हि अछि (कनिंघम, कोरपस इन्सक्रिप्शनम इण्डिकेरम, खण्ड-१)।

ब्राह्मी लिपिक अतिरिक्त ६३ टा आर लिपिक चर्च ललित विस्तरमे अछि। सम्पूर्ण यूरोपमे ग्रीस आ रसियन कॉमनवेल्थ छोड़ि कऽ (एहि दुनू ठाम अलग-अलग लिपि छैक) सम्पूर्ण यूरोपमे रोमन लिपिक प्रयोग होइत अछि। से सम्पूर्ण यूरोपमे आइ मात्र तीनेटा लिपि छैक। जँ रूसकेँ यूरोपसँ हटा दी तँ ओ भारतक

ISSN 2229-547X VIDEHA

बराबरे अछि। भारतमे सभ प्रान्तमे मोटामोटी अलग-अलग लिपि अछि, मुदा तमिलक अतिरिक्त सभमे अल्फा-सिलेबिक (अक्षर आ संयुक्ताक्षरक) निर्वहण मोटामोटी एके रङ होइत अछि। एकर कारण छापाखानाक देरीसँ आगमन मात्र अछि।

ब्राह्मीक मानक रूप आ ओकर क्षेत्रीय शैली

ब्राह्मीक मानक रूप छल आ तकर प्रमाण अछि अशोकक अभिलेख। अशोक १४म प्रस्तर-अभिलेखमे कहै छथि जे अभिलेख-आलेखनक गुण-दोष लिपिकरक जिम्मा अछि, आ सएह कारण छल जे अशोकक अभिलेखमे अक्षर आ ओकर आकारमे समरूपता अछि आ ईहो प्रमाणित होइत अछि जे अशोकक काल धरि ब्राह्मीक मानक रूप आबि गेल छल। जे भेद अछि से क्षेत्र अनुसार, लिपिकरक लेखनक अनुसार आ लेखन उपकरणक विविधताक अनुसार अछि, आजुक हिसाबेँ जँ असमतल पाथर, खोह आदिपर लिपिकार द्वारा पुरातन उपकरणसँ जतेक असमरूपता आएल अछि से मानक ब्राह्मीक स्थिति आर सुदृढ़ करैत अछि। पंकचुएशन संस्कृतमे रहबे नहि करए से प्राकृतमे सएह परम्परा आगाँ बढ़ल। विराम चिन्हक व्याकरणगत आवश्यकता ब्राह्मीक लिपिकारकेँ ओही कारणसँ आवश्यक नहि लगलन्हि।

कुटिल लिपि

कुटिल लिपि

;

उत्तर भारत ६अम शताब्दी सी.ई.

;

पच्छिम (शारदा) ; पूब (किराँत, रञ्जना, भुँजिमोल, तिरहुता, नेवारी, तिब्बती, नन्दीनागरी आ देवनागरी।

कुटिल लिपिक विशेषतासँ प्रेरित नामकरण- न्यूणकोण वर्णमाला (बूलर, इण्डियन पालियोग्राफी, प.६८), नह शीर्ष वर्णमाला (टॊड, एनल्स ऒफ राजस्थान, पृ. ७००), भारयीय नाम सिद्ध मातृका,काश्मीर आ वाराणसीमे प्रचलित (अल-बेरुनी, भारत, पृ. १७३, सचाउ), देवल प्रशस्तिमे एकरा लेल कुटिलाक्षरणी प्रयुक्त भेल। आदित्यसेनक अफसड़ पाथर-अभिलेखमे एकर नाम विकटाक्षरणी अछि। विक्रमांकदेव चरितमे कुटिल लिपिमे सिद्धहस्त कायस्थ लोकनिक चर्च अछि।

जेम्स प्रिंसेप, जे १८३७ ई. मे अशोकक अभिलेखकेँ पढ़ने छलाह, एकरा लेल कुटिल लिपिक नामकरणक अनुशंसा केलन्हि (जर्नल ऑफ एशियाटिक सोशाइटी ऑफ बेन्गाल, पार्ट-५ पृ. ७७८)।

कुटिल लिपिक विकासक की कारण छल? पहिल तँ ई छल जे लिखबाक करची-कलम आ मोशिक प्रयोग संग नव उपकरण आ पुरान उपकरणक नव प्रयोगसँ अलंकरणयुक्त अभिलेख लेखनक इच्छा जागृत भेल, लटपटौआ लिखबाक आग्रह सेहो एहि लेल कारण बनल। एहिसँ उपरका भाग फन सन बनि गेल कारण मोशि ढबकि जाइ, पाछाँ नाङरि आ पद-चिन्ह सेहो सुस्पष्ट भेल। अलंकरणक प्रवृत्तिसँ वर्ण वृत्ताकार आ चिक्कन स्वरूप लेबऽ लागल। अलंकारक कारणसँ एकर नाम पड़ल सिद्धमातृका।

कुटिल लिपिक अभिलेख भेटल अछि, कौशाम्बीक माटिक सदण्ड सप्तदीपक (ई मोन पाड़ैए मौर्य कालक बौद्ध सप्ताक्षरी (प्रसिद्ध मंत्र) कूटाक्षरक), मंदसौरक यशोधर्मनक अभिलेख, ईशानवर्माक हरहा पाथर-अभिलेख, सर्ववर्मनक असीरगढ़ मोहर-अभिलेख, अनन्तवर्मनक बराबर आ नागार्जुनी खोह अभिलेख, ईश्वर वर्मनक जौनपुर पाथर-अभिलेख, शाहपुरक प्रतिमापर अभिलेख , मन्दागिरि अभिलेख, जीवितगुप्त द्वितीयक देववार्णार्क स्तम्भ अभिलेख, हर्षवर्धनक मधुबन आ बाँसखेड़ा ताम्रपत्र-अभिलेख, हर्षवर्धनक सोनीपत मोहर-अभिलेख।

तिरहुता

तिरहुता लिपिक खोजमे आब भारतक पूब भागमे आउ।

पूब भागक ब्राह्मीक बाद किराँत, रञ्जना, भुँजिमोल, तिरहुता, नेवारी, तिब्बती, नन्दीनागरी आ देवनागरीक प्रयोग भेटैए।

किराँत लिपिमे लिम्बू भाषा आदि लिखल गेल। ई सभ लिपि वामसँ दहिन दिश लिखल जाइए मुदा रञ्जना लिपि कूटाक्षरमे ऊपरसँ दक्षिण लिखल जाइए। नागरीक रूप नन्दीनागरीक प्रयोग मुदा बेशी मध्य दक्कन आ दक्षिण भारतमे भेल आ माध्वाचार्यक द्वैत दर्शनक संस्कृतमे लिखल पाण्डुलिपि नन्दीनागरीमे अछि।

विदेह, अंग, वज्जि आ नेपालक तराईमे संस्कृत आ मैथिली दुनू तिरहुतामे लिखल जाइ छल आ एहिमे सभ विषय, जेना साहित्य, गणित, धर्म, दर्शन लिखल जाइ छल आ पाता (सुख-दुख दुनुक) चलै छल आ चिट्ठी-पत्री अहीमे होइ छल। कैथीक प्रयोग हिसाब-किताब, खाता-खतियान लेल होइ छल आ मुख्य रूपसँ कायस्थ एकर प्रयोग करै छला। मुदा मिथिलाक कर्ण-कायस्थक पञ्जी मात्र तिरहुतामे लिखल गेल (मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण- मेजर विनोद बिहारी वर्मा, १९७३)। एकर विपरीत मैथिल ब्राह्मणक पञ्जीक

ISSN 2229-547X VIDEHA

किछु फील्ड-वर्क आ पत्रचार कैथीमे भेल (अनुलग्नक) मुदा एतहु पञ्जी मात्र तिरहुतामे लिखल गेल। ई १४म शताब्दी सी. ई. (कौमन एरा) सँ शुरू भऽ कऽ २०म शताब्दी सी.ई. धरि रहल जखन देवनागरीमे पञ्जी लिखब प्रारम्भ भऽ गेल।

किछु नव आविष्कृत लिपि

लिपिक अनुकरणसँ साइन (इशारा) भाषा वधिर लेल **१८म शताब्दी** सी.ई. (कौमन एरा) मे वधिर स्कूलमे फ्रांसक चार्ल्स मिशेल देल एप्पे द्वारा आविष्कृत भेल। ई एहेन लिपि अछि जे कागतपर नहि वरण् वायु माने वातावरणमे बनाओल जाइत अछि। अन्ध-दिव्यांग लेल ब्रेल लिपि **१९म शताब्दी**मे फ्रांसक लुइ ब्रेल आविष्कृत केलनि। **२०म शताब्दी**मे रघुनाथ मुर्मू संथाली भाषा लेल ओल-चिकी लिपिक आविष्कृत केलनि।

अनुलग्नक १: कैथी लिपिमे मैथिलीक किछु उदाहरण (साभार जीनोम मैपिंग आ जीनियोलोजिकल मैपिंग, मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध भाग-१ आ २ , श्रुति प्रकाशन, २००८, २००९)

अनुलग्नक २: मिथिलाक कर्ण कायस्थक तिरहुता लिपिमे लिखल किछु पात (साभार मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण- मेजर विनोद बिहारी वर्मा, १९७३)

अनुलग्नक ३: लर्न मिथिलाक्षर- गजेन्द्र ठाकुर

अनुलग्नक-१-२-३ लिंक

(भाग-२ अगिला अंकमे)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

ISSN 2229-547X VIDEHA

**डा. सुभाष चन्द्र झा**

।।वैद्यनाथ मिश्र "यात्री "क साहित्य यात्रा।।

बौक बधिर वाचाल मनुज गंभीर ज्ञान गुण स्नातक

मूक पशु धरि भाव प्रेक्ष निश्नात होइछ सरीसृप जातक।।

वैधनाथ मिश्र "यात्री "क जन्म ओहि काल खण्ड जून 1911ई.में भेल जखन देश परतंत्रताक पीड़ा सं आजिज मुक्त हेवाक लेल छटपटा रहल छल। अनाचार अत्याचार सं दग्ध जनमानस निर्णायक संघर्ष पर उतारू छल, अंग्रेजी सत्ता के उखाड वाक प्रण लय गाम गाम शहर शहर आंदोलन तीव्रता
सं पसरि रहल छल, ओहि प्रभाव सं हिमालयक तराई में बसल भारतक गौरवशाली सभ्यताक प्रतीक रहल मिथिला सेहो अ छूत नहिं रहल, बाढ़ि अकालक जांत में पिसाइत पिसाइत मिथिलाक गौरवशाली समृद्ध अतीत मैलछौन भ गेल छल। सामं तवादी परिपाटी गरीबक जीवन दोजख कय राखि देने छल। अन्न अन्न लै रकटल प्राण शरीर के जीर्णशिर्ण कमजोर अश क्त कय राखि देलक। अभावक कारणें अनेको कुप्रथा जन्म ल चुकल छल, बालविवाह
बहुविवाह छुआछूत नारी उत्पीड़न आदि ओहि समयक सामाजिक विवशता सं अंकुरित भय समाजक लेल कोढ़ बनि समाज के निम्नतर स्तर पर आनि पटकि देलक।

भेदभाव जातिवाद में मिथिला दिन पर दिन अपन सम्भ्रान्त
अतीत सं विलग होइत गेल। जाहि मिथिला मध्य सम्पूर्ण भारतवर्षक चटिया लोकनि विद्याध्ययनक लेल सुदूर प्रांत सं चलि ज्ञानार्जन कय पुनः स्वपरान्त गमन करैत छलाह आ मिथिलाक विद्वान सं प्राप्त ज्ञान के प्रकाश सर्वत्र प्रकाशित करैत छला ह। ओ मिथिला अशिक्षा गरीबीक दलदल मे धंसल चल गेल। एहन विकट संक्रमण काल खण्ड में वैद्यनाथ मिश्र "यात्री "क जन्म प्रतिकूलताक अनुकुल स्वाभाविक प्राकृतिक घटना क्रम लगैछ, कारण जेहन कठिन सं कठिन आबोहवा हो प्रकृति ओ हि वातावरण मे सार्थक पादप वा लताक लेल माकुल वातावरण तैयार क दैछ। शीत रौद छांह नमी शुष्क ठरल जबकल मृ दा उर्वर सभ तरहक भूमि स्थल में जैव तत्व सक्रियता देखल जाइछ, गरीबी में जन्म लै, मैटुअर भय पिता सं उपेक्षित समा ज सं

ISSN 2229-547X VIDEHA

उपेक्षित भय वैद्यनाथ मिश्र "यात्री" जीवन यात्राक प्रारम्भ
कठिन दौर सं शुरू भय गेल। ज्येष्ठ मासक पूर्णिमा मेघ मे बादलक प्रताड़ना सहि अपन सौम्य प्रकाश के धरती तक पहुँचा क रहैछ तहिना मातृक सततलखा में जन्म लै यात्री तरौनी मधुबनी आवि पिता गोकुल मिश्रक संरक्षण में कहुना पालल पोषल जाय लगलाह ।शिक्षा दीक्षाक संग संस्कृत
पंडित पिताक अध्यवसाय पंडिताई में सेहो डैन पूरैत अग्रसर होइत रहलाह। येनकेन प्रकारेण यायावार यात्री शिक्षा यात्रा क्रम में कलकत्ता बनारस आदि शहर में अपन अध्ययन पुर्ण कयल। बहुभाषाविद् यात्री संस्कृत पाली बंगला हिंदी मैथिली आदि में अनेको रचना कयल। पत्रकारिता कय घुमक्कड़ी जीवन के अपना बौद्ध भिक्षु बनि श्रीलंका आदि देशक यात्रा कय सामाजिक मनोविज्ञान के अपन लेखनीक आधार बनाओल ।

कवि यात्री दवल कुचलल अस्पृश्यक आवाज बनि ललकार लगौलनि समतावादी विचार के जगौलनि, ऊंच नीचक भेद के मेटौलन्हि, समाज में पसरल कुरीति के ऐना देखा मानवीय संवेदना के जगौलन्हि, विधवा विलाप, कविक स्वप्न, मुखर आवाज़ बनल अवला लाचार ओ गरीबक लेल।

प्रगतिवादी विचारधाराक पोषक अन्वेषक कुपोषण ओ भुख के अद्भुत रूपें चित्रित कयने छथि, यथा-
मकड़ाक जाल सं बेधल ओय चुल्हाक मुँह, थारी गिलास सब बेच खा गेलय ऊंह।। कवि यात्री क रचना बहुआयामी सम सामयिक परिस्थितिक दर्पण थीक। मैथिली में पत्रहीन नग्न गाछ मिथिलाक नग्न गरीबीक दस्तावेज थीक। और वर्तमान परिपेक्ष में ओहि सं सबक लेबाक नीक उपक्रम। साहित्य अकादमी सं पुरस्कृत उपरोक्त संग्रह समीचीन विवेचनात्मक तथ्य के सामने स्पष्ट करैछ। चित्रा सामाजिक परिस्थितिक भयावहता के सामने रखैछ। आरो अन्य रचना बलचनमा पारो सामाजिक विषमताक गवाही दै यात्रीक प्रगतिवादी सोच ओ अन्याय पूर्ण मानवीय दोष पर प्रहार करैत दृष्टिगोचर होइछ।

।।इति।।

-डा. सुभाष चन्द्र झा, एम .ए. पी. एच. डी (मानविकी मैथिली) बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर.

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

ISSN 2229-547X VIDEHA

मुन्ना जी

मोकाम दिस (**मैथिली बीहनि कथा संग्रह**)

"बीहनि कथा " शब्द सृजनहार श्रीराज कें सादर समर्पित

बीहनि कथा-- मानकीकरण ओ तुलनात्मक पक्ष

""

मैथिली कथा साहित्य मूलत: संस्कृत भाषा साहित्य सं अनुदित भ'अपन पएर पसारने छल।एकर बीजारोपन चन्दा झा द्वारा विद्यापतिक 'पुरूष परीक्षा' सं भेल छल।कालान्तर मे मैथिली कथाकार बाङला कथा माध्यमे पाश्चात्य कथासाहित्य सं परिचित भेला।तत्पश्चात मैथिली कथा लेखनक कथ्य,शिल्प आ विषय परिमार्जित भ' मैथिली कथा साहित्य के नव दृष्टि देलक आ ओ संस्कृतक शब्द ,कथा/गल्प नामे लिखाइत रहल।पछाति प्रो. रमानाथ झा सदृश्य

विद्वान/आलोचक ,अंग्रेजीक प्रभावे एकरा अंग्रेजी मे Short Story आ ओकर अनुवाद ' लघुकथा कहि संबोधित केलनि।तहिया सं इ कथा/ गल्प ,रचना त' ओही नामे होइत रहल मुदा विधागत ' लघुकथा ' (Short Story) विधाक अन्तर्गत मूल्यांकित होइत रहल।आ ताहि परिणामे मैथिलीक सब संग्रह पर अंग्रेजी मे Collection of Short Story अनिवार्य रूपें लिखल भेटत।

तकर पछाति मैथिली साहित्यक इतिहासकार लोकनि सेहो कथा/गल्प नामक रचना कें लघुकथा विधाक श्रेणी मे राखि व्याख्या . करैत रहलाह।" संप्रति गल्प वा लघुकथा,उपन्यास सं अधिक लोकप्रिय भेल जा रहल ऐछ।तकर प्रबल कारण पाठक वर्ग मे क्रय शक्तिक क्षीणता वा पलखतिक अभाव, से नै जानि।" --डॉ. जयकान्त मिश्र-मैथिली साहित्यक इतिहास(प्रकाशक- साहित्य अकादमी)ऐ फरिछओठक पछाति अंग्रेजी साहित्यक

विधाक पृष्ठभूमि मे ओहि विधा परिवारक अंग भ' स्थापित भेल। आगू ओकरा आओर फरिछबैत दुर्गानाथ झा श्रीश लिखै छथि--" आइ मैथिली साहित्यक एक मात्र उपलब्धि थिक लघुकथा(Short Story) पूर्वक कथाकार लोकनि गल्प आ उपन्यासक बीच शिल्पगत अन्तर नै बुझैत छलाह।मुदा आब इ स्पष्ट ऐछ।जाहि सं लघुकथा(कथा/गल्प नामे) विधागत स्वतंत्र परिचिति बना पओलक ऐछ।"--मैथिली साहित्यक इतिहास-दुर्गानाथ झा श्रीश।"

हमरा मैथिली प्रतिष्ठा वर्गक छात्र रहने मैथिली साहित्यक इतिहासक अध्ययनक अनिवार्यता छल। एहि अध्ययनक क्रमे मैथिली कथा के विधागत ' लघुकथा(Short Story)बुझबाक अवगति भेल। हम आश्चर्य चकित रही अग्रज सबहक हिन्दी लघुकथा विधाक मैथिली अवतरणक रूपें अंधानुकरण पर, ई की ?पहिने सं जे विधा विद्यमान आ स्थापित ऐछ(कथा/गल्प नामे) ' लघुकथा(Short Story)।तहन ओइ विधाक दोहरीकरणक की खगता ?माने पिता आ पुत्रक एकहि नामे पुकार ! जहन की दुनूक चरित्र,प्रकृति आ क्रियाकलाप एक दोसराक विपरीत। फेर नकल वा मिझ्झरक अज्ञानता किएक ? ओही अज्ञानता वा अंधानुकरण सं पार पएबाक आ विधाक शुन्यता के भरवाक लेल अवतरित भेल बीहनि कथा विधा (1995)।

सहयात्री मंच ,लोहना(मधुबनी)द्वारा भेल साहित्यिक बैसार मे सामूहिक रूपें सर्वसम्मति सं एहि विधाक अवतरण भेल छल। ऐ विधाक नाम की राखल जए ताहि पर बहसक पछाति श्री राज द्वारा ताकल नाम-" बीहनिकथा" पर सर्व सम्मति सं स्वीकृति द'आगू बढ़ाओल गेल।आ तहिया सं मैथिली कथा साहित्यक दू गोट विधा-पहिल,लघुकथा(Short Story)आ दोसर " बीहनि कथा(Seed Story)चलन सारि मे रहि गेल।

25 बरख सं कछुआ चालि सं चलैत बीहनि कथा विधा साहित्यिक छद्म खरहा सं टपि अपना के विजेता कहेबाक पात्रता आब हासिल क' लेने ऐछ।जन्मक पछाति ठेहुनिया मे कतेको के सैद्धांतिक पटकनिया दैत डेगा डेगी बढ़' लागल। तकर पछाति एकरा दबेवा/माटि मे गोड़बा लेल किछु तथाकथित/स्वघोषित विद्वान सक्रिय भ' गेला। फलत:एकर चालि बाधित होइत ठमकि सन गेल। सोझां मे ' एकला चलो रे' के उघैत करीब एक दशकक यात्रा एकरा हेरेबा लेल वेश रहल।2010 मे पुन: इ कान्ह उठेलक।आ ताहि मे पछिला सं जेरगर समूह नव आँखि-पाँखिक संग अंगेज पुन: सोझां आनि थिर केलनि।' विदेह , इ पाक्षिक' बनल राजपथ आ सारथी भेलाह संपादक-.गजेन्द्र ठाकुर आ सहायक संपादक-उमेश मण्डल। ऐ एक दशकक भीठ

पड़ल साहित्यिक जमीन पर श्री राजक ' बीहनि कथाक साहित्यक बीराड़क बीहनि सं रोपनि भेल।तकरा हरियरी अनलनि गाम-घर, पत्रिकाक संपादक - शःरी रामभरोस कापड़ि भ्रमर।आ ऐ तरहें श्री राज भेलाह' वात्सल्य ' बीहनि कथा(2003)सं एकर पहिल प्रकाशनक स्वामी।

बीहनि आ कथा शब्दक उत्पत्ति

-------------------- --------------------

संस्कृतक ' ब्रीही ' शब्दक अर्थ होइछ बीज आ मैथिली मे बीहनि/बीहन/बीहैन सेहो ओही शब्दक मूलार्थ मे निहित।--प. भवनाथ झा

कथा-संस्कृतक कथ् धातु सं बनल।जकर तात्पर्य होइछ- कहब वा वर्णन करब।

बीहनि कथाक अर्थ आ परिभाषा

बीज/बीजम संस्कृत शब्द थिक।यथा-यज बीजै:सहस्त्राक्ष -महाभारत

कथा सेहो संस्कृत शब्द थिक।यथा-कथासरित्सागर ।

कथाक मूलत: छ तत्त्व संग निर्मित होइछ।

01-कथावस्तु-कथाक संरचनात्मक रूप कथानक अथवा कथावस्तु कहाइछ।एकरा मे चारि प्रमुख स्थिति होइछ-आरम्भ, आरोह,चरम आओर अवरोह।

02-चरित्र चित्रण-उपपस्थित पात्रक गुण-दोषक वर्णन।रिजर्व चित्रण कहाइछ।

03-संवाद-पात्रक मनोदशाक वर्णन में प्रयुक्त शब्द।

04-देश काल-स्थितिक वास्तविक विवेचना लेल तैयार वातावरण।

05-उद्देश्य-कथा सृजन में उदघाटित मूल वा सार्थक पक्ष।

06-शैली-प्रस्तुतिकरणक कलात्मक विश्लेषण।

अर्थात् बीहनि कथा पूर्णत: संस्कृत शब्दक उत्पत्ति थिक।जेना- लघुकथा

मुदा साहित्यिक विधाक रूपें जाँची त' इ विधा मूलत:स्वतंत्र आ पूर्ण रूपे मैथिली साहित्य मात्रक विधा थिक।आयातित/ नकल नै।

बीहनि माने बीज/बीया।जाहि मे विकास करबाक गुण निहित होइछ।मुदा ओ अविकसित रहैत ऐछ।समय अएला पर विकसित होइत ऐछ।ओकरा मे एक सं अनेक होएबाक गुण रहबाक चाही।बीहनि कथा-एहेन कथा,जे अनेक कथा(कथा/उपन्यास)के जन्म देबाक क्षमता राखए ओ बीहनि कथा भेल/हएत।अन्यथा नै।

तें बीहनि कथा मे निष्कर्ष नै हेबाक चाही।---डॉ. भवनाथ झा

बीहनि कथा विधाक नामकरण कर्ता श्री राजक मतानुसार--

बीहनि कथा,ओइ बीयाक समान ऐछ जकरा मे झमटगर/पूर्ण गाछक संभावना हो।मुदा ओ गाछ पीपर/पाकैड़ नै,पौध रूप मे हो।परञ्च बोनसाइ नै।

पौध रूप सं तात्पर्य जे कथ्य/शिल्पें गसल मुदा शब्दक संख्ये सए सं डेढ़ सए धरि हुअए।मुदा बन्हन मे बान्हल नै।

रचनान्त निकसगर(निस्तार देने)नै हुअए।निष्कर्ष पाठक पर।

ISSN 2229-547X VIDEHA

बीहनि कथाक चर्चित आ लोक प्रिय कथाकार, संपादक आदरणीय घनश्याम घनेरो ऐ विधा के परिभाषित करैत कहै छथि---

कोना बुझबै जे इ रचना बीहनि कथा भेलै:--

(क)शब्दक मानक औसत सव सौ हो

(ख) विषय मारक ,आ सोचबा पर विवश करैत हो।

(ग) कथ्य एहेन,जेना लगैत हो कथा/उपन्यास वा कोनो गद्यक सार हो।

(घ) कथा मे निष्कर्ष नै हो।

कथा साहित्यक सशक्त हस्ताक्षर श्री राजकुमार मिश्र जीक विचारें---

(क) आकारगत छोट सं छोट हो

(ख) कथ्ये फरिछएल आ गसल हो

(ग) संपूर्ण गद्यक संभावना निहित हो

(घ) ऐ सं इतर, अव्यवस्थित रचना फोंक हएत।ओ बीहनि कथा नै।

बीहनि कथा विधाक मानकीकरणक आधारभूत इकाइ

""""""""""""""""""""""""""""",",,,,,,",",,,,,,,,,,,",",,"","""""""""""

गद्य साहित्य, मूलत: कथा विधाक मानकता तयकरणक आधार अंग्रेजी साहित्य ऐछ।अंग्रेजी साहित्यक अनुसार विश्व भरिक कथा ,अंग्रेजीक Flash fictionक अन्तर्गत निहित ऐछ।इ फ्लैश फिक्सन छ: खण्ड मे विभाजित ऐछ जकर तेसर खण्ड टेलब्रा(Tellbra)क अन्तर्गत मैथिलीक बीहनि कथा विधाक नियामकता सन्निहित ऐछ।

फ्लैश फिक्सन(टेलब्रा)पर आधारित बीहनि कथा मापनक महत्वपूर्ण बिन्दू :-

01-कथ्य/शिल्पें पुष्ट जाहि कथाक न्यूनतम शब्द स. 20 आ अधिकतम 150 हो।

02-कथा साहित्यिक मानकताट परिपालक हो।यथा कोनो संस्मरण वा शब्द संग्रह मात्र बीहनि कथाक श्रेणी मे नै राखि सकैछ।

03-कथा,एकटा बीजक कथाक प्रतिदर्श हो।अर्थात एहेन कथा जाहि सं कथा/उपन्यास आदिक सर्जनाक संभावना प्रबल हो।

04कथा, निकस पर जा स्थिर नै हो। अन्त खूजल मुदा भावपूर्ण हो।

05-संपूर्ण कथा कोनो संदेशप्रद वा सकारात्मक उद्देश्यक हो।शब्दक स्थूलकाय मात्र नै।

उपरोक्त मानकता पर ठाढ़ रचना बीहनि कथा विधाक रचनाक रूपें अपन जग्गह पेबा मे सक्षम भ' पाओत।तकर पहिल मूल्यांकन लेखकक,पछाति संपादक ओ आलोचकक हाथ ऐछ।

"कोनो नव सफलता हासिल करवा लेल पुरान मे पैस' पड़त।,खंघार'पड़त।तहन परिमार्जित फल सोझां आओत।जे भविष्यक नव बात गढ़ि मोकाम धरि ल' जएबा मे सक्षम बना पाओत।'

एहि तरहें मैथिलीक लघुकथा विधा(कथा/गल्प)नामे लिखाइतक पछाइत बीहनि कथा विधा वैश्विक कथा मापदण्डें एकटा नव प्रतिमान गढ़ि,मैथिली साहित्य मे मैथिलीक अपन एक मात्र विधाक रूप मे स्थापित भेल।इ कोनो आन आयातित/नकल,विधाक विधान्तरण वा नामान्तरण नै।स्वयं मे मानक स्वतंत्र विधा हेबाक परिचिति कायम केलक।

एहि प्रकारें मैथिली कथा साहित्यक दू टा स्वतंत्र विधा अपन अस्तित्व कायम क' रखने ऐछ।पहिल-लघुकथा (Short story)जे कथा/गल्प नामे लिखाइछ।ठीक ओहिना जेना कि अंग्रेजीक Poetry,मैथिली मे 'काव्य' नामक विधान्तर्गत-गीत,गजल,,कविता, हाइकु,क्षणिका आदि स्वतंत्र नामे/क्रियाकलापें/चारित्रिक गुणे अपन- अपन परिचिति बनौने ऐछ।मुदा विधागत सबटा काव्य परिवारक अंश वा अंग थिक।

ISSN 2229-547X VIDEHA

दोसर-बीहनि कथा(Seed Story)

उपरोक्त दुनू विधा मध्यआओर कोनो वैध/अवैध विधाक लेल जग्गह वाँचल नै ऐछ। मुदा लघुकथा नामे बलधकेली मे हिन्दी लघुकथा विधाक नकल मैथिली अवतरण के घोसियेबाक असफल प्रयास ठाम ठीम क' मैथिली साहित्य के उकरू बनेबाक षडयंत्र जारी ऐछ।इ भ्रम वा द्वन्द ऐ द्वारे भेल जे किछु मैथिली रचनाकार लघु कथा माने आकारे छोट कथा बूझि नकल करैत रहलाह।ध्यातव्य महत्वपूर्ण बात जे लघुकथा एकटा शब्द मात्र नै,ओहि नामक एकटा स्वतंत्र विधा थिख।जे मैथिली मे अदौ काल सं कथा/गल्प नामे लीखाइत पहिने सं स्थापित ऐछ।आब तहन विचार करी मैथिली सं इतर हिन्दी भाषा साहित्यक अपन विधा " लघुकथा "क मैथिली अंधानुकरण पर।

कोनो व्यक्ति,विषय,बौस्तक गुणक अनुसरण/अनुकरण बेजए नै।मुदा अंधानुकरण कतेक उचित ?

मैथिली साहित्य मे विद्यमान " बीहनि कथा " विधा सं इतर सब विधा कोनो ने कोनो अन्य भाषाक विधा सं आयातित ऐछ।मुदा जत' सं आयातित भेल,ओइ मे आ मैथिली मे अपन मानकता वा प्रामाणिकता सिद्ध केने ऐछ। हिन्दीक लघुकथा विधा जे स्वयं मे आइयो मानक वा प्रामाणिक सिद्ध नै भ' पावि घड़ीक पेण्डूलम जकां डोलि रहल ऐछ।ओइ मे आइयो कते शब्दक वा कोन रचना ओइ विधाट रचना ऐछ की नै,तै पर मंथन चलिये रहल ऐछ।एते दशकक लेखनक पछातियो मूल्यांकन मे लघुकथाक जग्गह लघुकहानी सं जोइर व्याख्या होइछ।जतेक मुड़ी ततेक पीरी बला गप्प।एहेन अव्यवस्थित विषय/बौस्तक अंधानुकरण ,हास्यास्पद आ कि उठल्लूपन ? "अपने आँखिगर रहैत, अन्हरा के सहारे बाट ताकब कतेक उत्कीर्णा बला बात।"

हिन्दी लघुकथा विधाक अंधानुकरणक प्रबल पक्ष रहल हएत,हमर सबहक सामान्य शिक्षाक हिन्दी माध्यम।हम सब एकेडमिक शिक्षा ग्रहण सामान्यतया हिन्दी भाषा माध्यमे केलहुँ।किताब,पत्र/पत्रिका क पाठनक भाषा हिन्दी रहलाक कारणे हिन्दी साहित्यक विषय-वस्तु पर निर्भर स्वाभाविक छल।तें हिन्दी साहित्यक संतान(विधा)कें पोसपूतक रूप मेअवैध रूपें अंगेज लेब अस्वाभाविक नै।ओही देखाँउसे वा नकल क'मैथिली मे लघुकथा संग्रह नामे 1972 मे आयल पहिल पोथी-" जे की ने से "--डॉ. हँसराजक।आ ,1975 मे तत्कालीन नवतुरिया

ISSN 2229-547X VIDEHA

कथाकार डॉ. अमरनाथक " क्षणिका "।दुनू पोथीक रचनाकार(आमुख मे)ऐ संग्रहक एको टा रचना ,कोनो पत्र/पत्रिका मे प्रकाशित नै हेबाट बात स्वीकारने छथि।ऐ सं इ स्प्ष्ट ऐछ जे मैथिली मे एकर कोनो अस्तित्व नै रहै।इ तहिया के घटना/बात छैक जहिया मैथिली सं इतर अन्य भाषा मे कथ्य/शिल्पें मजगूत मुदा आकारगत छोट रचनाक एकटा स्वतंत्र विधाकरूपें/नामे सृजन भ' रहल छलै।यथा-संस्कृत -लघ्वी,हिन्दी-लघुकथा,पंजाबी-मिन्नी कहाणी/कथावां,उर्दु-अफसांचे,ओड़िया-क्षुद्रकथा......आदि।

मैथिली मे हिन्दी विधाक अंधानुकरण क शुभारंभ क' किछु मैथिली कथाकार स्वघोषित विद्वान हेबाक दंभ पोसलनि।तकर करीब पचीस बरख धरि अंधानुकरणित लेखन सेहो सुषुप्त वा शुन्य रहल।पुन: 1997 मे लघुकथा संग्रह नामे दू गोट पोथी,शिलालेख-तारानन्द वियोगी आ खण्ड-खण्ड जिनगी -प्रदीप बिहारीक आयल।से ताहि अवस्था मे जाहि सं दू वर्ष पहिने(1995 मे)मैथिलीक अपन एक मात्र विधा बीहनि कथा अवतरित भ' चूकल छल।ऐ विगत पचीस वर्षक नमहर अन्तराल मे अंधानुकरणित हिन्दी लघुकथा विधाक मैथिली अवतरण पर मैथिली मे कोनो मानकता तय नै भेल छल।(आइ एकैसम सदीक दोसर दशक धरि नै भेल)।जेना पहिने मिथिला मे सत्यनारायण भगवानक पूजन पर सुनता उपासक चलनि छल।तहिना मैथिली रचनाकार लघु कथा शब्द सुनि मात्र लघु कथा लिखबाक नकल करय लगलाह।जहन की हिन्दी मे लघु कथा शब्द मात्र नै,ओहि भाषाक एकटा स्वतंत्र विधा ऐछ।आ मैथिली मे कथा/गल्प नामे लिखाइत लघुकथा विधा पहिने सं विद्यमान छल।आब नकल क' लिखल जाइ बला रचना-जे बीस शब्द सं आठ सौ धरिक ऐछ।तखन प्रश्न उठैत जे कतेक लघु,ककरा सं लघु ?ऐ पर प्रकाशित कोनो तय मानकता नै छल(ऐछियो नै)जाहि सं इ सुनिश्चित कएल जए सकए जे कोन रचना लघुकथा विधान्तर्गत स्वीकार वा अस्वीकार कएल जा सकए।प्रसिद्ध कथाकार ओ इतिहासकार डॉ. मायानन्द मिश्र एकरा नकारैत लिखने छथि--" मैथिली मे लघुकथा नामे एक अन्य कथा लेखनक विकास भेल ऐछ जे समकालीन कथा/गल्प नै,अपितु चुटुक्काक निकट ऐछ।"--मैथिली कथाक विकास(संपादक- बासुकीनाथ झा)साहित्य अकादमी -2003

आधार हीन लेखने मठोमाठ हेबाक/कहेबाक परम्पराक निवहता मे किछु रचनाकार लीन रहलाह।जहन कि बेसुरा तान सं प्रसिद्धि पेनिहार गायक जकां बिना मानकताक लेखन मे लीन रहनिहार अपना के प्रयोगवादी आ प्रतिष्ठित बुझनिहारक रचना आ ओ तथाकथित विधा स्वय: खारिज ऐछ।ताहि लेल अदखोइ-वदखोइ आ माथा पच्चीक खगते कोन?

हिन्दी विधाक मैथिली अवतरण लघुकथा नामक रचना आइ धरि बसात मे बौआइत ऐछ।जमीन पर अनबाक कहियो कोनो निश्तुकी प्रयास नै भेल।ओ तथाकथित विधा/रचना स्वत: खारिज होइत चेतना शुन्य भ' गेल।किएक त' जहन जमीन पर उतरबाक प्रयास केलक तहन आधारहीन हेबाक कारणे सूपक भाटा सन ओंघराइत रहल किएक त' स्थिरताक आधार पहिने सं नदारद!किछु स्वघोषित वा परपोषित विद्वान सब--" डाँरि पारि के ओकरा लक्ष्मण रेखा बुझ' लगलखिन,मुदा डाँरि सोझ भेल की वक्र तकरा सं दूर धरि सरोकार नै।"प्रसिद्ध रंगकर्मी श्री कुणाल ,कथा प्रसंग लिखल अपन आलेखक अन्तिम अनुच्छेद मे लिखै छथि--"आब मैथिली मे लघुकथा नामे किछु रचना सेहो देखाइछ,जे मैथिली साहित्य मे आधार हीन ऐछ।तें ओकर चर्च करब व्यर्थ सन।"--अंतिका-रजतजयन्ती अंक(2008)संपादक- अनलकान्त।

लघुकथा नामित रचनाक भविष्य ?

’’''’’''''''''''''’’’’’’’’''''’’’’’’’’''''''''''''''''''''’''''’''''''’

जेना अंग्रेज़ी मे पोएट्री,मैथिली मे " काव्य ' विधा ऐछ।आ ऐ काव्य विधान्तर्गत--गीत,कविता ,गजल,क्षणिका, हाइकु आदि स्वतंत्र नामे आ स्वतंत्र अस्तित्वे छैक।मुदा विधागत सब एकहि परिवार "काव्य "क अंग छै।तहिना अंग्रेजी क शॉर्ट स्टोरी विधा छै ,आ कथा/गल्प ओकर अंग।

मैथिली मे लघुकथा सं इतर दोसर कथा विधा छै " बीहनि कथा "(Seed Story),हिन्दीक अंधानुकरणे लघुकथा नामे सृजित रचना बीहनि कथा विधान्तर्गत ग्राह्य ऐछ।परञ्च बीहनि कथाक तय मानकता पर ठाढ़ होइ बला रचना मात्र।से ओ लघु कथा नामे होइ वा बीहनि कथा नामे।

बानगी स्वरूप देखल जए डॉ. सत्येन्द्र झा जीक लघुकथा नामे दू टा रचना-

इसकूल--

ओहि गाम मे एकटा दोकान नै छलै।तीन किलोमीटर जाय पड़ै छलै छोटो छीन चीज किनबा लेल।जे कियो कहियो दोकान फोलबाक साहस केलक ओकरा दोकान मे दोसरे -तेसरे राति चोरि भ' जाय आ तकर बाद दोकान बन्न भ' जाय।चोरवा गामक नाम सं परोपट्टा मे जानल जाइत छल ओ गाम।मुदा नरेशक साहस कहू वा दु:साहस ओ बाहर सं आबि दोकान फोललक ओहि गाम मे।घर मे पिता आ पत्नी विरोध कयलनि मुदा ओ ककरो नै सुनलक।दोकानक स्टाफक रूप मे सभ सँ सेसर चोर के रखलक।ओ चोर सेहो निश्चिंत छल जे जखने बेशी समान जमा होयत कि चोराक सभ किछु ल' जायब।।नरेश तीन सए टाका ओहि चोरकेँ दै

छल।शहर सँ समान अनबाक हेतु नरेश ओही चोरबाकेँ पठबै छल। क्रमशः चोरवा कोन समान मे कते लाभ होइत छल सेहो धरि बुझय लागल।

आइ ओहि दोकान मे समान भरल छल।आजुके राति चोरबा अपन संगी सभहक संग चोरिक योजना बनौलक।जखन दोकान बन्नक' नरेश चलि गेल तँ चोरबा अपन संगी सभहक संग दोकान मे घुसल।बोरा मे समान सब कसय लागल।एकटा संगी पुछलकै -" कते दामक समान हाथ लागल ?"

दोसर चोर कहलकै-"पांच हजार सँ कम के नै हेतै।"

"मुदा एहि पांच हजार मे तँ मालिक के पांच सयसँ बेशीक फयदा नै हेतै।साढ़े चारि हजार तँ मूलधन छै।"--चोरबा बाजल---फेर ओहिमे हमरो तीन सय के हिस्सा हेतै।" चोरबाक म़ोन तीत भ' गेलै।ओ अपन मित्र चोर सभके बुझबय लागल--चोरि त' तखने जायज होइछ जखन हमर हक छीनि क्यो अपन घर भरय,मुदा नरेश बाबू तँ ओतबे कमाइ छथि जतेक उचित अछि।ओ नाजायज लाभ कहाँ लै छथि ?"

चोरबा चोरि करबाक विचार बदलि लेने छल।संगी सभ ओकर निर्णय पर सहमति व्यक्त कयलक।बोरा खोलि चोरबा सभ सामान केँ पहिने जकाँ सैंतय लागल।नरेश एकटा कोन मे ठाढ़ भ' ई सभ देखैत रहल।ओकरा बचझना गेलै जे ओ कोनो दोकान नहि,एकटा इसकूल खोलने हो।

विश्लेषण--उपरोक्त रचना शब्द संख्ये नमहर ऐछ!माने टेलब्राक निर्धारित शब्द संख्या-150 सँ उपर।

कथ्य-प्रेरक,पंचतंत्रक कथा समकक्ष।प्रारम्भिक लेखनक करीब बाझल।

शैली- कथा बला,सेहो पूर्ण नै।छेंट सन।

तें बीहनिकथाक परिधि सं बाहर ऐछ।

दोसर बानगी

मौअति

""""""""""""""

ओ ईमानदार छल।तँ लोकसभ ओकरा मारय छल।लोकसभ कहलकै- तोरा कुकुरक मौअति मारबौ।ओ चुप्प छल,मुदा प्रसन्न।कारण- ओ मनुक्खक मौअति नहि मरय चाहैत छल।

विश्लेषण-इ रचना निर्धारित शब्द संख्या मे बान्हल ऐछ।

मुदा कथ्य - भाषण वा आदेशक हिस्सा मात्र।

शैलीगत-निष्कर्ष पर पहुँचा देल गेल छैक।

तें इहो बीहनिकथाक हद मे नै रहि रहल।

उपरोक्त दुनू रचना--सत्येन्द्र कुमार झाक लघुकथा संग्रह-अहींकेँ कहै छी(2007)।पृष्ठ- 30/31 सँ उद्धृत।

आब अही लेखकक इ तेसर कथा क बानगी नीचाँ ऐछ जे हुनकर नवका संग्रह-"जँ अहाँ सुनितहुँ"(2020) सँ ऐछ ।

भेटब डूबब

""""""""""""""""""

" अहाँक जीवन मे सभ सँ नीक की लगैत अछि ?"

"अहाँके भेटब...."

"आ अहू सँ नीक.....?"

" हमरा हेरा जएब...?"

उपरोक्त रचना लिखल त' गेल ऐछ लघुकथा नामे मुदा बीहनिकथाक मानकताक करीब ऐछ।

यथा-निर्धारित शब्द संख्या(अधिकतम-150)क भीतर

कथ्य आ शिल्पें गसल।

निस्तार विहीन।

तें इ रचना पूर्णत: बीहनि कथा विधाक अंग मानल जा सकैए।शेष निंघेस सदृश्य।ठीक ओहिना जेना कोनो एक कक्षा मे पढ़ैत सब विद्यार्थी परीक्षा समय समान प्रश्न हल करैछ।परिणाम मे न्यूनतम अंक 30% प्राप्ति बला विद्यार्थी मात्र सफल आ शेष असफल घोषित होइत ऐछ।

आब एहने बानगी बीहनि कथा नामे लिखल रचना सँ....

डागदर साहेब-- मिथिलेश सिन्हा

------------------ ------------- ------

बड़ड दिन सँ पत्नी कहैत छलीह जे,हमरा पर किछु धियाने नै दैत छी।खाली मोबाइल मे खुटूर-पुटूर करैत कविता-कहानी रचैत रहैत छी.....जखन बेमारी बढ़त,पलंग पकड़ि लेब...तखन सबटा कविगिरि घुसरि जएत।

एहेन धमकी पर के नहि डरतै यौ?पत्नी कैँ होमियोपैथिक दवाई पर पूर्ण विश्वास छैन्ह।पिछला मंगल दिन शहरक बड़ड पुरान एगो बंगाली डागडर ठाम हुनका ल' गेलहुँ।

सांझुक बेर,लगभग आठ-नौ गोट रोगी बैसल छलाह।डागदर साहेब बयस सँ लगभग अस्सी-पचासीक हेताह।एकटा रोगी पर आधा घंटा पूछताछ करैत,अपन डींग डांग सँ रोगी आओर परिजनकेँ अपन बड़प्पनक खिस्सा कहैत समय आगाँ खींचि रहल छलाह।हमर नम्बर दोसरे छल,मुदा घंटा भरि डागदर साहेब लागल रहलाह।

अगल-बगल मे बैसल आन रोगी अकछय लागल।आब हमर नम्बर आएल।

" किनको देखाना हाय ?"

" जी,हमर पत्नी केँ...।"

" हूँ,इधर आइए"

" हम हरि बाबूक बालक थिकहुँ.."

"ओहो,तुम इंजीनियर का बेटा है ।

ओ हमसे ही अपना इलाज कराता था..कैसा है ओ..?"--आन रोगी दीसन तकैत बजलाह।

" जी,ओ मरि गेलाह..."

" ओ गॉड...,तोमहारा माई कैसा है?"

"जी,ओहो मरि गेलीह...।"

हमर जवाब सुनि क' बेंच पर बैसल आन मरीज,बहन्ना बना ससरय लागल....।---डागडर साहेब,आश्चर्यचकित भाव सँ खन हमरा,खन रोगी सबकेँ ससरैत देखय लगलाह।

विश्लेषण:-

उपरोक्त रचना बीहनि कथाक मानक शब्द स. सँ बाहर ऐछ।

कथा मे उप कथाक समावेश।

ISSN 2229-547X VIDEHA

कथ्य-शिल्पें कथाक छेंट सन लघु कथा।

----मिथिलांगन,अंक-38-39

निर्वहन--कल्पना झा

"''''''""""''''''''''''"""'"'''"""""""""""""

--माय गे! दादी त' हाथे सँ लपे लप तिल-चाउर परसै छलीह,मुदा तों त' चम्मच सँ परसै छें ?

--धुर्र ! ताहि सँ की हेतैक ?

--नहि हेतैक की...?हमरो सबकेँ नीक रस्ता भेटल।

--से की ?

--"इएह जे ' निर्वहन 'मे सेहो 'चम्मच ' लगाओल जा सकैछ।

मिथिलांगन---36-37

विश्लेषण:-

इ रचना कथ्य-शिल्प आ शब्द स.मादे पूर्ण मुदा कथा सारक संग बन्न भेल।माने निकस पर कसैत।तें इहो कथा विधागत झूस ऐछ।

बेटा निगम।   --घनश्याम घनेरो

लावारिस लहास पुछलकै :

-- बेटा! नगर निगम?

-- हम तोहर बेटा नहि, कर्मचारी छी।

-- हमरा लेखा तोहीं बेटा।

-- ठिक्के! लोक कें लोक सँ मतलब नहि रहलै तँ...

-- पहिने हमरा घिसिएबह आ की कुकूर कें?

-- तोरा।

-- पहिने हमरे किए?

-- एत्तेक मनुक्खता अखन छैक, तैं!

-- मनुक्खक लहास कें बादमे आ कुकूर पहिने कहिया सँ घिसिएल जेतै?

-- ई काज हमर अगिला पीढ़ी करत।

घिसिया क' ठेलापर चढ़बैत काल लहासक आँखि कुकूर दिस छलैक।

इ रचना ऐ विधाक सब मानकता यथा- निर्धारित शब्दक भीतर।फरीछएल कथ्य आ गसल शिल्प मे निस्तार रहित पूर्ण ऐछ!

अन्तत:मैथिली साहित्यक दू भाग भेल -लघुकथा (SHORT STORY)आ बीहनि कथा ,(SEED STORY)इ दुनू निर्धारित रूपें निरन्तरता बनौने रहत।शेष फोंक मात्र।

--"पहिने बीहनि कथा,सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ैत रहल।

आ आब................पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ैत रहत।

मुन्ना जी

1

असरा

बेरहट लए किछु देलकै ?

हँ ,बान्हि देलियै .

हम जाइ हियै....., नै सुनलकै की ?

सुनि गेली ,मुदा हमर मोन करै है जे आइ नै जेतै से नै हेतै ?

आइ मासक अन्तिम तारीख हइ, जएह एक दिनक खोराकी के पाइ त’ बढ़ि जेतै.

ओना मोन त’ हमरो आगू - पाछू करैहए. ई कहतै बलू त’ रहि जेबै!

ISSN 2229-547X VIDEHA

सब दिन त' एकरा थाका हारी रहिते हइ, आ घर अबै हइ त' बाले बच्चे सोहरल. हमरा लेल एकरा पलखति कहाँ रहै हइ.

ईह.....! हम की भरि दिन खटै हियै अपने पेट खातिर!

हे , पेट त' सबहक कोनहुना भरिए जाइ है. ई खाली, पेटे के सोचैत दिन, मास, बरख बितबैत रहओ.

हम एकर पलखतिक असरे तकैत रहि जाइ हियै. आ एकरा लेल धानि सन!

एह.....! हमहू त' कहिया स' उहे बाट तकैत रहियै.

हे , एने आउ ने...... केवाड़क विलइया ठक सँ उठल !

2

संगबे

अगिनवाणक फोँका जकाँ बड़बड़ा उठल रहै नेहक लावा.

कुलीन रहबाक कारणे नै कोइ बजै, आ नहिये कोइ रोकि पौलकै.

दिन... ...

3

टेट्टर.

-- ऐं ,कुकूर के एतेक सेवा ?

-- लिस्बियन छै .

-- सासु कोना छथि ?

ISSN 2229-547X VIDEHA

-- छोड़ू !

-- हुनकर चर्चो अनसोहाँत !

-- कुकुरो सँ बेकार बुझू !

-- जेटका बेटा कए सालक ऐछ ?

-- बीस पुर भ' गेलै .

-- जल्दीये स्थान भेटत.

-- कोन ?

-- साउसक

28-गणतंत्र

,मालिक, गोर लगै छीयैन!

के ?

हम,हीरवा कनिञा।भरि जुआनी खटि ,हिनका पुजिगर बनेलियैन आ आइ अन्चिन्हार ?

पछिला मास जे अहाँ गीदड़भभकी द' गेलहुँ--जे हमर एक-एक टा कैञ्चा (टाका) हिंसाब क' दौथ। अशोकबा कहैए-घर बैस के खो।

ISSN 2229-547X VIDEHA

तहिये सँ अहाँ हमरा आँखि सँ ओझल भेल बुझू।

माजिन्जन ठेंगा उठा बाट ध' लेलनि....ठमकति!अच्छा दुरा पर एलौं त' खगतो कहिये दियय।

अशोकबा बाप बेमार हय,दवाइ आ खेनाइ,दुनू घर में घटल है।किछो मदति क' दौथ, अशोकबा के 10 तारीख के अबैया हय,,सबटा पाइ सधा देबैन।

हमरा ल'ग किछो नै हए,हम...

43-अदौ सँ...

--हमरा बेर पर अहाँ सब कें अहिना लेसि दैए।इ बुझियौ ने जे इ एकटा पुरस्कार मात्र नै,हमर बौद्धिक संपति छी।खाली लिखि के नै , अर्जित संपूर्ण धनराशि छोड़ि क' महानता थोपेलौं ऐछ।

-- बाउ, तोंही टा लिखै छह की ?तोरा सँ अजोध लेखक सब एत' काहि कटै छथि।की हुनकर रचना निश्शन सन नै?

--जकरा देखू तकरा गलथोथरइ, सेहो खाली सिरखारी पोथी पर। पोथी पर चर्चा कहियो नै।

--रौ, आबो मूँह चुपकर !हमरा नै बूझल ऐछ जे तोरा कोना भेटलौए पुरस्कार !

-- हें..हें..हें। कक्का " डगरिन सँ कतौ पेट नुकेलैए ?"

अहींक डेलवाहि क' त' सिखलौं जोगाड़।जहिना अहाँ पौलहुँ तहिना हम ।

-- ओह!

" जाहि घरक पानिए विषान्हि हो ताहि घर साकट ताक'चललौं।"

करोट

यै कनिञा,सुनि के दुख हएत,मुदा कहिए देब उचित बुझै छी।

कहौथ ने मां,हिनकर सबहक बात के दुख किएक हएत।

बौआ लाजे नै कहैए,हम सब निर्णय केलौं जे ओकर दोसर विवाह करा दियै।

इस सब जे निर्णय करथिन से उचिते हेतै।मुदा तकर प्रयोजन की ?

वंश पसार लए।

बाबू जी," दवाई आ जांच सं निश्तुकी भेल जे दोष हुनके मे छनि।कहौथ जे कएटा बेटीक जीवन गार्त करथिन त' मोन भरतैन ?

कनिञा,हमरा माफ करैत अपन कपारक दोष बुझि संतोष करौथ।

नै बाबू जी,से कोना हेतै ?

की करब अहां ?

हम दोसर विवाह करब!

के करत अहां सं विवाह ?

कोनो निसंतान मर्द!आ कन्यादान हिनके पल्ला!

पछतावा

-- नै रौ बौआ,सगरो समय बिगड़ल छै,एखन गाम सं नै जए देबौ।

-- आंइ यौ बाबू -पहिल बेर गाम सं जाइ सं पहिने त' माय के फिरिसान केने रहियै।पढ़ि- लिखि गाम पर बैसल हमर माथ खएत की माटि हबकत ?"

--अहू बेर अहींक जिद्द गाम अनलक,नै त' ओतौ कोनो...

बीहनिकथा

""""""""""""""""""

रक्षा : मुन्ना जी

----------- -------------

--एक टा पोसुआ कुकुर अपन मीत सँ--

रौ, घर मे किए घोसिएल छें, निकल.देखही अनेरूआ कुकुर अपन हेंज मे घोसिए चाहैए !

-- ऐं...! एना नै होम' देबै, चल- चल तूँ बढ...!

-- आ तोँ ?

-- हम चिलका नुकेने अबै छी, अपना सब त' लड़ि खपि लेब, मुदा ओकर की हेतै ?

बीहनिकथा

"""""""""""""""""""""

विचरण ! : मुन्ना जी

--------- -----------

-- अहा....हा ! यै,समुद्रक किछेर मे बैसि केहेन आनन्दक अनुभव होइए ! समुद्र मे रहि रहि उठैत लहरि आ समुद्रक किछेर मे स्वतंत्र भ' लोकक विचरण !

-- यौ, जेबै नै.....चलू ने !

--अहाँ बढू ने हम पाछाँ सँ अबै छी.

" लोक सब विदेश सँ आबि एत' मनोरंजन करैए, स्वीमिंग शुट मे स्वतंत्र विचरण ! अहा की आनन्दक क्षण छै. "

--ओ.....त' अहाँ समुद्रक नै, ओइ स्वीमशुट बाली सब के निहारि निहारि आनन्द उठबै छी, नै ?

-- नै, नै, मोन मे उठल लहरिक वर्णन करै छलहुँ.

-- समुद्र मे जा देहक लहरि सेरा ने लियय, नैत' घुरमा उठत.

-- ओहू मे त' लहरिये छै !

-- यौ, समुद्रक लहरि निश्छल छैक, मुदा अहाँक......कामुक. !

चुनरी

'मुन्नाजी'

आशा दीदी बस स्टॉप पर ठाढ़ि छलीह । हुनका बगलमे ठाढ़ पुरुख उचकि - उचकि क' देखनि जेना - शंका भेलनि तँ टोकि देलखिन :

- अहाँ प्रतीक्षारत नहि मुदा किनको तकै छियै - नै ?

- नहि - नहि ! ओहिना ।

- तकर माने अहाँ हमरामे हेरायल छी - नै ?

- से नहि । मुदा एकटा चुनरी जँ अहाँक देह पर होइताय .....

- जखन लोकक नजरिए मे खोंट रहतै तँ झलफांफी चुनरी कोन काजक ?

पुरुख हाथक समतोला छिटकि क' रोड पर गुड़कि गेलै । ओ आगू बढलाह ता मे बस समतोला पर चढ़ि गेल रहैक ।

मुक्ति

-- हे भगवान, अहाँक घर देर ऐछ अन्हेर नै ! आइ बुझलौं।

-- की यौ, केसक निबटारा भ' गेल की ?

-- नै !

-- कनिञा नै देखाइ छथि ?

-- आइ हम दु सँ तीन भ' गेलौं

.

--आठम आश्चर्य , झूट्ठा नहितन !

-- कीए ?

-- विआहक तीने मास भेल, आ कहै छी तेसर....!

-- सत्ते कहै छी.

-- कतौ सेटिंग छलनि की ?

-- हँ।

-- तहन खुशी ?

--आइ ओकरे संग दोसर विआह क' लेलनि !

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

श्री राज कें समर्पित :-

दरेग.

-- लहालोट भेल चिलका के कोरा मे लैत दादी माँ -

ऐँ यै कनिञा, केहेन निर्दयी छी ?

-- माँ , फैरेक्स बनेने अबै छी!

-- किए ,अपन छाती लगा लैतीयै से नै ?

-- माँ , अपन दुध पीएला सँ फीगर खराब भ' जएत !

बजरूओ दुध पर त' पलाइए जेतै ने !

-- धुर ....छी !

" अहाँ सँ नीक त' ओ निमुधन गए , जे अपनो बच्चा पालैए आ अहाँ सनक मायक चिलका सेहो।

बीहनिकथा (Seed Story)

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

रिपोर्ताज

आई बारहवीं वर्गक परीक्षा परिणाम बहरेलै .चारू भ'र गहमा गहमी बढ़ि गेल छल.जत' सँ जे जनतब दिए सभ ठाम टॉपर मे धीये/ सुआसिन.

पत्रकारक एक टा दल , खुशी मनबैत धीया सबहक समूह मे जा प्रश्न केलनि --" सब ठाम सँ जनतब भेटैए जे ऐ बेरक टॉपर बेटीये सब ऐछ ! अहाँ सबहक की प्रतिक्रिया ? "

-- यौ, पढनिहार बेटा पढि- लिखि जोकरक हेबे करतै .नै पढ़निहारो लग बड़ड विकल्प छै, कियो जूस बेचतै, कियो रिक्सा - ठेला चलेतै , तीमन - तरकारी बेचतै, नै त' जेबीये कटतै. आ ताहू सँ मोन नै भरतै त' हमर सबहक पछोड़ ध' फिरिशान हेतै.

-- पूत धन के त' लपेट देलियै आ धीया सब ? -एक गोट पत्रकार टीपलक.

-- " धीया सब आब टॉप क' टॉप पद पर जा अपन जूति चलेतै ."

परस्पर.

-- हे यै ,ओम्हर द' नै जाउ.बेर उनहि गेलैए.

-- की करथिन, एखन त' साँझे छै राति नै ने भेलैए ? की करतै नेतबा सब खिधान्से ने ?

-- नै यै, उछन्नर करत !

-- कक्का , ओहो सब महिला दिवस मनेबाक योजना बना रहल ऐछ !

-- धुर बताहि ! महिला कल्याण की सोचत ओ सब सुथनी ! अपन जुआनीक कल्याणक रिहर्सल करैए !

-- " अहा ! मुँह केहेन लगै छै , जेना चाने हो...."

" रौ चुप्प तों सब ! बेचारी विधवा अपन हुब्बा सँ धीया - पुताक पेट त' भरै छै . "

-- हा..हा..हा ! नेता जी , धीया- पुताक पेट त' पछातिक गप्प , पहिने अपन देह- पेटक जुगत धरा नेने हएत !

-- हिनका कहलियैन- बाट बदलि लौथ , नै मानलनि ने.देखलखिन जनि जाति देखि कोना चौल करैए जेना ई संबंधीये रहथिन !

-- कक्का , हमरा सँ ओकर सबहक भलहिं कोनो संबंध नै होइ मुदा ओकर चालि सँ जरूर संबंध छै.

-- ऐँ.....केहेन ?

--ओकर बौह , पंचायत समितिक काजे बी.डी.ओ ल’ग आ बेटी , कॉलेज जाइ छै तहन दोसरो पुरूषक जीह एहिना लपलपाइत हेतै , नै ?

-- ओह !ई कहिया धरि चलैत रहतै एना से नै जानि !

-- " जा धरि एहेन पुरूष सबहक आँखिक पानि सुखएल रहतै . "

टकटकी

बेरा बेरी लोकक जमा भेल भीड़क सोझाँ ठोहि पाड़ि क’ कान’ लागल छल ओ छऔँड़ी. कियो किछु पुछय त’ उतारा नै द’ सभहक मुँह तकैत रहल....

भीड़ बढ़ैत जा रहल छल....मुदा सब मुकदर्शक बनल.

शान्त भीड़ मे सँ आब शब्द बहरेलै " गै, ई कह तोहर नाम ठेकान की छौ ?"

--- यौ छोड़ू, की करब नाम ठेकान बुझि ?.

--- तोरा तोहर घर धरि पहुँचा देबौ.

--- यौ, हमर नै कोनो घर वाँचल आछ ने कोनो ठेकाना, हम त’ दंगा पीड़ित शिविर मे सँ भागि एत’ एलौं ऐछ.

--- किए भगलीही , अपन जान बचेबा लेल ?

--- नै यौ, अपन संपति बचेबा लेल. !

--- आँय ! तहन तो अपन गाम - घर जो ने अपन संपैतक रक्षा करिहें.

---- गाम मे किछु आब कहाँ वाँचल ऐछ.जे किछु संपति शेष ऐछ ओ त' हमरे लग ऐछ.आ तकरे बचेबा खातिर त' गाम सँ भगलौं.

" कत्तौ कियो रक्षक नै देखएल. !"

--- के पुरूष राखत तोरा ? जे राखत ओहो बदनाम भ' जएत.

हा....हा.......हा, ठठा के हँसैत......यौ , जँ पुरूष सबके बदनामीक सत्ते डर होइतै त' गाम सँ परदेश धरि हमर संपैतक नोच- नोची नै ने करितए. ?

भीड़ उछहि गेल....!

सुतिहार

-- तों त' बड़ड सुतिहार लगै छह हौ , थम्ह' तोरा एकर सबहक मेट (Team Leader)बना दै छीय' !

-- माथ पर बज्जर खसएब की ? हम अपने पुश्तैनी काज के सुखितगर बुझै छी...!

-- गामो मे सुतिहारी देखबै छलियै अहाँ मुदा पेट भूखले रहि जए.

-- तें त' शहर धेलौं !

-- आब सुखीतगर छी ने ?

-- सुख मरि गेल बुझू !

-- ऍँ...?

-- गाम मे तंगी एहेन जे शहर एबाक सोचबा पर मासूल जोड़ब पसेना छोड़ा देने छल .

आब त' सब मास मे हवाई जहाज से जा आइब सकै छी.

-- मास पुरिते गाम चल जा ठेही उतारै छ' की ?

-- नै साहेब, कैञ्चा पुरि गेल त' पलखति.....उड़ि गेल !

बीहनि कथा

वैधव्यता

जानि नहि, पुजारीक मोनमे की छन्हि - बिधवा रमाक प्रतिए ! ओकर उमेरे कतेक हेतै - अंदाजन बीस-एकैस साल । प्रतिदिन ओ अबैत अछि आ अपन मनोकामनाक प्रश्न मंदिरमे छोड़ि दैत अछि ।

रमेश कें सदैव एहि बातक कचोट रहैछ जे रमा असमय घटल घटनाक बिपत्ति उघि रहलि छलि ।

हँ ! एक बरख कहिया ने पूरि गेल छलै ओ विकट समय । आब रमा हँसि कँ बजबामे सक्षम भेलि ताहिमे रमेशक योगदान छैक ।

मधुश्रावणी दिन ! मंदिरमे महिलाक जुटान - गर्द्धमिसान !

रमा हाथमे पूजाक थारीमे फल - फूल आ माला देखि पुजारी आगू अबैत रमा सँ आग्रह कयलनि - हाँ - हाँ ? रमा ! आइ सोहागिन सभक पाबनि छैक । मंदिरक शोभा स्थिर आ स्थायी रहैक - सहयोग करू, सिरिफ आइ घुरि जाउ ।

रमेश ई सुनतहि थारीमे राखल गेना फूलक माला उठा रमाक घेंटमे खसा देलकै आ बाजल - आब तँ मंदिरक कोनो व्यवस्था भंग नहि हयत ने ?

पुजारी आर आगू बढलाह - बाबू ! अहाँ नव विधानक संरक्षण कयल

निधोख पूजा करू

कोखिन

" हम अपन पेट पैंच लगएब,देह नै ने।"

सब स्त्री-पुरूष पेट भरवा आ देह झंपवा खातिर देश-परदेश जा की ने करैए।हम त' घरे में रहि कोखि पोसब आ सुखक सपना पूर करब।

श्रॉक्सी आ रॉड्रिग्स दंपति द्वारा देल गेल विज्ञापन -"एकटा स्वस्थ कोखिन स्त्री चाही,हमर गर्भधारण आ निवारणक लेल !"

इ देखिते स्मिता मुग्ध भ' गेल छलि। आ ओइ दंपतिक संपर्क में आबि सुखक सपना देखए लागलि।

स्मिता अहां किए उठेलौं एहेन डेग,लोक की कहत हमरा ,अहांकें ? देखै छीयै यशोदा बेन कें।विदेशी सब जहन ओकर घर आबि घुरै छै तहन लोक ओकरा अभच्छक संज्ञा दै छै।आब अहीं कहू जे इएह सुनबा लेल हम गाम छोड़ि सुरत धेलहुं?

नै विशाल,अहां निचैन रहू,हम चिकित्सकीय विधि सं गर्भ राखब,अवैध संबंधे नै।सफल होइते भेटत एक लाख डॉलर, हम सब भ' जएब मालोमाल।

"हम कोखि बेचब,देह नै।"

विधान

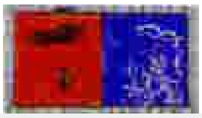
""""""""""""

तों किए एना धौना खसेने छें गै,जो ने झंडा ल' के ,सब धीया-पुता खुशी मनबै छै।

कथी के खुशी यौ ?

अझुके दिन देशक अपन विधान बनल रहै।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

उंह!भइया लेल हमरा लेल थोड़े न ।

इह!छौड़ी मुंह केना तुरूच्छ जकां केने ऐछ ।

गै मम्मी तों त' नहिये बाज,भइया के बड़का झंडा आ हमरा छोटकी सन।

माने दुनू भाय- बहीन लेल अलग- अलग विधान ने ?

गै बुच्ची,की भेलौ तहन सं एना किए घाठि फेनने छें ?

यौ पप्पा,सांझ खन मम्मी के कहलियै- डोलकी ला दुध नेने अबै छी।

कहलक- बताहि भेलें हें।मुनहारि सांझ के जुआन बेटी जेतै दोसरा टोल,भइया के कही अनतौ दुध।

तमसा जुनि।स्त्री कखनो पुरूषक चांगुर सं नोछड़ा जाइए।

" त' झंडा फहरा एहने परतंत्रताक जश्न मनाबी

मए बनबाक हर्ष!

ढ़ोल, हरमुनिया आ हाथ माइक नेने साड़ी ,समीज बालीक हंजेड़ अनचोके बुचकुन कक्काक आंगन में ढूकि गेल।

कनिञां घोघ तनैत,बुच्ची सम्हारैत,नुकबैत कोठरी ध’ लेलनि।काकी छाती पिटैत-रौ दैब रौ दैब पोता- पोता रटलौं त’ एलीह भगवती। तै पर सं हिजड़ाक झुण्ड।।

क्षणहि मे सगरो टोल दलमलित!स्त्री गणक हेंज अंगना सं दुरा धरि सोहरि गेल छल।फरमाइस क’ के गीत सुनै गेल।

नाच-गानक बीच कक्का काकी के एक हजार थम्हबैत लियय किछु कपड़ा लत्ता जोड़ि विदा करू।

यै मां इ लौथ एक हजार आओर मिला द’ देथुन।

गै मए गै मए,जेना बेटा जनमल होइ!

मां,बेटा- बेटी नै,मए हेबाक सुख हर्षित केलक!

हिजड़बाक मुखिया आओर पांच सए लगा घुरबैतकहलक-"मइयां,हे इ आशीष।

" बेटीये से ने बेटा,बेटी सम्हारू त’ जग चलतै।"

भार उघैत

""""""""""""""""""

ऐं गै मम्मी तों इ की करै छें ?

की करै छी हम रौ ?

सुनै छी जे आंटी के मूइला पछाति तों अंकल के संग धेने रहै छें।

मार पपिआहा के केहेन बात बजै छें रौ !

होस्टल में रहि हमरा गाम घरक गप्प सं कोन सरोकार।गाम एलौं त' सुनलौं गौंवा,टोलबैया सं।

धुर जो,तोहर प्रेम हमर अमृत ऐछ।

सत्ते गै,तहन हमर बात मानमे ?

हं रौ किए ने!

तों दोसर बिआह क' ले।

मुन्ना जी

निमुधन नै छी ।

""""""""""""""""""""""

चट...चट....चटाक!निकल, दूर भ' जो दुरा पर सं।हम सैनिकक अंग छी,कोठा वाली नै।

यै,हम किछु दिन सं नवीनक घर मे नित नव लोकक अबैया सं फिरिशान छी।नवीन विआहि क' सीमा पर चल गेल मुदा बहुरिया सीमा नंघैत सन..!

चुप्प करू,जहिया सं नवीन गेलैए,कनित्रा के चौकठि सं बहरी देखलियैए।अपन परार एतै त' बैला देतै की ?

उंह,सब दिन नवका मनसा सबहक जात अवरजात सं सती लगैए ने।

जं अहीं मुहपुरूष छी त' दंडित करू ने ओहि मनसा सबके जे जबरदस्ती घर घुइस ओकरा प्रताड़ित करै छै।आ असगर घर में ओ निमुधन भेल छै।

कनित्रा एकटा छओंड़ाक नरेठी धेने दुर्गा रूप में चौकठि नांघि गेलि-

'आइ कोनो बाप नै बचेतौ।तोहर मुक्ति हमरे हाथे।'

बेर पर

""""""""""""

अमरी कक्का मोइस लैत बमकि उठलाह--

पोती भेल से त' खुशीक बात मुदा जनमिते सोहर सुनि अनकट्ठल लागल।

अहां सब पुरषाक सब परंपरा ध्वस्त क' मान मर्दन करता पर वीर्त छी ।

कक्काक पीठ पर चालू भर सं,कलकतिया,बम्बइया,पटनिया भातिज सब लुधकल--

कक्का,बेटा विवाह में धोती-कुर्ता त्यागि शेरवानी धारण आ घोड़चढ़ी में से हो बमकल रहियै।मोन ऐछ ने।

जाह,तों सब तुर्क बना के छोड़बह।-कक्का सरदिएलाह।

हौ,कनिञा सेहो आधुनिकता मे लपटएल छथि,हुनका पुछियौन इ करते सोहनगर ?ओ त' कहती डी. जे शुरु करू।

नै पप्पा,जहन हिनका विजातीय कनिञा इ कहि स्वीकार जे बेटा सर्वोपरि ।

" त' बेटीये सं ने बेटा!बेटी जन्म पर सोहर किए नै ?

उपरौंज

रे रोहित ,तोहर एडमिशन भेलौ ?

हं शशांक,भ' गेल,आ किताब से हो कीना गेल।

कोन स्कूल में लिखेलौ नाम ?-शशांक पूछलक

सर्वोदय बाल विद्यालय मे।-रोहित बाजल।

ऐं, सरकारी स्कूल मे।गेलौ तोहर पढ़ाई।किताब देखा तं ?

रौ रोहितवा,सभटा त' उएह किताब छौ,जे हमर ऐछ।माने NCERTक

रौ शशांक,हमर भइया सब किछु बुझल- गमल मे नाम ओत' लिखेलखिन्ह।भइया आ दीदी सेहो अही स्कूल में पढ़ने छथिन।

पढ़िए के की सब नेहाल सनाथ केलखुन सेहो कह ने ?

भइया ,सरकारी बैंक में कैशियर छथिन आ दीदी बी. टेक करै छै।

हमरा कहलनि-"मोन लगा के पढ़,तोरा हम सब अपना सं उपर ल' जेबौ।"

मुन्ना जी

विहान

भइया,मालिक कत' छथिन ?

की बात,कह ने ?

पप्पा बिमार छथिन,आइ काज पर नै औता।बंकियौता पाई भेट जैतै त इलाज मे काज अबितै।

ऐं !बस एतबे।अइ लेल मालिक आ तोहर बाबू किए।जखन मोन होउ हमरा लग अबिहें ,हम खोंइछा भरि देबौ।

मार मुंहझौंसा के बिन देह डोलेने पाइ !

डा.साहेब,रोगी हम नै बाबू छथिन।हमर मुंह नै निंघारू हुनका देखियौन।

ओ'..एत' काज लए शिक्षा नै,देह आगू कर' पड़ै छै।

शहर सं शिक्षा पाबि समाज परिवर्तनक मुहिम मे सुनीता परोपट्टाक जन प्रतिनिधि भ' चमकल।मुदा अर्थाभाव में बी.डि.ओ के धौंस देखेनिहारि आइ बाट बदलैत-

बी. डी.ओ साहेब,बान्ह खन्हियबै बला प्रोजेक्ट हमरा द' दियय।

हें ...हें...हें!बड़का प्रोजेक्ट बड़का पाइक एवज में भेटै छै!

आ देहक एवज मे ?

टाइम पास !

दायित्व

हे,इ सब राखि लियय,हम जाइ छी।आम,लीची,खम्हरूआ,सातु सब बेरा लियर दु दिन सं बन्न छल,अरूआ जएत।

जा , एखने एलियै कत' जेबै ?

गाम,अपन वास पर आओर कत' ,ओकर बाद त' स्वर्गे आओर कत' ?

से नै,एखने एलियै दु दिनक ट्रेनक झमारल।लगले फेर....!

हौ,तोरा सबकें एबा मे असोकर्ज छल',तों त' पराधीन छह,हम त' खुल्ला।तों सब हजार- बारह सए कोस पर रह' की चान पर।हम अपन बलही बोझ उघवा मे एखनो सक्षम छी।

ठीक छै,सब कुशल रह'!

बाबू जी,एकर सबहक खगताक फिरिस्त नमरिते रहै छै।पूर होइ बला नै।

तोहर बोझक रखबार हम ?

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

ISSN 2229-547X VIDEHA

विष्णु कान्त मिश्र

चारि पत्र

कालचक्र (कथा संग्रहसँ)

पहिल पत्र

--------- उजियारपुर,

२१.८.१९६०

मन मोहिनी,

शरदक चानजकाँ चमकैत रहू । आइ पन्द्रह दिनसँ अहाँक कुशल नहि बूझि पानिसँ बाहर माछजकाँ छटपटाए रहल छी। बी० एड०कोर्सक अध्ययनमे मोन नहि लागि रहल अछि। रहि_रहि क' ध्यान अहींक पूर्णिमाक चान सदृश मुँहपर जा 'क ' अटकि जाइत अछि। अहाँक डोकासनक आँखि ,तीसीवला नाक,धनुष सदृशभौंह, डरकसके स्पर्श करैत भादवक मेघसन केशपाश ,मालपूआसदृश गाल,पीपरक पातके पतनुकान करयवला ओष्ठ हमरा मानसपटल पर तेना ने अपन साम्राज्य स्थापित क ' लैत अछि जे रात्रि क ' औंघियो हेराए जाइत अछि।

हे प्रयाण प्रिये! मधुश्रावणीमे हम अहाँक गाम आएल रही।अहाँ एकटा पायलट फरमाइश करने रही।हम उजियारपुर पहुचितहि बाबू के पोस्टकार्ड लीखि ट्रेनिंग कालेजक फूसि बजट देखाय पायलकलेल रुपैया मँगाय लेलहुँ। कोजागरा क अब किछुए दिन बाँकी रहि गेल छैक । दस दिन पूर्वहि हम क्लास छोड़ि अहाँक खातिर गाम आबि जाएब ।

हे मृग नयनी! अहाँक बाबू बढ़ कसाई छथि ।ओ हमरा अहाँक बीच बदला छथि। दस तारीख क' हम गाम आएब ।हम बुझैत छी जे ओ हमरा बजयबाकलेल ककरो नहि पठौताह। एकटा युक्तिबुझाय दैत छी। अहाँ अपन बहिनपा पानजोड़ीके सिखाय अपना मायक माध्यमसँ बाबूपर दबाब बनाएब । जखनहि केओ हमरा बजयबाकलेल अओताह कि धुरिआएले पैर हम हुनकहिसंग पहुंचिए जाएब ।

ISSN 2229-547X VIDEHA

हे प्राणाधार!अहाँ त' बुझिते छी जेअहांक बाबू पुरान विचारक लोक छथि।कहां सिनेमा देखबाक प्रसंग अपना अन्तर्देशीयपत्रमे लिखने रही।हम ओकरा लेल तैयार छी ।हँ, बाबूसँ चोराय क' जाय पड़ता।जयबाक कार्यक्रम हम अहांके बुझाया दैत छी।भिनसरवे रात्रि दूनूगोटे उठि क 'विदा भ' जाएब।घंटे कोस चलब तैयो दूं घंटामे राजनगर पहुचि जाएब।साढ़े पांच बजे ट्रेनसं पौने छह बजे मधुबनी उतरि रिक्शासँ जाय कपिलेश्वर महादेवा दर्शन करब। पुनः मधुबनी आबि टेबुल-कुर्सीवला होटलमेभोजन क ' मैटिनी शो सिनेमा देखि लेब।सबा छ:बजे ट्रेनसँ।विदा भ ' साढ़े आठ-पोने नौ बजे धरि गामपर छवि आएब।बाबू ल'ग मायपेटक दर्दके डाक्टरसँ देखयबाक बहाना बनाया लेथिन्ह।

हे चन्द्र मुखी! हमर माय-बाबूजीमाघमे सोझे बरखे द्विरागमन करयबाक निर्णय ल' रहल छथि।अगहनमे हमरो परीक्षा सम्पन्न भ' जाएत।भगवती के किछु कबुला क' दिओन्ह जे कोनो हाई स्कूलमे झट द' हमरानोकरी भ' जाय ।फेरि दूनूगोटे बाहरे रहब।अहाँक बाबू मर्हींस रखने छथि, मुदा ओ एहन ने कंजूस छथि जे एको चूरुक दूध अहाँलेल नहि राखि सभटा बेचि लैत छथि ।अहाँक सगर देहमे हड्डियेटा बाँचल अछि । मायके कहबनि जे थैरिसँजखनहि बाबू महींस दूहि क ' लाबथि त' ओ एक गिलास दूध अहाँकलेल चोरा क' राखि लेतीह।एखन जँ देह नहि फौदाएत त ' कहिया?हँ, एकटा गप बिसरि गेल छलहु , नढ़िया टोलक खखरू बाबू वैद्य ल' ग पानजोरीके संग ल' छवि जाएब आ च्यवनप्राश कीनि आनब।पानजोड़ीसँ कैंचा पैंच ल' लेब ।हम अबैत छी त ' सधाय देबनि ।एक गिलास दूधमे एक चम्मच च्यवनप्राश घोरि क ' प्रतिदिन पीबिलेल करब। रातिके बारह बाजि रहल छै।नींद त' हमरा नहिए हैत । एहि करोटसँ ओहि करोट औंघराइत रहब। तखन त ' ---

' एहि आशा अटक्यो रहत, अलि गुलाब के फ़ूल।
अइहैंफेर बसन्त ऋतु, इन डारन ओ फूल ।।
।। इति ।।
अहाँक पिआसल अहींक
भ्रमर ---
देवनाथ

दोसर पत्र

हाई स्कूल, सहरसा
3/12/1970

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

प्रिये,
शुभाशीर्वाद। हम एतय सकुशल छी। अहाँ क लिखल अंतर्देशीय पत्र एखनहि डाकपिउन हस्तगत करौलक अछि। पत्र पढ़ि सभ समाचार सँ अवगत भेलहुँ।
काशीनाथ के सर्दी भ' गेल छैक। ओकरा वैद्य जीसँ सितोपलादि चूर्णआनि देल करियौक। जड़कालाक समयछैक। अपनहु ठंडा सँबचल रहब। दुन् माय-बेटा अठकपारिसँ गायक दूध उठौना ल' पीब। हँ, खाली पेटमे अधिक लाभ करत। कतेक दिन सँ सोचैत छी जे फेमिलीक संग रहब। प्राण अहुरिया काटि रहल अछि। मुदा अपने जाएब नेपाल, कपार संगहि जाएत । पछिला कर्जसभ कने झाड़ि लैत छी त' निश्चिन्त भ' सभ केओ एत्तहि सहरसेमे रहब। अहाँजे घूटर कप्रसंग लिखलहुँ अछि जे ओ सपरिवार संगहि रहैत छथि से ओ त' मातवर घरक छथि। अनकर देखाउस करब त' छओ मास व्यथे मरब।
गर्मीक छुट्टीमे हम गाँव आएब त' सभकें एतहि नेने आएव। काशीनाथ के सेहो एही ठाम स्कूलमे एडमिशन कराय देबैक- उसराहा परक तेफसिला दसकठवा खेत कहियो मरहन्ना नहि जाएवला, ताहिमे तीन मन धान बाँटिके देलक अछि। खेतक आरिपर जखनहि जायवला केओ नहि छैक त' एहिना हेतैक। बटाइदार सभसँ नार-पोआर जमा करबा लेब आ ओकरे सभकें कहबैक जे बेचाय देत। खेतक मालगुजारीकलेल अहाँ लिखलहुँ जे कर्मचरी तंग क' रहल अछि से की करबैक। फरवरी धरिक मोहलति ल' लिअ । फरवरी कदरमाहा भेटितहि हम मनीआर्डर क' देब। एखन हमरा एक सय चालीस रुपैया दरमाहा अछि। अपना बुतात जोगर राखि हम चारि महि दिन एक सय दस मनीआर्डर क' देलहुँ अछि । जाड़ काला आबि गेल छैक। फलानेनवला . एकटा ओढ़नी अपना लेल आ बौआक लेल एकटा भरिबहुआँ स्वेटर-टोपी अवश्य कीनि लेब। अकलुआ माय मुँहक जोर छैक। ओ सदिखन झगड़ाक बीह तकिते रहैत छैक। ओ 'एकटा राहरि, सभसँ बाहरि' छैक । एकरा सँ मुँह नहि लगाएब ।
हम एतय ट्यूशन सेहो पछिला दू माससँप्रारम्भ क' लेने छी। ई रुपैया हम अहाँके नहि पठाय अपनहि एतय जमा क' रहल छी जाहिसँ झगडू बाबूक मोट कर्जसँ उद्धार भ ' सकी । अहाँके बुझले अछि जे दू बरख पहिने काशी नाथक निमोनिया बीमारी मे हुनकासँ सत्तरि टाका दू पाइ सूदिपर लेने छलियनि ।सूदि-मूरि जोड़ि क' बहुत रास भ' गेलैक ।माय -बाबूक श्राद्धक कर्ज सभ सधि गेल अछि ।दुनू माय-बेटा अपना स्वास्थ्य पर ध्यान राखि ठंडासँ बचि क' रहब ।कलम आब बन्द करैत छी ।पत्रक जवाब घुरती डाकसँ अवश्य देब।
अहींक ,
---देवनाथ

तेसर पत्र

हाई स्कूल,सहरसा

३/ १२/ १९९०

प्रिय काशीनाथक माय,

शुभाशीष।

अहॉक पत्र काल्हि जखन एकटा पानक दोकानपर ठाढ़ रही त' डाकपिउन हस्तगत करौलक । हम मोटा-मोटी कुशल छी ।पत्र पढ़िसभ समाचारसॅ अवगत भेलहु ।बेटा-पुतोहुक प्रसंगक सभ गप पढ़लहु ।की करबैक ?देह लगाए क' अंगेज' पड़ता।'अपन हारल आ बहुक मारल 'लोक बजितो नहि अछि ।बेंगाइक बेटा _पुतोहुक परतर जे अहॉ तकैत छी से कोना होएत ।हम-अहॉ ओहि जन्ममे दैवक घरमे आगि लगोने रहियैक ।सीता कुम्मरि एक पहर दिन उठलाक पश्चात सूति क' उठैत छथि। घर-आंगनक झाड़ू -बहारू , मनसा घर नीपब ,जारनि-काठी ओरिआएब,भानस-भात करब सभटा अहांके अपनहि करय पड़ैत अछि ।काशीयोनाथ बौकजकॉ सभटा देखैत रहैत छथि ।की करबैक ?देह लगा क' मारू।बहिरा करैत बनि जाउ ।सगर पोखरिमे एकटा पोठी। हॅ, अहाँ लिखलहुँ जे काशी नाथ नी कुमरि के ल' जाय चाहैतछथि डेरा पर पटना। एहि लेल अहाँ कोना फसाद नहि करब। कनियाँके पटना सॅडेढ़ मास अएना भ' गेलनि। ओ मुर्गी जकाँ छटपटाइत होएतीह। जकरा जाहि बस्तुकएक बेरि चस्का लागि जाइत छैक, ओकरा छोड़ब पाथरपर दूध उगाएब जकाँ होइत छै। कतहु दुनू व्यक्तिबेकति रहथु, माँ भगवती सानन्दरखथुन। अहाँ कहते छी जे रात क' सपनो रूपेपएरो मे तेल नहि लगा देलनि। इहो नीके भेल। कमसँ कम एकर आदति त' नहि लागल। अहाँ कहैत छीजेसात दिनक छुट्टी ल' काशी नाथ गाम आयल छथि, मुदा खेत-पथार, कलम-गाछीदेखय नहि गएलाह। एतुका धन-सम्पतिसॅ हुनका कोनो मतलब नहि।की करबैक । हमरा-अहाँक परोक्ष भेला सन्ता एकर-सुख-दुःख ओ अपनहि बुझता । हम जनैत छी जे उदर विकार सँ अहाँ अस्वस्थ रहैत छी। लवण भास्कर चूर्ण आ त्रिफला चूर्णकसेवन नियमित रूप सॅ कएल करब । हम स हरसे ल' अनितहुँ, मुदा घरमे ताला बन्द क 'कोना आएब। चोरक हल्ला यदाकदाह होइत रहै छैक ।सुत्र घर-आंगन पाबिअन्न-पानि, सीता कुम्मरिक गहना-गुड़िया, पेटी-बाकस सभटा चोरबा सभ उठाके ल' जाएत। आब त' कोतवाल लोसभ रातिके पहरा देब छोड़ि देने छैक । रातिके जॅ कोनो जन-बोनिहारकें सुतबाको लेल कहबैक त' ' मारि करैत अछि ओकर दरमाहा । बौआ एतेक दिनसँ कमाइतो छथि, तथापि खगले रहैत छथि। जीवन भरि जे किछु कमाइ भेल ताहिसँ त' नाना प्रकारक भूरे सभकें मुनैतअएलहु।माय-बापक श्राद्ध ककर्ज, काशीनाथक मुंडन, उपनयन हुनक बी.ए. धरिक पढ़ाइक खर्च, पावनि-तिहार, दवाइ-वीरो आदिमे सभटा कमाइ चलि गेल। नोकरी

कयलाकपश्चातो काशी नाथ कइएक बेरि हमरहिसँ टाका लेलनि अछि। हम-अहाँ एकटा ट्रान्जिस्टर किनबाक लेल सोचिते रहि गेल हुँ। नहि कीनि सकलहुँ। बौआ फूसि बाजि हमरासँ टाका मँगाय नोकरीक चारिए मासक पश्चात ट्रान्जिस्टर कीनि लेलनि। द्विरागमनक दुइएक मासक अभ्यन्तर कनियोके पटना ल' गेलाह। एहि बात सभहक चिन्ता नहि करब। चिन्ता चिता समान होइत छैक । स्वास्थ्य पर एहिसँ कुप्रभाव पड़त। दू वर्ष पश्चात हम रिटायर्ड भ' जाएब । अहाँके बुझले अछि जे हमरा सबके पेंशन नहि भेटैत छैक। अस्तु 'अनेर गायक राम रखवार' । पत्रक जवाब शीघ्र देव।

क्रमशः काल्हि अहॉक,

-काशी नाथक बाबू

चारिम पत्र

मैनापट्टी,

१७/४/२००१

चिरंजीवी काशी नाथ,

शुभाशीर्वाद।

एतय हमरा लोकनि नेपलिया रेल गाडी जकॉ कुशल छी । डेढ़ माससॅ अहाँक समाचार नहि बूझि चिन्तित छी। पन्द्रह दिनसे अहाँक माय बीमार छयि ।ओ भनसा घर नी पीके निकलय लगलीह कि पएर पिछड़बाक कारणें चौकठि पर घड़ामसॅखसिपड़लीह। बेहोशी कारणे दाँती लागि गेलनि। लोक सभमुँह पर पानि छीटय लगलनि। केओ सरौता सॅदांत छोड़ाबय लगलनि त' गोटेक घंटाक प श्चातहोश मे अलीह। बादमे ढोढ़नबाबासँ दू सय रुपैया कर्ज ल' सरकारी अस्पताल ल' गेलियनि। डॉक्टर कहलक जे चोटक संग-संग ठेहुनक हड्डी टूटि गेल छनि। ढौआ-कौड़ीक अभाव में पुनः ढ़ोढ़न बाबाके सिमराहावाला पँचकठवा तेफसिला खेत भरना द 'चारि हजार टाका लेलहुँ। ठेहुन आ छाती दुनू ठाम बड़का पलस्तर क देने छनि। चौकीके थोड़ेक गोलमोल कटबाय आ ओकरा नीचाएकटा पैघ बर्तन राखिदेने छियैक।ओही मे सुतले-सुतले दीर्घशंका-लघुशंका करैतछथि। बाड़ीमे डबल खाधि कोड़ि देने छियैक। ओहीमे जाएके ओकरा खसायथोड़ेक माटिसँ झाँपि दैत छियैक। काँच-पाकल भोजन स्वयं बनाय लैत छी। हमरो स्वास्थ्य स्थिति नीक नहि अछि। डॉक्टर टी.बी. कायम कएलक अछि। अंग्रेजी दवाइ बड़ महग होएबाक कारणे वैद्य सँ दवाइ भ' रहल अति। भोजन मे दू पटल करय पड़ैत अछि। अहाँ क मायकलेल भात आ अपना लेल रोटी। अहाँ हमरा लोकनिक कोनो चिन्ता नहि करब। हमसभ काँच घैल छी। काँच घैलके मुंगरक आस।

ISSN 2229-547X VIDEHA

सीता कुम्मरि आ हरिनाथ के शुभ आशीर्वाद ।
शुभकांक्षी,
देवनाथ
पुनश्च : बंगट कोनो काजसँ पटना गेल छलाह। काल्हि हमरा हुन कासॅ मेंट भेल । ओ कहलनि जे अहाँ लोकनिक सभ परिस्थितिसँ हम अहाँक बालक के अवगत कराय देलियनि । अहाँ लोकनिक कुशलक्षेम कहलनि।अहाँ ताजमहल देखबाक लेल सपरिवार आठम दिन आगरा जाय रहल छी ई खबरि सुनि मन प्रसन्न भेल। हमरा लोकनिके त' आब 'औषधं जाह्नवी तोयं, वैद्यो नारायणः हरिः।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**डॉ. चित्रलेखा**

मिथिलाक नामकरण एवं प्रादूर्भाव

::

एहि ‘मिथिला’ नामकरणक पाछाँ सेहो एकटा इतिहास रहल अछि जकर आधार पूर्णरूपेँण धार्मिक यज्ञ-अनुष्ठानक अछि जे एहि प्रकारेँ अछि-

‘‘भारतमे ‘सूर्य’ नामक एकटा सूर्यवंशीय क्षत्रीय राजाक राज्य छल। ई वंश सम्पूर्ण आर्यावर्तमे विख्यात छल। एही वंशमे राम, कृष्ण आ बुद्ध सदृश्य महान लोकक जन्म भेल। सूर्यवंशीय ज्ञान पुरुष सूर्यक पुत्र ‘मनु’ भेलाह। ‘मनु’ महा मेधावी पुरुष छलाह। प्रत्येक मन्वन्तरमे अलग-अलग मनु भेल छथि। ओ ‘मनुस्मृति’ सन महान ग्रन्थक निर्माण कएलनि। ‘मनु’क पुत्र ‘इक्ष्वाकु’ अयोध्याक राजा भेलाह। ‘इक्ष्वाकु’क ज्येष्ठ पुत्र ‘विकुक्षि’ अपन पिताक उत्तराधिकारी भऽ कऽ अयोध्याक राजा भेलाह। ‘निमि’क वंशमे एक सएसँ अधिक व्यक्ति मिथिलाक राजा भेलाह आ हुनका लोकनिक उपाधि ‘जनक’ छल। ‘इक्ष्वाकु’क ज्येष्ठ पुत्र ‘विकुक्षि’ राजा छलाह आ छोट भाए ‘निमि’ अत्यन्त कुशाग्रबुद्धिक एवं दूरदर्शी पुरुष छलाह। ओ मने मन सोचलन्हि जे जीवन तँ क्षणभंगुर आ मृत्यु सनातन सत्य अछि, जे व्यक्ति राजा-रंक-फकीर एहि संसारमे आओत ओकर जाएब निश्चित छैक तथा ‘कीत्तिर्यस्य स: जीवति’क सिद्धान्तकेँ मनमे स्थिर कए दृढ़ संकल्प लेलन्हि जे हम एहन कीर्त्ति करब जाहिसँ हम सार्वभौम बनि जाएब।

ISSN 2229-547X VIDEHA

मनमे दृढ़ निश्चयक ओ अपन कुलगुरु ऋषि वशिष्ठसँ निवेदन कएलन्हि जे- 'हमरा एहने यज्ञ करा दिअ जाहिसँ हमहूँ 'ईश्वरक सदृश्य सर्वत्र विराजमान रही'। कुलगुरुक वशिष्ठ निमिसँ कहलन्हि जे- हम पूर्वहिमे देवराज इन्द्रकेँ यज्ञ कराएब स्वीकार कऽ लेने छी। इन्द्रक यज्ञ समाप्तिक उपरान्त हम अहाँकेँ यज्ञ करा देब। एहिपर 'निमि' मौन धारण कऽ लेलन्हि। कुलगुरु वशिष्ठ 'निमि'क मौन स्वीकृति लक्षणम्' बुझि कऽ इन्द्रक यज्ञानुष्ठानक हेतु प्रस्थान कऽ देलन्हि। 'निमि' सोचलन्हि जे जीवन क्षणभंगुर आ मृत्यु तँ सनातन सत्य अछि, पता नहि कखन की भऽ जाए। 'निमि'केँ यज्ञानुष्ठानक तीव्र लालसा हुनका व्याकुल कऽ देलकन्हि ओ 'शुभस्थ शीघ्रम् 'अर्थात् शुभकार्यमे विलम्ब नहि करबाक चाही कारण-

''आदानस्य प्रदानस्य कर्त्तव्यस्य चकर्मण।

क्षिणमक्रियमानस्य काल: पिबति तद् रसम्।।''

एहि उत्कट इच्छाकेँ शीघ्र पूर्ण करबाक हेतु व्याकुल 'निमि'अयोध्यासँ पूर्व दिशामे चलि पड़लाह आ चलैत-चलैत ओ मिथिला आबि गेलाह। मिथिलामे महर्षि गौतमक आश्रम छल। प्राचीन कालमे मिथिलाक भू-भागकेँ गौतमक 'तवोबन'कहल जाइत छल। बादमे एकर 'मिथिला'नामकरण एक अनुश्ठानक कारण पड़ल। 'निमि'महर्षि गौतमक तप आओर तेजसँ अत्यधिक प्रभावित ओ आकर्षित भए गौतमक आश्रमपर यज्ञानुष्ठानक अपन लालसा प्रकट कऽ महर्षि गौतमसँ यज्ञ करा देबाक प्रार्थना कएलन्हि ताकि ओहि यज्ञक फलसँ ओ (निमि) सर्वत्र व्याप्त भऽ जाथि। महर्षि गौतम 'निमि'क उत्कट इच्छाकेँ शान्त कए यज्ञ करा देबाक आश्वासन देलन्हि।

महर्षि गौतम यज्ञार्थ-

याज्ञवल्क्य, भृगु, वामदेव, उशित, कण्व, अगस्त्य, भारद्वाज, वाल्मिकि आदि जितेन्द्रिय ऋषि लोकनिकेँ आहूत कऽ निश्चित समयपर यज्ञ प्रारम्भ कऽ देलन्हि। 'वृहद विष्णु पुराण'क मिथिला महात्म्यमे एकर वर्णन उपलब्ध होइछ। एहि जितेन्द्रिय ऋषि लोकनिक द्वारा 'निमि'क दीर्घकालीन यज्ञानुष्ठान संकल्पित भए ओहि यज्ञक श्री गणेश भऽ गेल।

यज्ञक पूर्णाहुति होएबासँ पूर्वहि इन्द्रक यज्ञ समाप्त कऽ कऽ कुलगुरु जगद्रवंद्य ऋषि वशिष्ठ अयोध्या लौटलाह। ऋषि वशिष्ठकेँ जखन एहि बातक जानकारी भेलन्हि जे 'निमि' हुनक (कुलगुरुक) बिना प्रतीक्षा कएलनहि दोसर ऋषि लोकनिक सहयोगसँ यज्ञानुष्ठान प्रारम्भ कऽ देलन्हि। एहि अवज्ञाक कारण ओ क्रोधित भऽ निमिक यज्ञस्थ्ज्ञलपर अएलाह तथा कुलगुरुपर विश्वास नहि करबाक हेतु ओ (कुलगुरु) 'निमि'केँ दण्डस्वरूप विदेह भऽ जएबाक शाप दऽ देलन्हि। एमहर संकल्पित यज्ञ समाप्तो नहि भेल छल कि 'निमि' प्राणहीन भऽ गेलाह। आब उपर्युक्त सभ ऋषि लोकनिक हेतु एकटा विचित्र समस्या ठाढ़ भऽ गेल।

ISSN 2229-547X VIDEHA

किन्तु 'अध्वर्यु' (ऋत्विक) बनल ऋषि गौतम सभ ऋषि लोकनिसँ आग्रह कएलन्हि जे हम सभ अपन-अपन तपबलसँ एहि प्राणहीन 'निमि'क शरीरक मंथन करी। मंत्रोच्चार एवं ऋषि तपबलक कारण मंथनसँ एक भव्य राजकुमार बालकक आविर्भाव भेल। मंथनसँ उत्पन्न होएबाक कारणें ओहि राजकुमारक नाम 'मिथि' पड़ल। तथा ऋषि लोकनि ओही 'मिथि'सँ शेष यज्ञक कार्य पूर्ण कएलन्हि। मंथनसँ आविर्भूत 'मिथि'क द्वारा बसाओल गेल नगर 'मिथिला' नामे प्रसिद्ध भेल।

सम्पूर्ण संसारमे अनादिकालहिसँ मिथिले एकटा एहन पावन प्रदेश अछि, जाहिठामक सांस्कृतिक महत्ता एवं विद्वता अतुलनीय अछि। वेद-वेदान्त, पुराण, उपनिषद्, धर्मशास्त्र आ तंत्र-मंत्र विद्या एवं संसारक मानव चिन्तनक इतिहासमे ई अपन महत्वपूर्ण भूमिकाक लेल सुविख्यात अछि। मिथिलाक भूमि जनक, याज्ञवल्क्य, न्यायसूत्रक प्रणेता गौतम, वैशेषिक दर्शनक जनक कणाद, मीमांसाक प्रस्तोता जैमिनि तथा सांख्यदर्शनक संस्थापक कपिल आदिक जन्मभूमिसँ उर्वर रहल अछि। एतबे नहि छठम शताब्दी ओ तकर परवर्ती कालमे ई महान साहित्यिक एवं दार्शनिक क्रियाकलापक केन्द्र बनल रहल अछि। उद्योतकर मण्डन,वाचस्पति, उदयन, गंगेश, पक्षधर मिश्र प्रभृति विद्वान अपन प्रखर प्रतिभासँ मिथिलाकेँ विभिन्न युगमे परिभाषित कएलन्हि अछि जाहि कारणेँ ई भारतीय संस्कृतिक केन्द्र बनल रहल।

मिथिलाक हेतु प्रयुक्त 'विदेह'एवं 'मिथिला'नामक उत्पत्तिकेँ विशुद्ध रूपेँ पौराणिक कहल जा सकैत अछि। राजा विदेध माधवक आगमनक पश्चाते एकर 'मिथिला'नाम पड़ल। ई लोकनि सरस्वतीक तटपर निवास करैत छलाह। 'शतपथ ब्राह्मण'क अनुसारेँ सदानीरा (गण्डकी) क तटपर आबि ई लोकनि अग्नि प्रज्वलित कए एहि भूमिक शोधन कएलन्हि। संगहि हिनका लोकनिक संग अनेक ब्राह्मण सभ आबि कऽ खेती-बारी प्रारम्भ कएलन्हि तथा यज्ञक माध्यमसँ अग्निकेँ संतृप्त कएल गेल।

ओना तँ ई अन्वेषणक विषय थिक जे मिथिलाक उत्पत्ति कहिया भेल, मुदा प्राचीन ग्रन्थ सभक अध्ययन ओ अवलोकनोपरान्त एतबा तँ अवश्ये कहल जा सकैत अदि जे हिमालयक शृंखला एवं गंगाक बीचक स्थान (मध्य भू-भाग) मिथिलाक अन्तर्गत आबि जाइछ जे गंगा, ब्रह्मपुत्र आदि नदी-पहाड़क माटिकेँ आनि हिमालय आ गंगाक बीच जे एकटा समतल भू-भाग बनओलक सएह 'मिथिला'थिक।

पौराणिक वंशावलीक आधारपर कहल जा सकैत अछि जे 'मनु'क पौत्र 'निमि'एहि यज्ञ भूमिमे पदार्पण कएलन्हि आ मन्थनोपरान्त 'मिथि'नामक कारणेँ ओ अपनहि नामपर 'मिथिला'राज्यक स्थापना कएलन्हि। जखन नगरक निर्माण भेल तँ ओ 'जनक'नामसँ प्रसिद्धि पओलन्हि। हिनक उत्पत्ति मन्थनक पश्चात् भेल छल तँ हिनक नाम 'मिथि'उपयुक्त मानल गेल।

मिथिलाक उत्पत्तिक सम्बन्धमे पाणिनि कहने छथि- ''मथ्यन्तेऽत्र रिपवो मिथिला नगरी :''अर्थात् जाहिठाम शत्रुक मर्दन कएल जाइछ से 'मिथिला'थिक। ओना प्राचीन समयमे राजाक नामपर नगर बसएबाक परम्परा

रहल अछि तेँ ई कहल जा सकैत अछि जे मिथिलाक सम्बन्ध राजा ‘मिथि’सँ अछि। भागवत् स्कन्ध अध्याय 133मे कहल गेल अछि-

‘‘जन्मना जनक सोऽभूद्र: वैदेहस्यतु विदेहज:।

मिथिलो मथनाज्जातो मिथिला येन निर्मिता।।’’

अर्थात् राजा ‘मिथि’क द्वारा जाहि नगरक निर्माण कराओल गेल सएह ‘मिथिला’नामसँ प्रसिद्ध भेल।

मत्स्य पुराणक अनुसार ‘मिथिला’नामक एकटा तेजस्वी ऋषिक नामपर एहि नगरक ‘मिथिला’नाम पड़ल। डॉ. दिनेश कुमार झा अपन मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहासमे डॉ. मोती चन्द्रक कथनकेँ उद्धृत कएलन्हि अछि। हुनक कथन छन्हि जे- ‘‘जखन भारतमे एकटा मिश्रित संस्कृतिक विकास भऽ रहल छल तखने ‘तिरभुक्ति’ नाम लोक व्यवहारमे तिरोहित भऽ कऽ ‘तिरहुत (मिथिला) शब्दक निर्माण भेल।’’

एतबे नहि किछु भू-वैज्ञानिक लोकनिक ईहो मान्यता अछि जे तिरहुतक भू-भाग सभसँ पाछाँ आबि कऽ बनल अछि। कहल जाइछ जे एक लाख वर्ष पूर्व एहिठाम समुद्र छल जकर विस्तार हिमालय एवं विन्ध्यपर्वत मालाक मध्य अरबक खाड़ीसँ बंगालक खाड़ी धरि छल। हिमालयसँ नि:सृत नदी सभक संग प्रवाहित माटिक संचयसँ एहि मध्य भू-भाग तैयार भेल तेँ एतए पहाड़क कोनो नामो-निशान नहि अछि। एहिठाम नदी सभक अधिकता अछि आ एकरा तीरपर ‘मिथिला’ अवस्थित अछि तेँ एकर नाम ‘तिरभुक्ति’ वा ‘तिरहुत’ भऽ गेल।

सम्पर्क-

एसोसिएट प्रोफेसर

मैथिली विभाग

यू.भी.के. कॉलेज, कड़ामा- आलमनगर

बी.एन.मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**डॉ. अर्पणा**

पुष्कर काण्डक विशेषता

कविवर लालदासक प्रशस्तिमे आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'कवि-नवतिकामे कहने छलाह-

''रमा रहित रामक अयन

नहि अशक्ति पुरुषत्व।

लालदास रचि 'रमेश्वरचरित',

बुझऔल तत्त्व।।''

आ दामोदर लाल 'विशारद'लिखैत छथि-

''लाल मधुप लखि लाल भव, किंशुक पर जनु मूल।

वैदेही पद कमल मधु, सेव सकल सुख मूल।।''[1]

रामायण रचनाक परम्परामे केओ एहन नहि होएत जे लालदासक नाम नहि जनैत हो वा रामायणक पद नहि सुनने हो।

देवी कामाख्याक प्रेरणासँ महाशक्ति जाग्रत भूमिमे एकर लेखन ग्रन्थरत्नकेँ विशिष्ट अर्थवत्ता दैत अछि। फलत: रामेश्वर चरित मिथिला रामायणक रचनाक उद्देश्य अछि सीता-चरित्रक सर्वोत्तर्ष महालक्ष्मी, महासरस्वती आ महाकालीक समवेत रूपमे आदिशक्ति ध्वजोत्तोलन। महाकाली आ रणचण्डी दुर्गाक सीताक चरितक प्रतिष्ठापन ओज आ गर्वक प्रतीक नारी शक्तिक आह्वान। शक्ति-शक्तिमानक समरसेतुमे जीवनक चरितार्थ निहित अछि। बिनु शक्तिक योग ब्रह्मा, विष्णु महेश शव छथि, बुढ़ियाक फुसि थिकाह। एकर प्रतिपादन-सम्पादन रामायणक अन्तिम काण्ड पुष्पकरकाण्डसँ भए जाइत अछि।

लालदासक सर्वश्रेष्ठ अवदान थिक जे नारीक अस्मिता-मनस्विता उद्बोधक अछि।[2]

वीरांगनाक रूपमे सीताक अवतरण पुष्करकाण्डक भेँट थिक। सीताक चरित्रक सर्वातिशयता पुष्करकाण्डक अग्रणी भूमिका अछि। रामक रामत्व सीताक बिना शून्य अछि। सीता-परित्यागक मार्मिक अंशकेँ छोड़ब लालदासक बुद्धिमता थिक।

रमेश्वर चरित मिथिला रामायण रामक लोक नायत्वमे सीताक असीम सामर्थ्य आकलित करैत अछि। वैष्मतपर शाक्त मतक उत्कर्ष प्रदर्शित करैत अछि। एतय सभ किछु शक्तिक दृष्टिए देखल गेल अछि। सीता साक्षात योगमाया थिकीह जनिक भू-भागपर सृष्टिक जय ओ क्षय नचैत अछि।[3]

मूल प्रकृति लक्ष्मी जनिक, सीता रूप प्रधान।

तनिक नाम जपि पाबि नर, दुहु लोकक कल्याण।।

पुष्करकाण्डमे देखाओल गेल अछि जे रामक पराक्रम ओ विजयक सभटा श्रेय सीताकेँ छलनि, राम तँ निमित्त मात्र छलाह। जहीनि महाभारतमे देखाओल गेल अछि जे अर्जुनक विजयक श्रेय कृष्णकेँ छलनि, कृष्ण विहीन होइते अर्जुनक सभटा शौर्य निष्प्रभ भए जाइत अछि। तहिना लालदास देखओलनि अछि जे सीताक सहाय्यसँ विहीन रहने सहस्त्रमुख रावणक सम्मुख प्रभावहीन भए गेल छलाह। हुनक समस्त सैन्य ओकर वयव्यस्त्रसँ उधिया गेल छल। मुदा सीताक हेतु ओकर बध करब कठिन नहि छल। पुष्करकाण्डक आरम्भमे रामक सिंहासनारोहणक पश्चात् एक दिन जखन ऋषि महर्षि लोकनि रामक अभिनन्दन करबाक क्रममे रामवण वधक प्रशंसा करैत छथि तँ सीताकेँ हँसी लागि जाइत छनि। ई देखि राम जखन जिज्ञासा करैत छथि तँ हुनका सीतासँ ज्ञात होइत छनि जे श्वेत द्वीपपर एखनहुँ सहस्त्रमुख रावण वर्त्तमान अछि। सीताक मुखसँ ई सन्दर्भ सुनि रामकेँ बड़ क्षोभ होइत छनि। तत्क्षण चारू भाई मिलि श्वेत द्वीप दिस प्रस्थान करैत छथि। मार्गमे वायुक तेहन प्रचण्ड प्रवाह बसि रहल छल जे ओकर झोंकमे चारू भाई उधियाइत-उधिआइत पुन: अवध फेका जाइत छथि। तदुपरान्त सीता हुनका लोकनिक संग पुष्पक विमानपर चढ़ि सैन्य सहित प्रस्थान करैत छथि। सीताक प्रभावसँ सभ केओ श्वेत द्वीप पहुँचैत छथि। युद्धमे राम सहित सभ सैन्य संज्ञाहीन भए जाइत छथि। वशिष्ठ मुनिक कहलाक पश्चात् सीताकेँ बड़ रोष होइत छनि तथा ओ अपन सामान्य स्वरूप त्यागि कालीक रूप धारण कए शत्रुक संहार करय लगैत छथि। थोड़बे कालमे सहस्त्रमुख रामवणकेँ वध कऽ दैत छथि मुदा हुनक उग्ररूप रामकथामे ‘सहस्त्र स्कन्ध रावणक वध-कथा उपलब्ध अछि।

लालदास वैष्णव मतक प्रतिपादनक संगहि शाक्त सम्प्रदायक भावनाक अनुकूल वस्तु-विन्यास कयलनि अछि। भारतीय संस्कृतिक अनुरूप आदर्श पारिवारिक जीवन तथा भक्तिपक्षक अनुरूप आत्मनिवेदन ओ समर्पझा भावक रामयण वस्तु-विधान दृष्टिगोचर होइछ।■

सम्पर्क-

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

बालूघाट, बाँध रोड, मुजफ्फरपुर

---

[1]आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' कविनवतिका, मैथिली मन्दिर, राजकुमारगंज, दरभंगा, 1984

[2]कर्णामृत (जुलाई-सितम्बर, स्मृति विशेषांक) 2000, कोलकाता

[3]सम्पादक विजयनाथ ठाकुर 'जयन्ती', पृ.- 131, चेतना समिति, पटना, नवम्बर- 2004

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

ISSN 2229-547X VIDEHA

**डॉ. अर्पणा**

रमेश्वर चरित मिथिला रामायणमे 'कौशल्या'

कौशल्या एक आदर्श राजमहिषी तथा जननीक रूपमे चित्रित भेल छथि। कौशल्या हेतु राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्नमे कोनोटा अन्तर नहि बुझल जाइछ। राम हुनके पुत्र थिक। ओ सौतिनि लोकनिकेँ छोट बहिनिक दृष्टियेँ देखैत छथि।

हिनक सर्वप्रथम उल्लेख वाल्मीकि रामायणमे पुत्र-प्रेमक आकांक्षिणीक रूपमे भेटैत अछि। वाल्मीकिक परम्परामे रचित काव्य एवं नाटक सभमे कौशल्या सर्वत्र अग्र महिषीक रूपमे चित्रित छथि, मात्र आनन्द रामायणमे दशरथ एवं कौशल्याक विवाहक वर्णन विस्तारसँ भेल अछि। गुण भद्रकृत उत्तर-पुराणमे कौशल्याक मायक नाम सुवाला तथा पुष्पदत्त 'पड़मचरित' मे कौशल्याक दोसर नाम अपराजिता देल गेल अछि। राम कथामे अवतारक प्रभावक फलस्वरूप पुराणमे कश्यप आ अदितिकेँ दशरथ आ कौशल्याक रूपमे अवतारक वर्णन भेल अछि।[i]

लालदास रामक वन गमनक समयमे कौशल्याक मातृ हृदयक सफल चित्रण कयलनि अछि-

हम नहि विपिन जाय सतदेव।

अहा अपयश जग मे बरुलेव।।

नृपतिक हाथ देव वरु प्राण।

त्यागव नहि अहँ सन सन्तान।।

मुदा रामक वन गमनक उपरान्त भरतकेँ अयोध्या पहुँचलापर कौशल्याक मतृत्व ओ पत्नीत्वमे अत्यधिक संघर्षक स्थिति देखि पड़ैत अछि। रामक वन गमनक काल कौशल्याक मातृत्व उमड़ि पड़ैछ।

कौशल्या मूर्छित खसलीह।

शोकाकुल कानय लगलीह।।

व्याकुल पीटथि हृदय कपार।

कहथि कतय छथि प्राणाधार।।

एक बेरि सुतमुख देथु देखाय।

तखन प्राण तन रहिओ कि जाय।।[ii]

राम वनसँ आपस नहि अयलाह से समाचार सुनि कौशल्या शोकाकुल भऽ उठैछ।

कौशल्या सुनलनि परिणाम।

फिरि नहि अयला वन सौं राम।।

लगली पीटय हृदय कपार।

हाय वत्स की कयल विचार।

हमरा त्यागल ककर भरोस।

मरब आइ करितहि आक्रोश।।

हायबध दैलहु बड़ धन्ध।

कयल देल हमर दुहू दृग अन्ध।

अह बिनु हमर रहत नहि प्राण।

लगयिछ ऑंगन भवन भयान।।

स्त्रीधर्मक रक्षा करैत कौशल्या राजा दशरथसँ कहि उठैत छथि जे रामक वन गमनमे विधिक विधान अछि अपनेक कोन दोष नहि। कविक शब्दमे-

अछि चिन्ता सौं चित्त अचयन।

तैं कहलहु हम अनुचित वचन।।

चलयित कहलनि राम बुझाय।

किछु जनि कही पिता का माय।।

हमर सिनेहो अनुचित बात।

कहब तँ बड़ दु:ख पओता तात।।

एहि प्रकारक कहि बारम्बार।

वनगेला रघुनाथ उदार।।

से सुत ममते गेलहुँ भुलाय।

कहलहुँ पति रूषि वचन बजाय।।

कयो नहि हमर सनि अछि अधलाहि।

पतिकॉ कटु कहयित नहि आहि।।

सुन प्रणेश अहूँक नहि दोष।

कयल विधाता ई सभ रोष।

एहि प्रकारेँ देखैत छी जे लालदास कौशल्याक पत्नीत्वक मर्यादाकेँ संरक्षित कयलनि अदि मुदा हुनक विविध उत्कट वचन नारीत्वक मर्यादायक अनुकूल बुझना जाइछ।

राजा दशरथक मृत्युक पश्चात कौशल्याक कारूणिक दशा द्रवित भऽ उठैछ-

'पति संग हमहु अनल समाय।

रहब सुखी भल सुरपुर जाय।।

सुनिसुनि कौशल्याक विलाप।

सभजनकेँ बाढ़ल बड़ताप।।

मनमे सभकेँ भेल सन्देह।

हिना प्राण रहत नहि देह।। अर्ते

कौशल्या कॉ दुखित ओहि देखल सकल समाज।

अन्त:पुर लय जाय पुनि बोधल कति ऋषि राज।।[iii]

नारी जीवनक पैघ उद्देश्य कुशलकरय वाली आ कुशल मानावय वाली जाधरि नारी सभक कुशल करब, कुशलक कामनाभावना नहि नहि राखत ताधरि ओ पूर्ण नहि कहा सकैत अछि। कौशल्या सातो गुण प्रधान नारी छलीह। मातृत्वक गम्भीरता, विश्वासक अडिगता, ममता तथा कुशल भावनापर कोना बाधा नहि आवय देलनि। जखन कैकई रामकेँ वन पठेवाक आदेश कौशल्या सुनलनि तँ मातृत्व आ कल्याणक भावनाक संघर्षमे हुनक अवस्थाक वर्णन गौस्वामीजी मात्र एक पांतिमे सुन्दर ढंगसँ कयलनि अछि-

'सुनि प्रसंग रहि मूक जिमि वरनि नही जाई।'

ISSN 2229-547X VIDEHA

कौशल्याक अवस्था गीताक साम्ययोगकेँ स्मरण करबैत अछि। कौशल्याक व्यापक रूपक दर्शनक प्रसंग मानसकार लिखैत छथि-

“व्यापक ब्रह्मा निरंजन निर्गुन विगत विनोद।

सो अज प्रेम भगति वस, कौशल्या को गोद।।”[iv]

प्रभुक व्यापक रूपक दर्शन होइत अछि साधककेँ-

“देखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखंड।

रोमरोम प्रतिलागे कोटि कोटि ब्रह्मांड।।”[v]

एहि व्यापक रूपक दर्शन रामायणमे मात्र कौशल्याजीकेँ भेलनि।

सम्पर्क-

बालूघाट, बाँध रोड, मुजफ्फरपुर

---

[i]रामचरित मानस (अयोध्याकाण्ड)

[ii]रमेश्वरचरित मिथिला रामायण (बालकाण्ड)

[iii]रमेश्वरचरित मिथिला रामायण (सा.अ.) पृ.- 166

[iv]रमेश्वरचरित मिथिला रामायण (अयोध्याकाण्ड)

[v]रमेश्वरचरित मिथिला रामायण (अरण्यकाण्ड) पृ.- 133

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

एडिटर्स चोइस सीरीज

एडिटर्स चोइस सीरीज-१

विदेहक १२३ म (०१ फरबरी २०१३) अंकमे बलात्कारपर मैथिलीमे पहिल कविता प्रकाशित भेल छल। ई दिसम्बर २०१२ क दिल्लीक निर्भया बलात्कार काण्डक बादक समय छल। ओना ई अनूदित रचना छल, तेलुगुमे पसुपुलेटी गीताक एहि कविताक हिन्दी अनुवाद केने छलीह आर. शांता सुन्दरी आ हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद केने छलाह विनीत उत्पल। हमर जानकारीमे एहिसँ बेशी सिहराबैबला कविता कोनो भाषामे नहि रचल गेल अछि। सात सालक बादो ई समस्या ओहने अछि। ई कविता सभकेँ पढ़बाक चाही, खास कऽ सभ बेटीक बापकेँ, सभ बहिनक भाएकेँ आ सभ पत्नीक पतिकेँ। आ विचारबाक चाही जे हम सभ अपना बच्चा सभ लेल केहन समाज बनेने छी।

<u>एडिटर्स चोइस सीरीज-१</u> (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-२

विदेहक ५०-१०० म अंकक बीच ब्रेस्ट कैसरक समस्यापर विदेह मे मीना झा केर एकटा लघु कथा प्रकाशित भेल। ई मैथिलीक पहिल कथा छल जे ब्रेस्ट कैसर पर लिखल गेल। हिन्दीमे सेहो ताधरि एहि विषयपर कथा नहि लिखल गेल छल, कारण एहि कथाक ई-प्रकाशित भेलाक १-२ सालक बाद हिन्दीमे दू गोटेमे घोंघाउज भऽ रहल छल कि पहिल हम आकि हम, मुदा दुनूक तिथि मैथिलीक कथाक परवर्ती छल। बादमे ई विदेह लघु कथामे सेहो संकलित भेल।

<u>एडिटर्स चोइस सीरीज-२</u> (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-३

विदेहक ५०-१०० म अंकक बीच जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक किछु बाल कविता प्रकाशित भेल। बादमे हुनकर ३ टा बाल कविता विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल जाहिमे २ टा कविता बेबी चाइल्डपर छल। पढ़ू ई तीनू कविता, बादक दुनू बेबी चाइल्डपर लिखल कविता पढ़बे टा करू से आग्रह।

<u>एडिटर्स चोइस सीरीज-३</u> (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-४

विदेहक ५०-१०० म अंकक बीच जगदानन्द झा मनुक एकटा दीर्घ बाल कथा कहि लिअ बा उपन्यास प्रकाशित भेल, नाम छल चोनहा। बादमे ई रचना विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल, ई रचना बाल मनोविज्ञानपर आधारित मैथिलीक पहिल रचना छी, मैथिली बाल साहित्य कोना लिखी तकर ट्रेनिंग कोर्समे एहि उपन्यासकेँ राखल जेबाक चाही। कोना मॊडर्न उपन्यास आगाँ बढ़ै छै, स्टेप बाइ स्टेप आ सेहो बाल उपन्यास। पढ़बे टा करू से आग्रह।

एडिटर्स चोइस सीरीज-४ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-५

एडिटर्स चोइस ५ मे मैथिलीक "उसने कहा था" माने कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" (साभार अंतिका) । हिन्दीक पाठक, जे "उसने कहा था" पढ़ने हेता, केँ बुझल छन्हि जे कोना अहि कथाकेँ रचि चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' अमर भऽ गेलाह। हम चर्चा कऽ रहल छी, कुमार पवनक "पइठ" दीर्घकथाक। एकरा पढ़लाक बाद अहाँकेँ एकटा विचित्र, सुखद आ मोन हौल करैबला अनुभव भेटत, जे सेक्सपीरिअन ट्रेजेडी सँ मिलितो लागत आ फराको। मुदा एहि रचनाकेँ पढ़लाक बाद तामस, घृणा सभपर नियंत्रणकेँ आ सामाजिक/ पारिवारिक दायित्वकेँ सेहो अहाँ आर गंभीरतासँ लेबै, से धरि पक्का अछि। मुदा एकर एकटा शर्त अछि जे एकरा समै निकालि कऽ एक्के उखड़ाहामे पढ़ि जाइ।

एडिटर्स चोइस सीरीज-५ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-६

जगदीश प्रसाद मण्डलक लघुकथा "बिसाँढ़": १९४२-४३ क अकालमे बंगालमे १५ लाख लोक मुइला, मुदा अमर्त्य सेन लिखैत छथि जे हुनकर कोनो सर-सम्बन्धी एहि अकालमे नहि मरलन्हि। मिथिलोमे अकाल आएल १९६७ ई. मे आ इन्दिरा गाँधी जखन एहि क्षेत्र अएली तँ हुनका देखाओल गेल जे कोना मुसहर जातिक लोक बिसाँढ़ खा कऽ एहि अकालकेँ जीति लेलन्हि। मैथिलीमे लेखनक एकभगाह स्थिति विदेहक आगमनसँ पहिने छल। मैथिलीक लेखक लोकनि सेहो अमर्त्य सेन जेकाँ ओहि महाविभीषिकासँ प्रभावित नहि छला आ तँ बिसाँढ़पर कथा नहि लिखि सकला। जगदीश प्रसाद मण्डल एहिपर कथा लिखलन्हि जे प्रकाशित भेल चेतना समितिक पत्रिकामे, मुदा कार्यकारी सम्पादक द्वारा वर्तनी परिवर्तनक कारण ओ मैथिलीमे नहि वरण् अवहट्ठमे लिखल बुझा पड़ल, आ ओतेक प्रभावी नहि भऽ सकल कारण विषय रहै खाँटी आ वर्तनी कृत्रिम। से एकर

पुनः ई-प्रकाशन अपन असली रूपमे भेल विदेहमे आ ई संकलित भेल "गामक जिनगी" लघुकथा संग्रहमे। एहि पोथीपर जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ टैगोर लिटरेचर अवार्ड भेटलनि। जगदीश प्रसाद मण्डलक लेखनी मैथिली कथाधाराकेँ एकभगाह हेबासँ बचा लेलक, आ मैथिलीक समानान्तर इतिहासमे मैथिली साहित्यकेँ दू कालखण्डमे बाँटि कऽ पढ़ए जाए लागल- जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व आ जगदीश प्रसाद मण्डल आगमनक बाद। तँ प्रस्तुत अछि लघुकथा बिसाँढ़- अपन सुच्चा स्वरूपमे।

एडिटर्स चोइस सीरीज-६ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-७

मैथिलीक पहिल आ एकमात्र दलित आत्मकथा: सन्दीप कुमार साफी। सन्दीप कुमार साफीक दलित आत्मकथा जे अहाँकेँ अपन लघु आकाराक अछैत हिलोड़ि देत आ अहाँक ई स्थिति कऽ देत जे समानान्तर मैथिली साहित्य कतबो पढ़ू अहाँकेँ अछौं नहि होयत। ई आत्मकथा विदेहमे ई-प्रकाशित भेलाक बाद लेखकक पोथी "बैशाखमे दलानपर"मे संकलित भेल आ ई मैथिलीक अखन धरिक एकमात्र दलित आत्मकथा थिक। तँ प्रस्तुत अछि मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा: सन्दीप कुमार साफीक कलमसँ।

एडिटर्स चोइस सीरीज-७ (डाउनलोड लिंक)

सम्पूर्ण पोथी विदेह आर्काइवमे पोथी डाउनलोड साइटमे फ्री डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि।

विदेह: मैथिली साहित्य आन्दोलन Videha: The Idea Factory

VIDEHA ARCHIVE LINK:-

http://videha.co.in/new_page_15.htm

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

-

ISSN 2229-547X VIDEHA

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' २ टा गजल

(१)

धोती, जनउ, खराम बहुत अछि
पुरस्कार बदलाम बहुत अछि

खुट्टापर त बरद एकहिटा
जाबी और कराम बहुत अछि

रस्ता बदलि-बदलि क' देखल
सभ रस्तापर जाम बहुत अछि

पूतना अछि बनल कोरोना
भय चिन्ता सभ ठाम बहुत अछि

ईश्वर छथि संगहिमे सदिखन
घुमबा खातिर धाम बहुत अछि

एखनो सोर करैए हमरा
जामुन आम लताम बहुत अछि
(मात्रा क्रम : 2 2 2 2 2 2 2 2)
दूटा लघुकें एक दीर्घ मानल गेल अछि ।

(२)
अनके टेटर बैसल लोक गनैत रहल
चालनि सभ दिन सूपक मूंह दुसैत रहल

आमक गाछीमे कोइली कुहुकैत रहल
बगरा-बगरी आंगन आबि नचैत रहल

चारेपर कौआ सभ दिन कुचरैत रहल
सूगा सदिखन सीताराम रटैत रहल

सीढी लोकक खातिर लोक बनैत रहल
अहिना सभ दिन सभकें लोक ठकैत रहल

बांचल गाछक खातिर नेह-सिनेह कहां
आमक खातिर बानर गाछ चढैत रहल

हल्ला भेलै लेकिन चोर धरैल कहां
चौकीदारेकें सभ चोर कहैत रहल

कूकुर अहिना छाहो देखि भुकैत रहल
हाथी अपने धुनिमे बाट चलैत रहल

सुरुज उगैत-डुबैत रहल सभ दिन अहिना
कते अहिल्या रामक बाट तकैत रहल

(मात्रा क्रम : 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2)
दूटा लघुकें एक दीर्घ मानल गेल अछि ।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

मुन्ना जी-कविता- पथराइत डीह

कविता..

पथराइत डीह

..

रन्हबैया त' भेटि जाइछ

पाइक बलें

गाम गाम मे बाँटल पर्चा पर

देने अपन फोन नम्बर सँ

मोन पड़ैए

भोज तिहार मे दसगर्दा तीमन

डालना

नै जानि कतेको बारी झारी सँ

उपरा लेल जाइत छल

कदीमा आ केरा

आलूक संग मिज्झर करबा लेल

खेबैया भ' गेल पहाड़ सन

डालना बला भोज मे

बीझो करिते

जुमि जाइत छल सगरो टोलबैया

आब हाक पर हाक नै सुनैए कियो

कतेको बेर कनेक्ट होइत छी

स्काइप आ मैसेन्जर पर

वैश्वीकरण आ उदारीकरण सँ

डालनाक जग्गह लेलक मिक्स भेज

चिकन,मटन पुछि तय करै छथि नोतहारी

खएबा लेल जएब की नै !

भोज भात मे आवश्यक साग

भेटि जाइत छल बुढीमाइक डीह पर

पछुआरक ओलती मे

कोरल जाइत छल ओल आ खम्हाउर

चटनी,तरुआक जग्गह लेलक पकौड़ा

आब बुढीमाइ सब सेहो

ISSN 2229-547X VIDEHA

नन्हकिरबाक शरण मे छहरियेबाक

ब्योंत तकैत गेलीह शहरिया

डीहक हरियरी भेल गेल निपत्ता

बाटक संग डीह सेहो पक्का भेल गेल

वा रहि गेल परती पराँत

कन्वेंट मे पढ़ि पढि

सरवेन्ट हेबाक लिलसा मे

धीया पुता, खएब त' दूर

कहाँ सुनि पौलक

गेन्हारी,ओल,खम्हाउर

फलाहारक अल्हुआ,सुथनी

नवतुरिया सब सुतितो उठितो

तकैए- बर्गर,चाऊमिन आ फ्रेंचफ्राइ

चारू पहर , एक फोन कॉल पर

जुमि जाइए पिज्जा

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

गामक थान तरहक अखाड़ा

भ' गेल बज्जर

जिम केर चलन रहरहाम भेने

अखाड़ा सँ घुमि पीब' बला

भैंसीक थ'न तरहक दूधक जग्गह

लेलक गेटोरेड आ एन्डुरामास

आबक मैञा,लोरी आ घुघुआ मेना कतिया

लगा दै छथि पोगो आ डिस्कवरी किड्स चैनल

माटि के त'र क' आँकड़ पाथर आ

बालु सिमेन्टक अकारे

डीह,बारी-झारी भेल जा रहल बज्जर

बाबा,मइयाँक सेहो

पथरएल गेलनि आँखि आ करेजा

नन्हकिरबाक संग

वैश्विक सुख सुविधा तकैत

क' लैत छथि तुम्मा फेरी

विद्युत शवदाह गृह सुनि

जीविते भान होइ छनि

देह मे पसाही लागल सन

सेहन्ता जतबै छथि

गमैये माटि पानिक

नन्हकिरबा सेहो

समयाभावक फेर मे

परम्परा के उघवा सँ तकैए मुक्ति

गामक बाट सँ घूरि

मूनल अछिया सँ बीछल अस्थिक

गंगा लाभकक करैए ब्योंत

डीह रहि जाइए धराउख

रेस्टुरेन्टक बुक कएल मेनू मे

जतेक नोतहारी ततेक गाम गीनि

ISSN 2229-547X VIDEHA

ठाढे ठाढ पेट भरि

पुरबै छथि भाँज

नवका पीढीक धीया पुता

बाबा सँ डैडीक व्यवहारक हस्तान्तरण

के माटि छोडि निमाहि लेत

यांत्रिक कम्पोजिशन आ डिस्काउन्ट ऑफर पर

होम डिलेवरीक बलें

गेन्हारी, कदीमा, केरा,ओल आ खम्हारुक

खगता जएत विला

तहन प्रकृतिक विरूद्ध

छोट छोट गमला मे भेटत

गामो मे रंग विरंगा कैक्टस

जे जीवन के भोगव त' दूर

जे जीवन के छूबो सँ करत वंचित

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

अमरेश कुमार लाभ

तीनटा कविता आ दू टा गजल

१

संतान

*****

दाम्पत्य जीवन कँ मुस्कान
होइछ संतान
बियाहक बाद
पहिल ख़ाब, पहिल अरमान
होइछ संतान
मायक कोख वा पिताक दोख
के अड़चने
जे रहि जाए छथि
संतान सुख सँ वंचित
नहि देखबन्हि हुनक मुँह पर
मुस्कान किंचित
संतान प्राप्ति लेल
डाक्टर-बैद, कबुला-पाती
तीरथ-धाम
सब जुगत करए छथि
आपन बूते
पाबि संतान
जुड़ाइ छन्हि छाती
कोई कसर नहिछोडै जाए छथि
पालै-पोसै मे
संतानक जिनगी संवारै मे
बिसरि जाए छथि

आपन जिनगी
नहिसूझै छन्हि किछु
ता धरि जा धरि
नहिस्थापित भ' जाइछ संतान
बढ़ियाँ सँ, खूब बढ़ियाँ सँ

२

राग अलापने किछु नहि भेटत
****

राग अलापने किछु नहि भेटत
पाछाँ भागने किछु नहि भेटत
जे मुट्ठी ओ देखा रहल छथि
ज्यों खूजत तँ किछु नहि भेटत ।

मिसरी सन मिठगर बाजै छथि
जहर पसारै मे लागल छथि
डाइगर बाँटि देने छथि सगरो
रक्त-पिपासु बना रहल छथि ।

बड़ा चतुर छथि, मुट्ठी बान्हने
भ्रमित करथि, ज्यों बपौती राखने
नहि सम्हरब तँ मुँह भरि खसब
जहि दिस लेने जाए छथि हाँकने ।

३

लागल छथि
****

गीता कुरान त’ नै पढ़िलथि
धरम’क उद्धार मे लागल छथि
जे गाम दिस तकितो नै छथि
मिथिला के राज्य बनाबै छथि ।

ज्यों द्वार जाऊ त’ नै चिन्हता
बड़का मानिजन कहलाबै छथि
जे मर्म दीन कैँ नै समझैथि
गरीबी मेटबै मे लागाल छथि ।

जे लिख लोढ़ा लिख पाथर छथि
शिक्षा कैँ अलख जराबै छथि
सब बड़का-बड़का अपराधी
संसद कैँ मान बढ़ाबै छथि ।

बड़का-बड़का डिगरी जिनका
अफसर बड़का कहलाबै छथि
मूरख चपाट नेता पाछाँ
नेंगरी डोलबै मे लागल छथि ।

४

गजल

****

केहन केहन जँ नहिटिकल की टिकब अहाँ
कतबो चाहे नाक रगड़ि ली नहिजितब अहाँ

मतदाता अछि कते अहाँ केर जाति के
गनि गुथि कैँ बड़ड ओतबे ने घिचब अहाँ

अपराधी सब छँटल छँटल ठार भेल छथि
हिनका सब सं अड़ारि मे की पड़ब अहाँ

अरजल धन अछि कतेक आपन से थाहि ली
डीहो डाबर बेचि टिकस कीनि सकब अहाँ

जे छथि युवराज कुर्सी पर वैह बैसता
झोरा ढोबति रहल सदा आ रहब अहाँ ।

५

गजल

****

थामिलहुँ ज्यों हाथ तँ विसबास राखू
एक दोसर लेल छी आभास राखू

नहिरहै कोनो तरहक शक आ संदेह
नहि पड़ए गाँठि भरिसक प्रयास राखू

संग रहने टोनामेनी भइये जाइ छै
नहिफनफनाउ आ नै खटास राखू

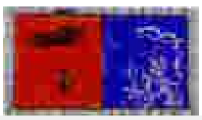
खुलि के मोनक बात बतियाइ जाउ
अनेरे नहिमोन मे किछु भरास राखू

ओझराएल रहै छी काजे मे सदिखन
खैर-खबर लेल तँ किछु अवकास राखू ।

- अमरेश कुमार लाभ, हरनीचक, अनीसाबाद, पटना 800002, Mob : 8873201735

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**डॉ आभा झा**

अपन घेर

जनता अछि बेहाल बाढ़ि मे, दंभ विकासक सभहक मुंह
आइ बिमारी घर-घर पैसल किंतु चुनावक रचलहुं व्यूह।
प्रकृतिक रोष सिमान -उपद्रव ,मृत्युक अछि पदचाप सगर
एखनो नञि क्यो चेतल देखल, जतै जे भेटल,से हड़पल ।।

सब तरहक व्यभिचार, कदाचारक अछि निष्ठुरता व्यापल
प्रगतिक कथा हन्त! सपना, ओक्कर त' जड़िये कोकनल।
एहनो विकट समय नेतागण आत्म प्रशंसा मे लागल
किंतु जकर मत सं ताकतवर,सैह विवश निरूपाय बनल।।

बुर्जुआ पक्षक प्रतिपक्षक खेलि रहल अछि निर्घृण खेल
नञि ओक्कर प्रभुताक ह्रास हो, दुन्नू मे अछि अद्भुत मेल।
चमकी मे शैशव मरैत छल,आइ वयस्को कालक ग्रास
नञि ककरो क्यो देखबैया अछि,आइ प्रशासन केर नञि आश।

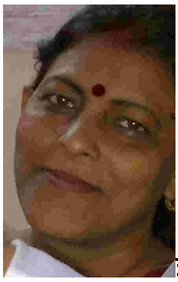
दुर्बल आश्रयहीन श्रमिक संग शिक्षित सेहो राज्य तेजल
यक्षप्रश्न वृत्तिक सुरसा सम अप्पन बड़का मुंह मुंह फोलल ।
अस्पताल जर्जर ,विद्या केर आलय अछि गुरुजन- विहीन
किंतु न ककरो कोनो चिंता **अपन घेर** मे प्रभु बाझल।
२२.०९.२०२०

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**इरा मल्लिक**

हम स्त्री छी

****

हम!!!!

जखन थाकि जाएत छी

घर गृहस्थीक दैनिक जिम्मेवारी मे

आ ओझराएल रहय छी ओकर जाल कराल सँओ

छोट पैघ जिम्मेदारीक

ओहह!!!!

ई अनवरत यात्रा!

एकर आवश्यकता पूरा करैत करैत

पलखैत नहिं भेटैत अछि

प्राण सांस उखैर जायत अछि

थसथसा जायत अछि देह

थकमका जायत अछि डेग

सूर्य किरण उगै सँओ

सूर्य अस्त तक के हमर

अनवरत चलैत

गृहस्थी क यात्रा

कोना पूरा भऽजायत अछि

किछु नहि बुझना जायत अछि।

एको घड़ी अपन सुधि लै के

पलखैत नहिं भेटैत अछि।

बसंत के खनक

वसुन्धरा के श्रृंगार

प्रकृतिक मनोरम दृश्य

प्रचंड रौद

तामसे घोर अकाश

धरती मे फाटैत दरारि

सूखल चास बास

चैत बैसाखक कहर

साओन के झूला

बरखाक बून्न

उमरैत नदी प्रवाह

उमगैत देहक धाह।

पूस माघक जाड़

थरथराइत गात

होलीके रंग

परिवार के संग

सब मौसम जीबैत छी

अपन काज राज के बीच

सब संग जीब लैत छी

सुख दुख के रंग

अपन खुशहाल गृहस्थी मे

बाँटि लैत छी ओहि ब्यस्त दिनचर्याक बीच

सुख आ खुशी।

हम गृहिणी के

गार्हस्थ्य धर्म एक

साधना अछि

एक-एक दिन के तपस्या सँओ

सजैत अछि! बसैत अछि

ई खुशहाल गृहस्थी ।

ज़िन्दगी मे आओर कोनो कामना

शेष नहिं बचैत अछि!

ISSN 2229-547X VIDEHA

हम स्त्री के दुनिया के

इएह सत्य थिक ।

प्रेम सँओ परिपूर्ण

हृदयक उद्‌गार

ममता

मानवता

सदाशयता

परोपकार

श्रद्धा

संस्कार

आत्मगौरव

अर्पण!

समर्पण!

पूजा!

पवित्री!

सब अहि मे

समाहित रहैत छैक

आ ओहि मे समाहित होयत अछि

हमर गौरवमयी नारित्व!

एक संपूर्ण सृष्टि के आधार!!!!

रचनाकार:-इरा मल्लिक, रिलायंस ग्रीन्स टाउनशिप जामनगर गुजरात।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**



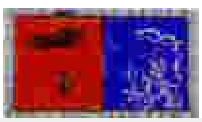


GAJENDRA THAKUR- Language editing by Astha Thakur

ERA BEFORE AND AFTER – LITERARY SCENCE IN MAITHILI AFTER THE ARRIVAL OF JAGDISH PRASAD MANDAL

<u>जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी</u>

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

GAJENDRA THAKUR

ERA BEFORE AND AFTER – LITERARY SCENCE IN MAITHILI AFTER THE ARRIVAL OF JAGDISH PRASAD MANDAL

Issue No. 88 (November – December 2019) of Muse India at http://museindia.com/Home/PastIssue displays Maithili literature in a very poor light. Moreover, it wrongly claims to be a representative review of the entirety of Maithili Literature. In actuality it was a representation of the so-called "dried main-drain" of Maithili Literature, in line with the Sahitya Akademi, Delhi. It is expected that Muse India will correct itself by announcing an issue exclusively devoted to the parallel tradition of Maithili literature. –Editor

T.K. Oommen writes in the Linguistic Diversity Chapter of Sociology', 1988, page 291, National Law School of India University/Bar Council of India Trust: "...the Maithili region is found to be economically and culturally dominated by Brahmins and if a separate Maithili State is formed they may easily get entrenched as the political elite also. This may not be to the liking and advantage of several other castes, the traditionally entrenched or currently ascendant castes. Therefore, in all possibility the latter groups may oppose the formation of a separate Maithili state although they also belong to the Maithili speech community. This type of opposition adversely affects the development of several languages."

Jagdish Prasad Mandal

Amartya Sen wrote about the famine of Bengal (1942-43), talking about how lacs and lacs of people died in that famine (15 lacs as per estimates of the Famine Enquiry Commission), but that this didn't include his loved ones. Likewise in 1967 there happened a great famine in Mithila. When Indira Gandhi (then the Prime Minister of India) visited the area, she was shown how the people from the *Mushhar* community survived simply by eating *bisarh* (roots of lotus and other plants).

But this tragedy was written about only in 2009 by Sh. Jagdish Prasad Mandal, over forty years after it happened. And the reasons for that delay are obvious. In Maithili literature there is a lopsided tendency which has made its journey slanted and ugly. The ones writing for mainstream Maithili literature have had no firsthand experience of tragedies of this magnitude, and so they could never write on such subjects.

The coming of Jagdish Prasad Mandal on the literary scene simultaneously started a renaissance and a reformation movement in Maithili literature. It commenced a shiny new era. He gets credit for correcting the dark and ugly course the literary scene had taken. He gets credit for filling the gap and correcting the lopsided course of Maithili literature, which was hitherto moving on a one-way road.

Jagdish Prasad Mandal is an artist. He has the ability to convey the facts in such an amazing way that the reader is left in a trance.

He has the ability to present the facts in a directional and purposeful manner. Armed with this ability he has defined the literature of the Maithili language so greatly that we could bifurcate its history into two eras: the era before Jagdish Prasad Mandal, and the era which comes after.

ISSN 2229-547X VIDEHA

His facts are collated from every section of society. They're not place in his prose as ornaments. Instead, they flow naturally.

It's as if a high tide has shaken the coastlines of the so-called main-drain of Maithili literature, which dies completely but then regains its shape during the monsoon.

His words never present a lament. His writing never shirks from its responsibilities. No matter what hardships they face, the characters never lose hope or blame their lack of resources; they never grow dismal and resolutely keep marching on.

He has respect for the lifestyles and contributions of every strata of society, and that is very exceptional. This becomes effective because there is absolutely no mismatch between his words and his deeds; and this is because of the greatness of his personal and social life. What he thinks, he does, and that he writes. It makes his literature become truthful.

The ups and downs of the lyrical voice of the Maithili language attracted even the great Yehudi Menuhin who, in a BBC programme, said it was one of the sweetest languages. He talked of how his entire body swung hearing this language. Jagdish Prasad Mandal uses the ups and downs of this lyrical/rhythmic language to show the affinity of mutual dependence with its society and culture.

This will bring revolution not only in literature but also in the economic arena.

Survey of some books written by Shri Jagdish Prasad Mandal

SHAMBHUDAS

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

Jagdish Prasad Mandal injects into the minds of the readers the deity *Barham Baba*. He shows that both the devotees as well as *Barham Baba* himself are quite cheerful. He shows the convergence of "Shambhua" (disrespectful calling) into "Shambhu" (respectful calling). And then he sees Shambhudas changing to Darbaridas.

The crumbling institutions of Mithila and Shambhudas, turned to rubble, seem to be proof that the arts practiced in Mithila have been destroyed. But the main characters of his other short stories, like *Bhaitak Lava* or *Bisarh,* refused to crumble. So then why has Shambhudas become Darbaridas? Is it just a simple loss of power? Or is it a change in Jagdish Prasad Mandal, the writer, himself? Has he become tired, is he being defeated?

Looking closer we find that Shambhudas is not in any way inferior to the heroes and heroines of *Bhaitak Lava* or *Bisarh*. Then why is Shambhudas losing? Shouldn't he be *winning?* Why does the writer push him to defeat? After all he is the writer, he's actually *God* as far as the characters are concerned, why he is letting the circumstances be such that Shambhudas finds himself in a losing position?

Jagdish Prasad Mandal's characters are not artificial ones. And that is why they don't always win on every economic front.

In the economic front work is done through hands, through labour. But culture (including literature) is very delicate handiwork. The characters of this story get entrenched in this handiwork.

When Jagdish Prasad Mandal's other characters had to fight on the economic front, they fought like anything, and they triumphed. But to serve the area of Art, Shambhudas had to migrate (unlike the characters of Bisarh).

ISSN 2229-547X VIDEHA

So Shambhudas had to become a courtesan, a court-artist. Economically it was thankless work. But doing this was the only way of *true* survival in these changing times, for it represented the survival of Art!

But here also, in what may still be seen as defeat (for economically, it was), Shambhudas unfurled a flag of revolt.

He decided not to marry. He decided to let go of the possibility of a family life. Shambhudas became Darbaridas not for his economic survival. Indeed, he certainly isn't a utilitarian, but he *had* to make the compromise for the sake of the survival of his Art. His decision not to marry was repentance for this compromise.

The parallel tradition will topple if Art become "Darbaridas". If Shambhudas loses it will be a loss for Mithila. It's not just Jagdish Prasad Mandal who will lose, it is the entirety of Mithila which will lose in his defeat.

Will Mithila heed this warning of Shambhudas?

BAJANTA-BUJHANTA

It is a collection of seed stories.

The title seed-story *Bajanta-Bujhanta* (trans. talking-understanding) is a story of a parrot, who is Bajanta-Bujhanta. In this collection of seed stories, there is more symbolism like these than in the writer's other stories.

In *Chaukidari* we see a labourer working even in the eight month of her pregnancy, by tying a rope around her waist and stomach.

The story *Pator* he dedicates to the famous seed-story activist Manoj Kumar Karn (alias Munnaji), and to him he assigns a piece of symbolism too. "Like a dark

room which has serpents all around, like that are we too". This moves the seed-story further forward. And Samdahi says – "Oh, you have become the listener of the very language of the crow."

TAREGAN

This book lacks complex plotlines or complicated symbols for the simple reason that it was written to instill good values in children.

But here, the whole story is a symbol. When Subhas Chandra Bose's father tells him that to sleep on the ground is not enough, it leaves a remarkable imprint on his mind. What this man did later on for India is known to all. In *Satya Vidya* Bhardwaj says that "Knowledge is bigger than heaven."

This collection is not only of importance in children's literature. It expands the horizons of seed stories too.

GEETANJALI

Chalu Uchitpur poem features a place called Uchitpur, where everyone has the exact same body language and the exact same clothing. In this land there is no difference between fire and water.

The "new moonlike full moon" tells us many things about the deformed "*bedhab roop*".

Yaar Yau is a song of tragedy. It describes everything that has been washed away in a flood, including the washing away of the spirit and of the sense of existence.

He dedicates the song to Sh. Rajnandan Lal Das's 'Yug-Yug', where he has described how all door closes when one is entrapped in a spiderweb.

This entire collection of song is dedicated to Professor Udaya Narayana Singh 'Nachiketa'. All the songs in this collection are lyrical.

RAIT-DIN

Baba did not understand the mischief of the barren trees. He tilled and ploughed and planted the trees. But then those trees became the abode of dead souls. They did not touch the soil, reaching the sky by holding the top.

Halluk Kaaj (trans. easy work) details the technicalities of labour-tools which make the work easy. It is an experience of satisfaction that the artists get after the completion of work. How a world full of empathy is created, it describes that too.

Whether it's in *Patta Chhimee*'s syrupy mental level or in "the huge-lad is condemned", the writer brings new and distinct typical Maithili verse. It makes Rait-Din distinct.

INDRADHANUSHI AAKASH

We listen as someone sings Nachari (Maithili songs about Lord Shiva Songs) while fully swinging his voice and body. The spirituals and supernaturals have found their places. One is assembling (or creating) and the other is disassembling. The change is a mere game.

The poet is very careful in his selection of words and subjects. Mystery, disappointment, answers, along with questions and hope, all keep coming and going.

TEEN JETH EGARHAM MAAGH

In *Ghare-Ghare* every household is lit up by a *diya*, but the whole village is in darkness.

In *Kaushal-Jakhain* we are told why the land turned barren and how the dark village ended up in its sorry state.

In *Aas Prem Sang*, hope returns to the village.

SARITA

Here, Jagdish Prasad Mandal's verse keeps raising questions. It keeps on questioning.

His poetry shows a painful awareness of facts and constantly brings up questions, even in its conclusion.

If you compare his poetry with his prose, you will find much more pessimism in it, unlike his hope-filled prose. The short length of poems does not give him time to analyse the questions, to find the answers. So he keeps on raising questions and only questions, poking at the readers to look for the solutions themselves.

This type of verse is an intriguing first for Maithili literature.

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री

[STUDY MATERIALS FOR UPSC (UNION PUBLIC SERVICE COMMISSION) & BPSC (BIHAR PUBLIC SERVICE COMMISSION) EXAMS- MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL) AND OTHER OPTIONALS AND GENERAL STUDIES (ENGLISH MEDIUM)]

Videha e-Learning



पेटार (रिसोर्स सेन्टर)

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

शब्द-व्याकरण-इतिहास

मैथिली शब्द संचय MAITHILI DICTIONARY- RAMDEO JHA (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

MAITHILI IDIOMS & PHRASES मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश- रमाकान्त मिश्र मिहिर (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

डॉ. ललिता झा- मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

ENGLISH MAITHILI COMPUTER DICTIONARY

MAITHILI ENGLISH DICTIONARY

अणिमा सिंह -Shishu_Geet_Khel_Anima_Singh

डॉ. रमण झा

मैथिली काव्यमे अलङ्कार अलङ्कार-भास्कर

आनन्द मिश्र (सौजन्य श्री रमानन्द झा "रमण")- मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

BHOLALAL DAS मैथिली सुबोध व्याकरण- भोला लाल दास

राधाकृष्ण चौधरी- A Survey of Maithili Literature

....

मूलपाठ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकास (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

राजेश्वर झा- मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास (मैथिली साहित्य संस्थान आर्काइव)

Surendra Jha Suman दत्त-वती (मूल)- श्री सुरेन्द्र झा सुमन (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस) CIIL SITE

....

समीक्षा

सुभाष चन्द्र यादव-राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

शिव कुमार झा "टिल्लू" अंशु-समालोचना

RAMDEO JHA *रामदेव झा- सव्यसाची (अभिनन्दन ग्रन्थ)*

RAMDEO JHA मैथिली लोकसाहित्य: स्वरूप ओ सौन्दर्य- डॊ. रामदेव झा

RAMDEO JHA दत्त-वतीक वस्तु कौशल- डॊ. श्रीरामदेवझा

RAMDEO JHA उमापतिक "मैथिलेश"क अप्रमाणिकता- डॊ रामदेव झा

RAMDEO JHA उमापति- डॊ रामदेव झा

RAMDEO JHA मायानन्द मिश्र- डॊ रामदेव झा

SHAILENDRA MOHAN JHA परिचय निचय- डॊ शैलेन्द्र मोहन झा

CHANDRANATH MISHRA AMAR चन्द्रनाथ मिश्र अमर- समीक्षा

डॉ बचेश्वर झा- B_JHA_Nibhand_Nikunj.pdf

डॉ. देवशंकर नवीन- Adhunik_Sahityak_Paridrishya

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

डॉ. रमण झा- भिन्न-अभिन्न

प्रेमशंकर सिंह- मैथिली भाषा साहित्य:बीसम शताब्दी (आलोचना)

डॉ. रमानन्द झा 'रमण'

हिआओल _

अखियासल CIIL SITE

VIDYAPATI- BY RAMANATH JHA

VIDYAPATI-BY RAMANATH JHA (SAHITYA AKADEMI SITE)

सीताराम झा- लेखक भीमनाथ झा

सीताराम झा- लेखक भीमनाथ झा (SAHITYA AKADEMI SITE)

जगत्प्रकाशमल्ल- लेखक रामदेव झा

जत्प्रकाशमल्ल- लेखक रामदेव झा (SAHITYA AKADEMI SITE)

दुर्गानन्द मण्डल-चक्षु

..

अतिरिक्त पाठ

पहिने मिथिला मैथिलीक सामान्य जानकारी लेल एहि पोथी सभकेँ पढ़ू:-

राधाकृष्ण चौधरी- मिथिलाक इतिहास

फेर मनलग्गू फाइल सभकँ सेहो पढ़ू:-

केदारनाथ चौधरी

चमेलीरानी माहुर करार

कुमार पवन

पइठ (मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथा) (साभार अंतिका) डायरीक खाली पन्ना (साभार अंतिका)

योगेन्द्र पाठक वियोगी- विज्ञानक बतकही

रामलोचन ठाकुर- मैथिली लोककथा

SAHITYA AKADEMI

http://sahitya-akademi.gov.in/publications/e-books.jsp

http://sahitya-akademi.gov.in/general/Digitalbooks.jsp

CIIL

http://corpora.ciil.org/maisam.htm

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI1.pdf

जुआयल कनकनी- महेन्द्र

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI2.pdf

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI3.pdf

सृजन केर दीप पर्व- सं केदार कानन आ अरविन्द ठाकुर

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI4.pdf

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI5.pdf

JNU

http://sanskrit.jnu.ac.in/maithili/index.jsp

http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=maithili

ARCHIVE.ORG

https://archive.org/details/%40vijay_deo_jha?&sort=-publicdate&page=2

VIDEHA MAITHILI BOOKS/ PICTURE-AUDIO-VIDEO ARCHIVE

http://videha.co.in/new_page_15.htm

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

ALL INDIA RADIO DOORDARSHAN आकाशवाणी दूरदर्शन

http://prasarbharati.gov.in/

http://newsonair.com/

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

https://doordarshan.gov.in/

आकाशवाणी मैथिली पोडकास्ट http://prasarbharati.gov.in/podcast.php?filterlang=Maithili&from=1947-08-15&fromwp=2020-08-29&to=2050-12-31&search=GO

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली रेजनल न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-1 http://newsonair.com/RNU-NSD-Audio-Archive-Search.aspx

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली रेजनल न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-2 http://newsonair.com/Regional-Text.aspx

आकाशवाणी दरभंगा http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=282

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल https://www.youtube.com/channel/UCGdNveEFmv4pPolWiTEMxVA

आकाशवाणी भागलपुर http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=359

आकाशवाणी पूर्णियाँ http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=256

आकाशवाणी पटना http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=122

IGNCA

http://ignca.nic.in/coilnet/mithila.htm

http://ignca.nic.in/coilnet/kalyani.htm (MAITHILI ENGLISH DICTIONARY)

http://tdil.mit.gov.in/CoilNet/IGNCA/mithila.htm

-

MITHILA DARSHAN

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

https://mithiladarshan.com/ (online pdf of Maithili journal)

I LOVE MITHILA

https://www.ilovemithila.com/ (online maithili journal)

मैथिली साहित्य संस्थान

https://www.maithilisahityasansthan.org/

https://www.maithilisahityasansthan.org/resources (online pdf of Reasearch Papers/ books)

....

VIDEHA e-LEARNING YOUTUBE CHANNEL

https://www.youtube.com/channel/UC4abVKqMj2pDWIAkXiOHp7A

(अनुवर्तते)

-गजेन्द्र ठाकुर

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) अनुवाद विशेषांक (गद्य-पद्य भारती) ९७म अंक

Videha_01_01_2012 Videha_01_01_2012_Tirhuta 97

८) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

९) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

१०) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

११) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

१२) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१३) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१४) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१५) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

Videha_15_05_2018

Videha_01_05_2018

Videha_15_04_2018

Videha_01_04_2018

Videha_15_03_2018

Videha_01_03_2018

Videha_15_02_2018

Videha_01_02_2018

Videha_15_01_2018

Videha_01_01_2018

Videha_15_12_2017

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

Videha_01_12_2017

Videha_15_11_2017

Videha_01_11_2017

Videha_15_10_2017

Videha_01_10_2017

Videha_15_09_2017

Videha_01_09_2017

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह: सदेह: १ (२००८-०९) देवनागरी

विदेह: सदेह: १ (२००८-०९) तिरहुता

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०) देवनागरी

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०) तिरहुता

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)देवनागरी

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०) तिरहुता

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)देवनागरी

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०) तिरहुता

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]देवनागरी

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५] तिरहुता

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]- दोसर संस्करण देवनागरी

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]देवनागरी

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६] तिरहुता

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]देवनागरी

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७] तिरहुता

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]देवनागरी

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८] तिरहुता

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]देवनागरी

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९] तिरहुता

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]देवनागरी

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०] तिरहुता

विदेह:सदेह ११

विदेह:सदेह १२

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह:सदेह १३

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of the original works.-Editor

Maithili Books can be downloaded from: https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

विदेह सम्मान*: सम्मान-सूची*

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

सूचना/ घोषणा

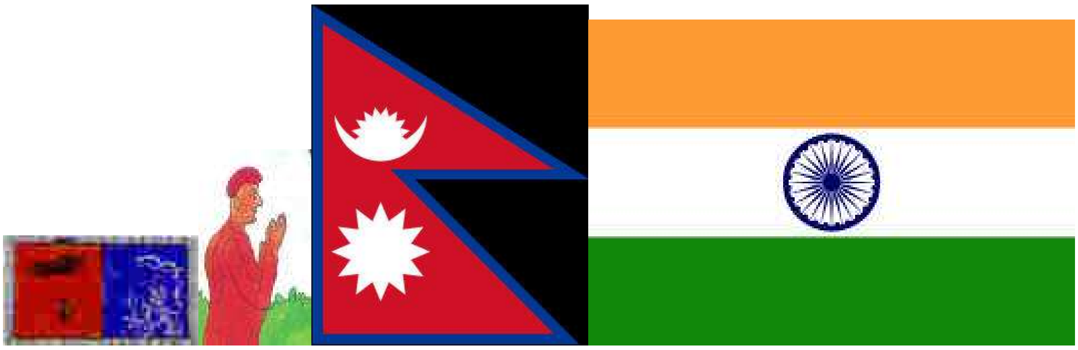
"विदेह सम्मान" समानान्तर साहित्य अकदेमी पुरस्कारक नामसँ प्रचलित अछि। "समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार" (मैथिली), जे साहित्य अकादेमीक मैथिली विभागक गएर सांवैधानिक काजक विरोधमे शुरु कएल छल, लेल अनुशंसा आमन्त्रित अछि।

अनुशंसा २०१९ आ २०२० बर्ख लेल निम्न कोटि सभमे आमन्त्रित अछि:
१) फेलो
२)मूल पुरस्कार
३)बाल-साहित्य

४)युवा पुरस्कार आ
५) अनुवाद पुरस्कार।

अपन अनुशंसा ३१ दिसम्बर २०२० धरि २०१९ पुरस्कारक लेल आ ३१ मार्च २०२१ धरि २०२०क पुरस्कारक लेल पठाबी।

पुरस्कारक सभ क्राइटेरिया साहित्य अकादेमी, दिल्लीक समानान्तर पुरस्कारक समक्ष रहत, जे एहि लिंक sahitya-akademi.gov.in पर उपलब्ध अछि। अपन अनुशंसा editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।



विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि)editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक/ प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार ऐ ई-पत्रिकाकेँ छै, आ से हानि-लाभ रहित आधारपर छै आ तैँ ऐ लेल कोनो रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

 ५ जुलाई २००४ केँ http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA



विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA



Videha e-Learning

Gajendra Thakur

ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददास सिलेबसमे छथि आ रसमय कवि चतुर चतुरभुज विद्यापति कालीन कवि छथि। एतए समीक्षा शृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व चारू गोटेक शब्दावली देल जा रहल अछि। नव आ पुरान शब्दावलीक प्रयोगसँ लेखनीमे धार आओत, संगहि साहित्यिक मैथिली भाषा लिखबामे धाख खतम होएत आ सुच्चा भावक अभिव्यक्ति भए सकत।

१. ज्योतिरीश्वर शब्दावली

२.विद्यापति शब्दावली

३. रसमय कवि चतुर चतुरभुज शब्दावली

४. गोविन्ददास (१५७०-१६४०) शब्दावली



१

<u>ज्योतिरीश्वर शब्दावली</u>

गोण्ठि- मलाह
कबार- तरकारी बेचनिहार
पटनिआ- मलाह
लबाल- लबरा
लौजिह- ललचाइत जीह बला
पेटकट- जकर पेट काटल छैक/ अनकर पेट कटैत अछि।
नाकट- नककट्टा
बएर- बदरीफल
बाबुर- बबूर
खुसा- शुष्क
चुसा- चोष्य
फरुही- मुरही/ लाबा
करहर- कुमुदक कन्द
मलैचा- मेरचाइ
सारुक- भैँटा (श्वेत कुमुदक) कन्द
बोबलि- घेचुलि –खाद्य कन्द
बाँसी- वंशी
हुलुक- हुडुक्का (वाद्य यंत्र)
जोहारि – प्रणाम
तोरह – तौलह
बराबह- फुटा कए राखह
खुटी- महिला द्वारा कानक ऊर्ध्वभागमे पहिरए जायबला खुट्टी
सिङ्कली- सिकड़ी
चुलि- चूड़ी
त्रिका- माँग टीका
खञ्जरीट- खंजन पक्षी
साँकर- चीनी, लालछड़ी
बिरनी- वेणी, जुट्टी
कम्बु- शंख
पञ्ज- पद्म
राउत- सैनिक पदाधिकारी
राजशिष्ट- राजाक दरबारी
पुरपति- नगरक मुख्य
साधि- सेठ
गन्धवणिक- कस्तूरी आदि सुगन्धी बेचनिहार
बेलवार- सीमारक्षक

राजपुत्र- एकटा पदाधिकारी
द्वारिक- राजदरबारमे प्रवेशक अनुज्ञा देनिहार
पनिहार- द्वारपाल
अगहरा- अग्रहार पाबि काज कएनिहार
रौतपति/ राजपुत्रपति- रौत सभक प्रधान
सन्धिविग्रहिक- विदेशमंत्री
महामहत्तक- प्रतिरक्षामंत्री
प्रतिबलकरणाध्यक्ष- शत्रुसेनाक जासूसीक विभाग
स्थानान्तरिक- राजाक पर्यटनक व्यवस्था केनिहार अधिकारी
नैबन्धिक- दस्तावेज लिखनिहार
वार्तिक- गुप्तवार्ता संग्राहक, वार्तिक आऽ महावार्तिक पञ्जीमे उच्च पदवी
आक्षपटलिक- द्युतग्रुहक अधिकारी
खड्गग्राह- हाथमे खड्ग लेने राजाक रक्षक- खर्गा
प्रमत्त्वार- बताहेकेँ रोकएबला अधिकारी
बिश्वास- राजाक अंतरंग सहायक
अग्रजाणिक- राजाक प्रयाणमे आगा-आगा चलनिहार सुरक्षा-दल
गूढ़ पुरुष- गुप्तचर
प्रणिधि- गुप्तचर
वार्तिक- गुप्तचर
सूपकार- भनसीया
सूपकारपति- भनसिया-प्रधान
सम्बाहक- भनसियाक परिचारक
बलिष्ठ- शारीरिक बलबला अंगरक्षक, बैठा
श्रोत्रिय- वैदिक
आध्यायिक- अध्येता
मौहूर्तिक- ज्योतिषी
आम्नायिक- वैदिक वा तान्त्रिक, युद्धविषयक परामर्शदाता
चूड़ामणि- भविष्यकथनशास्त्र
पँचरुखी काँच- प्रिज्म
महथ- उच्च कोटिक सैनिक पद, महथा/ मेहता/ महतो
मुदहथ- जिनका हाथमे राजाक मोहर रहैत छल
महसाहनि- आपूर्ति अधिकारी
महसुआर- प्रधान भनसिआ
महल – महर, समृद्ध गोपाल, जेना नन्द महर
सेजवार- सय्यापाल
पनहरि- ताम्बूलवाह
राजवल्लभ- दरबारी
भण्डारी- भाण्डागारिक
कलबार- वणिक
चोरगाहा- चाँवर होकिनहार

सुखासन- आरामकुर्सी
चौपाड़ि बहरघर, दलान, पाठशाला
अँचरा- गमछा
समरहर- अंगमर्दन
विदान- व्यायाम-३६ प्रकारक
तमारु- तामाक लोटा
पनिगह- पानि फेकबाक पात्र
तमकुण्ड- तामाक गँहीर अढ़िया
अप्यायक- तृप्तिकारक
फेना- बरकाओल चीनीक मधुर
जेओनार- भोज
स्वर्गदुर्लभ- पान
दण्डिया- डंटाक उपरका पासि
भृङ्गार- स्वर्णकलस
आरहल- आरम्भ कयल
किटाएल- क्रुद्ध
नियोगी- एक प्रकारक फकीर
बुसक- भूसाक
धुनि- घूड़
संकोच- छोट होयब
अपगत- अलक्षित
सम्भार- प्रसार
कौशिक- उल्लू
गोमायु- सियार
नओबति- प्रहरी-दल
चतुःसम- द्रव- भीतरका धरातल नीपबाक
माठ- खाजा-माठ
उनच- उलौँच, चद्दरि(ओछेबाक)
दर्दुर- बेङ
झिकरुआ- झीङुर
निविल- निविड़ घन
काकोल- कार-कौआ
कोल- सूगर
शिवा- गिदरनी
फेत्कार- भूकब
सार्थवाह- व्यापारी यात्रादल-हरवल्ल्भा
प्रसारी- संचारशून्य मेघ
अखलु- प्रतीत होइत अछि
अखउलि- पूर्वमे कहल
वारिभक्त- पानिमे राखल बासी भात

सौहित्य- तृप्तता
उपचय- वृद्धि
पाण्डुरता- श्वेत भेनाइ जेना शरदमे मेघ कारीसँ उज्जर भऽ जाइत अछि
प्रसन्नता- स्वच्छता
सफरी- पोठी माछ
तरङ्ग- चञ्चलता
शालि- दाना भरल झुकल धान
मरुआ- तुलसी जतिक पुष्पवृक्ष
विशेषकच्छेद- कपार गलपर कस्तूरीसँ चित्र बनायब
दर्शनविधि- दाँत आऽ ठोर रँगब
वसनविधि- वस्त्र रँगब
वर्णिकाविधि- चित्रलेखन
शेखरयोजन- खोपा बान्हब
पत्रभङ्गि- शरीरमे कस्तूरी लेपन
गन्धयुक्ति- अतर-फुलेल बनायब
पानककरनी- शरबत बनायब
पट्टिकावान- पटिआ बीनब
तर्कुकर्म- सीकी-शिल्प
आकरज्ञान- भूतत्त्वविज्ञान
अक्षरमुष्टिका- आँगुरक संकेतसँ अक्षर-भावक निर्देश
दोहदकरण- कृत्रिम उपचारसँ वृक्षकेँ दुर्भिक्षमे पुष्पित करब।
छलितयोग- एकप्रकारक योग
रसवाद- रसायनविज्ञान
दुकूल- घोघट-ओढ़नीक लेल प्रयुक्त वस्त्र
क्षौम- तीसीक सोनसँ बनल वस्त्र
कौशेय- कीटकोशसँ बनल तसर वस्त्र
कमरूबाल- कामरूप बला
बङ्गाल- वङ्गबला
गुञ्जर- गुर्जर
कठिबाल- काठियाबाड़बला
बरहथी- बारह हाथक
बैङ्गना- भट्टासन रंगबला
पञ्चहर- पाँच खण्डक महल
पञ्चसम- पञ्च सुगन्धिद्रव्यक चूर्ण
प्रदीपकलस- अहिबातक पातिल, कलसमे राखल मङ्गलदीप जे बसातसँ मिझाय नहि
षेमा- राजा आऽ सेनाक अस्थायी शिविर
वारिगह- हथिसार वा घोड़सार
एकचोइ/ दोचोइ- एक वा दू मुख्य स्तंभ बला तम्बू
मण्डबा- मड़बा
कपलघड़- कपड़ाक घर

बरागन- बेरागन, सोम-रवि आदि
चेष्टसार- द्यूतशाला
सहिआर- अम्पायर
खेलबार- द्यूतशालाक मालिक
दण्डसाह- दण्डसाक्षी
कात- काँति, हारि-जीत लेल राखल द्रव्य
उपनय- समीप आनब
भुजङ्ग- समदिया, चुगला
घल- झुण्ड
अगिरानि- अग्रगामी रक्षक दल
सेनगाह- सेनानायक
रजाएस- राजादेश
घोल- घोड़ा
पाएन- पएर रखबाक वलय
पलानि- जीन लगाए घोड़ाकेँ कसब
थलबार- घोड़सारमे रहि अश्वक पालन कएनिहार
पाग- मुरेठा
सरमोजा- माथमे पहिरबाक मोजा
गान्ती- गाँती
बाग- चाबुक
साङ्कल- कड़ी
डाम्भ- काँच नारिकेर
फरेन्द- फाँक
कोन्ते- बरछी
लउली- लाठी
जाठी- फड़ाठी
कोन्तिआ- बरछीबाला
धमसा- नगाड़ा
महुअरि- फूँकि कए बजयबाक एक वाद्य
अनायत- ववश, बहीर
षतबार- पहरादार
बाइति- वाद्यध्वनि
टाप- घोड़ाक खूरपात
मुहरव- मुखध्वनि
पलानि- कसि कय
करुअक- कयलक
सर्वांवसर- आम दरबार
वेकल्हेण्टे- डाँड़
पाट- रेशमी
धलि- धड़िया, कप्पा

पाझि- पक्षी
टोपर- टोप सन झपना
सइचान- बाज पक्षी
पितशाल- पीरा साँखु
सरल- धूप सरड़
सिम्बलि- सीमर
सिंसप- सीसी
सहोल- साहोड़
पाउलि- पाँड़रि
बंझि- बाँझि
गिरिछ- रिछ
गुआ- सुपारी
नरङ्ग- सन्तोला
नमेरु- रुद्राक्ष
बउर- बकुल, भालसरि
छोलङ्ग- छोहारा
जुड़- शीतल
एला- अड़ाँची
सुखमेला- छोटकी अड़ाँची
मधुकर- शतावरी
कम्पूर कदली- कर्पूरकदली
कपिञ्जल- तितीर
धारागृह- फुहारासँ युक्त स्नानगृह
स्थेय- भगनिहार नहि
परम्परीण- वंशपरम्परासँ चल अबैत
पुरुष- रक्षक, सिपाही
कार- कारी
काबर- चितकाबर
चलक- चरक, श्वेतवर्ण
गोल- गौर
कइल- कपिल
पाण्डर- पाण्डुर
शीकरविक्षेप- फुहारा छोड़ब
गण्डूष- कुड़रा
नाकजलबुद्बुद- नाकसँ जलमे हवा छोड़ि बुदबुद बनायब
पिण्ड- पीड़ी
पारी- बेढ़
साटि- खुट्टा
चुत- आम
पस्रवण- सोता

पहाल- गिरि
डोङ्कल- डोंगर
चुली- चोटी
कोइआर- कोविदार
सैम्ब- सीमर
सीसमु- सीसो
साङ्कु- साँखु
समि- शनि, सैनि
सहोल- साहोड़
पञोकठ- पद्मकाठ
सभर- साँभर, अष्टापद मृग
कुटुम्बिनी- खीरी
कठहरिआ- कठखोदी
पेच- उल्लू
स्रुच- काठक लाड़नि, दाबि
पञ्चामृत- दही, दूध, घृत, मधु, शर्करा
पञ्चकषाय- शरीरमे लगयबाक पाँच सुगन्धिद्रव्यक चूर्ण
चषाल- यूपक माथ परक थुमहा
उदूखल- उक्खरि
चमस- बाटी
संभृति- सामग्री
सप्तधान्य- जओ, गहुम, तिल, काउन, साम, चीन, नीवार
आषाढ़दण्ड- पलाशदण्ड
तरुत्वच- वल्कल
वृक्षी- मुनिक बैसबाक आसन
दारुपात्र- कठौत
करण्डक- छिट्टा, पथिआ
बहुआरि- बहुरिआ, पुतोहु
बिदान- दाओ, मुद्रा
उभरि- उछलि कए ऊपर आबि, कुश्तीक दाओ
अवधा- अधोमुख, कुश्तीक दाओ
विद्यावन्ति- नर्तकी
सोताक ककना- मङ्गल सूत्र
सिङ्कली- सिंकड़ी
शाख- शंखाचूड़ी
खुन्ती- खुट्टी- कानक उपरका भागमे पहिरल जाइछ
चूलि- चूड़ी
तृका- माँगटीका
दशञुधि- दसौन्ही- राजाकँ कालक सूचना देनिहार, सम्प्रति भाट
समहथ- समहस्त, बाजा सभपर एकबेर हाथ दए संगीत निकालब

मण्डल- हाथ-पएरक चक्राकार संचार कए एक मुद्रासँ दोसर मुद्रामे पहुँचबाक क्रिया
अङ्गहार- अङ्गसभकँ विलासपूर्वक उचित स्थानमे पहुँचाएब
भाल- भूजाबलाक चूल्हि
ओबारी- पातिल
शिवा- गिदड़नी
भीम- भयानक
उल्कामुख- एक जातिक गीदड़ जकड़ा मुहसँ धधरा बहराइत छैक
जन्ताक- जाँतक
चुञ्ची- स्तन
पसार- दोकान
पेचा- उल्लू पक्षी
षीषील- खिखीड़
नेउर- बीजी
अपर्यन्त- असीम
पाट- पट्टवस्त्र
कापल- कपड़ा
सकलात- गलैचा
दुसुखासन- सुखद शय्या
लचसूचिका- नओ सुइयापर बिनायल बिछाओन
परिकर-नायक- दलपति
वर्हि- कुश
समिध- जारनि
दृषद- पाथर
लाज- लाबा
इष्टाङ्गना- भावी पत्नी
सुरती- सूरतसँ आयल, सम्प्रति सुरती तमाकू
जातीफल- जायफल
सूक्ष्मेला- छोटकी अड़ाँची
गुलत्वक- दालिचीनी
पत्रक- तेजपात
पिर्प्पली- पीपरि
कटुकी ओ दुलाह- दुलार काँट, वनौषधि
मूल्य परिछेद- मूल्य पटाएब
निष्क्रय- विनिमय
कर्षक्रय- सोनाक मुद्रा कीनब
अङ्कपरिस्थिति- लेखा-जोखा
हरण-भरण- माल लेब-देब
व्यवच्छेद- फरिछोट
नष्टकाक- कार कौआ
सलभ- फतिंगा

ग्रहिल- लगारी
सद्विचक्षण- नीक विद्वान्
वपा- भीड़-स्तूपाकार भूमि
खोल- खाधि
हस्तकाण्ड- लग्गा
गुणकाण्ड- नपबाक लग्गा
वत्सदन्त- बाछाक दाँत सन
भल्ल नख- भालुक नखक सदृश
तृपर्व- तीन पोर बला
सप्तपर्व- सात पोरबला
आलीढ़- दहिना ठेहुनकँ उठाय ओ बामा ठेहुनकँ नीचाँ रोपि ठाढ़ भेल
प्रत्यालीढ़- आलीढ़क विपरीत
समपाद- दुनू ठेहुन एक सरल रेखापर रोपि ठाढ़ भेल
बिशाख- दुनू टाँग चिआरि ठाढ़ भेल
स्थानक- ठाढ़ होएबाक ढ़ंग
असन- भाला
गोकर्ण- छोट भाला
मुकुल- कलिकाकार तीर
डाण्ड- पतबार, पानि उपछबाक कठौत
चाड, चडक- नाओ सभक बेड़ा
जुज्झार- लड़ाकू, युद्ध-पदाति
गणक- गणितज्ञ
ताराविद् – तारा देखि दिशाक ज्ञान करओनिहार
गुणवृक्ष- मस्तूल
सेकपात्र- नाओसँ पानि उपछबाक कठौत
वोहित- जहाजक बेड़ा
बिआरी- रात्रिभोजन
चोरगाहि- चामरिग्राहिणी
पटा- छोट पीढ़ी
बधा- खुट्टी लगला उत्तर खराऊँ मुदा डोरी लगला उत्तर बधा
तमारु- ताम्रपत्र
बटइ- बटेर
तेरिआ- तीन खुट्टाक- दू बिआनक महीस
लेबारी- नार-पुआर
अधतेरह- तेरहसँ आध कम अर्थात् साढ़े बारह
अँचओलनि- हाथ-मुँह धोलनि

२

<u>विद्यापति शब्दावली</u>

मृगमद = कस्तूरी
वासर = दिन
रैन = राति
लिधुर = रक्त
पुर नटी = नागर नटी
अवतरु = अवतरित होऊ
कनक भूधर = सुमेरु पर्वत
चन्द्रिका चय = चन्द्रिकाक समूह
निपातिनि = नाश करएबाली
भक्त भयापनोदन = भक्तक भए दूर करएबाली
दुरित हारिणि = विपत्तिक भार हरण करएबाली
दुर्गमारि = भयङ्कर शत्रु
विमर्द = विनष्ट
गाहिनी = विचरण करएबाली
सायक = वाण
सुकर = सुन्दर
पिसित = काँच मौस
पारणा = तृप्ति
रभसे = आनन्दित करएबाली
कृशानु = अग्नि
चुम्ब्यमान = चुम्बन करैत अछि
परिच्युति = नष्ट करैत अछि
आड़ = लाल
भागि = वक्र
गोए = नुका कए
सुधाए = अमृत
कुशेशय = शतपत्र कमल
अधबोली = असंपूर्ण वाक्य
खनेखन = क्षणे-क्षण
उचिक = चकित भावेँ
आरति = पीड़ा
अनानि = अज्ञानी
दन्द = झगड़ा
हेरैत = देखैत
मनसिज = कामदेव
गौरव = गुरुता

खीन = क्षीण
अओके = दोसराक
लहु = लघु
परगास = प्रकाश
सुरत विहार = काम-क्रीड़ा
नवरङ्ग = संतोला
सन्तापलि = कष्ट देनाइ
बाङ्क = वक्र
पसाह = प्रसाधन
भीति = भयसँ
तिष = तीक्ष्ण
सिझल = सिद्ध भेल
कोरि = बैर फल
ससन = वायु
धनि = नायिका
अम्बर = वस्त्र
रेह = रेखा
रङ्ग = आनन्द
अलका = लेप
मसि = सियाही
समरा = श्यामल
कचोरा = कटोरा
पहू = प्रभू
ससधर = चन्द्रमा
मनोभव = कामदेव
सउदामिनी = विद्युत
करिनि = हस्तिनी
वयन = मुख
परिमल = सुगन्धि
तनरुचि = शरीरक गोराइ
अरुझायल = ओझरा गेल
बिलास-कानन = प्रमद-वन
निविल = घनगर
विहि = विधि
निञ = निज
विद्रुम दले = मौसरीक पातमे
तिहुअन = त्रिभुवन
मल्ल = पहलबान
हाटक = सोना
थम्भ = स्तम्भ

चिकुर-निकर = केशपाश
विचरित = निअम विरुद्ध
कवरी = केशपाश
चामरि = चँवर गाय
सम्भसि = सम्भाषण
न जासि = नहि कएल जाऽ सकैछ
हुतासे = अग्नि
मो = हम
पीहलि = झाँपि देलक
पीहित = आच्छादित
कुहुकि = मायाविनी
जुड़ायब = शीतल करब
दहइ = जड़ायब
अवनत = नीचाँ झुकल
बारल = निवारण कएल
धाओल = दौगि पड़ल
पसाहिम = प्रसाधन
फुलग = रोमांच
बलाअ = वलय
पेखलि = देखल
बेढ़लि = लिपटल
थीर = स्थिर
पुछसि = पुछैत छह
परस = स्पर्श
झुरए = व्याकुल होइत अछि
अम्बुद = मेघ
धन्दा = संदेह
पुतलि = मूर्ति
इन्दु = चन्द्रमा
महि = पृथ्वी
माझ = मध्य
खिन = क्षीण
मधु = पुष्प रस
उपेखि = उपेक्षा करके
तरुअर = तरुवर
लेख = उल्लेख
परिहरि = छोड़कर
तोरिए = तोहर
पाछिलि = पाछाँक
सनि = सदृश

अछलिहुँ = हम छलहुँ
छाजत = शोभित होएत
घोसिनी – ग्वालिन
बथु = वस्तु
अरतल = अनुरक्त
रव = हल्ला
राहि = राधा
तापिनि = ज्वाला
बयने = वाणी
धरनि = पृथ्वी
इथि = एकर
जोतिअ = ज्योतिष
मुरछइ = मूर्च्छा
आइति = अधीनता
महते = महावतसँ
नव = झुकैत अछि
एहो = ई
बटमारी = रस्तामे लुटनाइ
तुलाएल = बढ़ाओल
पसार = दोकान
पढ़ओंक = बोहनी
कुंगयाँ = गमार (कुगामक)
आजि = लगा देब
आग = अङ्ग
गोए = नुका कए
इन्दुमुखी = चन्द्रमुखी
तहु = ताहि परसँ
परिहरिहह = त्यागि देब
सारी = सारिका
सेचान = बाज
भामि-भामि = भ्रमण कए
विरडा = विडाल
सुरते = काम-क्रीड़ा
काहिअ अवधारि = विश्वासपूर्वक कहैत अछि
अन्तर नारी = नारीक हृदय
रोखए = रोष
गंजए = गंजन
रंजए = प्रसन्न
साह = ओऽ
तरासे = भए

परुष = कठिन
सोस = शुष्क
चेतन = समर्थ
आथि = अछि
सारी = संग
दूषलि = दुःख
निमाल = निर्माल्य
अंसुक = वस्त्र
वाँलभु = वल्लभ
नठल = नष्ट
परबोध = प्रबोध
पांगुर = पैरक आंगुर
खिति = क्षिति
गीभ = ग्रीवा
अनुसए = पश्चाताप
अनुरञ्जब = हम सम्हारि सकब
विरमाने = विराम-स्थल
एहो पय = इस पर भी
जार = जलाकर
नखत = नक्षत्र
जुगुतिहि = तर्कसँ
दोहाए = शपथ
रङ्ग = अनुराग
गरुअ = गुरुतर
पिसुन = चुगलखोर
अरुझओहल = ओझरायल
कञोनकँ = ककर ऊपर
बारि = बचा कए
फुलधालि = फूल धारण कए
कैतवे = छलसँ
अह = दिन
सपजत = सपरज
वथु = वस्तु
मोन्ति = मोती
धम्मिल = केशपाश
धोएल = स्थापित कएल
अङ्गिरि = अंगीकार करब
पुनिमाँ = पूर्णिमा
विभिनावए = अलग कए सकैत अछि
आनन = मुख

तिमिशरि = अंधकारक बैरी
चालक = प्रेरक
बम = उगलि रहल
भीभ = भआवोन
ओल = अन्त
कवल = ग्रास
सरूप = सत्य
निसिअर = निशाचर
भुअङ्गम = भुजङ्गम
उजोर = प्रकाश
झाप = डुबनाइ
मेंदुर = घन
मुदिर = मेघ
पाउस = पावस
निसा = निशा
निबिल = निविड़
निचोल = साड़ी
जामिक = प्रहरी
थैरेज = स्थैर्य
थोइआ = स्थापयित्वा
रञनि = रात्रि
सिरहि = शोभामे
असिलाइ = म्लान भऽ गेलाइ
वालँभू = स्वामी
मुसए = चोरि करबाक लेल
छैलरि = छलियाक
अरथित = याचनासँ
जड़ाइअ = ठण्डा करू
विरत रस = जकर स्वाद खतम भए गेल
अचेतन = मूर्ख
कके = किएक
लाघव = अनादर
चिटि-गुड़े = गुड़-चीटी
चुपड़लि = ब्याज
लओले लोथे = बहन्ना करलो उपरान्त
झाल = शुष्क
दरनि = दरारि
असेखि = अशेष
असहति = असहनशील
तन्न = तन्त्र

भाझहि = मध्य
खीनी = क्षीण
झपावह = ढ़कैत होए
परिरम्भि = आलिङ्गन कए
फुजलि = खुजि गेल
घोषसि = घोषणा
नखर = नख
पाँच पाँच गुन दस गुन चौगुन आठ दुगुन = ५*५*१०*४*८*२=१६०००
नखर = नख
छाँद = शोभा
हिया = हृदय
सदय = सहाय
कानुक = कृष्णाक
निरसाओल = नीरस कएल
सखिता = साक्षित कएल
करवाल = तलवार
काँढ़ = निकलैत अछि
कार = कारी
उजागरि = उज्जर
परिपन्तिहि = प्रतिपक्षीकैँ
पयगन्ड = प्रौढ़
मधुमखिका = मधुमक्षिका
उधारल = उद्धार कएल
लागर = युक्त
पुरहर = विवाह अवसर पर मांगलिक कलश
मन्दाकिनी = गङ्गाजल
केसु = किंशुक
विथुरलहु = पसारि देल
भिति = दीवारि
पौञनाल = कमलनाल
रात = लाल
ऐपन = अरिपन
हथोदक = हस्तोदक
विधु = रस्ताक ठकान
कनए-केआ = चम्पा+केरा = कनक+कदली
जैतुक = दहेज
डिठि = दृष्टि
तुलइलिहुँ = शीघ्रतासँ
अनुबन्ध = लगओनाइ
बोल छड़ = मिथ्यावादी

मज्जि = मज्जन कए
विथरओ = पसरि जाय
पाड़रि = गुलाब = पाटली
भोपति = हमरा लेल
वाउलि = पगली
विधुन्तुद = राहु
सेरी = शरणार्थी
परभृतक = कोकिल
मतैँ = मन्त्र
कि रहसि बोरि = की हास्यमे बाजि रहल छी
बालहि तोरि = अहाँक प्रेमिकाकेँ
भर बादर = मेघसँ भरल
झम्पि = रहि-रहि जोरसँ
सघने खर = तीव्र आऽ घन खर
डाहुकि = जोरसँ
थेघा = टेक कए
पख = पक्ष
पिआञे = प्रियतम
पङ्का = लेप
तथुहु = ओहिमे सेहो
दर = अपूर्व
अपद = बिना कारणक
साती = तीव्र वेदना
अवथाञे = अवस्था
पसाइल = पसारल
रासे = रोष
बालभु = वल्लभ
आएत = अधीन
सपूने = सम्पूर्ण
दिगन्तर = दूर देशमे
अरुझाए = ओझरल
आधिन = अधीन
पललि = भेल
खेञोब = क्षमा
जल आजुरि = जलाञ्जलि
सुसेरा = सुन्दर आश्रय
गोए = नुका कए
सम्भ्रम = अतर्कित
कराडहार = कड़ुआर (तकड़ा पकड़ि यमुना पार करब)
लहु-लहु आखरे = लघु-लघु अक्षर

तामरस = कमल
घनसार = कर्पूर
वेपथु = कम्प
मसृण = चिक्कन
सुदति = सुन्दर दाँतबाली
सुति = श्रुति
जति = जतेक
घमिअ = फूँकल जाइत अछि
आनइति = परवशता
दीब = शपथ
बड़इ = बहुत
देव देयासिनि = झाड़-फूँक करए बाली स्त्री
जटिला = कर्कशा
फुकरि = चिकरि
बहुरि = पुत्रवधू
अङ्गा = चिन्ह
बेसर = नाकक आभूषण
यन्त्रिया = वीणा बजाबए बला
यन्त्र = वीणा
फोटा = ठीका
समत = सम्मत
मौलि = मस्तकमे
मुसरैं = मूसल
जेमाओव = भोजन
नवइते = उतरैत
पडिचाँ = पटिआ
माड़व = मड़बा
उगारल = घेरिकए पकड़ब
आँजल = अंजन
डाढ़ल = दग्ध कएल
गौह = खोह/ गुफा
बिलुविअ = बाँटल जाए
मउल = मुकुट
डाढ़ति = जरि जायत
श्मश्रु = दाढ़ी (मुँह बला खए बला नहि)
अधँगँ = अर्धाङ्ग
गरुअ = अधिक
अभरन = पहिरबाक वस्त्र
बड़ाव = प्रशंसा
तौँ = तथापि

निसाकर = चन्द्रमा
सरिस = सदृश
तांतल = उत्तप्त
सैकत = बालू
हब = होएत
निधुवन = संभोग
आरा = आन
कहाओसि = कहबैत छथि
राजमराल = राजहंस
सारङ्ग = हाथी
सारङ्गवदन = गणेश

३

<u>रसमय कवि चतुर चतुरभुज शब्दावली</u>

रसमय कवि चतुर चतुरभुज- विद्यापति कालीन कवि। मात्र १७ टा पद्य उपलब्ध, मुदा ई १७ टा पद हिनकर कीर्तिकेँ अक्षय रखबाक लेल पर्याप्त अछि। उदाहरण देखू-
दिन-दिन दुहु-तन छीन, माधव
एकओ ने अपन अधीन।
हे कृष्ण! दिनपर दिन दुनूक तन विरहसँ क्षीण भेल जा रहल अछि, आ दुनूमे केओ अपन अधीन नहि छथि।

विहि- विधाता
सञानि- युवती
तनु- वयश, देह
आँतर- अन्तर, भीतर
गोए- नुकाएब
वेकत- व्यक्त
गेहा- ठाम
परि- प्रकारे
विरहानल- विरहक आगि
काँती- कान्ति
धमित- धिपाओल
निरूपए- निरीक्षण
परिहर- उपेक्षा
अचिरहिँ- अल्पकालहि
वामे- प्रतिकूल
निअ- निज, अपन
मलयज- चानन
सयानि- विरह विदग्धा नायिका
धनि- धन्या-नायिका
हेरसि- निहारैत
हरषि- हर्षित भए
परिहरि- मेटाय
नखत- तरेगण
मधुरि-दल- उभय-ओष्ठ
मनसिज- कामदेव
अवनत- नीचाँ झुकनाइ

४

गोविन्ददास (१५७०-१६४०) शब्दावली

(साभार-गोविन्ददास-भजनावली, सम्पादक गोविन्द झा)

अंगुलिवलय- औँठी
अंचल- आँचर;कोर
अकरुण- निर्दय
अकाज- विघटन
अगुसरि- आगाँ बढ़ि
अछोरब- त्यागब
अतनु- कामदेव
अतसी- तीसी
अनंग- कामदेव
अनत- अन्यत्र
अनल- आगि
अनुखन- हरदम
अनुगत- सेवक
अनुबन्ध- संगति
अनुसय- पश्चात्ताप
अनुसरब- पाछु चलब
अन्तराय- विघ्न
अपरूप- अपूर्व
अबगाह- पैसब
अवतंस- मनटीका
अवधान- होस
अवनत- झुकल
अवश- विवश, बाध्य
अविरत- लगातार
अविरल- घनगर
अविराम- निरन्तर
अबुध- बकलेल
अभागि- अभाग्य
अभिसार- प्रेमीसँ मिलए जाएब
अमरतरु- कल्पवृक्ष
अमिअ- अमृत
अम्बर- आकाश, वस्त्र
अरविन्द- कमल
अरुणिम- लाल, ललाओन

अरुण-लाल
अलक- लट
तिलक- पसाहिन
अलखित- अलक्षित, अनचोक
अलस- अलसाएल, शिथिल
अलि- भ्रमर
असार- आसार, वर्षा
अहनिस- दिनराति
अहेर- आखेटक, शिकारी
आकुर- ओझराएल; घबराएल
आगर- आकर, भंडार, खजाना
आतप- रौद
आनआन- अन्योन्य, परस्पर
आनन- मुख, चेहरा
आमोद- सौरभ
आरकत- आरत, आलता
आरति- आर्ति, आतुरता
आसोआस- आश्वास
इन्द्रफाँस- एक प्रकारक बन्धन
इन्दु- चन्द्रमा
इषदवलोकन- अझकहि देखब
उजागरि- जागरण
उजोल- प्रकाश
उतपत- उत्तप्त, धीपल
उतरोल- कोलाहल
उर- हृदय, छाती, स्तन
उरु- जाँघ
उरोज- स्तन
उलसित- उल्लसित
ऊजर- उज्ज्वल
कंज- कमल
कंटक- काँट
कटाख- कटाक्ष, कनखी
कनकाचल- सोनाक पर्वत
कनय- कनक, सोन
कपाट- केबाड़
कबरी- खोपा
कमान- धनुष
कम्बु- शंख
करहाथ- सूढ़, हाथ

करतल- तरहत्थी
करतँह- करैत छथि
करयुग- जोड़ल हाथ
कल- शान्ति; मधुर (ध्वनि)
कलप- कल्प
कलप तरु- पारिजात
कलरव- घोल
कलहंस- एक पक्षी
कलावती- रसिक रमणी
कल्पतरु- पारिजात
कहतहँ- कहैत छथि
कांचन- सोनाक
कातर- दीन
कान- कृष्ण; कार्ण
कानन- वन
काँबलि- साँगि
कामिनि- रमणी
कालिन्दी- यमुना नदी
कालिय- एक नाग जकरा कृष्ण नथलनि
काहिनी- कथा
किंकिर- चाकर, सेवक
किंकिणि- घुघरू
किसलय- नब पात, पल्लव
कुंकुम- सौन्दर्य प्रसाधनक लाल लेप वा चूर्ण
कंटक- काँट
कुंचित- संकुचल
कुंजर- हाथी
कुच- स्तन
कुन्दल- लट
कुन्दल- खराजल, सोधल
कुवलय- नील कमल
कुमुद- श्वेत कमल, भैंट
कुमुदिनि- श्वेत कमलक लता
कुसुम- फूल
कुसुमबान कामदेव
कुसुमसर- कामदेव
कुसुमसायक- कामदेव
कुहू- अमावस्या
कुल- तीर
केलि- काम-विलास

केसरि- सिंह
कोक- एक पक्षी, चकबा
खचित- खौँसल
खर- तेज, तीक्ष्ण
खरतर- तीक्ष्णतर
गंड- गाल; हाथीक मस्तक
गगन- आकाश
गज- हाथी
गजमोति- ओ मोति जे हाथीक मस्तिष्कमे रहैछ
गणक- जोतखी
गरगर- गद् गद, विह्वल
गरब- घमंड
गरल- विष
गरुअ- भारी
गलित- नमड़ल
गहन- नव
गहीन- गँहीर
गात- देह
गाहनी- प्रवेश कएनिहारि
गिम- ग्रीवा, गरदनि
गुनगाम- गुणग्राम, गुणावली
गुनि- बिचारि, सोचि
गुहक- ओझा-गुनी
गेह- घर
गैरिक- गेरु
गोए –छिपाए
गोचर- बाध
ग्रीम-ग्रीवा, गरदनि
धन- प्रबल,तेज ;अविरल, लगलग, लगले लागल
घनरस- जल; गाढ़ रस
घनसार- कर्पूर
घाघर- झाँप
घामकिरन- सूर्य
घुमाएब- सूतब
घूम- निद्रा
घोर- विकट
घोस- गोप
चकोर- एक पक्षी
चतुरानन- ब्रह्मा
चन्द्रक- मयूरक पाँखि

चरमाचल- अस्ताचल
चलतँह- चलैत अछि
चाँचर- चञ्चल
चारु- सुन्दर
चाह- निहारनाइ, अवलोकन
चाहनी- अवलोकन
चाहब- निहारब
चिबुक- दाढ़ी
चिर- दीर्घकाल
चीतपुतरि- चित्रमे लिखल मूर्ति
चूड़- शिखर, जूड़ा
चूड़क- पुरुषक खोपा
चेतन- चैतन्य, होस
चोआ- धूमनक तेल जे सुगन्धित होइत अछि
छन्द- गति, प्रवृत्ति, इच्छा; शोभा
छाँद- शोभा
जघन- जाँघ
जदुपति- कृष्ण
जर- ज्वर, सन्ताप
जलजात- कमल
जसु- जकर
जानु- ठेहुन
जाबक- आरत, आलता
जाम- याम, पहर
जामिनि- राति
जामुन- यमुना
जूथ- दल
जूथि- जूही फूल
जोर- युगल, जोड़ा
जौबति- युवती
झंक- दीन वचन, दुःख
झंझर- झटक, वृष्टि
झपान- खटुली
झष- माछ
झामर- श्यामल, कारी
झिल्ली- एक कीड़ा
झूर- विखिन्न
टलमल- अस्थिर
ठान- स्थान
डमक- डम्फा

डम्बर- आटोप
ढरढर- निरन्तर (प्रवाह)
ढलमल- डगमग
तटिनी- नदी
तड़ितलता- बिजुलोका
तन्त्री- वीणा
तपन- सूर्य
तमाल- एकवृक्ष
तरंगिनी- नदी
तरल- द्रुत
तरुकोर- गाछक स्तंभ
तरुन- टटका; युवा
तरुणी- युवती
ताटंक- तड़का, कानक एक गहना
ताड़- एक गहना
तापनि- यमुना
ताम्बूल- पान
तार- तारा
तिआस- पिपासा
तिमित- स्थिर
तिमित- अन्धकार
तिरिवध- नारीक हत्याक पाप
तिलतिल- छन-छन
तुंग- ऊँच
तमुल- तेज (ध्वनि)
तुषदह- भूसाक आगि
तुहिनकर- चन्द्रमा
तूण- तरकस
तोरित- तुरन्त, शीघ्र
त्रिवलि- नारीक पेटपरक सिकुड़न
त्रिभंग- नाचक एक मुद्रा
दन्ती- हाथी
दन्द- द्वन्द, भिड़न्त; झगड़ा; चिन्ता
दरस- दर्शन
दलितांजन- एक प्रकारक अंजन
दसन- दाँत
दसबान- दस बेर गलाए शुद्ध कएल सोन
दहन- आगि
दादुर- बेङ
दाम- डोरी

दामिनि- बिजुली
दारिद- दरिद्र
दारुन- भयानक
दिगम्बर- नाङट; शिव
दिठि- दृष्टि, नजरि
दिनमणि- सूर्य
दीगभरम- दिग् भ्रम
दीघ- दीर्घ, पैघ
दुरगह- दुर्धारणा, भ्रान्ति
दुरदिन- अधलाह दिन; वर्षाबाला दिन।
दुलह- दुर्लभ
दैव- जोतखी
दोषाकर- चन्द्रमा; अनेक दोषबाला (व्यक्ति)
द्विजराज- चन्द्रमा
धनि- धन्य; सजनी, नारीक शिष्ट सम्बोधन
छन्द- चिन्ता
धबल- उज्जर
धवलिम- उज्जर
धरनि- धरणी, पृथ्वी
धराधर- पर्वत
धाब- दौड़नाइ
धूसर- भुल रंग
नखपद- नखसँ स्तनपर कएल चिन्ह
नखर- नह
नखरंजनि- नहरनी
नखरेख- नखच्छद
नन्दन- पुत्र
नवल- नूतन
नबेलि- नवीना
नभ- आकाश
नयान- नयन, आँखि
नलिनी- कमल-लता
नागदमन- कालियनागकेँ नथनिहार (कृष्ण)
नागर- रसिक (पुरुष)
नाह- नाथ, पति
निअ- निज, अपन
निअर- निकट
निकर- समूह, बहुत्वसूचक
निकरुन- निष्करुण, निर्दय
निकुंज- लतावृक्षसँ घैरल स्थान

निकेतन- घर
निगमन- निमग्न, डूबल
निचोर- चोली
निछोरि- छीन (लेब)
निज- अपन
नितम्बिनि- पुष्ट नितम्ब वाली सुन्दरी
निदान- दुरवस्था, दुखद स्थिति
निधुवन- रति, सम्भोग
निनाद- ध्वनि
निविड़- घनगर, गहन
निभृत- छिपल
निमिष- छन
निरखब- निहारब
निरुपम- अनुपम, अपूर्व
निसान- ध्वनि
निसित- पिजाओल, तेज
नीति- नित्य
नीप- कदम्ब
नीवी- जारबन्द
नीलिम- नील रंगक
नीर- पानि
नीरद- मेघ
नीलमणि- नीलम
पउरब- हेलिकँ पार करब
पखान- पाषाण, पाथर
पखावज- एक बाजा
पतनि- चादर
पद- पाएर
पदतल- तरबा
पदुमनि- कमललता; उत्कृष्ट,नायिका
पन- पण, पारिश्रमिक
पवार- प्रवाल, मूँगा
पय- पाएर
पयान- प्रयाण, प्रस्थान
पयोधर- मेघ;स्तन
परजंक- पर्यंक, पलंग
परतेक- प्रत्यक्ष
परबोधब- बौँसब
परमाद- प्रमाद, चूक
परमान- प्रमाण; साक्षी

परस- स्पर्श
परसंग- चर्चा
परिबादसि- आरोपह
परिमल- सौरभ
परिरम्भ- आलिंगन
परिहार- त्याग
पहु- प्रभू, स्वामी
पात- जयपत्र, डिक्री
पादुक- खड़ाऔँ
पानि- हाथ
पिक- कोइली
पीछ- मयूरक पाँखि
पीन- पुष्ट
पुनफल- पुण्य़क सुपरिणाम
पुलक- रोमांच
पुलकायित- रोमांचित
पुलकित- रोमांचित
फटिक- स्फटिक, एक प्रकारक पाथर
फनिमनि- ओ मणि जे नागक फैँच मे उत्पन्न कहल जाइछ।
फागु- अबीर
फुलधनु- कामदेव
फुलसर- कामदेव
फूर- सत्य; मन मे आएब
फोइ- खोलिकैँ
बंजुल- एक लता
बकुल- एक फूल, भालसरी
बजर- वज्र
बदरिकोर- बैरक गाछक जड़ि
बदि- बूझिकैँ
बन्धुक- मधुरी
वयन- वचन, बोल
वलय- कगना, माठा, औँठी
बलाकिनी- बकक पाँती
वलित- वेष्टित
वल्लरि- लता
वसन- वस्त्र, परिधान
बहुवल्लभ- बहुत नारीसँ प्रेम कएनिहार
बाए- वायु
बात- हवा
वाद- झगड़ा

बादर- मेघ
बानि- वाणी
वारि- जल
वासित- सुरभित
विकच- विकसित, फुलाएल
विगलित- खसल, नमड़ल
बिछेद- वियोग
बिजन- बीअनि, पंखा
वितान- चनबा
बिथार- विस्तार
बिदग्ध- रसिक
विधु- चन्द्रमा
विधुन्तुद- राहु
विपथ- कुमार्ग
विपाक- कुफल
विपिन- वन
विलुलित- लटकल, डोलैत
विलोकन- नजरि
विशिख- बाण
विषम- विकट, दुखद
विहंग- पक्षी
बिहि- विधाता
बीजन- बीअनि, पंखा
बीजुरि- बिजलोका
बेणि- जूटी
बेल- तट
बेलि- बेर
बेश- सिङार, प्रसाधन
भंग- भंगिमा
भनतँह- कहैत छथि
भव- संसार
भमइ- भ्रमण करैछ
भाबिनि- कामिनी, भद्र महिलाक सम्बोधन
भाल- ललाट
भास- शोभा पाएब
भीतपुतरि- भित्तिमे बनाओल मूर्ति
भुज- बाँहि
भुजंग- साप
भुजमास- पाँज
भूरि- बहुत

भूषित- अलंकृत
भोर- भ्रान्ति; सुधिहीन
मंजुल- सुन्दर
मगन- मग्न, डूबल
मणि- बीचमे छेदबाला रत्न
मणिमन्त्र- जड़ी-बूटी आ झाड़फूक
मत- मत्त, आकुल
मधु- वसन्त
मधुकर- भ्रमर
मधुप- भ्रमर
मधुपुर- मथुरा
मधुरिपु- कृष्ण, मधूसूदन
मधुरिम- मधुर, मनोरम
मनमथ- कामदेव; मनकँ मथनिहार
मनसिज- कामदेव
मनोभव- कामदेव
मन्थर- मन्द
मन्दिर- घर, निवासगृह
मरकत- एक रत्न
मरजाद- सीमा
मरम- हृदय, अन्तर्मन
मराल- हंस
मलयज- चन्दन
मल्लि- बेली फूल
मसृण- चिक्कन, कोमल
महि- पृथ्वी
महितल- धरती
महिपंक- कादो
मही- धरती
माधवि- एक फूल
मान- नारीक स्वाभिमान
मानि- मान्य
मानिनि- मानवती
मारग- मार्ग, बाट
मालति- एक फूल
मिछहि- फुसिए
मिहिरजा- यमुना
मीन- माछ
मुकुटमणि- श्रेष्ठ
मुकुर- दर्पण

मुकुलित- कौँढिआएल, संकुचित
मुखर- अधिक बजनिहार
मुदिर- मेघ
मुगुधि- मोहित, अल्पमति
मुन्दरी- मुद्रिका, औँठी
मृगयति- जोहब
मृदु- कोमल
मेह- मेघ
मोतिम- मोतिक बनल
मौलि- शिखर, सिर
रंग- केलिविलास
रंगिनि- विलासिनी
रजनीकर- चन्द्रमा
रणित- झमझम ध्वनि
रत- प्रेमासक्त
रति- सम्भोग; कामदेवक स्त्री
रव- शब्द
रबाब- एक बाजा
रभस- हठकेलि
रसना- जीह; मेखला
रसनारोचन- उत्कृष्ट रसक कारणेँ रुचिकर
रसबति- रसिक (रमणी)
रसायन- रसक भंडार; सुखद प्रभावबाला
रसाल- रसयुक्त, रसिक
राइ- राधिका
राग- आसक्ति, प्रेम
रातुल- लाल
राव- ध्वनि
राही- राधिका
रितुपति- वसन्त
रुचि- अनुराग
रुचिर- प्रिय, आनन्ददायक
रेणु- धूरा, गरदा
रेह- रेखा
रोचन- रुचिकर, प्रिय
रोमाबलि- नारीक नाभिलगक रोइआँ
रोष- तामस
ललित- सुन्दर
लाज- लाबा; लज्जा, संकोच
लाबनि- लावण्य

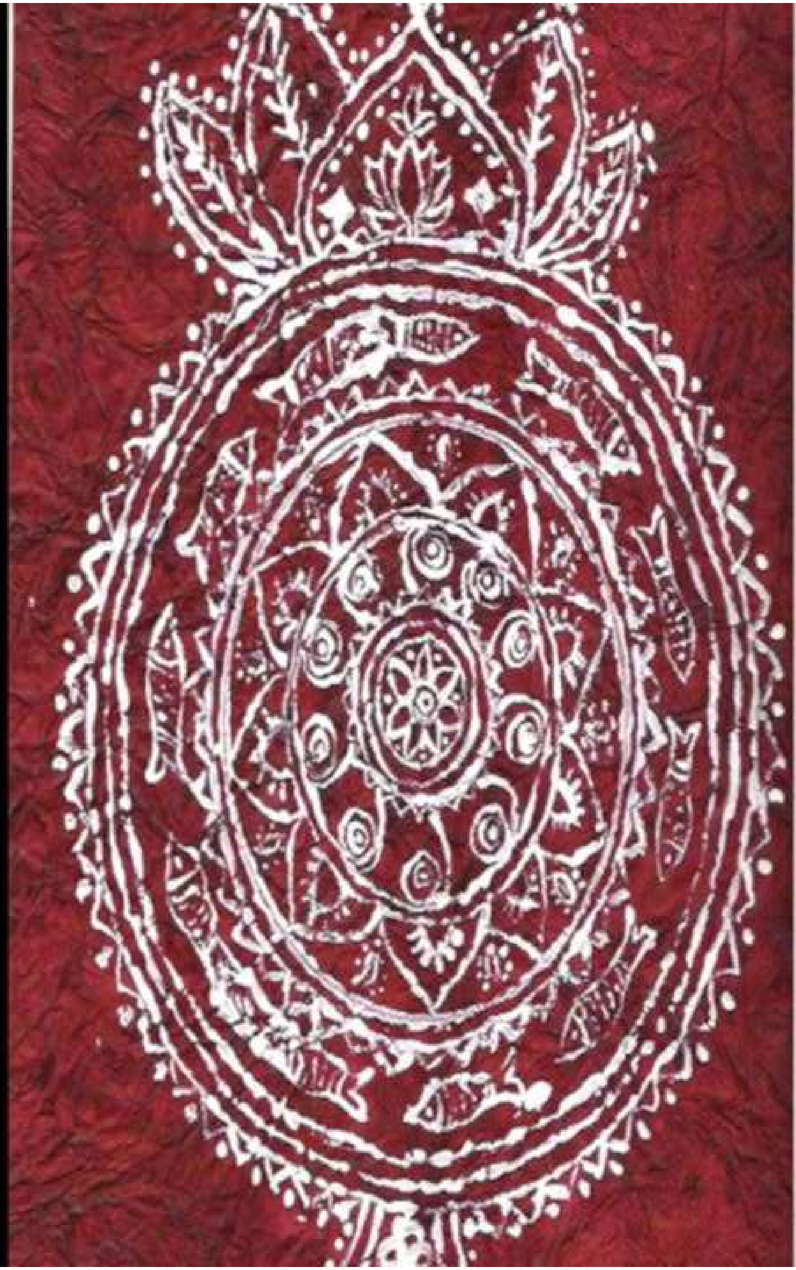
लालस- लालच लोभ
लोचन- आँखि
लोल- चंचल
संकेत- इशारा, इंगित
संघात- ढेर
संघाति- मेल
संवरु- समेटक
सचकित- विस्मित
सजल- नोराएल, भीजल
सति- सत्य
सन्धान- निशाना
सफरी- पोठी माछ
समागम- संगम
समाधि- ध्यान लगाएब
समीर- वायु
सयान- सज्ञान- बुधिआर
सरबस- सर्वस्व
सरम- श्रान्ति
सरसिज- कमल
सरूप- सत्य
सरोरुह- कमल
ससधर- चन्द्रमा
साखि- साक्षी, प्रत्यक्षद्रष्टा
साति- शास्ति, सजाए, कुपरिणाम
साद- शब्द, साध, मनोरथ
साध- मनोरथ, कामन
सामर- शामल, श्यामवर्ण
सारि- मएना
सारी- मएना
शिखंड- मयूरक पाँखि
शिखंडक- मयूरक पाँखि
शिखिचचन्द्रक- मयूरक पाँखि
सिरिस- सिरीष वृक्ष
सिसिर- शिशिर ऋतु
सुधाकर- चन्द्रमा
सुधीर- स्थिर, गम्भीर
सुरतरु- पारिजात वृक्ष
सुरपति- इन्द्र
सीकर- फुहार, जलकण
शेखर- शीर्ष स्थान

सेल- शल्य, आन्तरिक वेदना
सोहन- शोभन, सुरूप
सोहागि- सौभाग्य
स्रवन- कान
श्रमजल- धाम
श्रील- श्रीयुत
श्रुति- कान
हरि- सिंह, कृष्ण
हाम- हम
हिअ- हृदय, उर
हिमकर- चन्द्रमा
हुतास- अग्नि
हेम- सोन
हेमन्त- पाँचम ऋतु, अगहन-पूस



Videha e-Learning

Gajendra Thakur



Videha e-Learning
Gajendra Thakur



Videha e-Learning

Gajendra Thakur

वामे	-	प्रतिकूल
निअ	-	निज, अपन
मलयज	-	चानन
सयानि	-	विरह विदग्धा नायिका
धनि	-	धन्या-नायिका
हेरसि	-	नेहारैत
हरषि	-	हर्षित भए
परिहरि	-	मेटाय
नखत	-	तरेगण
मधुरि-दल	-	उभय-ओष्ठ
मनसिज	-	कामदेव
अवनत	-	नीचाँ झुकनाइ
हुतासन	-	ज्वाला

४. बद्रीनाथ झा शब्दावली

मिलिन	-	मधुमक्खी, भौरा
रसाल	-	आमक गाछ, कुसियार
अतन्द्र	-	सावधान, जागरूक
खद्योत	-	भगजोगनी
दुर्वार	-	कठिन
यति	-	प्रतिबंध, जतेक बेर
अचलसेतु	-	अदृष्टलेख
विपिन	-	जंगल
तरणि	-	नाओ
अवाम	-	दहिन
गरुड़केतु	-	विष्णु
बौड़ि	-	उन्मत्त
तुषार	-	शीतल
ब्रह्मर्षिसुत	-	कश्यप
वारुणी	-	पश्चिम दिशा
कश्यप	-	मुनि ओ मद्यप
प्रतीची	-	पश्चिम दिशा
कुलाय	-	खोंता
साँझ	-	समाधि वा समुच्चय
जीव-अभिदान	-	नाम
कमान	-	धनुष

विधु	चन्द्रमा
हय	कनेक
नमि	नमस्कार
नीराजन	प्रातःकालक आरती
मानर	मृदङ
काहल	वाद्यविशेष
चतुर्विध	आङ्गिक, वाचिक, सात्विक, आहार्य
उडुगण	तरेगण
दैवज्ञ	ज्योतिषी
पाटल	लाल
पाटल	व्याप्त भेल
अविद्या	अज्ञान
अधित्यका	पर्वतक ऊपरक देश
कुशण्डिका	वेदिसम्मार्जनादि
मेधा	धारणावती बुद्धि
सम्भार	सामग्री
कज्जल	कारी (काजर)
भूयसी	एक प्रकारक दक्षिणा
दीठि	दृष्टि
नृपदार	रानी
परिचार	परिचर्या
फुलहरा	कोढ़िलाक झाड़
राजीव	कमल
मुदवारि	आनन्दक नोर
तृष	तृष्णा
पाञ्चजन्य	शङ्ख
जगत्ताताक	विष्णु
प्रत्यभिवादन	प्रतिप्रणाम
जूटिका	शिखा
गोए	नुकाए
गुरु-सन्तोख	दक्षिणाद्रव्य
अवसित	पूर्ण
श्रुतिवेध	कर्णवेध
प्रभाक	प्रतिभा
गुरु-शुद्धि	बृहस्पतिक शुद्धि
औड़ि	आग्रहविशेष

शिविका	-	पालकी
पूर्वाङ्ग-कृत्य	-	मातृकापूजादि
अदम्भ	-	निश्छल
वैजयन्त	-	इन्द्रक कोठा
कौशेय वसन	-	पाटक वस्त्र
भक्ष्य चतुर्विध	-	भक्ष्य-भात आदि भोज्य लाबा आदि, लेह्य चटनी आदि, चोस्य आमा आदि
नीवार	-	ओइरी
अनुताप	-	पश्चाताप
बद्धकर	-	कृपण
विमति	-	विरक्ति
वैमत्य	-	मतभेद
प्रसाद	-	प्रसन्नता
अनुरोध	-	रोच
आर्य	-	श्रेष्ठ
जाचल	-	परीक्षित
सुभगप्रक्रिय	-	सुयश, सुव्यवहार
अचलेश	-	भूपति
बिहान	-	प्रभात
पट्टपटसार	-	उत्तम पाटक वस्त्र
विभूतिवत	-	ऐश्वर्य
एकतान	-	एकाग्र
वनी	-	वानप्रस्थ
और्ध्वदैहिक	-	परलोकोपकारक श्राद्ध
भोज-ओज	-	कृपणता
चञ्चरीक	-	भ्रमर
सोहल	-	शोभित भेल
छान	-	कलङ्क
अदक्षिण	-	प्रतिकूल
इन्दीवर	-	नील कमल
कीर	-	सूगा
अकानल	-	सुनल
पोषक-द्वेषक	-	पोसनिहार (कौआक) द्वेषी
श्मश्रु	-	दाढ़ी-मोछ
शैवाल-लतिका	-	सेमारक लत्ती
कुण्डलित	-	लपेटल

कर्णिकार	-	कनैल
ग्रीवा	-	गरदनि
इन्द्रायुध	-	वज्र
तमाल-साल	-	साँखु
शम्पा	-	विद्युल्लता
सहकार	-	आम
वकुलमुकुल	-	भालसरीक कली
पखान	-	पाथर
दमनक	-	दोनाफूल
अंसयुगल	-	दुहूस्कन्ध
अश्मसार	-	लोह
मणिबन्ध	-	पहुँचा
अबलासव	-	विरोध
दुहिण	-	ब्रह्मा
जम्भरिपु	-	इन्द्र
ऊरु	-	जाँघ
आरत	-	विरोध
नीरज	-	जलमे अनुत्पन्न, धुलि रहित, विरोध
इलातनय	-	पुरुरवा
सुरवैद्ययुगल	-	दुहू अश्विनीकुमार
क्षितिहरिहम	-	पृथ्वीन्द्र
परपुष्ट	-	कोयल, कोकिल, पसान्तरमे परिपुष्टा वैश्या
मधुप	-	भ्रमर, मद्यप
आतङ्करङ्क	-	निर्भय
काव्यक	-	शुकक
मधुभरि	-	बसन्तपर्यन्त
सुरभिमग	-	कामधेनुक मार्ग
अनीति	-	अतिवृष्ट्यादिरहित
शिक्षालोक	-	प्रकाश
तास्त्रव	-	उच्चध्वनि
जनप्द	-	अपन देश
साभिनिवेश	-	आग्रहपूर्वक
धारणा-ध्याण	-	अष्टाङ्गयोगक छठम ओ सातम अङ्ग
प्रकृति	-	स्वभाव, प्रजा
पीयूष-यूष	-	अमृतसार
मार्तण्ड	-	सूर्य

सत्वक - सत्वगुण
सौम्य - बुधग्रह
वाक्पति - बृहस्पति
रवि-कल्प - सूर्य-सदृश
याचना-परायण - याचक
अभियोगी - अभियोग कएनिहार
कैरवामोद - कुमुदक सौरभ, शत्रुक आनन्द
अनुदार - स्त्रीसँ अनुगत
पुत्रेष्टिक - पुत्रोत्पादक यज्ञ
एकावली - मोतीक माला
मत्सरिता - अन्यशुभद्वेष
लालनसुहिता - लालने तृप्त वा अनुकूल
परिणाह - वृद्धि
प्रमत्त - असावधान वा उन्मत्त
बालवशामे - नवीन हथिनी
आविल - पङ्किल
अर्धचन्द्र - चन्द्रक ओ गड़हस्था
शिखिकलाप - मयूरक पिच्छ, विषम
बलाहक - मेघ
सरणी - आकाश
जड़भाव - शैत्य वा जलत्व
मेचक - नील
द्विरद - हाथी
धम्मिल्ल - केशपाश
विलक्ष - लज्जित
पथिक-चक्र - चक्रबाक ओ समुदाय
काली - कारीरङ्ग
तारा - आँखिक पुतड़ी
काली - प्रथमा महाविद्या
तारा - द्वितीया
चतुश्रुति - श्रुतिवेद, पढ़निहार ब्रह्मा
श्रुति - कान, सुनब
विश्रुति - सिद्धि
छीजक - नष्ट होएबाक
कलकण्ठी - कोकिला
तप्त-तपनीय - सोना, स्वर्ण

चिवुक - दाढ़ी
परिस्फुर - चञ्चल
लेखा - गणना
जूझल - लड़ल
महायति - अतिविस्तीर्ण
आहित - स्थापित
स्तूप - माटिक ढेरी
लिकुचक - बड़हड़क
श्रीफल-मद - विल्वफलक गर्व
गर्त - खत्ता
कुलाल - कुम्हार
नाभिभव - ब्रह्मा
शारदा - अदृश्या सरस्वती नदी (अलखरूप शारदा)
त्रिदिवस सारिणी - गङ्गा
वली - उदररेखा (तीनिवली)
बली - बलवान
पाटच्चर - चोर
केहरि - सिंह
नितम्बक - पर्वतक मध्य भागक
विधिओजक - प्रतापक
कृष-नीच - नीचाँ दिसिसँ क्रमहि पातर (जङ्घा-क्रम-कृष-नीच)
वेत्र-दण्ड - सोनाक अधिकार दण्ड
हंसक - नुपूर
दश-शशधर - नखरूप-दशचन्द्रक
लाजें बीतल - संकुचित भेल
अनृत-दूषण-कृपाणी - मिथ्यादोषक छुरी जेकाँ नाशक
कथाऽवशेष - अवशिष्ट वक्तव्य
हर्ष-नृत्त - गात्रविक्षेप
सभीक - भीत
सागर-परिपन्थी - सागरक प्रतिस्पर्धा कएनिहार
सम्पुटित - सङ्कुचित
विगेय - निन्दनीय
विजीहीर्षा - विहारक इच्छा
दलतर - पातक नीचाँ
अतिसुकवि-ऊह - सुकवि तर्कक अगोचर
कुवलय-रम्भा-समान- पृथ्वी-मण्डलक रम्भा सदृश

देवाङ्गनीय -	देवाङ्गना-सम्बन्धी
रास -	मण्डलाकार नृत्य
श्यामा -	प्रियङ्गु
व्यामोहक -	सम्मोहक
काल -	यमराज
सारङ्ग -	हरिण
कृतयुग -	सत्ययुग
रण-एकतान -	युद्धमे सर्वदा विजय पओनिहार
नृपति-पताकिनीक-	राजसेनाक
विकटप्रतीक -	दारुणाकार
पुण्डरीक -	बाघ
दिनेन्दु-दीन -	दिनक चन्द्र सदृश मलिन
सर्वसहाक -	पृथ्वीक
लीन -	प्रलयमे प्राप्त
विलीन -	विलाएल
गोए -	राखि
तदनुसार -	पाछाँ
विदग्धताक -	रसिकताक
गरुअ -	पैघ
भूरमाक -	भूतल लक्ष्मीक
शर्म -	सुख
दलितपांशु -	निष्पाप वा निर्दोष
भवितव्यवश्य -	भाग्याधीन
अन्नुरूप -	प्रतिकूल
प्रणिधानलीन -	ध्यानमग्न
द्विजदत्त -	सिद्धब्राह्मणसँ देल
दत्त-प्रदत्त -	दत्तत्रेयसँ देल
उदेष -	अन्वेषण
स्वरति -	स्वविषयक प्रेम
धैर्य-कदर्य -	अधीर
चरमदशाक -	मृत्युक
अवगाह -	आलोड़न
ओज -	तेज
यशस्य -	यशोजनक
अलेश -	निश्छल
विजिगीषा -	विजयक इच्छा

पुटपाक	-	दुइ स्तरबाक सम्पुटमे वस्तुकेँ मूनि पक
हयग्रीव	-	राक्षस जेकरा विष्णु मारल
अनन्त	-	अन्त-रहित
व्यपाय	-	परिपूर्ण
भङ्ग	-	पराजय
सङ्गर	-	युद्ध
तनु	-	कोमल
आश्रित-दुर्ग	-	दुर्गोपासक
दुर्ग	-	दैत्यसँ सेवित दुर्गम
सर्वसहा	-	पृथ्वी, तितिक्षा, सभ सहनिहारि पृथ्वी
मनु	-	मन्त्र
शिव	-	कल्याणकारक
कूर्च	-	ह्रीँ
शिखिजाया	-	स्वाहा
आखर	-	ह्रीँ गौरि! रुद्रदयिते! योगेश्वरी। हूँ फट स्वाहा
अन्वर्थाख्य	-	यथार्थनामा
सिद्धि	-	सिद्धिकेँ प्राप्त, सम्पन्न
ब्राह्मण	-	भोज-पञ्चाङ्ग पुरश्चरण (तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोज नृसोम)
वैन्य	-	राजा पृथु
फलक	-	ढाल
शिशुमार	-	सौँस
धन-शाद	-	पाँक
क्षेपणी	-	करुआर
पटमण्डप	-	तम्बू
यादस्स्वन	-	जलजन्तुक शब्द
पूत	-	पवित्र
द्विरदकाँ	-	हाथीकेँ
दानजल	-	मदजल
मन-अवसाद	-	दुःख
भव्य	-	शुभ, सुन्दर
आयुधराजि	-	चञ्चला, विद्युत
चैत्य	-	प्रसिद्ध गृह
दुर्ग	-	किला
सुचतुष्पश	-	चौबट्टी
अहम्पूविका	-	हम पहिने, तँ हम पहिने, एहि स्पर्धासँ दौगब

1.90

पवि	-	वज्र
अर्थ	-	प्रयोजन
प्रभूत	-	बहुत
लाघव	-	शीघ्रता
दनुज-तनुज	-	शरीरमे उत्पन्न
अर्भ	-	नेना
सुरसरणी	-	आकाश
शारिका	-	मएना
मेकल	-	नर्मदा नदीक उत्पादक पर्वत
परिपाटी	-	परम्परा
उत्कोच	-	घूस
वितान	-	विस्तार
प्रकोष्ठ	-	पहुँचा
अङ्गुरीय	-	अङ्गुठी
केतन	-	ध्वजा
निर्मम	-	ममताहीन
उदिखर	-	उदित
दीधिति	-	चन्द्रकिरण
दक्षिण	-	अनेकमे समानानुरागी ओ दहिन
मत्सरी	-	द्वेषी
विनिपातोन्मुख	-	अवनति दिस प्रवृत्त
मधु-सञ्ज्ञँ	-	नामसँ
नृपदारक	-	राजकन्या
प्रमोद-निबन्धन	-	कारण
वन्दी	-	कैदी
पुरुषार्थ चतुष्ट्य	-	धर्म, धन, काम ओ मोक्ष
दीधिति-माली	-	सूर्य
नरनाथ	-	परिकर
औरस-सुत	-	अपनासँ धर्मपत्नीमे उत्पन्न पुत्र
चक्रधर	-	नारायण
ईषत्कर	-	सुकर
कुलिशायुधसँ	-	इन्द्रसँ
प्रमा-सालित	-	यथार्थज्ञानसँ स्फीत
उक्ति-प्रगल्भ	-	बजबामे प्रौढ़
शमन	-	यमराज
विधेय	-	कर्तव्य

दुर्विपाक -	अधलाह फल
सङ्कल्प-कल्पना -	मानस कर्मक रचना
स्तम्भित -	जड़ीभूत
सकल-करण-परिवारक-	इन्द्रिय वर्गक
भव-झरिणी -	संसार नदी
शशिकान्त -	चन्द्रकान्त मणि
रजनिकर -	रुचिएँ- कान्तिएँ
निष्कपट -	रुचिएँ-प्रीतिएँ
द्रुत -	शीघ्र
विद्रुत -	पघिलल
मानसिक -	व्यतिक्रमहुक-मानस-व्यभिचारहुक
उन्मिषित -	बढ़ल
प्रकृतिस्थ -	चैतन्य-युक्त
कालासुर -	कालकेतु राक्षस
अमान -	अपरिमित
अमानव -	अलौकिक
कुरङ्गित -	हरिण जेकाँ कुदैत
विक्रम -	विलक्षण वा विगत छै क्रम जाहिमे
पञ्चानन -	सिंह
आरभटी -	आडम्बरपूर्ण चेष्टा
दुरभिसन्धि -	दुराशय
कान्दिशीक -	भयसँ पढ़ैनिहार
अनाथ -	विधवा
धृष्ट -	प्रौढ़
निकृष्ट -	नीच, छोट
उपरोधन -	धैरव
अनारम्भ -	आरम्भ नहि करब
भानुमान -	सूर्य
कृकलाश -	गिरगिट
सन्नाह -	युद्धक उद्योग
मधु-मधुरिमाई -	द्राक्षासदृश-मधुर सम मधुर, दाखसन
सर्वज्ञम्मन्य -	अपनाकेँ सर्वज्ञ माननिहार
वीरमानी -	अपनाकेँ वीर माननिहार
नृशंस -	क्रूर (वातक)
अपलापपरा -	लाथ करबामे तत्पर
प्राथमिक -	पहिले बेरुक

प्रकार	-	दिवारक
अज	-	बत्तू
कुरङ्ग	-	हरिण
गवय	-	गो सदृश नीलगाय
शार्दूल	-	बाघ
साम्हर	-	हरिणसन जन्तु
भूतनाथ	-	महादेव
प्रमथराजि	-	गणसमूह
शृङ्गी	-	शृङ्गवाला
जटी	-	जटाधारी
वारणरद	-	हाथीकसन दाँतबाला
पुच्छी	-	नाङ्गरि
कृत्तिपटी	-	बाघक चाम पहिरनिहार
चत्वर	-	चट्टान
भीरुभीमा	-	भीरुक भयङ्कर
पटल	-	पटि गेल
जन्य	-	युद्ध
राजन्य	-	क्षत्रिय
भिन्दिपाल	-	ढेलमासु सन गुल्ली फेंकबाक अस्त्र
तोमर	-	मन्थन दण्डसन अस्त्र
कृपाण	-	तरुआरि
परशु	-	फरुसा
असि धेनु	-	खाँड़, छूड़ा
भुशुण्डी	-	अग्निप्रधान अस्त्र
परिध	-	हथौड़ी
दनुजभुवन	-	पाताल
जलद-छाया	-	मेघक छाहरि, तत्सदृश अस्थिर
मृत्युशक्ति-उत्क्रान्तिदा	-	मृत्युकँ 'उत्क्रान्तिदा' नामक शक्ति छन्हि जाहिसँ जीवोत्क्रमण करैत छथि
वृन्दारक-वृन्दक	-	देवसमूहक
निजचमू	-	सेना
पताल	-	अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल
सन्देश	-	संवाद (समाद)
त्रिदिवहुँ	-	स्वर्गहुँ
प्रत्यूष	-	प्रातः काल

दानव-भोगिनी - राजाक सामान्य स्त्री
अभ्यास - योगाभ्यास
क्लेश - अविद्या-स्मिता-राग-द्वेष ओ अभिनिवेश
जनि - जन्म
भोगभू - भोगस्थान वा भूमि
भुजगभुवन - पाताल
नाक - स्वर्ग
सहस्त्रार - शिर स्थित सहस्त्रदल- कमलाकार चक्र
निर्मन्तु - निरपराध (निर्दोष)
फेरि - घुमाए
फेरि - पुनि
अन्तराय - विघ्न
याचकपटलीकल्प- याचकसमूहजेकाँ
रहस्योद्भेदसँ - गुप्तप्रीतिक प्रकाशसँ
लोकपति - नरेश
मध्यमलोक - मर्त्यभुवन
अधोभुवन - पाताल
नररिक्त - मनुष्यसँ रहित
तूर्ण - शीघ्र
उद्देश - उच्चारण
उपेन्द्र - वामन भगवान्
कन्याक - शुक्रक पुत्री देवयानीक
अर्थना - याचना
सपरिकर - परिवार परिजन सहित
पुरुषसूक्त - ‘‘ओँ सहस्त्रशीर्षा’ इत्यादि सोड़ह ऋचा
दुइ - नारायण ओ तुर्वसु (निज दुइ बापक परिचय)
प्रतिग्रह - दान लेब
लाजहोम - लज्जाक हवन
लाजहोममे - लावासँ हवनमे
प्रणयकोपक - मानक
अपसारण-गति - हटएबाक उपाय
परमाणु - सूर्यक प्रभामे दृश्य रेणुक छठम भाग
द्वयणुक - दू परमाणु
पूगीफल - सुपारी
व्यङ्ग्यवचन - व्यङ्ग्यार्थ-बोधक वचन
दिवसचतुष्टय - चारि

गानचातुरी-विवरण	-	प्रकाशन
कान-सुधारस-वितरण	-	दान
चारिमशुचि	-	चारुतासँ भूषित
पाँकल	-	पाँकमे लागल
निमीलित	-	सङ्कुचित
कीलित	-	बद्ध (पीड़ित)
मदन-रुजा	-	रोग
निर्वाप	-	शान्ति करब
समाजित	-	पूजित
उद्भेद	-	विकास
चलदल	-	पीपड़
मन्मथ-घर्षण	-	प्रगल्भता
कल्पकल्प	-	कल्पसदृश
आशा	-	दिशा
विदग्ध	-	विकल, रसिक
सुरतवितान	-	क्रीड़ा-कलाप
वितानल	-	विस्तीर्ण कएल
संभोग	-	शृंगारक पूर्वाङ्ग वा केलि
विप्रलम्भ	-	शृङ्गारक उत्तराङ्ग वा विरह
अवसित	-	समाप्त
विधुर	-	विरहित (दीपक-विधु-विधुर)
अनवम	-	निर्दोष
विरस	-	निःस्पृह (विमुख)
पञ्चयज्ञ	-	ब्रह्मयज्ञ (वेद अध्ययन-अध्यापन), पितृयज्ञ (पितरक तर्पण ओ नित्यश्राद्ध), देवयज्ञ (हवन), भूतयज्ञ (वैश्वदेववलि), नृपज्ञ (अतिथि-सत्कार)
पर्व	-	पाबनि
आन्तरिक	-	अन्तःकरण
मञ्जूषा	-	पेटी
भूमिनेता	-	पृथ्वीपति
जरती	-	बृद्धा
वैजयन्त	-	इन्द्राणीसँ भूषित इन्द्रप्रासादक
पति-परिचार	-	स्वामीक सेवा
मन्त्र	-	विचार
कान्त	-	प्रिय
श्लाधापरायण	-	प्रशंसामे तत्पर

धव	-	धावा
मधुपा	-	मद्यपायिनी
भूरि	-	बहुत
सर्वसहासमेत	-	सभ (दुःखकेँ) सहनिहारि पृथ्वी सहित
कासर	-	महिसा
हिण्डोर	-	मचकी
शैलूष-कुहना	-	नटक माया

संगमे हरिमोहन झा, यात्री, धूमकेतु, साकेतानन्द, रामभद्र, धीरेन्द्र, कापड़ि, मलंगिया, नचिकेता, कुलानन्द मिश्र, राजकमल, राजमोहन झा, सुभाषचन्द्र यादव, प्रेमशंकर सिंह, रमानन्द झा ''रमण'', मोहन भारद्वाज, रमानाथ झा, जीवकान्त, प्रभास कुमार चौधरी, लिली रे, इलारानी सिंह, रामलोचन ठाकुरकेँ पढ़ी, आ दीनबन्धु झाक धातुरूप आ रमानाथ झाक मिथिलाभाषा प्रकाश, आ भारत आ नेपालक कक्षा नौ-दस केर पोथी सेहो घोँटि जाइ आ तखन जे अहाँ मिथिलाक्षर सेहो नीक जेकाँ पढ़ी आ लिखि सकी तँ अपनाकेँ मैथिली साहित्य परम्परासँ जोड़ि सकब आ मेडिओक्रिटी सँ बाहर आबि सकब। मैथिली पत्र-पत्रिका सभ सेहो पढ़ी आ अनुवाद साहित्य सेहो। संगहि विदेह-मिथिला-तीरभुक्ति-तिरहुतक इतिहास आ महान पुरुष आ महिला लोकन्हि कृति आ चरित्रक अध्ययन सेहो आवश्यक। एतेक सबक पूर्ण भेलाक बाद जे साहित्य अहाँक लेखनीसँ निकलत तकर स्वाद फराक रहत ।

कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित)

माँछ वंशीसँ सेहो मारल जाइत अछि।

छोट माँछक लेल जाल- भौरी जालक प्रयोग होइत अछि।

भिरखा- हाथसँ उठा कए फेंकल जाइत अछि। एहिमे सूत आ लोहाक गोली प्रयोग होइत अछि, २५-२५ ग्रामक लोहाक गोली लगभग २-१/२ सँ ५ किलो धरि प्रयोगमे आनल जाइत अछि। अन्ता जाल छोट होइत अछि आ कछारमे रातिमे लगाओल जाइत अछि।

कोठी जाल पैघ होइत अछि आ एहिमे बाँसक प्रयोग होइत अछि।

बिसारी जाल- दिनमे माँछ हरकि जएतैक से रातिमे खुट्टी लगा कऽ रातिमे माँछ मारल जाइत छै।

चट्टी जाल- प्लास्टिकक, पैघ-छोट दुनू, दिनमे प्रयुक्त, आषाढ़-साओन दुनू मे। ५-१० मिनटमे उठाओल जाइत छै।

सूतक मोट पैराशूट जाल, सूत आ नाइलनक मिश्रणक करेन्ट जाल, सूतक बड़का हाटा जाल होइत छै।

पैराशूटसँ छोटकी माँछ उड़ि जएतैक।

पैघ मछली बड़का वंशीसँ, बड़का चट्टी जालसँ, सूताक महाजालसँ मारल जाइत अछि।

पैघ छोट दुनू माँछ बाँसक जंघासँ मारल जाइत छै। एकरा ४ हाथ खड़ा नारियल आ नाइलोनक डोरीसँ बान्हल जाइत छै।

बाँसक करचीक छीपसँ सेहो माँछ मारल जाइत छै।

पटुआक सप्ठीक १००-२०० पुल्ली एक संग लगा कए सेहो माँछ मारल जाइत छै।

हाटा जाल किलोमीटर धरि पैघ होइत अछि आ सूताक बनैत अछि।

चाँच कहड़ा बाँसक होइत अछि।धार/ बदहाल घेरकँ मारल जाइत अछि। पानिकँ फुला कए डगरी लगाओल जाइत छै, चाँच फहड़ासँ घेरल जाइत अछि।

माँछक प्रकार

डाँरा मछली (डेरका मछली), मूँहा मछली, पोठी, लत्ता (पिआ माँछ), गड़इ, पलवा, टेंगड़ा, सिंघी, माँगुड़, चपड़ा, फैना, रेवा, गड़ही, उरन्था, मोहुल, बुआरी, बामी, बगहार, चेलवा, कौअल, गोर्रा, सौल, भौरा, कजाल, कलबौस, चित्तल, भोइ, कत्ती, भौकुडी, सिलोन, रेहू, मिरका, बिलासकप, सिल्वरकप, चाइना माँगुर, कबइ, चाइना कबइ।

दरबा- छोट, पातर- २-३ इन्चक, पीठपर कारी, बगल सफेद

गड़ई- कारी

चोपड़ा- चाकर, कारी, मलिन

पलबा- दुनू दिस काँट, पीठपर सेहो काँट, रंग- पीयर-उज्जर, मोंछ सेहो होइत छै।

टेंगड़ा- पैघ माँछ, एकरो तीन टा काँट, मुँहपर मोंछ।

सिंघी- पातर, दू टा काँट दुनू दिस, लाल रंगक आ लाल आ हल्का कारी

मँगुरी- मोट आ महग सेहो।एकरो दू टा काँट, लाल आ हल्का कारी

पैना- सफेद रंगक, पीठपर काँट

रेवा- सफेद, पौआ-आधा किलोक

डढ़ी- पीठपर काँटा, सफेद

उरन्था- पीठपर काँट, नीचाँ गामे झुकल, सफेद

भालु- लम्बाइ मुँह, सफेद- खड़ा(पीयर), ऊपरमे काँटा, नाभिक लग काँट (सभ माँछमे)

बोआली- पैघ मुँह- २० किलो धरि, सफेद, पीठपर काँट, पखना दुनू दिस (सभ माँछमे)

बामी- लम्बा, बिलमे रहैत अछि, मुँह आगू, गोल मुँह, सूआ जकाँ लम्बा, पीठपर काँट, नाभिपर दू टा काँट

बघार- छोट, १ पौआसँ क्विंटल भरिक, कारी-खैरा (पीयर), काँट- पीठपर एकटा, बगलमे दू टा, पुच्छी-चाकर, मुँह चापट, चकड़ाई- बेसी।

चेलबा- उज्जर, काँट नहि होइत छै। चलैक लेल दुनू दिस पखना, माँछमे तेजगर।

कौअल- सफेद, मुँह नमगर।

गोर्रा- मोंछ, दाढ़ी, काँटा, आगाँमे टेढ़

साउल- लाल आ पीयर, नमगर, २-३-५ किलोक

भौरा-(गजाल), साउल, चितफुटरा, पैघ २०-२५-४० किलो तक, गोल-गोल उज्जर, हरियर आ कारी

कलबौस- रंग हल्का कारी

अंदाजी माँछ

चित्तल- चकरगर बेसी, २०-२५ किलोक, २-३ फीट चकरगर

सिलोन- पालतू,३-४ किलोक,पोखरिमे पोसल जाइत अछि।

रोहु-पीयर, हल्का उज्जर, पीठपर काँट

मिरका- हल्का लाल सफेद

सिल्वरकप- पालतू

चैना माँगुर- चलानी (पालतू), दुनू दिस काँट

चैना कबइ- पालतू (चलानी), पीठपर जहाँ-तहाँ काँट

कबई- कनफर आ पीठ दुनू ठाम काँट

चेंगा माँछ- सुखायलोमे दूर धरि चलि जाइत अछि, कबई जकाँ ।

आब किछु दोसर जलजीव:-

सौंस- पानिमे माँछ खाइत अछि, आदमीकेँ नोकसान नहि, आदमी संगे खेलाइत अछि, सीटीक अवाज (डोलफिन)

घड़ियाल- कुर्सेला लग गंगामे, मुँह लम्बा, एक-डेढ़ हाथ,दाँत- आँगुर जेकाँ, रंग लाल, पुछरी नमगर, ३ हाथ

बोँछ- आदमीक रंग रूप, कारी, माथपर चूल- केश पकड़िकेँ डुमा दैत छै

आ कृषि शब्दावली:--

जोड़ा बैल/ हर

ईश- हरमे जोड़ि कऽ पालोमे बान्हल जाइत छै।

लगना

पालो- कन्हापर

पालोमे दू टा कनैल दुनू बगल बड़दकेँ एम्हर- उने (एम्हर-ओम्हर) नहि होमए दैत छै।

कनैलसँ हटि कऽ एक सवा फीटक डोरी बान्हल जाइत छै। सम्मैल (पौन फीटक लकड़ीक/ बाँसक) मे डोरी बान्हल जाइत छै।

ईशक नीचाँमे पेटार ईशकेँ खुजए नहि दैत छै, ऊँच-नीच करए दैत छै।

हलमे पुट्टी, नीचाँमे दू-फीटक अगल फल्ली पुट्टीमे सेट कएल जाइत छै, माटि उखाड़ैत छै।

परहत (लगना)- हरवाह एहिपर हाथ धरैत अछि। तीन फीटक/ ६ इन्चक मुट्ठी पकड़ैबला लगनामे ठोकल जाइत छै (मुठिया)।

नाधा- पालो-ईशमे बान्हिकेँ जोड़ल जाइत छै, डोरी होइत छै ४-५ फीटक।

दू टा मैडोर (डोरी)- १०-११ फीटक दू टा- एकरा चौकीमे बान्हि कऽ बड़दमे बान्हि कऽ हरवाहा चौकी दैत अछि।

चौकी- (बाँस/ लकड़ीक) ६-७ फीटक - एहिपर हरवाह चढ़ि कऽ चौकी दैत अछि। हरवाहाक हाथमे एक टा झूर/ ज्योली/ लाठी बड़द हाँकए लेल रहैत अछि।

गेहूँक जोताई ३ इन्च गहरा कऽ ४-५ टा चास दऽ होइत अछि।

मक्कइ लेल ४-५ इन्च गहराइ करए पड़ैत अछि।

बीया- एक एकड़ (१०० डिस्मिल) मे २ मन गहूमक बीया, १० किलो मक्कइक बीया।

खाद- एकड़मे २० कि. डी.ए.पी., ५ किलो पोटाश, ५ किलो यूरिया, ५ किलो जिंक गहूम बाउग करबा काल देल जाइत अछि।

मकइमे डेढ़ सँ दू फीटक भेलाक बाद माटि चढ़ाओल जाइत अछि। २ कतार २ फीट चौड़ाइसँ। एकड़मे २ क्विंटल खाद देल जाइत अछि। १०० किलो डी.ए.पी., ५० किलो यूरिया, २० किलो साल्फिक, १२० किलो पोटाश, १० किलो जिंक। पानि पटवन समयमे खाद दऽ कऽ माटि चढ़बैत छियैक, फेर पानि पटबैत छियैक। पानि पटेलाक बाद यूरिया एक एकड़मे एक क्विंटल देल जाइत अछि।

आब तर-तरकारीक प्रकार :-

सिंघिया करैला- बड़ा- हाइ ब्रेक/ प्लेन
छोटकी करैला- हजरिया/ जुल्मी
सफेद करैला- पटनिआ (नजली- मध्यम खुटक)

तारबूज-

नामधारी-स्वादिष्ट- भीतरमे लाल, ऊपरमे सफेदी/ चितफुटरा (हरियर-उज्जर)
माइको- हल्का कारी
पहुजा- माइकोसँ बेशी कारी
राजधानी- कारी रंगमे
महाराजा- पैघ छोट कारी रंगमे
सैनी आ सुगरदीबी- कारी रंगक
नाथ- हल्का चितफुटरा (उज्जर/ हरियर)
गंगासागर- कुम्हर जेकाँ उज्जर साफ
सोरैय्या- चितफुटरा

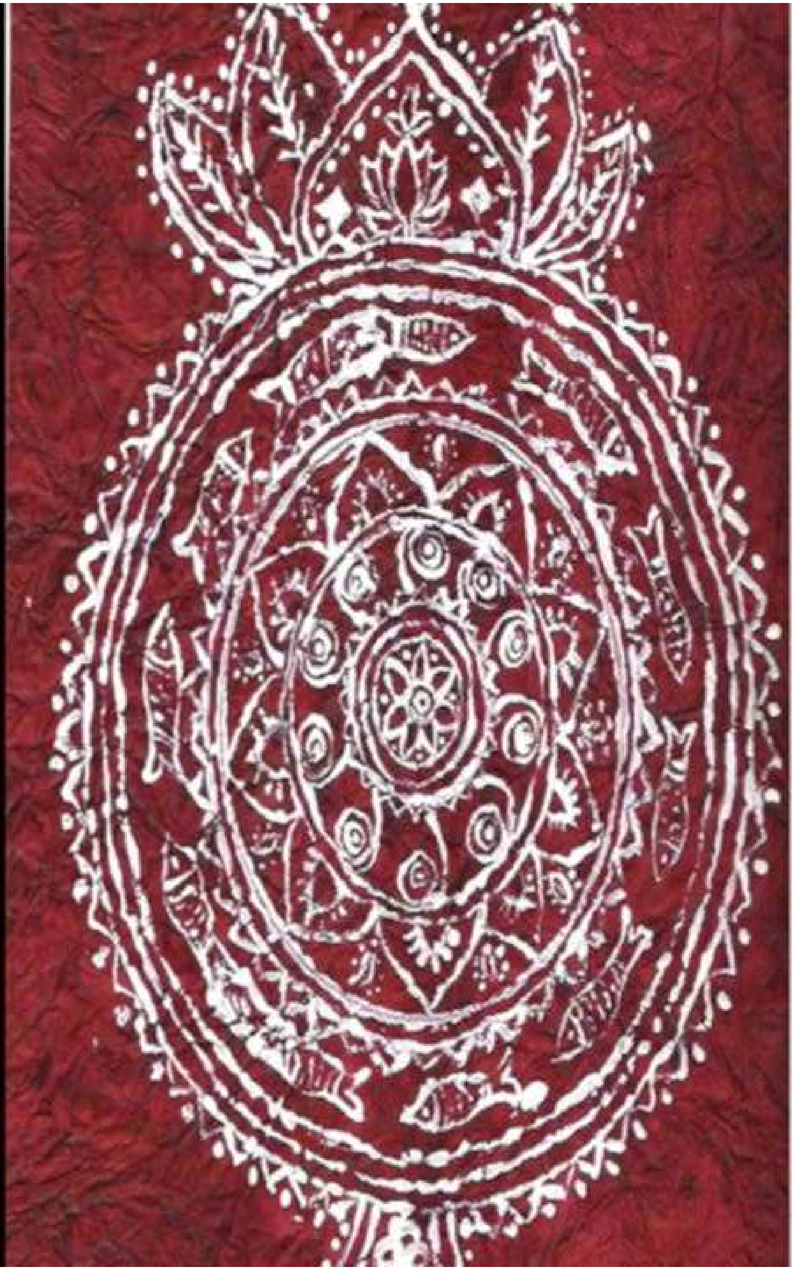
खीरा

जुल्मी- छोट
हाइब्रीड
माइको- नमगर/ हरियर/ पीअर
महाराजा- खीरा
खेतीबारी- हरियर रंगक, नमगर कम, पाछाँमे मोट बेशी आगाँ कम।



Videha e-Learning

Gajendra Thakur



लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति

लोरिक गाथामे नहि तँ कोनो इतिहास प्रसिद्ध राजाक नाम आ नहिये लोरिकक जन्म आकि विवाहक तिथिक चरचा अछि। भाषाक स्वरूप मौखिक रहबाक कारणसँ गतिशील अछि। काल निर्धारण सेहो अनुमानपर आधारित अछि। लोरिकक जन्म-स्थान गौरा गाम अछि आ कार्य-कर्म क्षेत्र पंजाबसँ नेपाल आ बंगाल धरि अछि। सासुर अगोरी गाम अछि जे सोन धारक कातमे बताओल गेल अछि।

लोरिकक विवाह- पहिल विवाह अगोरी गामक मंजरीसँ दोसर बियाह चनमासँ जकरासँ चनरैता नाम्ना पुत्र। तेसर बियाह हरदीगढ़क जादूगरनी जमुनी बनियाइनसँ जाहिसँ बोसारख नाम्ना पुत्र।

वीर लोरिकक भाए सँवरू सेहो वीर। ओ कोल राजा देवसिया द्वारा मारल गेलाह। बादमे लोरिक सेहो युद्ध करैत घायल भऽ जाइत छथि आ बोहा बथानपर लोरिकक बेटा भोरिक देवसियाकेँ पराजित करैत अछि। लोरिक बूढ़ भेलापर अग्नि समाधि लैत छथि।

लोरिकक कथा- साबौरक जन्म आ लोरिक अवतार, सँवरूक विवाह, माँजैरक जन्म, लोरिक-माँजैर विवाह आ राजा मौलागत आ निरमलियासँ युद्ध, सँवरू आ सतियाक विवाह, झिमली-लोरिक युद्ध, चनैनिया-शिवहर विवाह आ लोरिक-बेंठा चमारक युद्ध। एहि गाथामे लोरिक-चनमा प्रेम आ हरदीगढ़ प्रस्थान आ राजा रणपाल आ महिपतसँ लोरिकक युद्ध। लोरिक आ चनमाक हरदीगढ़मे निवास, लोरिक गजभिमला युद्ध, नेऊरपुरक चढ़ाइ आ लोरिक-हरेबा-बरेबा युद्ध, संवरू आ कोल युद्धमे सँवरूक मृत्यु, लोरिकक बोहा बथान आगमन, पीपरीगढ़क चढ़ाई आ लोरिक आ देवसिया युद्ध, लोरिकक देहत्याग आ भोरिकक नेतृत्व। पिपरीक पहिल लड़ाइ सँवरूक संग, पिपरीक दोसर लड़ाइ लोरिकक संग भेल। फेर लोरिकक काशीवास आ मृत्यु होइत छन्हि।

लोरिक मनुआर गाथाक धार्मिक सामाजिक आ राजनीतिक पक्ष :

लोरिक अज्ञात नाम गोत्रसँ ऊत्पन्न। यादव जाति अपन पूज्य लोरिकक सम्मान छाँक पूजासँ करैत छथि आ लोकदेव, लोकनायक रूपेँ सम्मान दैत छथि।

लोरिकायनक मैथिली स्वरूप पुरातत्त्ववेता अलेक्जेन्डर कनिंघमक संकलनमे अछि। क्वार्टरली जर्नल ऑफ द मीथिक सोसाइटी (भाग-५, पृ.१२२ सँ १३५) मे भागलपुरक लोरिकायनक चरचा। आर्क्योलोजिकल सर्वे रिपोर्ट खण्ड १६ (१८८३

ई.) पृ.२७-२८ मे कनिँघमक यात्रा वृत्तान्तमे लोरिक आ सेउहर वा सरिकका नाम्ना दू टा पड़ोसी राजाकेँ गौरा गामक निवासी कहल गेल अछि।

भागलपुर गजेटियर (पृ.४८-५०) मे जॉन हन्टर लोरिक विषयक रिपोर्ट देने छथि।

लोरिक गाथा लोरिकायन, लोरिकी आ लोरिक मनिआर नामसँ प्रसिद्ध अछि। मिथिलामे एकर प्रशस्ति लोरिक मनिआर नामसँ अछि।

लोरिकक नैतक (बेटाक बेटा) नाम इन्दल रहए। मैथिलीक लोरिक मनिआरमे लोरिकक विवाह प्रसंग आ लोरिकक कनियाँ तकबासँ लऽ राजा सहदेवसँ युद्ध केर विस्तृत चरचा अछि।

महुअरि खण्डमे गजभीमलक अखाड़ा जएबाक लेल घोड़ा चुनब आ गजभीमलकेँ पटकि-पटकि कऽ मारबाक वर्णन।

लोरिक द्वारा हरबा-बरबाक वध।

एहि गाथाक प्रारम्भमे सुमिरन आ बन्हन होइत अछि।

सुमिरन- इनती करै छी दुरुगा मिन्ती तोहार।

बन्हन- आ-दुरुगा गइ पुरुब खण्ड हे गइ

फेर:

१. विवाह खण्ड, २. महुअरि खण्ड, ३. युद्ध खण्ड

मणिपद्मजीक विवरण- १. जन्म खण्ड, २. सती माँजरि खण्ड, ३. चनैन खण्ड, ४. रणखण्ड, ५. सावर खण्ड, ६. बाजिल खण्ड, ७. सझौती खण्ड आ ८. नेपालसँ प्राप्त भैरवी खण्ड।

-गौरा गामक बुढ़कूवा राउत- तारक गाछक झठहा बनबैत रहथि। ५-७ सय पहलमानकेँ पीठपर लादि चौदह कोस टहलि आबथि। मुदा घर-घरारी किछुओ नहि छलन्हि। दू टा पुत्र लोरिक मनिआर आ साओद सरदार छलन्हि।

-अगौरीक मुखिया सेवाचन राउतक अस्सी गजक धोती आ बावन गजक मुरेठा- तेतलिया घोड़ा छलन्हि। पुत्री छलखिन्ह माँजरि जे सात सय संगी संगे सुपती-मौनी खेलाइत रहथि। ओकर बियाह लेल सेवाचन बुढ़कूबाक ओतय लोरिकसँ अखड़हापर भिरल- छप्पन मोन माटिसँ तरहत्थी मलनिहार सेवाचनकेँ लोरिक टालि-गुल्ली जेकाँ ऊपर फेकि देलक आ गेन जेकाँ लोकि कए काँख तर दबा लेलक।

बियाह दिन राजा उगरा पमार द्वारा बूढ़कूबाकेँ पकड़बाक प्रयास, मुदा बूढ़कूबा भकुला पहलमानक गरदनि काटि लेलक। विवाह सम्पन्न भेल। राजा उगरा पमार सनिका-मनिकाकेँ बजेलक- लोरिक सनिका-मनिकाक मूड़ी काटि लेलक। गौरा घुमैत काल हरदीक राजा सहदेवक आक्रमण, लोरिक सहदेवकेँ हरा कए ओकर

पुत्री चनाइकेँ महीचनक आँगन लऽ जाए विवाह कएल। तखन राजा महुअरि महीचनकेँ कारामे दऽ देलक मुदा फेर लोरिकसँ डरा कए छोड़ि देलक। मुदा सिलहट अखड़हाक सरदार गजभीमलकेँ पठाओल। मुदा लोरिक ओकर मूड़ी काटि लेलक आ फेर राजासँ मित्रता भेल। दुनू मिलि राजा हरबा-बरबासँ युद्ध कएलक। हरबा-बरबा भागल मुदा धुथरा पहलमानकेँ पठाओल- लोरिक ओकर दहिना आँखि निकालि ओकर जीह काटि लेलक। हरबा-बरबाक पुनः आक्रमण आ पलायन मुदा फेर भागिन कुमर अनार- लोरिक मूड़ी काटि हरबा-बरबाक रानी पद्मा लग ओकर मूड़ी फेकलक। फेर हरबा-बरबाक आक्रमण-डिहुलीक रणक्षेत्रमे हावीगढ़क राजा हरबा-बरबाक मूड़ी काटि राजप्रसादक अन्तःपुरमे फेकलक। लोरिक छत्तीस टा युद्ध कएलन्हि। लोरिक कृषिक विकासमे सजग छलाह। कारण -दोसराक भूमिक अधिग्रहण कए बहुसंख्यक चिड़ँइ, जानवर आ कीट-पतंग उजड़ि गेल आ ओ सभ इन्द्र लग गेल- ई वर्णन अछि।

-समाजक सीढ़ीक आइ-काल्हिक नीचाँक वर्ग आ नारी समाजक शक्तिक विस्तार, आध्यात्मिक आ लौकिक अर्थ दुनू तरहेँ।

- सामाजिक सीढ़ीक विभिन्न स्तरक जातिक अन्तर्विरोध, आइ-काल्हिक तथाकथित निम्न जातिक दुराचारी पात्रक विनाश लोरिक द्वारा। लोरिकक भगवतीपर भक्ति छल ओकर विजयक कारण।

मुदा लोरिकक शत्रुमे तथाकथित सामाजिक सीढ़ीपर ऊँच स्थान प्राप्त मोचनि आ गजभीमल छल तँ मित्रमे सेहो राजल सन सामाजिक सीढ़ीमे तथाकथित नीचाँ जातिक।

हरबा राजाक चपेटसँ दुहबी-सुहबी ब्राह्मणी आ गांगे क्षत्रीक मुक्ति।

उघरा पँवार, हरबा-बरबा, सोनिका, मनिका, बंठा, कोल्हमकड़ा, करना सभ जातीय सीढ़ीमे तथाकथित नीचाँक पात्र राजा छथि। मातृदेवीक उपासना, इन्द्रक पत्नीक दुर्गाक भेष बदलि आएब आ लोरिक द्वारा हुनका पत्नी बूझि छूबाक उपरान्त पीड़ा। लोरिक माँजरिक मिलन काशी-प्रयाण।

-गाथा मेला, हाट बजार, विशिष्ट लोकक घर, सार्वजनिक स्थलपर होइत अछि - से यादव जातिक अतिरिक्त आनो श्रोता। सर्जक आ श्रोताक प्रत्यक्ष संबंध, श्रवणीय, कथाक अनायास अलंकरण, मुदा सभटा साहित्यिक लक्षण जेना सर्ग, छन्दबद्ध, नाट्य-संधि आ संध्यांगक योजना आ वस्तु निर्देशक अभाव। वस्तु संगठन सुगठित नहि। गारिक प्रयोग आ मद्यपानक यत्र-तत्र वर्णन, ग्रामीण व्यवस्थामे चोरक स्थान आ ओकर वर्णन, स्थानीय देवी-देवताक चरचा, जातीय अस्मिताक प्रतीक। कथा-गायक आशु कवि होइत छथि-एकटा अस्थिपञ्जर अवश्य रहैत अछि मुदा ताहिपर अपन हिसाबसँ ओ गबैत छथि। शब्दशः ओ कण्ठस्थ नहि करैत छथि। प्रारम्भमे ईश्वर, वन्दना आ बीच-बीचमे ईश्वरसँ क्षमायाचना, ई सभ गायन क्षमता स्थिर करबाक उद्देश्यसँ कएल जाइत अछि। घण्टासँ ऊपर

गायनक बीचमे हुक्का-चिलम, मद्यपान, परिवेशक वर्णन होइत अछि गायनमे। निरक्षर मुदा कोनो साक्षरसँ बेशी ज्ञान भण्डार। लोरिक मनुआरमे श्रोताक संख्या, तन्मयता आ एकाग्रचित्तताक प्रभाव कथा-गायकक कथा वाचनपर पड़ैत अछि कारण ई श्रोताक सोझाँ कएल जाइत अछि। एहि अर्थें सल्हेसक कथावाचकसँ हिनकापर बेशी बाह्य प्रभाव पड़ैत छन्हि। सल्हेस गाथा श्रोताक समक्ष नहि वरन आराध्य देवक समक्ष वाचन कएल जाइत अछि।

गाथाक मूल कथा ओना तँ मोटा-मोटी समान रहैत अछि, मुदा प्रस्तुतिकरण, विशिष्ट समाज, क्रियाकलाप आ सामाजिक मर्यादाक कारण विशिष्ट।

युद्ध,द्यूत,प्रेम आ विवाह-सांस्कृतिक तत्व सभ महाकाव्यमे, द्यूत मानसिक युद्ध-द्यूतमे मनुक्खकेँ बाजी लगाएब, महाभारतमे आ लोरिकायनमे।

दुर्गा देवी द्वारा युद्धमे नायकक सहायता, चनैनक शिवधरकेँ छोड़ि लोरिक संग उढ़रि जाएब, दुसाध जातिक महपतियासँ लोरिकक जुआ खेलाएब आ लोरिक द्वारा चनैनकेँ जुआमे हारब-चनैन द्वारा प्रतिवाद-गहना गुरिया दाँवपर, चनैनक अश्लील हाव-भावसँ महपतियाक ध्यान बँटब आ लोरिकक जीतब। लोरिक द्वारा ओकर मूड़ी काटब। पति द्वारा अनुचित कएल जएबाक उपरान्तो पत्नी द्वारा बुझाएब।

लोरिकक अवतारवाद आ रहस्य

क्रोध-प्रेम दुनूमे गारि उन्मुक्त सांस्कृतिक काव्य चरित्र। प्रकृतिकेँ नुकाओल नहि गेल। नायक सेहो गारिक प्रयोग करैत अछि।

शिव-शक्तिक पूजा, महाकाव्यक पात्रक नाम आ आन तत्वक ग्रहण जे लोरिक मनुआर गायकक उदार आ सहिष्णु चरित्रकेँ देखबैत अछि। प्रस्तुति क्षमता आ ज्ञान क्षेत्र हिनका अनक्षर कहबासँ हमरा रोकैत अछि।

धार्मिक विश्वास, नायकक चरित्र आ सामाजिक आचार। जीवन-संस्कृति दृढ़तापूर्वक, महाकाव्यक अधिकांश लक्षण जेना रस, छंद, गुण, अलंकार, सर्गक ध्यान, व्यवहृत धार्मिक मूल्य, संस्कृतिक सम्पूर्णता, सृजन-क्षमता(गायकक)।

लोकगाथा-नाचक फील्डवर्क-कथ्यमे बदलनाइ (जेना गारि), अपन संस्कृतिक नैतिक मान्दण्डक आधारपर परिवर्तन अक्षम्य, अपनाकेँ ओहि समाजमे रखितहु उद्देश्यपर ध्यान, वाक्य शब्द रचनामे कोनो परिवर्तन नहि होएबाक चाही। तिरिया, गामक रक्षा आ अनाचारीक विनाश-पशुपाल आ कृषिकक समर्थन।

लोरिकक मित्र बंठा चमार, वारू पहरेदार (पासवान), राजल धोबी, लोरिकक भाइ साँवर।

सलहेसक कथा तराइ क्षेत्रक। वन्य जीव आ वनक बेशी वर्णन, वन्यजीव द्वारा सलहेसक सहायता, आखेट आ बलि। सल्हेसक पूजा स्थलपर माटिक घोड़ा राखल जाइत अछि मुदा लोरिकायनमे नहि।

लोरिक मनुआरमे अलौकिक आ रहस्यमय घटना बेशी, वन्य जीवक (बोनमे)संख्या नहि केर बराबर, लोरिकक पात्र अवतारी मुदा विधिवत पूजा नहि।

बाजिल कौआ अधजरुआ गोइठासँ कौल्हमकड़ाक गढ़कें जरबैत अछि।

-उधरा-पँवारक हाथी-कज्जल गिरि

-लोरिकक कटरा घोड़ा

-सेनापति बरबाक घोड़ा बरछेबा

-बाजिल कौआ

मुदा लोरिक मनुआर महराइ मे ई सभ वन्य नहि वरल पोसुआ अछि।

लोरिकक असली हरदीगढ़ आ प्रसिद्ध कर्मक्षेत्र सहरसा जिलाक हरदीस्थान अछि कारण सुपौलक पूब स्थित हरदीक संग दुर्गास्थान शब्द सम्मिलित अछि। एहि हरदीक संग महीचन्द्र साहू, राजा महबैर, नेऊरपुर (नौहट्टा), गंजेरीपुर (गौरीपुर), खेरदहा (खैरा धार), रहुआ-चन्द्रायन-मैना-गाम, बैराघाट, तिलाबे धार, बैरा गाछी आ महबैरिया गामक चरचा अछि। लोरिक गाथा स्थल बैराघाटसँ प्राप्त पजेबा आ हरदी हाइस्कूलसँ सटल पश्चिम खुदाइमे प्राप्त पजेबामे पाओल समानता एकर व्याख्या करैत अछि।

सुपौल रेलवे स्टेशनपर रेलवे विभागक एकटा बोर्ड लागल अछि- एतएसँ पाँच किलोमीटर पूर्व हरदी दुर्गास्थानमे भगवती दुर्गा आ वीरपुरुष लोरिकक ऐतिहासिक स्थल दर्शनीय अछि।

नौहट्टा लग महर्षि आ ओतए पालीभाषाक शिलालेख- पालवंशीय- हरिद्रागढ़ चौदह कोसमे विस्तृत। तेरहम शताब्दीक ’वर्णरत्नाकर’मे लोरिकक चरचा अछि। वर्णरत्नाकर- द्वितीय कल्लोलमे *लोरिक नाचो*- ई वर्णन । पहिने ई नाच छल आइ-काल्हि गाथा अछि।

नेऊरी दरभंगाक बिरौल प्रखण्डक १३ कि.मी.पूर्व गाम अछि जतए एकटा गढ़ अछि जे राजा लोरिकसँ सम्बन्धित कहल जाइत अछि ।

विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर

भोजपुरीक साहित्य मैथिलीसँ कम समृद्ध अछि मुदा से अछि मात्र परिमाणमे, गुणवत्ताक दृष्टिमे ई कतेक क्षेत्रमे आगाँ अछि। भोजपुरीक भिखाड़ी ठाकुरक बिदेसियाक सन्दर्भमे हम ई कहि रहल छी। भिखाड़ी ठाकुर कलकत्तामे प्रवासी रहथि, घुरि कय अएलाह आ भोजपुर क्षेत्रमे अपन कष्टक वर्णन जाहि मर्मस्पर्शी रूपसँ गामे-गामे घुमि कए आ गाबि कए सुनओलन्हि से बनल बिदेसिया नाटक। मिथिलामे प्रवास आजुक घटना छी, गामक-गाम सुन्न भऽ गेल अछि। मिथिलाक बिदेसिया लोकनि देशक कोन-कोनमे पसरि गेल छथि। मुदा पहिने भोजपुर इलाका जेकाँ प्रवासक घटना मिथिलामे नहि छल। प्रवास मोरंग धरि सीमित छल जे नेपालक मिथिलांचल क्षेत्र अछि। आ ताहिसँ मैथिलीमे लोकगाथाक सूक्ष्म विवरणक बड़ अभाव, जे अछियो से लोकगाथा नायकक विवरण नहि वरन महाकाव्यक नायकक मैथिलीमे विवरण जेकाँ अछि, आ बोझिल अछि, भिखाड़ी ठाकुरक बिदेसियाक जोड़ नहि। सलहेसक कथाक विवरण लिअ, क्षेत्रीय परिधि पार करिते सलहेस राजासँ चोर बनि जाइत छथि आ चोरसँ राजा। तहिना चूहड़मल क्षेत्रीय परिधि पार करिते जतए सलहेस राजा बनैत छथि ओतए चोर बनि जाइत छथि, आ जतए सलहेस चोर कहल जाइत छथि ओतुक्का राजा/ शक्तिशालीक रूपेँ जानल जाइत छथि। मुदा एहि सभपर कोनो शोध नहि भए सकल अछि। एहि क्रममे विद्यापतिक पदावलीक पद सभमे तकैत हमरा समक्ष विभिन्न प्रकारक गीत सभ सोझाँमे आएल। एहिमे जे अधिकांश छल से रहए प्रेमी-प्रेमिकाक विरहक विवरण आ बिदेसियाक जे मूल कनसेप्ट अछि- रोजी-रोटी आ आजीविका लेल मोन-मारि कए प्रवास, ताहिसँ फराक। तखन जा कए हमरा किछु विशुद्ध बिदेसिया जकरा विद्यापति पिआ-देसाँतर कहैत छथि भेटल। एहिमे स्वाभाविक रूपेँ अधिकांश विद्यापतिक नेपाल पदावलीसँ भेटल आ एकटा नगेन्द्रनाथ गुप्तक संग्रीहीत पदावलीसँ। मोरंग नेपाल स्थित मिथिलाक भाग अछि आ प्रवास लेल प्रसिद्ध छल, से एकर सम्भावित कारण।

ताहि आधारपर ई संकल्पित नाटिका प्रस्तुत अछि।

विद्यापतिक पिआ देसाँतर

दृश्य १

स्टेजपर हमर बिदेसिया बिदेस नोकरीक लेल बिदा होइत छथि आ जुवती गबैत छथि- गीतक बीचमे एकटा पथिक अबैत छथि । मंचक दोसर छोड़पर चोर लोकनि धपाइत नुकायल छथि। मंचक दोसर छोरपर कोतवाल आ शुभ्र धोतीधारी पेटपर हाथ देने निफिकिर बैसल छथि।

धनछी रागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

हम जुवती, पति गेलाह बिदेस। लग नहि बसए पड़उसिहु लेस।

हम युवती छी आ हमर पति बिदेस गेल छथि। लगमे पड़ोसीक कोनो अवशेष नहि अछि।

सासु ननन्द किछुआओ नहि जान। आँखि रतौन्धी, सुनए न कान।

सास आ ननदि सेहो किछु नहि बुझैत छथि। हुनकर सभक आँखिमे रतौंधी छन्हि आ ओ सभ कानसँ सेहो किछु नहि सुनैत छथि।

जागह पथिक, जाह जनु भोर। राति अन्धार, गाम बड़ चोर।

हे पथिक! निन्नकेँ त्यागू। काल्हि भोरमे नहि आऊ। अन्हरिया राति अछि आ गाममे बड्ड चोर सभ अछि।

सपनेहु भाओर न देअ कोटबार। पओलेहु लोते न करए बिचार।

कोतबाल स्वपनहुमे पहरा नहि दैत अछि आ नोत देलोपर विचार नहि करैत अछि।

नृप इथि काहु करथि नहि साति।
पुरख महत सब हमर सजाति॥

ताहि द्वारे राजा ककरो दण्ड नहि दैत छथि आ सभटा पैघ लोक एके रंग छथि।

विद्यापति कवि एह रस गाब। उकुतिहि भाव जनाब।

विद्यापति कवि ई रस गबैत छथि। उकतीसँ भाव जना रहलीह अछि।

विद्यापति कविक प्रवेश होइत छन्हि। कोतवालक लग शुभ्र-धोतीधारी आ एकटा गरीबक आगमन होइत अछि। कोतवाल आभाससँ धोतीधारीक पक्षमे निर्णय सुनबैत छथि आ मंचक दोसर कोनपर बैसलि जुवती माथ पिटैत छथि। गीतक अन्तिम चारि पाँती विद्यापति कवि गबैत छथि।

दृश्य २

जुवती एकटा दोकान खोलने छथि, सांकेतिक। मंचक दोसर कातसँ सासु आ ननदिकेँ जएबाक आ क्रेता पथिकक अएबाक संग युवती गेनाइ शुरू करैत छथि आ सभ पाँतिक बाद विद्यापति मंचपर अबैत छथि अर्थ कहैत छथि आ अंधकारमे विलीन भऽ जाइत छथि। मुदा अन्तिम पाँती विद्यापति गबैत छथि आ जुवती ओकर अर्थ बँचैत छथि।

मालवरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

बड़ि जुड़ि एहि तरुक छाहरि, ठामे ठामे बस गाम।
एहि गाछक छाह बड्ड शीतल अछि। ठामे-ठाम गाम बसल अछि।
हम एकसरि, पिआ देसाँतर, नहि दुरजन नाम।
हम असगरि छी, प्रिय परदेसमे छथि, कतहु दुर्जनक नाम नहि अछि।

पथिक हे, एथा लेह बिसराम।
हे पथिक! एतय विश्राम करू।
जत बेसाहब किछु न महघ, सबे मिल एहि ठाम।
जे किछु कीनब, किछुओ महग नहि। सभ किछु एतए भेटत।
सासु नहि घर, पर परिजन नन्न्द सहजे भोरि।
घरमे सासु नहि छथि, परिजन दूरमे छथि आ ननदि स्वभावसँ सरल छथि।
एतहु पथिक विमुख जाएब तबे अनाइति मोरि।
एतेक रहितो जे अहाँ विमुख भए जाएब तँ आब हमर सक्क नहि अछि।
भन विद्यापति सुन तञे जुवती जे पुर परक आस।
विद्यापति कहैत छथि- हे युवती! सुनू जे अहाँ दोसराक आस पूरा करैत छी।

दृश्य ३

एहि गीतमे विद्यापति नहि छथि। जुवतीक ननदि पथिककेँ दबारि रहल छथि, से देखि जुवतीकेँ अपन पिआ देसाँतर मोन पड़ि जाइत छन्हि। ओ ननदि आ सखीकेँ सम्बोधित कए गीत गबैत छथि। गीतक अर्थ सखी कहैत छथि, सभ पाँतीक बाद।

धनछीरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

परतह परदेस, परहिक आस। विमुख न करिअ, अबस दिस बास।
परदेसमे नित्य दोसराक आस रहैत अछि। से ककरो विमुख नहि करबाक चाही। अवश्य वास देबाक चाही।
एतहि जानिअ सखि पिअतम-कथा।
हे सखी ! प्रियतमक लेल एतबी कथा बुझू।
भल मन्द नन्दन हे मने अनुमानि। पथिककेँ न बोलिअ टूटलि बानि।
हे ननदि! मोनमे नीक-अधलाहक अनुमान कऽ पथिककेँ टूटल गप नहि बाजू।

चरन-पखारन, आसन-दान। मधुरहु वचने करिअ समधान।

चरण पखारू, आसन दियौक आ मधुर वचन कहि सान्त्वना दियन्हु।
ए सखि अनुचित एते दुर जाए। आओर करिअ जत अधिक बड़ाइ।
हे सखी पथिक एतयसँ दूर जायत से अनुचित से ओकर आर बड़ाई करू।

दृश्य ४

जुवती आ ननदि नगर आबि ठौर धेने छथि। एकटा पथिक आबि आश्रय मँगैत छथि तँ जुवती गबैत छथि आ ननदि सभ पाँतीक बाद अर्थ कहैत छथि। बीचमे चारि पाँती बिना अर्थक नेपथ्यसँ अबैत अछि। फेर जुवती आगाँ गबैत छथि आ ननदि अर्थ बजैत छथि। अन्तमे अन्तिम दू पाँती विद्यापति आबि गबैत छथि। दृश्यक अन्तमे ननदि कहैत छथि जे हम जे ओहि दिन पथिककेँ दबारि रहल छलहुँ से अहाँकेँ नीक नहि लागल रहए, मुदा आइ पथिककेँ आश्रय किएक नहि देलियैक।

कोलाररागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

हम एकसरि, पिअतम नहि गाम। तेँ मोहि तरतम देइते ठाम।
हम एकसरि छी आ प्रियतम गाममे नहि छथि। ताहि द्वारे राति बिताबए लेल कहबामे हमरा तारतम्य भऽ रहल अछि।
अनतहु कतहु देअइतहुँ बास। दोसर न देखिअ पड़ओसिओ पास।
यदि क्यो लगमे रहितथि तँ दोसर ठाम कतहु बास देखा दैतहुँ।

छमह हे पथिक, करिअ हमे काह। बास नगर भमि अनतह चाह।
हे पथिक क्षमा करू आ जाऊ आ नगरमे कतहु बास ताकू।

आँतर पाँतर, साँझक बेरि। परदेस बसिअ अनाइति हेरि।
बीचमे प्रान्तर अछि सन्ध्याक समय अछि आ परदेसमे भविष्यकेँ सोचैत काज करबाक चाही।

मोरा मन हे खनहि खन भाँग। जौवन गोपब कत मनसिज जाग।
चल चल पथिक करिअ प... काह। वास नगर भमि अनतहु चाह।
सात पच घर तन्हि सजि देल। पिआ देसान्तर आन्तर भेल।
बारह वर्ष अवधि कए गेल। चारि वर्ष तन्हि गेला भेल।

घोर पयोधर जामिनि भेद। जे करतब ता करह परिछेद।
भयाओन मेघ अछि, रतुका गप छी सोचि कए निर्णय करू।

भनइ विद्यापति नागरि-रीति। व्याज-वचने उपजाब पिरीति।

विद्यापति कहैत छथि, ई नगरक रीति अछि जे कटु वचनसँ प्रीति अनैत अछि।

दृश्य ५

अहू दृश्यमे विद्यापति नहि छथि। एकटा पथिक अबैत छथि मुदा सासु-ननदि ककरो नहि देखि बास करबासँ संकोचवश मना कए आगाँ बढ़ि जाइत छथि। जुवती गबैत छथि।

घनछीरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

उचित बसए मोर मनमथ चोर। चेरिआ बुढ़िआ करए अगोर।
कामदेव रूपी चोरक लेल हमर अवस्था ठीक अछि। बुढ़िया चेरी पहरा दऽ रहल छथि।

बारह बरख अवधि कए गेल। चारि बरख तन्हि गेलाँ भेल।
बारहम बरखक रही, तखन ओ गेलाह आ आब चारि बर्ख तकर भऽ गेल।

बास चाहैत होअ पथिकहु लाज। सासु ननन्द नहि अछए समाज।
सास आ ननदि क्यो संग नहि छथि आ पथिक सेहो डेरा देबासँ लजाइत छथि।

सात पाँच घर तन्हि सजि देल। पिआ देसाँतर आँतर भेल।
ओ कामदेव लेल घर सजा कए देशान्तर चलि गेलाह आ हमरा सभक बीचमे अन्तर आबि गेल।

पड़ेओस वास जोएनसत भेल। थाने थाने अवयव सबे गेल।
पड़ोसक बास जेना सय योजनक भऽ गेल सभ सर-सम्बन्धी जतए ततए चलि गेलाह।

नुकाबिअ तिमिरक सान्धि। पड़उसिनि देअए फड़की बान्धि।
लोकक समूह अन्हारमे विलीन भऽ गेल, पड़ोसिन फाटकि बन्न कए लेलन्हि।

मोरा मन हे खनहि खन भाग। गमन गोपब कत मनमथ जाग।
हमर मोन क्षण-क्षण भागि रहल अछि। कामदेव जागि रहल छथि गमनकें कतेक काल धरि नुकाएब।

दृश्य ६

एहि दृश्यमे सेहो, नहि तँ ननदि छथि, नहिये सासु आ नहिये विद्यापति। एकटा अतिथि अबैत छथि आकि तखने मेघ लाधि दैत अछि आ जुवती गबैत छथि।

धनछीरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

अपना मन्दिर बैसलि अछलिहुँ, घर नहि दोसर केवा।
अपन घरमे बैसल छलहुँ, घरमे क्यो दोसर नहि छल,
तहिखने पहिआ पाहोन आएल बरिसए लागल देवा।
तखने पथिक अतिथि अएलाह आ बरखा लाधि देलक।

के जान कि बोलति पिसुन पड़ौसिनि वचनक भेल अवकासे।
की बजतीह ईर्ष्यालु पड़ोसिन से नहि जानि, बजबाक अवसर जे भेटि गेलन्हि।
घोर अन्धार, निरन्तर धारा दिवसहि रजनी भाने।
दिनहिमे रात्रि जेकाँ होमए लागल।
कओने कहब हमे, के पतिअएत, जगत विदित पँचबाने।
हम ककरा कहब आ के पतियायत। कारण कामदेवक ख्याति तँ जगत भरिमे अछि।

दृश्य ७

मंचक एक दिससँ सासुक मृत्युक बाद हुनकर लहाश निकलैत छन्हि आ मंचपर अन्हार होइत अछि। फेर इजोत भेलापर ननदिक कर हुनका सासुर लए जाइत छन्हि। पथिक रस्तापर छथि दर्शकगणक मध्य आ दर्शकगणकेँ इशारा करैत जुवती गीत गबैत छथि आ विद्यापति सभ पाँतिक बाद अर्थ कहैत छथि। अन्तिम दू पाँतिमे विद्यापति गीत आ अर्थ दुनू बजैत छथि- विद्यापति अन्तिम दू पाँति आ ओकर अर्थ कैक बेर दोहराबैत छथि।

नगेन्द्रनाथ गुप्त सम्पादित पदावली-

सासु जरातुरि भेली। ननन्दि अछलि सेहो सासुर गेली।
सासु चलि बसलीह, ननदि सेहो सासुर गेलीह
तैसन न देखिअ कोई। रयनि जगाए सम्भासन होई।
क्यो नहि सम्भाषणक लेल पर्यन्त,
एहि पुर एहे बेबहारे। काहुक केओ नहि करए पुछारे।
एतुका एहन बेबहार, ककरो क्यो पुछारी नहि करैत अछि।

मोरि पिअतमकाँ कहबा। हमे एकसरि धनि कत दिन रहबा।
हमर पिअतमकेँ कहब, हम असगरे कतेक दिन रहब।
पथिक, कहब मोर कन्ता। हम सनि रमनि न तेज रसमन्ता।
पथिक हुनका कहबन्हि, हमरा सन रमणिक रसक तेज कखन धरि रहत।
भनइ विद्यापति गाबे। भमि-भमि विरहिनि पथुक बुझाबे।
विद्यापति गबैत छथि, विरहनि घूमि-घूमि कए पथिककेँ कहि रहल छथि।

विद्यापति गबैत-गबैत कनेक खसैत छथि- अन्हार पसरए लगैत अछि तँ एक गोटे जुवती दिस अन्हारसँ अबैत अस्पष्ट देखना जाइत छथि। की वैह छथि पिआ देसान्तर!! हँ, आकि नहि!!!

पिआ देसान्तरक घोल होइत अछि आ मंचपर संगीतक मध्य पटाक्षेप होइत अछि।

पिआ देसान्तरक ई कन्सेप्ट सुधीगणक समक्ष अछि आ मैथिल बिदेसिया लोकनिक वर्तमान दुर्दशाक बीच ई महाकवि विद्यापतिक प्रति ससम्मान अर्पित अछि।

राजदेव मण्डलक अम्बरा

कविता: कविता लोक कम पढ़ैत अछि। संस्कृतसन भाषाक प्रचार-प्रसार लेल कएल जा रहल प्रयासक अंतर्गत सम्भाषण-शिविरमे सरल संस्कृतक प्रयोग होइत अछि। कथा-उपन्यासक आधुनिक भाषा सभसँ संस्कृतमे अनुवाद होइत अछि मुदा कविता ओइ प्रक्रियामे बारल रहैत अछि। कारण कविता कियो नै पढ़ैत अछि आ जइ भाषा लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता भऽ गेल अछि, तइ भाषामे कविताक अनुवाद ऊर्जाक अनर्गल प्रयोग मानल जाइत अछि। मैथिलीमे स्थिति एहन सन भऽ गेल अछि, जे गाम आइ खतम भऽ जाए तँ ऐ भाषाक बाजएबलाक संख्या बड़ड न्यून भऽ जाएत। लोक सेमीनार आ बैसकीमे मात्र मैथिलीमे बजता। मैथिली-उच्चारण लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता तँ अनुभूत भइए रहल अछि। तँ ऐ स्थितिमे मैथिलीमे कविता लिखबाक की आवश्यकता आ औचित्य? समयाभावमे कविता लिखै छी, ऐ गपपर जोर देलासँ ई स्थिति आर भयावह भऽ सोझाँ अबैत अछि। एहना स्थितिमे आस-पड़ोसक घटनाक्रम, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, आक्षेप आ यात्रा-विवरणी यएह मैथिली कविताक विषय-वस्तु बनि गेल अछि। मुदा ऐ सभ लेल गद्यक प्रयोग किए नै? कथाक नाट्य-रूपान्तरण रंगमंच लेल कएल जाइत अछि मुदा गद्यक रूपान्तरण कवितामे कोन उद्देश्यसँ। समयाभावमे लिखल जा रहल ऐ तरहक कविता सभक पाठक छथि गोलैसी केनिहार समीक्षक लोकनि आ स्वयं आमुखक माध्यमसँ अपन कविताक नीक समीक्षा केनिहार गद्यसँ पद्यमे रूपान्तरकार महाकवि लोकनि! पद्य सर्जनाक मोल के बूझत! व्यक्तिगत लौकिक अनुभव, जे गहींर धरि नै उतरत, तँ से तुकान्त

रहला उपरान्तो उत्कृष्ट कविता नै बनि सकत। पारलौकिक चिन्तन कतबो अमूर्त रहत आ जे ओ लौकिकसँ नै मिलत तँ ओ सेहो अतुकान्त वा गोलैसी आ वादक सोंगरक अछैत सिहरा नै सकत। मनुक्खक आवश्यकता अछि भोजन, वस्त्र आ आवास। आ तकर बाद पारलौकिक चिन्तन। जखन बुद्ध ई पुछै छथि जे ई सभ उत्सवमे भाग लेनिहार सभ सेहो मृत्युक अवश्यंभाविताकेँ जनै छथि? आ से जे जनै छथि तखन कोना उत्सवमे भाग लऽ रहल छथि। से आधुनिक मैथिली कवि जखन अपन भाषा-संस्कृतिक आ आर्थिक आधारक आधार अपना पएरक नीचाँसँ विलुप्त होइत देखै छथि आ तखनो आँखि मूनि कऽ ओइ सत्यकेँ नै मानै छथि, तखन जे देश-विदेशक घटनाक्रमक *वाद* कवितामे घोसिआबऽ चाहै छथि, देशज आ दलित समाज लेल जे ओ उपकरि कऽ लिखऽ चाहै छथि, उपकार करऽ चाहै छथि, तँ तइमे धार नै आबि पबै अछि। मुदा जखन राजदेव मंडल कविता लिखै छथि-

टप-टप चुबैत खूनक बून सँ
धरती भऽ रहल स्नात
पूछि रहल अछि चिड़ै
अपना मन सँ ई बात
आबऽ बाला ई कारी आ भारी राति
कि नहि बाँचत हमर जाति...?

-तँ से हमरा सभकेँ सिहरा दैत अछि। कविक कवित्वक जाति, ओइ चिड़ैक जाति आकि..। कोन गोलैसी आ आत्ममुग्ध आमुखक दरकार छै ऐ कविताकेँ। कोन गोलैसीक आ पंथक सोंगर चाही ऐ

सम्वेदनाकेँ।
तँ कविताकेँ उत्कृष्टता चाही। भाषा-संस्कृतिक आधार चाही। ओकरा खाली आयातित विषय-वस्तु नै चाही, जे ओकरापर उपकार करबाक दृष्टिएँ आनल गेल छै। ओकरा आयातित सम्वेदना सेहो नै चाही जे ओकर पएरक नीचासँ विलुप्त भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारकेँ तकबाक उपरझपकी उपकृत प्रयास मात्र हुअए। नीक कविता कोनो विषएपर लिखल जा सकैत अछि। बुद्धक मानवक भविष्यक चिन्ताकेँ लऽ कऽ असञ्ञाति मनकेँ सम्बल देबा लेल सेहो, नै तँ लोक प्रवचनमे ढोंगी बाबा लेल जाइते रहताह। समाजक भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारक लेल सेहो, नै तँ मैथिली लेल शिविर लगाबऽ पड़त। बिम्बक संप्रेषण सेहो आवश्यक, नै तँ कवि लेल पहिनेसँ वातावरण बनाबए पड़त आ हुनकर कविताक लेल मंचक ओरिआओन करऽ पड़त, हुनकर शब्दावली आ वादक लेल शिविर लगा कऽ प्रशिक्षण देल जएबाक आवश्यकता अनुभूत कएल जाएत आ से कवि लोकनि कइयो रहल छथि !
मिथिलाक भाषाक कोमल आरोह-अवरोह, एतुक्का सर्वहारा वर्गक सर्वगुणसंपन्नता, संगे एतुक्का रहन-सहन आ सांस्कृतिक कट्टरता आ राजनीति, दिनचर्या, सामाजिक मान्यता, आर्थिक स्थिति, नैतिकता, धर्म आ दर्शन सेहो साहित्यमे एबाक चाही। आ से नै भेने साहित्य एकभगाह भऽ जाएत, ओलड़ि जाएत, फ्रेम लगा कऽ टंगबा जोगड़ भऽ जाएत। कविता रचब विवशता अछि, साहित्यिक विवशता। जहिया मिथिलाक लोककेँ मैथिली भाषा सिखेबा लेल शिविर लगाओल जेबाक आवश्यकता अनुभूत हएत, तहिया कविताक अस्तित्वपर प्रश्न सेहो ठाढ़ कएल जा सकत। आ से दिन नै आबए तै लेल सेहो कविकेँ सतर्क रहऽ पड़तन्हि।
आ से राजदेव मंडल सतर्क छथि आ तैँ हिनकर कविता-संग्रह

|| 8.71

अम्बरा एक्कैसम शताब्दीक पहिल दशकक सर्वश्रेष्ठ मैथिली कविता संग्रह बनि आएल अछि।

लोकगाथा/ नृत्य/ संगीत आदिक ऐतिहासिक वर्णन

मोहनजोदड़ो सभ्यतासँ प्राप्त कांस्य प्रतिमा नृत्यक मुद्राक संकेत दैत अछि, वर्तमान कथक नृत्यक ठाठ मुद्रा सदृश, दहिन हाथ ४५ डिग्रीक कोण बनेने आ वाम हाथ वाम छाबापर, संगे वाम पएर कने मोड़ने। ऋगवेदक शांखायन ब्राह्मणमे गीत, वाद्य आ नृत्य तीनूक संगे-संग प्रयोगक वर्णन अछि, ऐतरेय ब्राह्मणमे ऐ तीनूक गणना दैवी शिल्पमे अछि। ऋगवेद १०.७६.६ मे उषाक स्वर्णिम आभा कविकेँ सुसज्जित ऋषिक स्मरण करबै छन्हि। ऋगवेदमे लोक नृत्यक (प्रान्चो अगाम नृतये) सेहो उल्लेख अछि। महाव्रत नाम्ना सोमयागमे दासी सभक (३-६ दासीक) सामूहिक नृत्यक वर्णन अछि। शांखायन १.११.५ मे वर्णन अछि जे विवाहमे ४-८ सुहागिनकेँ सुरा पियाओल जाइ छल आ चतुर्वार नृत्य लेल प्रेरित कएल जाइ छल। वैदिक साहित्यमे विवाह विधिमे पत्नीक गायनक उल्लेख अछि। सीमन्तोन्नयन विधिमे पति वीणावादकसँ सोमदेवक वादयुक्त गान करबाक अनुरोध करै छथि। अथर्ववेदमे वसा नाम्ना देवताक नृत्य ऋक्, साम आ गाथासँ सम्बन्धित हेबाक गप आएल अछि, सोमपानयुक्त ऐ नृत्यमे गन्धर्व सेहो होइ छला, से वर्णित अछि। अथर्ववेद १२.१.४१ मे गीत, वादन आ नृत्यक सामूहिक ध्वनिक वर्णन अछि। वैदिक कालमे साम संगीतक अलाबे गाथा आ नाराशंसी नाम्ना लौकिक गाथा-संगीतक सेहो प्रचलन छल।

लोकगाथाक तत्व: भाषाक स्वरूप मौखिक रहबाक कारणसँ

गतिशील अछि। काल निर्धारण सेहो अनुमानपर आधारित होइत अछि।

गाथा मेला, हाट बजार, विशिष्ट लोकक घर, सार्वजनिक स्थलपर होइत अछि - से जै जातिक लोकदेवता रहै छथि तकर अतिरिक्त दोसरो जातिक श्रोता रहैत छथि।

सर्जक आ श्रोताक प्रत्यक्ष संबंध रहैत अछि, श्रवण तत्वक कारण कथाक अनायास अलंकरण भेटैत अछि, मुदा सभटा साहित्यिक लक्षण जेना सर्ग, छन्द, नाट्य-संधि आ वस्तु निर्देशक अभाव रहैत अछि। वस्तु संगठन सुगठित नै रहैत अछि। गारिक प्रयोग आ मद्यपानक यत्र-तत्र वर्णन रहैत अछि।

ग्रामीण व्यवस्थामे चोरक स्थान आ ओकर वर्णन, स्थानीय देवी-देवताक चरचा आ जातीय अस्मिताक प्रयोग होइत अछि। कथा-गायक आशु कवि होइ छथि- एकटा ढ़ाँचापर अपन हिसाबसँ ओ हेर-फेर कऽ गबै छथि प्रारम्भमे ईश्वर, वन्दना आ बीच-बीचमे ईश्वरसँ क्षमायाचना, ई सभ गायन क्षमता स्थिर करबाक उद्देश्यसँ कएल जाइत अछि।

घण्टासँ ऊपर गायनक बीचमे हुक्का-चिलम, मद्यपान, परिवेशक वर्णन होइत अछि। लोरिक मनुआर श्रोताक सोझाँ कएल जाइत अछि मुदा सल्हेसक कथा आराध्य देवक समक्ष।

दैवी शक्ति द्वारा युद्धमे नायकक सहायता होइत अछि।

नायक सेहो गारिक प्रयोग करैत अछि।

महाकाव्यक पात्रक नाम आ आन तत्वक ग्रहण जेना महाभारतक जुआ आदि प्रयोगमे आनल जाइत अछि।

निष्कर्ष: सभ साहित्यिक विधा दू प्रकारक होइत अछि। लोकधर्मी आ नाट्यधर्मी, लोकधर्मी भेल ग्राम्य आ नाट्यधर्मी भेल शास्त्रीय उक्ति। ग्राम्य माने भेल कृत्रिमताक अवहेलना मुदा अज्ञानतावश किछु गोटे एकरा गाममे होइबला नाटक बुझै छथि। लोकधर्मीमे स्वभावक अभिनयमे प्रधानता रहैत अछि, लोकक क्रियाक प्रधानता रहैत अछि, सरल आंगिक प्रदर्शन होइत अछि, आ ऐमे पात्रक, से ओ स्त्री हुअए वा पुरुष, तकर संख्या बड्ड बेसी रहैत अछि। नाट्यधर्मीमे वाणी मोने-मोन, संकेतसँ, आकाशवाणी इत्यादि, नृत्यक समावेश, वाक्यमे विलक्षणता, रागबला संगीत, आ साधारण पात्रक अलाबे दिव्य पात्र सेहो रहै छथि। कोनो निर्जीव/ वा जन्तु सेहो संवाद करऽ लगैए, एक पात्रक डबल-ट्रिपल रोल, सुख दुखक आवेग संगीतक माध्यमसँ बढ़ाओल जाइत अछि।

वैदिक आख्यान, जातक कथा, ऐशप फेबल्स, पंचतंत्र आ हितोपदेश आ संग-संग चलैत रहल लोकगाथा सभ। सभ ठाम अभिजात्य वर्गक कथाक संग लोकगाथा रहिते अछि।

स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र ‘‘यात्री’’ (१९११-१९९८)

स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र ‘‘यात्री’’ केर जन्म १९११ ई. मे अपन मामागाम सतलखामे भेलन्हि जे हुनकर पैतृक गाम तरौनीक लगेमे अछि। यात्री जी अपन गामक संस्कृत पाठशालामे पढ़ऽ लगला, फेर वाराणसी आ कलकत्ता सेहो गेला आ संस्कृतमे ‘‘साहित्य आचार्य’’ क उपाधि प्राप्त केलन्हि। तकर बाद ओ कोलम्बो लग कलनिआ स्थान गेला, पाली आ बुद्ध धर्मक अध्ययनक लेल। ओतऽ ओ बौद्ध धर्ममे दीक्षित भऽ गेला आ हुनकर नाम पड़लन्हि - नागार्जुन। मुदा बादमे पुनः गाममे यज्ञोपवीत कऽ ब्राह्मण धर्ममे घुरला!

यात्रीजी मार्क्सवादसँ प्रभावित छला, १९२९ ई. क अन्तिम मासमे मैथिली भाषामे पद्य लिखब शुरू केलन्हि। १९३५ ई.सँ हिन्दीमे सेहो लिखऽ लगला। स्वामी सहजानन्द सरस्वती आ राहुल सांकृत्यायनक संग ओ किसान आन्दोलनमे संलग्न रहला आ १९३९ सँ १९४१ धरि ऐ क्रममे विभिन्न जेलक यात्रा केलन्हि। हुनकर बहुत रास रचना जे महात्मा गाँधीक मृत्युक बाद लिखल गेल छल, प्रतिबन्धित कऽ देल गेल। भारत-चीन युद्धमे कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा चीनकेँ देल समर्थनक बाद कम्युनिस्ट पार्टीसँ मतभेद भेलन्हि। जे.पी. अन्दोलनमे भाग लेबाक कारण आपातकालमे हिनका जेलमे ठूसि देल गेल। यात्रीजी हिन्दीमे बाल साहित्य सेहो लिखलन्हि। हिन्दी आ मैथिलीक अतिरिक्त बांग्ला आ संस्कृतमे सेहो हिनकर लेखन आएल। मैथिलीक दोसर साहित्य अकादमी पुरस्कार १९६९ ई. मे यात्रीजीकेँ हुनकर कविता संग्रह ‘‘पत्रहीन नग्न गाछ’’पर भेटलन्हि। १९९४ ई.मे ओ साहित्य अकादमीक फेलो -हिन्दी आ मैथिली कविक रूपमे- भेला।

यात्रीजी जखन २० वर्षक छला तखन १२ वर्षक कान्यासँ हिनकर विवाह भेल। हिनकर पिता गोकुल मिश्र अपन समाजमे अशिक्षितक गनतीमे रहथि आ चरित्रहीन छला। यात्रीजीक बच्चाक स्मृतिमे छन्हि जे हुनकर पिता कोना हुनकर अस्वस्थ आ ओछाओन धएल मायपर कुरहड़ि लऽ मारबा लेल उठल छला, जखन ओ बेचारी हुनकासँ कुमार्ग छोड़बाक गुहारि कऽ रहल छली। यात्रीजी मात्र छह वर्षक छला जखन हुनकर माए हुनका छोड़ि प्रयाण कऽ गेली। यात्रीजीकेँ अपन पिताक ओ चित्र सेहो रहि-रहि सतबै छलन्हि जइमे हुनकासँ मातृवत प्रेम करएवाली हुनकर विधवा काकीक, हुनकर पिताक अवैध सन्तानक गर्भपातमे, लगभग मृत्यु भऽ गेल छलन्हि। के एहन पाठक हएत जे यात्रीजीक हिन्दीमे लिखल ‘‘रतिनाथ की चाची’’ पढ़बा काल बेर-बेर नै कानल हएत। पिता-पुत्रक ई घमासान एहन बढ़ल जे पुत्र अपन बाल-पत्नीकेँ पिता लग छोड़ि वाराणसी प्रयाण कऽ गेला।

कर्मक फल भोगथु बूढ़ बाप
हम टा संतति, से हुनक पाप
ई जानि ह्वैन्हि जनु मनस्ताप
अनको बिसरक थिक हमर नाम
माँ मिथिले, ई अंतिम प्रणाम! (काशी/ नवंबर १९३६)

काशीसँ श्रीलंका प्रयाण, ‘‘कर्मक फल भोगथु बूढ़ बाप’’ ई कहि यात्रीजी अपन पिताक प्रति सभ उद्गार बाहर कऽ दै छथि। १९४१ ई. मे यात्रीजी अपन पत्नी, अपराजिता, लग आबि गेलथि।

१९४१ ई. मे यात्रीजी दू टा मैथिली कविता लिखलन्हि- ‘‘बूढ़ वर’’ आ ‘‘विलाप’’ आ एकरा पाम्फलेट रूपमे छपबा कऽ ट्रेनक यात्री लोकनिकेँ बेचलन्हि। जीविकाक ताकिमे सौँसे भारत दुनू प्राणी घुमला। पत्नीक जोर देलापर बीच-बीचमे तरौनी सेहो घुमि कऽ आबथि। आ फेर आएल १९४९ ई., अपना संग लेने यात्रीजीक पहिल मैथिली कविता-संग्रह ‘‘चित्रा’’। १९५२ ई. धरि पत्नी संगमे घुमैत रहलथिन्ह, फेर तरौनीमे रहऽ लगली। यात्रीजी बीच-बीचमे आबथि। अपराजितासँ यात्रीजीकेँ छह टा सन्तान भेलन्हि, आ सभक भार पत्नी अपना कान्हपर लेने रहली। यात्रीजी दमासँ परेशान रहैत रहथि।

हम जखन दरभंगामे पढ़ैत रही तँ यात्रीजी ख्वाजा सरायमे रहै छला। हमरा मोन अछि जे मैथिलीक कोनो कार्यक्रममे यात्रीजी आएल छला आ कम्युनिस्ट पार्टीबला सभ एजेन्डा छीनि लेने छल। अगिले दिन यात्रीजी अपनाकेँ ओइ धोधा-धोखीमे गेल सभाक कार्यवाहीसँ हटा लेलन्हि। एमर्जेन्सीमे जेल गेलाह तँ आर.एस.एस.क कार्यकर्ता लोकनिसँ जेलमे भेँट भेलन्हि आ जे.पी.क सम्पूर्ण क्रान्तिक विरुद्ध सेहो जेलसँ बाहर एलाक बाद लिखलन्हि यात्रीजी। यात्रीजी मैथिलीमे बैद्यनाथ मिश्र "यात्री" आ हिन्दीमे ‘‘नागार्जुन’’ क नामसँ रचना लिखलन्हि।

‘‘पृथ्वी ते पात्रं’’ १९५४ ई. मे ‘‘वैदेही’’मे प्रकाशित भेल छल, हमरा सभक मैट्रिकक सिलेबसमे छल। यात्रीजी लिखै छथि-

‘‘आन पाबनि तिहार तँ जे से। मुदा नबान निर्भूमि परिवारकेँ देखार कए दैत छैक। से कातिक अबैत देरी अपराजिता देवीक घोघ लटकि जाइन्हि। कचोटेँ पपनियो नहि उठा होइन्ह ककरो दिश! बेसाहल अन्नसँ कतउ नबान भेलइए’’?

यात्री एकटा मिथ छथि? की यात्री एकटा मिथ छथि? ओ मुख्यतः हिन्दीक लेखक रहथि, मैथिलीमे ओ हिन्दीक दशमांशो नै लिखलन्हि। जे लिखबो केलन्हि तइमे सँ बेशी स्वयं द्वारा हिन्दीसँ अनूदित। मैथिली आ मिथिला क्षेत्रक शब्दावली आ संस्कृति हिन्दीक लोककेँ अबूझ आ तेँ रुचिगर लगलै मुदा तइमे सेहो ढेर रास कमी रहै जेना एकटा उदाहरण यात्री समग्रसँ। यात्री समग्र- पृ.२२० जेठ सुदी चतुर्दशी कऽ रहनि पीसाक वर्षी। पहिले वर्षी..पृ.. २२२- ..कहाँ जे एको दिनक खातिर जाइ, कर्ता बना, अषाढ़ बढ़ि तृतियाक तिथिपर पहिल।

एहेन बेमारी आनो मैथिली-हिन्दी लेखकमे छन्हि। ई ऐतिहासिक लिखित तथ्य अछि जे गोनू झा १०५०-११५० मे भेला मुदा उषा किरण खान विद्यापतिसँ हुनकर शास्त्रार्थ करबै छथि (हिन्दीक ऐतिहासिक उपन्यास सिरजनहार, भारतीय ज्ञानपीठ, मे) वीरेन्द्र झा कहै छथि जे गोनू झा ५०० साल पहिने भेला आ तारानन्द वियोगी गोनू झा केँ ३०० साल पहिने भेल मानै छथि (दुनू गोटेक हिन्दीमे प्रकाशित गोनू झापर पोथी, क्रमसँ राजकमल प्रकाशन आ नेशनल बुक ट्रस्टसँ प्रकाशित) तँ विभा रानीक गोनू झापर हिन्दी पोथी (वाणी प्रकाशन) मे कुणाल गोनू झाकेँ भव सिंहक राज्यमे (१४म शताब्दी) भेल मानै छथि। जखन पंजीमे उपलब्ध लिखित अभिलेखन गोनू झाकेँ विद्यापतिसँ दस पीढ़ी पहिने अभिलेखित करैत अछि, तखन ई हाल अछि। मिथिला क्षेत्रक शब्दावली आ संस्कृतिक- जे हिन्दीक लोककेँ अबूझ आ तेँ रुचिगर लगै छै- तथ्यमे ई मैथिली-हिन्दी लेखक सभ अपन अज्ञानतासँ ढेर रास गलत तथ्य पड़सि रहल छथि, साम्प्रदायिक लेखक लोकनि गोनू

झाक कथामे मुस्लिम तहसीलदारक अत्याचार घोंसिया रहल छथि (मुस्लिम लोकनि मिथिलामे गोनूक समए मे रहबे नै करथि)!

यात्री समग्रमे बलचनमा नै लेल गेल कारण ओ हिन्दीक कृति अछि, ओकर मैथिली अनुवाद सेहो भ्रष्ट अछि लगैए जेना अदहा अनुवाद केलाक बाद मैथिली लेल हुनका लग समयाभाव भऽ गेल होइन्ह। यात्री समग्रमे नवतुरिया लेल गेल, ओहो मूल हिन्दी अछि, किए मूल मैथिली कहि कऽ लेल गेल तकर जबाब सम्पादक देता। मैथिलीमे प्रूफ रीडरकेँ सम्पादक कहेबाक सख छन्हि आ लोक ग्रियर्सन धरिक रचनाक रिप्रिन्ट अपन सम्पादकत्वमे करबा रहल छथि। एकटा दोसर उदाहरणमे पी.सी.रायचौधुरीक दरभंगा जिला गजेटियरक तेसर अध्यायक चारिटा उपशीर्षकक अंग्रेजी रचनाकेँ मोहन भारद्वाज अपन सम्पादकत्वमे रमानाथ झा रचनावलीमे -किनको कहलासँ सत्य मानि- रमानाथ झाक रचना मानि घोसिया देलन्हि, जखन कि लिखित आ वैयाकरणिक शिल्पक आधारपर ओ रचना पी.सी.रायचौधुरीक अछि। यात्री स्वयं कहै छथि जे ओ मैथिली बलचनमा पहिने लिखलन्हि आ तकर हिन्दीमे अनुवाद केलन्हि। मुदा हिन्दी बलचनमामे ओ ई नै लिखै छथि आ ओकरा हिन्दीक पहिल आंचलिक उपन्यास कहै छथि। ई बेमारी आइयो मैथिलीक लेखककेँ गरोसने अछि आ यात्री जीक ऐ मे सायास-अनायास योगदान दुखदायी अछि।

राजकमल यात्रीकेँ अमर-सुमन सन पुरान ढर्राक कवि कहै छथि, प्रायः यात्रीक छन्दक प्रति सजगतासँ राजकमलकेँ ई भ्रम भेल छलन्हि।

रामविलास शर्मा आ यात्रीजीक, मैथिली बोली अछि आकि भाषा, ऐ

विषयक सम्वादक भाषा विज्ञानक दृष्टिएँ कोनो खास महत्व नै छै। रामविलास शर्मा बहुत पैघ साम्यवादी चिन्तक रहथि आ हुनकर कविता, आलेख सँ बेसी प्रभावी हुनकर कएक खण्डक भारतक इतिहास विवेचन अछि। मैथिलीकेँ भाषाक रूपमे स्थापित करबामे सुभद्र झा, रामावतार यादव, योगेन्द्र यादव, सुनील कुमार झा आदि भाषाशास्त्री काज केने छथि, रामविलास शर्मा आ यात्रीजीक सम्वाद गपाष्टक मात्र अछि।

चतुरानन मिश्र आ जगदीश प्रसाद मंडल कम्यूनिस्ट आन्दोलनसँ जुड़ल छथि, प्रायोगिक रूपमे, पार्टी स्तरपर, मुदा हिनकर दुनू गोटेक उपन्यास देखला उत्तर हमरा ई कहबामे कनेको कष्ट नै होइत अछि जे जइ रूपमे यात्री आ धूमकेतु मार्क्सवादक बैशाखी लऽ उपन्यासकेँ ठाढ़ करै छथि तकर बेगरता ऐ दुनू उपन्यासकारकेँ नै बुझना जाइ छन्हि। मार्क्सवादक असल अर्थ हिनके दुनूक रचनामे भेटत। कतौ पार्टीक नाम वा विचारधाराक चर्च नै मुदा जे असल *डायलेक्टिकल मैटेरियलिज्म* छै तकर पहिचान, जिनगीक महत्वपर विश्वास, द्वन्द्वात्मक पद्धतिक प्रयोग आ ई तखने सम्भव होइत अछि जखन लेखक दास कैपिटल सहित मार्क्सवादक गहन अध्ययन करत आ प्रायोगिक मार्क्सवादपर कताक दशक चलत।

आ अन्तमे यात्रीजीक संस्कृत पद्य:-

वासन्ती कनकप्रभा प्रगुणिता

पीतारुर्णेः पल्लवैः

8.134॥ **गजेन्द्र ठाकुर**

हेमाम्भोजविलासविभ्रमरता

दूरे द्विरेफाः स्ता

यैशसण्डलकेलिकानन कथा

विस्मरिता भूतले

छायाविभ्रमतारतम्यतरलाः

तेऽमी ‘‘चिनार’’ द्रुमाः॥

-बसंतक स्वर्णिम आभा द्विगुणित भऽ गेल अछि पीअर-लाल कोपड़सँ। स्वर्णकालक भ्रममे भौरा सभ एकरासँ दूर-दूर रहैत अछि। नन्दनवनक विहारकेँ जे पृथ्वीपर बिसरा दैत अछि, छाह झिलमिल घटैत-बढ़ैत जकर डोलब अछि चंचल आ तरल। ओइ चिनारकेँ हम देखने छी अडिग भेल ठाढ़।

हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली

रामलोचन शरणक मैथिली राम चरित मानस

महाकाव्य वा गीत प्रबन्ध: महाकाव्यक वर्णन जे ई कतेक सर्गमे हुअए, एकर नायक केहन प्रकृतिक हुअए आ ओ उच्च कुल उत्पन्न हुअए आदि आब बुद्धिविलास मात्र कहल जाएत। जेना गद्यमे कथा होइत अछि आ विस्तारक अनुसार विहनि कथा, लघुकथा आ दीर्घ कथामे विभक्त कएल जाइत अछि, तइ सन्दर्भमे उपन्यास (वा बीच-बीचमे नाटकक) पद्य रूपान्तरण महाकाव्य कहल जाएत। जँ ऋगवैदिक परम्परामे जाइ तँ महाकाव्यकेँ गीत-प्रबन्ध कहल जेबाक चाही।

आचार्य रामलोचन शरणक गीत-प्रबन्ध मैथिली रामचरित मानस: मैथिली साहित्यकेँ पढ़निहारक समक्ष मैथिलीमे रामचरित किंवा रामायण श्री चंदा झा कृत मिथिला भाषा रामायण आ श्री लालदासक रमेश्वर चरित मिथिला रामायण- ऐ दू गोट ग्रंथक रूपमे प्राप्त होइत अछि। पाठ्यक्रमक अंतर्गत स्कूल, कॉलेज-विश्वविद्यालयक मैथिली विषयक पाठ हुअए आकि सामान्य आलोचना ग्रंथ आकि पत्र-पत्रिकामे छिड़िआएल लेख सभ, ऐ तेसर रामायणक अस्तित्वो धरि नै स्वीकार कएल गेल अछि। एकर संग ईहो बुझि लिअ जे जनमानस समालोचनाशास्त्रक आधारपर राखल विचारकेँ तखने स्वीकार करैत अछि जखन ओ सत्यक प्रतीक हुअए। आइयो मिथिलामे जे अखंड रामायण पाठ होइत अछि से वाल्मीकि रामायणक किंवा तुलसीक रामचरितमानसक। एकर कारणपर हम

बहुत दिन धरि विचार करैत रहलौं। कएकटा चन्द्र रामायण आ लालदासकृत मिथिला रामायण, रामायण अखंड पाठ केनिहार लोकनिकेँ बँटबो केलौं मुदा सबहक यएह विचार छल, जे ई दुनू ग्रंथ मैथिली साहित्यक अमूल्य धरोहर अछि, मुदा अखंड पाठक सुर जे तुलसीक मानसमे अछि से दोसर भाषाक रहला उत्तरो संगीतमय अछि। शंकरदेव अपन मातृभाषा असमियाक बदला मैथिली भाषाक प्रयोग संगीतमय भाषा हेबाक द्वारे केलन्हि, तइ भाषामे संगीतमय रामायणक रचना जे अखण्ड पाठमे प्रयोग भऽ सकए, केर निर्माण संभव नै भऽ सकल अछि, से हमर मोन मानबा हेतु तैयार नै छल।

श्री रामलोचनशरण-कृत यथासम्भव पूर्णभावरक्षित समश्लोकी मैथिली श्रीरामचरितमानस एकर प्रमाण अछि। अपन समीक्षक लोकनि ऐ मोतीकेँ चिन्हबामे सफल किए नै भऽ सकला, एकर चर्चो तक मैथिलीक उपरोक्त दुनू रामायणक समक्ष किए नै कएल जाइत अछि?

स्व.हरिमोहन झाक कोनो पोथी मैथिली अकादमी द्वारा हुनका जिबैत प्रकाशित नै भेल आ साहित्य अकादमी पुरस्कार सेहो हुनका मृत्योपरांत देल गेलन्हि। आचार्य रामलोचन शरण मैथिलीक सभसँ पैघ महाकाव्यक रचयिता छथि आ हमरा विचारे सभसँ संपूर्ण मैथिली रामायणक सेहो। जखन हम ऐ महाकाव्यक फोटोकॉपी पूर्वाँचल मिथिलाक रामायण- अखंड- पाठक संस्थाकेँ देलौं, तँ ओ लोकनि एकरा देख कऽ आश्चर्यचकित रहि गेला आ अगिला साल ऐ रामायणक अखंड पाठक निर्णय केलन्हि। एकरा मैथिलीक समालोचनाशास्त्रक विफलता मानल जाए, किएक तँ ई महाकाव्य तँ

विफल भैये नै सकैत अछि। आचार्यक मनोहरपोथीक चर्चा हम अपन बाल्येवस्थासँ सुनैत रही, मुदा ऐ पोथीक नै। मैथिलीक सभसँ पैघ महाकाव्यक चर्चा मात्र सीतायनपर आबि किए खतम भऽ जाइत अछि? आचार्य श्री रामलोचनशरणक मैथिली श्री रामचरितमानस सभसँ पैघ महाकाव्य अछि ई एकटा तथ्य अछि आ से समालोचनाकार किंवा मैथिली भाषाक इतिहासकार लोकनिक कृपाक वशीभूत नै अछि। अपन ग्रंथक किञ्चित् पूर्ववृत्तम् मे आचार्य लिखैत छथि- मिथिलाभाषायाः मूर्द्धन्या लेखकाः श्रीहरिमोहनझामहोदया निशम्यैतद् वृत्तं परमाह्लादं गता भूयो भूयश्च मामुत्साहितवन्तः। आगाँ ओ लिखै छथि- प्राध्यापकस्य श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन' तथा सम्पादनविभागस्थ पण्डित श्री शिवशंकरझा-महोदयस्य हृदयेनाहं कृतज़्ज्ञोऽस्मि। से सभकेँ ई देखल गुनल सेहो छलन्हि।

आचार्य रामलोचन शरणक गीत-प्रबन्ध मैथिली रामचरित मानसक गेयता: आचार्यजीक सुन्दरकाण्डक प्रारंभ देखू आ एकर गेयताक तुलना चन्दा झाक रामायण आ लालदासक रामयणसँ करू:-

जामवंत केर वचन सोहाओल। सुनि हनुमंत हृदय अति भाओल॥1॥ ता धारि बाट देखब सहि सूले। खा कय बंधु कंद फल मूले॥2॥

जाधरि आबी सीतहिँ देखी। होयत काज मन हरख विसेखी॥3॥ ई कहि सबहिँ झुकाकय माथे। चलल हरषि हिय धय रघुनाथे॥4॥

सिंधु तीर एक सुंदर भूधर। कौतुक कूदि चढ़ल तेहि ऊपर॥5॥ पुनु पुनि रघुवीरहिँ उर धारी। फनला पवनतनय बल भारी॥6॥

जहि गिरि चरन देथि हनुमंते। से चल जाय पताल तुरंते॥7॥ सर अमोघ रघुपति केर जहिना। चलला हनूमान झट तहिना॥8॥ जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। कह मैनाक हौ श्रम भारी॥9॥

तुलसी अकबरक समकालीन छला आ हुनकर भाषा आ अखुनका भाषामे किछु अंतर आबि गेल अछि, मुदा तुलसीक गेयता ओहिनाक ओहिना अछि। आचार्यजी तुलसीक गेयता उठओलन्हि अछि, आ दुरूहता खतम कऽ देने छथि। सभ काण्डक शुरूमे देल संस्कृत पद्य ओ तुलसीक मानससँ लेलन्हि अछि। आचार्यजीक ई मैथिली रामचरितमानस तुलसीक मानसक रूपांतर तँ अछि मुदा ई मैथिलीक मूल महाकाव्यक रूपमे परिगणित हेबाक अधिकारी अछि जेना कंबनक तमिल रामायण आ तुलसीक मानस अपन-अपन भाषामे परिगणित कएल जा रहल अछि। कंबन वाल्मीकि रामायणक रूपांतर तमिलमे कऽ रहल छला, तखन ओ वाल्मीकि रामायणक विषयमे कहलन्हि- ई रामायण एकटा दूधक समुद्र अछि आ हम छी एकटा बिलाड़ि जे मनसूबा बना रहल अछि जे ऐ सभटा दूधकेँ एक्के बेरमे पीबि जाइ।

ओना ईहो सत्य जे कंबन कहियो (आचार्यजी सेहो एहिना केलन्हि) रामायणकेँ अपन मौलिक कृति नै कहलन्हि वरन वाल्मीकिक कृतिक रूपांतरे कहलन्हि, जखन कि ओ अपन कृतिमे रामकेँ भगवान बना देलन्हि। वाल्मीकि रामकेँ मर्यादा पुरुष मानै छला। वाल्मीकि सुग्रीवक विवाह बालीक पत्नीसँ बालीक मरबाक पश्चात हेबाक वर्णन करै छथि मुदा कंबन बालीक पत्नीक आजीवन वैधव्यक वर्णन करै छथि। आचार्यजीकेँ ई करबाक आवश्यकता नै पड़लन्हि किएक तँ लोकक कंठमे तुलसीक मानस बसि गेल छल, आ हुनका एकर

गेयताक निर्वाह मात्र करबाक छलन्हि।

आचार्य रामलोचन शरणक गीत-प्रबन्ध मैथिली रामचरित मानस आ एकर नारी आ शूद्र-वन्यजाति विरोध प्रदर्शन. आब मानसक एकटा विवादास्पद पद्यक चर्चा करी। अर्थक पुनर्पाठ भऽ सकै छल। आचार्यजी सुन्दरकाण्डक अंतमे लिखै छथि जखन सिंधु (समुद्र)रामकेँ लंका जेबाक रस्ता नै दै छथि तखन राम कहै छथि-

लछुमन बान सरासन आनू। सोखब बारिधि बिसिख कृसानू॥1॥

तखन सिंधु कर जोरि बजै छथि-

ढोल गमार सुद्र पसु नारी। सब थिक ताड़न केर अधिकारी॥

एकर पुनर्पाठ एना भऽ सकै छल, जे ई सभ -ढोल गमार सुद्र पसु नारी- ई सभ शिक्षा किंवा सबक देबा योग्य अछि, गमार सुद्र आ नारीमे शिक्षाक अभाव अछि तैँ आ पसुमे मनुष्यक अपेक्षा बुद्धि नै छै तैँ, ढोलक प्रयोग बिना शिक्षाक करब तँ संगीत नै ध्वनि भऽ जाएत। फेर समुद्र ओइ स्थितिमे खलनायक बनि रहल छल आ ओकर वक्तव्य कविक आकि रचनाकारक वक्तव्य नै भऽ सकैत अछि। रचनाकारक रचनामे नीक अधला सभ पात्र रहैए, आ ओइ पात्रक मुँहसँ नीक आ अधला दुनू गप निकलत। रचनाकारक सफलता ऐपर निर्भर करैत अछि, जे ओ अपनाकेँ अपन पात्रसँ फराक कऽ पबैत अछि आकि नै। मुदा तुलसी आ तैँ आचार्य रामलोचन शरण सेहो अपनाकेँ पात्रसँ बहुत ठाम फराक नै कऽ पबै छथि। जखन भारतमे सामन्तवादी सरकार छल तखन हुनकर शूद्र

आ गएर द्विज जातिपर कएल टिप्पणी अनावश्यक बुझि पड़ैए। मिथिलाक स्मृतिकार लोकनि यएह परम्परा बादोमे रखलन्हि आ आश्चर्य तँ तखन होइए जखन ऐ तरहक गएर जरूरी टिप्पणी अंग्रेजी शासनकालमे प्रणीत संस्कृत ग्रन्थ सभमे मैथिल लोकनि द्वारा कएल देखै छी, ओइ अंग्रेजी शासनमे मे ब्राह्मण आ गएर ब्राह्मण सभकेँ अंग्रेज *ब्लैक इण्डियन* कहै छला।

तुलसीक प्रासंगिकता वा कट्टरता नै वरण मात्र ओकर दुरूहताकेँ आचार्य खतम कएने छथि। उपरोक्त विवादास्पद पदक अतिरिक्त आनोठाम ई जातिवादिता देखबामे अबैत अछि।

मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा १२ क बादक तेसर पद देखू:-

करय बिचार कुबुद्धि कुजाती।

हैत अकाज कोन बिधि राती॥३॥

मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा ५९ क बादक पहिल पद देखू:-

कोल किरात सुता बन जोगे।

विधि रचलनि बंचित सुख भोगे॥१॥

मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा १६१ क बादक चारिम पद देखू:-

विधियो सकथि न तिय हिय जानी।

सकल कपट अघ अबगुन खानी॥४॥

(स्त्रीक हृदैक गति विधातो नै बुझि सकै छथि, ई कपट, पाप आ अवगुणसँ उगडुम अछि!!)

मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा १९३ क बादक तेसर पद देखू:-

लोकवेद सबतरि जे नीचे।

छुबि जसु छाह लैछ जल सीचेँ॥३॥

तुलसी आ तेँ आचार्य रामलोचन शरण सेहो अपनाकेँ पात्रसँ बहुत ठाम फराक नै कऽ पबै छथि (कम्बन वाल्मीकिक अनुवाद करै काल बहुत ठाम तत्कालीन युगक अनुरूक अपनाकेँ फराक करै छथि) आ तेँ मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा २५० क बादक तेसर पदमे वन्यजातिक मुँहसँ कहबै छथि:-

यैह हमर अछि बुझु बड़ सेबे।

बासन बसन चोराय न लेबे॥३॥

मैथिली रामचरित मानस बालकाण्डक दोहा ६२ क बादक सातम

पद देखू:-

जद्यपि जग दारुण दुख नाना।

सब सौँ कठिन जाति अपमाना॥७॥

मुदा जखन बीसम शताब्दीमे साहित्य अकादेमीक पोथीमे लोरिकपर मैथिली आलेखमे एकटा सज्जन लिखै छथि जे ब्राह्मणपर कएल शूद्र द्वारा अत्याचारक विरुद्ध लोरिक ठाढ़ भेला तँ अकबरकालीन तुलसी आ ओकर छन्दोबद्ध अनुवादक आचार्य रामलोचन शरणकेँ की दोष देल जाए! जेना विष्णु शर्मा पंचतंत्रक कथा कहैत-कहैत स्त्री आ शूद्रक पाछाँ अकारण क्रूर भऽ जाइ छथि सएह हाल राम चरित मानसक अछि।

आचार्य रामलोचन शरणक गीत-प्रबन्ध मैथिली रामचरित मानसक विशेषता: मैथिली रामचरित मानस बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड आ उत्तरकाण्डमे विभक्त अछि। वाल्मीकि रामायणक सुनियोजित कथ्यमे किछु हेरफेर कएल गेल अछि। एकर शैली आ चरित्रक अंकन उदात्त अछि। श्रृंगार रसक प्राधान्य नै अछि मुदा राम सीताक सन्दर्भमे वियोग आ संयोग दुनू कालमे एकर प्रयोग भेल अछि। मुख्य अंगी रस अछि शान्ति, ओना ई सभटा रामभक्तिमे समाहित अछि। भक्तिक प्रधानता अछि मुदा ज्ञान आ कर्मक महत्व कम नै कएल गेल अछि, सगुणक प्राधान्य रहितो निर्गुण भक्तिक महत्व कम नै भेल अछि, राम ब्रह्म छथि आ हुनकर निर्गुण आ सगुण दू रूप छन्हि। जीव आ ब्रह्म एक्के अछि। वचनक पालन हुअए वा पितृभक्ति, भ्रातृभक्ति वा नारीक प्रेम वा पतिव्रतक, मैथिली रामचरित

मानस ऐ सभ आदर्शसँ ओतप्रोत अछि। मैथिली रामचरित मानसमे सभ अलंकार प्रयोगमे अछि मुदा मुख्य रूपेँ रूपक आ उपमा प्रयोगमे अछि। प्रेमाख्यानमे प्रयुक्त दोहा आ चौपाइ आधारित प्रबन्ध पद्धतिक कड़वक विधिक प्रयोगक बादो संस्कृत छन्द सभ प्रयुक्त भेल अछि। मैथिली रामचरित मानसमे विद्यापतिक गीत-विधि, वीरगाथा सभक छप्पय विधि, दोहा, सोरठा, भाट सभक कवित्त-सवैया, नीतिवाक्यक सूक्ति, घनाक्षरी, तोमर, त्रिभंगी छन्दक प्रयोग भेल अछि। मनुक्खक बहुत रास टोटमाक सेहो वर्णन यत्र-तत्र भेल अछि। एकर उद्देश्य अछि मोक्ष, लोककल्याण आ रामरायक स्थापना। मुदा ऐमे रामक अतिरिक्त कृष्ण, शिव (सेतुबन्ध कालमे राम द्वारा शिवक पूजा) आ गणेशक स्तुति अछि। प्रकृति आ चरित्र दुनूक चित्रणमे मैथिली रामचरितमानस अद्वितीय अछि। कवि खिस्सा कहि रहल छथि मुदा बीच-बीचमे ई भारद्वाज-याज्ञवल्क्य आ गरुड़-काकभशुण्डीक सम्वादक माध्यमसँ सेहो कहल गेल अछि। सम्वाद शैलीक प्रयोग मैथिली रामचरितमानसमे खूब भेल अछि। लक्ष्मण-परशुराम सम्वाद हुअए वा मंथरा आ कैकेयीक सम्वाद आकि रावण आ अंगदक सम्वाद, सभ ठाम नाटकक सम्वाद शैली सन रोचक पद्य अहाँकेँ भेटत। प्रारम्भक बालकाण्ड आ अन्तक उत्तरकाण्डमे ऐ गीत-प्रबन्धक दूटा ध्रुव दृष्टिमे आएत। उत्तरकाण्डमे गुरु-शिष्यक खराप होइत सम्बन्ध आ ब्राह्मणक वेद बेचबाक आ पतित हेबाक चर्चा भेटैत अछि मुदा उत्तरकाण्डमे रामराज्यक रूपरेखा सेहो भेटैत अछि।

मैथिली साहित्यक गीत-प्रबन्ध मध्य मैथिली रामचरितमानसक स्थान:
मैथिली वा कोनो भाषामे रामक चरित वाल्मीकि रामायणसँ प्रभावित

भेने बिना नै रहि सकैए। आचार्य रामलोचन शरणक तुलसीक मानसक समश्लोकी मैथिली अनुवाद ओइ अर्थें आर विशिष्ट भऽ जाइत अछि जे आचार्य रामलोचनशरण खाँटी मैथिली तत्वक कतौ अवहेलना नै केने छथि आ ई गीत-प्रबन्ध मैथिलीक अखन धरिक आकारमे (आ गुणात्मक रूपेँ सेहो) मैथिलीक सभसँ पैघ गीत-प्रबन्ध (महाकाव्य) अछि।



मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव

उपन्यासक आरम्भ: वाणभट्टक कादम्बरी राजा शूद्रकक विदिशा नगरीक वर्णनसँ प्रारम्भ होइत अछि। एकटा चाण्डाल अतीव सुन्दरी कन्या वैशम्पायन नाम्ना ज्ञानी सुग्गाकेँ लेने दरबार अबैत अछि आ प्रारम्भ होइत अछि सुग्गाक खिस्सा। चांडालक बस्ती पक्कणमे कियो भिखमंगा नै, कियो चोर नै, ओतुक्का राजा व्याघ्रदेव स्वयं रस्सी बँटै छथि। संस्कृतक ऐ उपन्यास नामसँ मराठीमे उपन्यासकेँ *कादम्बरी* कहल जाइत अछि। उपन्यासक बुर्जुआ प्रारम्भक अछैत ऐमे एतेक जटिलता होइत अछि जे ऐमे प्रतिभाक नीक जकाँ परीक्षण होइत अछि। उपन्यास विधाक बुर्जुआ आरम्भक कारण सर्वांतीजक *डॉन क्विक्जोट*, जे सत्रहम शताब्दीक प्रारम्भमे आबि गेल रहए, केर अछैत उपन्यास विधा उन्नैसम शताब्दीक आगमनसँ मात्र किछु समय

पूर्व गम्भीर स्वरूप प्राप्त कऽ सकल। उपन्यासमे वाद-विवाद-सम्वादसँ उत्पन्न होइत अछि निबन्ध, युवक-युवतीक चरित्र अनैत अछि प्रेमाख्यान, लोक आ भूगोल दैत अछि वर्णन इतिहासक, आ तखन नीक- खराप चरित्रक कथा सोझाँ अबैत अछि। कखनो पाठककेँ ई हँसबैत अछि, कखनो ओकरा उपदेश दैत अछि। मार्क्सवाद उपन्यासक सामाजिक यथार्थक ओकालति करैत अछि। ऐ सभक संग जीवनानुभव सेहो एक पक्षक होइत अछि आ तखन एतऽ दबाएल इच्छाक तृप्तिक लेल लेखक एकटा संसारक रचना करै छथि जइमे पाठक यथार्थ आ कल्पनाक बीचक आड़ि-धूरपर चलैत अछि।

अंग्रेजी उपन्यासक वाद: उत्तर आधुनिक, अस्तित्ववादी, मानवतावादी, ई सभ विचारधारा दर्शनशास्त्रक विचारधारा थिक। पहिने दर्शनमे विज्ञान, इतिहास, समाज-राजनीति, अर्थशास्त्र, कला-विज्ञान आ भाषा सम्मिलित रहै छल। मुदा जेना-जेना विज्ञान आ कलाक शाखा सभ विशिष्टता प्राप्त करैत गेल, विशेष कऽ विज्ञान, तँ दर्शनमे गणित आ विज्ञान मैथेमेटिकल लॉजिक धरि सीमित रहि गेल। दार्शनिक आगमन आ निगमनक अध्ययन प्रणाली, विश्लेषणात्मक प्रणाली दिस बढ़ल। मार्क्स जे दुनिया भरिक गरीबक लेल एकटा दैवीय हस्तक्षेपक समान छला, द्वन्द्वात्मक प्रणालीकेँ अपन व्याख्याक आधार बनेलन्हि।

अंगेजी उपन्यासक आरम्भ आ विकास: अंग्रेजी उपन्यास *पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस-* लेखक कथाक मुख्यपात्रक यात्राक आ ओइ यात्रा मध्य आएल संघर्ष आ उत्साहक वर्णन करै छथि।
डेनियल डिफो अपन *रॉबिन्सन क्रूसो* उपन्यासमे मुख्यपात्रक

साहसिक समुद्र यात्राक वर्णन करै छथि।
सैमुअल रिचर्डसनक *पेमेला* अंग्रेजी उपन्यासकेँ पारिभाषिक स्वरूप देलक।
एफ्रा बेनक *ओरूनोको* उपन्यासक नायक कारी रंगक दास अछि तँ हुनक *लव लैटर्स बिटवीन ए नोबल मैन एंड हिज सिस्टर* मे सामंतक प्रेम कथाक वर्णन अछि।
हैनरी फिल्डिंग *टॉम जोन्स* मे सामंतवादक आलोचना केने छथि, समाजक विकृतिक चित्रण केने छथि।
हेनरी जेम्स *द पोर्ट्रेट ऑफ ए लेडी* मे कलात्मक प्रस्तुति लेल जिनगीक उपेक्षा करै छथि।
रिचर्डसन *कलैरिस* मे मनुष्यक मनोविज्ञानक तहमे जाइ छथि।
जोजफ कोनरेडक *द शैडोलाइन* क पात्र समाज आ जीवनक प्रति दृष्टिकोणक एक पक्षीय हेबापर सोचै छथि।
डी.एच.लॉरेन्सक *लेडी चैटर्लीज लवर* क पात्र विकृति लेल संस्कृति आधारित सभ्यताकेँ दोषी कहै छथि।
रुडयार्ड किपलिंगक उपन्यास *किम* यूरोपी साम्राज्यवाद लेल एकटा बहन्ना ताकि रहल अछि, यूरोपी सभ्यताकेँ ओ उच्च मानै छथि।
ई.एम.फोर्स्टरक *ए पैसेज टू इंडिया* मुदा शासक आ शासितक सम्बन्धकेँ व्याख्यायित करैत अछि।
मैथिली उपन्यासक आरम्भ आ विकास: हरिमोहन झाक कन्यादान आ द्विरागमन मिथिलाक बहुत रास सामाजिक व्यवस्थाकेँ सोझाँ अनैत अछि, महिला शिक्षा आ अंध-पाश्चात्यकरणक सेहो हास्य रसमे चित्रण आधुनिक अंग्रेजी उपन्यासक रीतिएँ करै छथि।
नागार्जुन-यात्रीक हिन्दी-मैथिली उपन्यास *बलचनमा* यादव जातिक बलचनमाक आत्मकथ्यक रूपमे अछि। आर्थिक समस्या एकर मूल विषए छै। बलचनमा कोना एकटा टहल करैबलासँ आगू जाइत

किसानक हक लेल जान दैत अछि ताधरिक कथा। कांग्रेस आदि पार्टीक विरुद्ध कम्यूनिस्ट पार्टीक प्रति स्पष्ट झुकाव यात्रीजीक रहल छन्हि। *पारो*, बलचनमाक आर्थिक समस्याक विपरीत सामाजिक लक्ष्य तकैत अछि। किछु दिनुका बाद ऐ उपन्यासकेँ लोक असली फिक्शनक रूपमे लेता कारण अगिला पीढ़ीकेँ विश्वास नै हेतै जे एहनो कोनो क्रूर व्यवस्था सभ मानव जातिक मध्य होइत हेतै। आ तैँ एकर महत्व आर बढ़ि जाइत अछि- ओइ सभ व्यवस्था सभकेँ पेटारमे सुरक्षित रखबाक जिम्मेदारी। मुदा जहिया यात्रीजी ओइ समस्यापर लिखने छला तहिया ओ समस्या रहै आ ई उपन्यास ओइमे सार्थक हस्तक्षेप केने छल।

रमानन्द रेणुक *दूध-फूल* उपन्यास समाजक उपेक्षित वर्गकेँ सोझाँमे रखैत अछि आ कलात्मक उपस्थापन करैत अछि।

ललितक *पृथ्वीपुत्र* सेहो समाजक उपेक्षित वर्गकेँ सोझाँमे रखैत अछि। ई उपन्यास कृषक जीवनक आर्थिक समस्यापर सेहो आंगुर धरैत अछि।

लिली रे क *पटाक्षेप* वामपंथक वर्ग-संघर्षक उत्थान आ फेर ओकर दमनक कथा कहैत अछि आ देशक समस्यासँ साहित्यकार द्वारा स्वयंकेँ तत्काल जोड़बाक मार्ग प्रशस्त करैत अछि।

धूमकेतुक *मोड़ पर* सेहो वामपंथी विचारक आलोकमे सामाजिक-आर्थिक समस्याक कथा फ्लैशबैकमे कहैत अछि।

साकेतानन्दक सर्वस्वान्त बाढ़िक आ सरकारी नीति आ राहतक कथा अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलक *मौलाइल गाछक फूल* गामक, गामसँ पड़ाइनक आ गलल व्यवस्थाक पुनर्जीवनक लेल समाधानक उपन्यास अछि।

चतुरानन मिश्रक *कला* कलादाइक माध्यमे गलल सामाजिक व्यवस्थापर प्रहार अछि।
शेफालिका वर्माक नागफाँस अंग्रेजक धरतीपर विचरण करैत अछि। धारा आ सीमांतक मिलन ऐ जिनगीमे कहियो हेतै, कोनो जादू हेतै की?

आ अन्तमे : से जौँ गहींर नजरिसँ देखब तँ लागत जे अंग्रेजी उपन्यासकारक कृति ओइ समएक वाद आ दृष्टिकोणकेँ संग लऽ कऽ चलबाक प्रयास अछि। मुदा सिद्धान्तसँ प्रयोगक क्रममे किछु विशेषता स्वयमेव आबि जाइ छै। तहिना मैथिली उपन्यासक सेहो स्थिति अछि। रमानन्द रेणुक उपन्यास हुअए वा शेफालिका वर्माक, ई तथ्य शिल्पमे स्पष्ट रूपसँ देखि सकै छी। लिली रे अपन कलमक धारसँ जेना अपन लग-पासक घटना, समाज आ राजनीतिक वर्णन करै छथि से अद्भुत तँ अछिये, अंग्रेजी उपन्यास सभसँ एक डेग आगाँ जाइत अछि। ललित, यात्री आ धूमकेतु आर्थिक आ सामाजिक समस्याकेँ सोझाँ रखै छथि, आ ओइ क्रममे कोनो तथ्यकेँ कोनो रूपेँ नुकबै नै छथि। साकेतानन्द बाढ़िक समस्याकेँ सोझाँ रखै छथि। हरिमोहन झा अपन शैलीमे अंग्रेजी साहित्यक धारकेँ बहबै छथि आ नायक द्वारा नायिकाकेँ देल पढ़ाइक सिलेबसमे सेहो ई तथ्य सोझाँ अनै छथि। चतुरानन मिश्र आ जगदीश प्रसाद मंडल कम्यूनिस्ट आन्दोलनसँ जुड़ल छथि, प्रायोगिक रूपमे, पार्टी स्तरपर, मुदा दुनू गोटेक उपन्यासमे, जइ रूपमे यात्री आ धूमकेतु मार्क्सवादक बैशाखी लऽ उपन्यासकेँ ठाढ़ करै छथि, मार्क्सवादक बैशाखी नै लै छथि। मार्क्सवादक असल अर्थ हिनके दुनूक रचनामे भेटत। कतौ पार्टीक नाम वा विचारधाराक चर्च नै मुदा जे असल *डायलेक्टिकल मैटेरियलिज्म* छै तकर पहिचान,

जिनगीक महत्वपर विश्वास, द्वन्द्वात्मक पद्धतिक प्रयोग आ ई तखने सम्भव हएत जखन लेखक दास कैपिटल सहित मार्क्सवादक गहन अध्ययन करत।

मैथिली उपन्यासक भविष्य : सभ जीवित भाषामे सभसँ बेसी रचना उपन्यासक होइ छै मुदा मैथिलीमे सभसँ कम उपन्यास लिखल जाइत अछि। जइ रूपमे अंग्रेजी शिक्षा आ साहित्यक अध्ययन कऽ मैथिली साहित्यमे आएल नव पीढ़ीक संख्या बढ़त, मैथिली साहित्य अपन सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक आ सांस्कृतिक अंतर्दृष्टिक विकास कऽ सकत। वीणा ठाकुरक *भारती*, आशा मिश्रक *उचाट* आ केदारनाथ चौधरीक *चमेली रानी, माहुर* आ *करार* हमर ऐ दृष्टिकोणक पुष्टि करैत अछि।

सिक्किम यात्रा (यात्रा वृत्तान्त)

सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि: राधाकृष्ण चौधरीजीक पोथीक डिजाइनमे हम जखन सिद्ध सरहपादक फोटो देलौं तँ ओकर नीचाँमे लिखल तिब्बती लिपि, जे चीनी लिपिसँ एकदम्मे फराक अछि आ सिक्किमक लेपचा आ लिम्बू (सुब्बाभाषा) सँ लग, दिस अनायास ध्यान आकृष्ट भेल। सिक्किमक राजा चोग्याल बौद्ध छला, ओ सभ आ हुनकर वंशज सभ सिक्किमी कहल जाइ छथि, जेना डेम्जोंगपा, ओ सभ भुटिया भाषा बजै छथि, मुदा जखन भूटान तिब्बत आदिसँ राजा लग भुटिया भाषी सभ एला तँ दुनूमे अन्तर देखाबए लेल

शब्द विचार

देवनागरीक अतिरिक्त समस्त उत्तर-भारतीय भाषा नेपाल आ दक्षिणमे (तमिलकेँ छोड़ि) सभ भाषा वर्णमालाक रूपमे स्वर आ *क च ट त प* आ *य, र, ल, व, श, स, ह* केर वर्णमालाक उपयोग करैत अछि। *ग्वाङ* हेतु संस्कृतमे दोसर वर्ण छै (छान्दोग्य एकर उच्चारण नै करै छथि मुदा वाजसनेयी खूब करै छथि- जेना छान्दोग्य कहता *सभूमि* तँ वाजसनेयी कहता *सभूमीग्वंङ*),ई ह्रस्व दीर्घ दुनू होइत अछि। सिद्धिरस्तु लेल सेहो कमसँ कम छह प्रकारक वर्ण मिथिलाक्षरमे प्रयुक्त होइत अछि। वैदिक संस्कृतमे उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित (क्रमशः क॑ क॒ के) क उपयोग तँ मराठीमे ळ आ अर्द्ध ऱ् केर सेहो प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे ऽ (बिकारी, जफला वा अवग्रह) केर प्रयोग संस्कृत जकाँ होइत अछि आ आइ काल्हि एकर बदलामे टाइपक सुविधानुसारे द’ (दऽ केर बदलामे) एहन प्रयोग सेहो होइत अछि मुदा ई प्रयोग ओइ फॉँटमे एकटा तकनीकी न्यूनताक परिचायक अछि। मुदा आकार केर बाद बिकारीक आवश्यकता नै अछि।

जेना फारसीमे *अलिफ बे से* आ रोमनमे *ए बी सी* होइत अछि तहिना मोटा-मोटी सभ भारतीय भाषामे लिपि भिन्नताक अछैत वर्णमालाक स्वरूप एके रङ अछि।

वर्णमालामे दू प्रकारक वर्ण अछि- स्वर आ व्यंजन। वर्णक संख्या अछि ६४ जइमे २२ टा स्वर आ ४२ टा व्यञ्जन अछि।

पहिने स्वरक वर्णन दै छी- जइ वर्णक उच्चारणमे दोसर वर्णक उच्चारणक अपेक्षा नै रहैत अछि, से भेल स्वर।

स्वरक तीन टा भेद अछि- ह्रस्व, दीर्घ आ प्लुत। जइमे बाजैमे एक मात्राक समए लागए से भेल ह्रस्व, जइमे दू मात्राक समए लागल से भेल दीर्घ आ जइमे तीन मात्राक समए लागल से भेल प्लुत।

मूलभूत स्वर अछि- अ इ उ ऋ लृ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा समानाक्षर कहै छला।

दीर्घ मिश्र स्वर अछि- ए ऐ ओ औ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा सन्ध्यक्षर कहै छला।

लृ दीर्घ नै होइत अछि आ सन्ध्यक्षर ह्रस्व नै होइत अछि।

अ इ उ ऋ ऐ सभक ह्रस्व, दीर्घ (आ ई ऊ ॠ) आ प्लुत (आ३ ई३ ऊ३ ॠ३) सभ मिला कऽ १२ वर्ण भेल। लृ केर ह्रस्व आ प्लुत दू भेद अछि (लॄ३) तँ २ टा ई भेल। ए ऐ ओ औ ई चारू दीर्घ मिश्रित स्वर अछि आ ऐ चारूक प्लुत रूप सेहो (ए३ ऐ३ ओ३ औ३) होइत अछि, तँ ८ टा ई सेहो भेल। भऽ गेल सभटा मिला कऽ २२ टा स्वर।

ऐ सभटा २२ स्वरक वैदिक रूप तीन तरहक होइत अछि, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।

ऊँच भाग जेना तालुसँ उत्पन्न अकारादि वर्ण उदात्त गुणक होइत अछि आ तँ उदात्त कहल जाइत अछि।

नीचाँ भागसँ उत्पन्न स्वर अनुदात्त आ जइ अकारादि स्वरक प्रथम

भागक उच्चारण उदात्त आ दोसर भागक उच्चारण अनुदात्त रूपेँ होइत अछि से भेल स्वरित।

स्वरक दू प्रकार आर अछि, सानुनासिक जेना *अँ* आ निरनुनासिक जेना *अ*।

दत्तेन निर्वृत्तः कूपो दात्तः। दत्त नाम्ना पुरुष द्वारा विपाट्- ब्यास धारक उतरबरिया तट पर बनबाएल, एतऽ इनार भेल दात्त। अञ प्रत्यान्त भेलासँ *दात्त* आद्युदात्त भेल, अण् प्रत्यायान्त होइत तँ प्रत्यय स्वरसँ अन्तोदात्त होइत। रूपमे भेद नै भेलो पर स्वरमे भेद अछि। ऐ सँ सिद्ध भेल जे सामान्य कृषक वर्ग सेहो शब्दक सस्वर उच्चारण करै छला।

स्वरितकेँ दोसरो रूपमे बुझि सकै छी- जेना ऐमे अन्तिम स्वरक तीव्रस्वरमे पुनरुच्चारण होइत अछि।

आब व्यञ्जन पर आउ।

व्यञ्जन ४२ टा अछि।

क् ख् ग् घ् ङ्

च् छ् ज् झ् ञ्

ट् ठ् ड् ढ् ण्

त् थ् द् ध् न्

प् फ् ब् भ् म्

य् र् ल् व्

श् ष् स्

ह्

य् व् ल् सानुनासिक सेहो होइत अछि, यँ वँ लँ आ निरुनासिक सेहो।

एकर अतिरिक्त दू टा आर व्यञ्जन अछि- अनुस्वार आ विसर्जनीय

वा विसर्ग।
ई दुनूटा स्वरक अनन्तर प्रयुक्त होइत अछि।
विसर्जनीय मूल वर्ण नै अछि, वरन् स् वा र् केर विकार थीक।
विसर्जनीय किछु ध्वनि भेद आ किछु रूप भेदसँ दू प्रकारक अछि- जिह्वामूलीय आ उपध्मानीय। जिह्वामूलीय मात्र क आ ख सँ पूर्व प्रयुक्त होइत अछि, दोसर मात्र प आ फ सँ पूर्व।
अनुस्वार, विसर्जनीय, जिह्वामूलीय आ उपध्मानीयकँ अयोगवाह कहल जाइत अछि।
उपरोक्त वर्ण सभकँ छोड़ि ४ टा आर वर्ण अछि, जकरा यम कहल गेल अछि।
कुँ खुँ गुँ घुँ (यथा- पलिक् क्नी, चख ख्नुतः, अग् ग्निः, घ् घ्नन्ति) पञ्चम वर्ण आगाँ रहलापर पूर्व वर्ण सदृश जे वर्ण बीचमे उच्चारित होइत अछि से यम भेल।
यम सेहो अयोगवाह होइत अछि।
अ आ कवर्ग ह (असंयुक्त) आ विसर्जनीय केर उच्चारण कण्ठमे होइत अछि।
इ ई चवर्ग य श केर उच्चारण तालुमे होइत अछि।
ऋ ॠ टवर्ग र ष केर उच्चारण मूर्धामे होइत अछि।
लृ तवर्ग ल स केर उच्चारण दाँतसँ होइत अछि।
उ ऊ पवर्ग आ उपध्मानीय केर उच्चारण ओष्ठसँ होइत अछि।
व केर उच्चारण उपरका दाँतसँ अधर ओष्ठ केर सहायतासँ होइत अछि।
ए ऐ केर उच्चारण कण्ठ आ तालुसँ होइत अछि।
ओ औ केर उच्चारण कण्ठ आ ओष्ठसँ होइत अछि।
य र ल व अन्य व्यञ्जन जेकाँ उच्चारणमे जिह्वाक अग्रादि भाग ताल्वादि स्थानकँ पूर्णतया स्पर्श नै करैत अछि। श् ष् स् ह् जकाँ

ऐमे तालु आदि स्थानसँ घर्षण सेहो नै होइत अछि।
क सँ म धरि स्पर्श (वा स्फोटक कारण जिह्वाक अग्र द्वारा वायु प्रवाह रोकि कऽ छोड़ल जाइत अछि) वर्ण र सँ व अन्तःस्थ आ ष सँ ह घर्षक वर्ण भेल।
सभ वर्गक पाँचम वर्ण अनुनासिक कहबैत अछि कारण आन स्थान समान रहितो एकर सभक नासिकामे सेहो उच्चारण होइत अछि- उच्चारणमे वायु नासिका आ मुँह बाटे बहार।
अनुस्वार आ यम केर उच्चारण मात्र नासिकामे होइत अछि- आ ई सभ नासिक्य कहबैत अछि- कारण ऐ सभमे मुखद्वार बन्द रहैत अछि आ नासिकासँ वायु बहार होइत अछि। अनुस्वारक स्थान पर न् वा म् केर उच्चारण नै हेबाक चाही।
जखन हमरा सभकेँ गप करबाक इच्छा होइत अछि, तखन संकल्पसँ जठराग्नि प्रेरित होइत अछि। नाभि लगक वायु, वेगसँ उठैत मूर्धा धरि पहुँचि, जिह्वाक अग्रादि भाग द्वारा निरोध भेलाक अनन्तर मुखक तालु आदि भागसँ घर्षित होइत अछि आ तखन वर्णक उत्पत्ति होइत अछि। कम्पन भेलासँ वायु नादवान आ यएह गुंजित होइत पहुँचैत अछि मुँहमे, आ ओकरा कहल जाइत अछि घोषवान, नादरहित भऽ पहुँचैत अछि श्वासमे आ ओकरा कहल जाइत अछि अघोषवान्।
श्वास प्रकृतिक वर्ण भेल ‘‘अघोष” , आ नाद प्रकृतिक भेल ‘‘घोषवान्” । जइ वर्णक उत्पत्तिमे प्राणवायुक अल्पता होइत अछि से अछि ‘‘अल्पप्राण” आ जकर उत्पत्तिमे प्राणवायुक बहुलता होइत अछि, से भेल ‘‘महाप्राण” ।
कचटतप केर पहिल, तेसर आ पाँचम वर्ण भेल अल्पप्राण आ दोसर आ चारिम वर्ण भेल महाप्राण। संगे कचटतप केर पहिल आ दोसर

भेल अघोष आ तेसर, चारिम आ पाँचम भेल घोषवान्। य र ल व भेल अल्पप्राण घोष। श ष स भेल महाप्राण अघोष आ ह भेल महाप्राण घोष। स्वर होइछ अल्पप्राण, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।

कम्प्यूटर आ मैथिली

गूगल ट्रांसलेटर टूलकिट आब सोर्स आ टार्गेट दुनू भाषाक रूपमे मैथिलीकें स्थान देलक . देखू
http://support.google.com/translate/toolkit/bin/answer.py?hl=en&answer=147837
आ
http://translate.google.com/toolkit/list?hl=en#translations/active

विदेहक विरोधक बाद गूगल बिहारी नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक गप मानि लेने अछि, "विकीपीडिया मैथिली "क स्थापना पहिनहिये विदेह

कैथी लिपि
वर्णमाला

अ — अ आ ई उ ए ऐ

क — क ख ग घ

च — च च छ ज झ झ

ट — ट ठ ठ ड ड़ ढ ढ़ ण ण

त — त थ द द ध थ

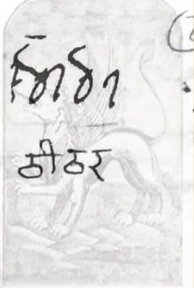
प — प फ ब ब भ भ म म म

य — य र ल व क्ष

त्र ह ह

कुनजन झा बौकु झा

खे ठीठर



गाँ आत्माराम

गाँ कृश्नदत

जा

जे

बे शाख

मूल नेश्वरीदत्त मीश्र शात

हे

ढ़ी ढ़ी हुँ शालेमकुर पाँजि

ति ते तारानाथ ठाकुर

श्याम नाथ श्री प्रीत नाथ दि

थी हीरवीकेश

प पा पै पु पो भैं मा मा

रां

मर्यादा ला लि गुंजँ पँक्ती लैं लें

पँद्रमखी ठाकुर

शु

स से सी सौं

श्री ठाकुरक बालक ठाकुरक बालक ह

③

कमलादत

शाल्य मीठो ग्रा कु कु मोटन

कै डेउढी झींगुर हीदए

लूचाई कल्यान रामदेव

रशाद परम

ब-व नीजुग्त (नियुक्त) रेआशन बन्देली मध्य

च्य न्त हूँ खु म्प जीवपती

रूद्रपतीआ नन्द जल्दी पीताम्ब्र (पीताम्बर) मुबशीह राए

श्रीजंमोहन डूयोमुआ ड्यो म्हाराजरुद्रशीहक बाबुरेमापतशींघ

अंछि मरा सतं (शतं) मोकाम सिंह तीशौंत

रघुबरेआकबालक कीशौरेआकबालकै दुर्गानाथ

रौधानाथआक दौहीत्र पतीआकबालकै कीद्यानाथआ

लछमीदंतआ श्रीभीखरेआकबालकै ग्राम रेआम = ग्रामे लोहना

महाराजेछत्रशीहक दौहीत्र धरमरमआक गोशाई ग्रामशबेशीमा

महेश्वरठाकुरकबालकै शौनठाकुरकबालकै श्रीशीसींदेन

(4)

1 [illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
5 [illegible]
6 [illegible]
7 [illegible]
8 [illegible]
9 [illegible]
10 [illegible]
11 [illegible]
12 [illegible]

१३३४ —
शाल —

1 शोइती शकल गुणागार मरजादाक प्रा-
2 बार श्री जुत श्री पंजीकार श्री मीरवीआ-
3 झा शर्मनों म्हाशऐरवु उतह - अजबलाल
4 श्य मिश्यकार शतंग - कुशलं चमुमए
5 म शतं आगा शुरती जे हम्र(र) कन्या फार
6 शा डागी दीशक नकर कपा श्री शामा -
7 नाथ झाक बालक शौ नीशचे मेल अध्य(अधि)
8 ताही शो अपने के लीखल अछ जे
9 अधीकार ताकी के शींधान्त लीखकें देबे-
10 न - हम खूद जेतो म्रा(म्गा आज V+१०।दीन
11 शे जइ भए रहल अछ ताही शो गाए नही
12 मेल - जादा - नाश्यका ता- १ माह जेठ

१३३४। —
शाल

[illegible]

1-. कन्याक परिचै

2- कन्या - उदेकान्त झाक - जैनगर - मुल शतलखे शतौल -
3 पौत्री - लाल झाक बीचाड़ी दौभीत्री पन्ची झाक - ऐह
4 हड़े, वोड़ा - शीमरबनी - दौभीत्री पौत्री जीआ -
5 लाल झाक - जागुर - बेमनगामा - पैनचोभे करमो -
6 ल (ब्रह्मोलि) - चीन्तामणि झा - अड़ेवारु उशरौली

[illegible]

श्री —

[illegible]

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]
10. [illegible]
11. [illegible]
12. [illegible]
13. [illegible]
14. [illegible]
15. [illegible]
16. [illegible]
17. [illegible]
18. [illegible]
19. [illegible]
20. [illegible]
21. [illegible]

[illegible]

7

श्री

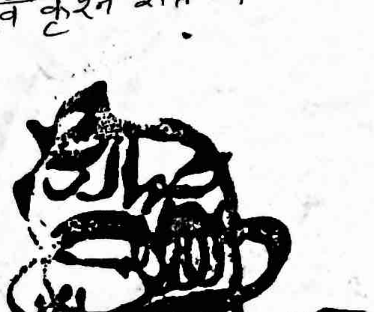
कोहबरा
तारीख : 3 माह माघ
शन ·1342 शाल
मुल्की

1 श्वश्ति - शकल - गुणागार - मस्ना -
2 दाक पाराबार - श्री - युक्त पंजीकार - जी शँ . इतः दुर्गा
3 नाथश्च . नमशकाराः शतम् = शतं - कुशलंच - एतेका -
4 कुशल नीक जानब - जाए - अपने लोकनीक - कुशलादि
5 दी - प्रतिपल - अपेक्षीत . - शमाचार - जे अपनेक वो
6 ए ठाम - कईएक दीन - आदमी - पठावल - मुदा अप
7 ने शं भेटनहीं - भेल - पता लागल - जे - अपने
8 शुलतानपुर - मे - छी - तै दुआरे कारीन्दा पठा-
9 वल - अछी - जे - कृपआ - अपने शामील करी-
10 दाक आबी . वा जदीचेत नही आबी तं इ
11 लीखल - जाए जे - बलदेव झाक कान्या में - हमर
12 अधीकार - हो की नहीं - आर - जदीचेत हो - ते -
13 वो - हमरा - शँ - कतबा पाबी शके = छथी
14 बीशेशतः - ते - अपने - अवश्य आबी - शमए
15 नहीं - अछी - माघेक - शुध्यमे हमरा शुध कर
16 तव्य - अछी - वो - हमरा शं मोवलग - 200)
17 मांगै - छथी = हम अपनेक आशा पर -
18 नीरभर - छी - शब हालत - अपने खोला
19 शा - लीखी, - कार्ज - जरुरी - अछी - आर -
20 बीशेश की लीखू = कुशलादी लीखी शुखी
21 कैल जाए _ शमए थोड़ रहल छै -

दुर्गानाथ

(4)

स्वस्ति। शकल गुणाँगार मर्यादाक शागर श्री गुन(धुत) पन्जीकार औरखीआँ ओँ काँ
नमशकार आँगाँ आँहाँकै पीता हरँरवीआँ पन्जीकार ग्राम रँ शाँढ़ बौशी-हँमर डेउँढ़ी
शाँधुऔली बौ-डेउढ़ी औ दुआ नगर ? रामनगर औ डेउढ़ी चम्पा नगर राज रे आशत
बन्देतली गर्तेर मध्य - बराबरि रहि कार्य अपन अधिकार मालों औ शीघ्रान्त कर ढलाहि
आब अहूँ बँसुबी पाँति पढ़ि कार्य पन्जीकारक मध्य मीजुगुत मेलहूँ नैय आँहाँकें
परती(प्रति) रत पत्र लीरवी दैल जाइ अछि जे आँहाँ बराबरि बदरतुर शाँबीकैं जेकी आँहाँक
पीता कार्य शीधुयान्त्र कँ मेरह ढलाह अहूँ बराबरि बदरतुर शाँबीक केलँ आब और
जे अहाँक पीता शँरकारँ शाँ मेटँ ढलैन्ह शे मोताबीक अहूँ के बराबरि मेरलकरत
नै ? ताँरेम पत्र बतैरवेका शनद देलि जाइ अछि इ ती - बैशा रवँ कृश्न शप्त मी रबि
मोताबीक तारी रव १८ बैशाँ रवैं १३१८ शाल मुल्की



(43)

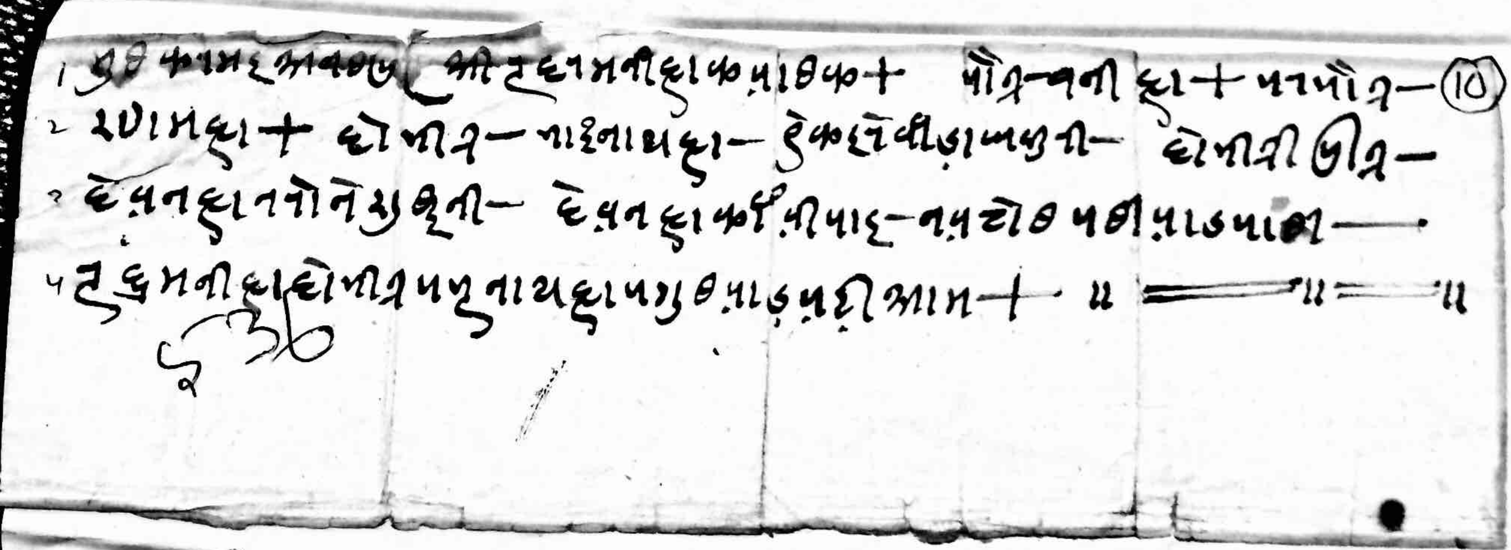


श्री राजा पद्मानन्द सिंह
बहादुर

स्वस्ति (स्वस्ति) शकल (सकल) गुणागारेखु (षु) श्री जुत (युत) मीरवीआ मा महाशएखु (षु)
श्री मन मोहनक नमस्कार आगाँ हशखहश्त हो आ अहाँक महेश मा
श्री श्री शरकार में इतलाऐ देलथीन- शरकार शौं हुकुम मेल जे शबहा (सभा)
वास्तु-करथी -शबहा वास्तु-क- जे -अहाँके- रुपैआ भेटे अछ शो तहबील मे-रुपैआ

औछ शौं पठाऐ देल जाऐत- वो शरकार हुकुम देलैन जे शुन्दर वावुक- अधीकार
माला शबाहा शौं पुर्व तैयार के हाजील करथी तं रेशवुल हुकुम श्री श्री
शरकार लीखल अछ जे-शबहा शौ पूर्व - अधीकार माला तैआर के ऐकदीनक

वो-आश्ते (वास्ते) अहाँ खुद आबी के हाजील कै दीऔन्ह- शे नीक जं का जवाव
लीखब शरकार मे इतलाऐ दीऔन्ह. इ॰ ता॰ २२ पु॰ १८११ ई॰



१ मुल करमहे अनलपुर श्री रुदरमनी झाक बालक + पौत्र - चनी झा + परपौत्र
२ श्याम झा + दौभीत्र - भाइनाथ झा - ऐकहरे बोड़ा खतुरी - दौभीत्री पुत्र -
३ देवन झा नरौने शुल्हनी - देवन झाकाँ बीवाह - नबटोल पल्लीवाड़ पाली —
परुद्रमनी झा दौभीत्र पभूनाथ झा पगुलवाड़ बढ़ीआम + ॥ ═══ ॥ ═══ ॥

(11)

कन्याँ

बीर ठाकुर पाजी —
भीखारी झा पाजी —
रामदेव मीशर पाजी —
शुरगन(ण) पाजी =
मोती झा पाजी —
पीताम्ब्र(र) झा पाजी =
रुद्रपती झा पाजी =
हेमांगत राइ पाजी =

गुणाकर झा

(A)

(12)

[illegible] — 1

[illegible] — 2

[illegible] — 3

[illegible] — 4

[illegible] — 5

[illegible] — 6

[illegible] — 7

[illegible] 8

[illegible] — 9

[illegible] 10

[illegible] 11

[illegible] 12

[illegible] — 13

[illegible] — 14

[illegible] — 15

[illegible] — 16

[illegible] — 17

[illegible] — 18

1 [illegible] — 19

2 [illegible] — 20

3 [illegible] — 21

4 [illegible] — 22

[illegible] — 23

1 [illegible] — 24

2 [illegible] — 25

3 [illegible] — 26

4 [illegible] — 27

5 [illegible] — 28

6 [illegible] — 29

7 [illegible] — 30

8 [illegible] — 31

(मि) श्री दुर्गा माधव गणेशाः श्री राम जी शहाय - 1 **(13)**

श्री श्री श्री महाराज पदमा नंद शींह बाहादुरके कन्यावदन झाक दौमौत्रीक अधिकार माला - 2

ग्राम - बेहट — तीशौत - पाजी (पाँजि) - 3

गदापानी झाक बालक — परवीया झाक दौमीत्र = तीशौत पाजी - 4

जगतबन्धु झा-क बालक - बीद्यानाथ झाक दौहीत्र = मोलन झा - 5

गोपीनाथ झा क - बालक - गंगाधर झाक दौहीत्र : रोहाड़ - 6

लछूमन झा क बालक - शाधु ठाकुरक दौहीत्र = रुद्रपतीझा - 7

ग्राम बहूरी - 8

श्री प्रीतनाथ मिश्रक बालक - श्री श्रीरीनाथ झाक दौहीत्र :- शंकर राए — 9

(मानन्द मिश्रक बालक - श्री श्रीरीनाथ झाक दौहीत्र शंकर राए - पाजी - 10

ग्राम नवटोल - 11 — भुवन्धर मीश्रक दौहीत्र — रोहाड़ - 3 - 12

श्री पुरन्दर झाक बालक - — शंकर राए पाजी = 13

सी(की)शोर मीश्रक बालक - जोगानन्द झाक दौहीत्र — भीखारी झा पाजी = 14

बद्रीनाथ झाक बालक — जीवछी झाक दौहीत्र — मनजन झा पाजी = 15

पं गशी मीशरक बालक — हीदनाथ झाक दौहीत्र

श्री फुद्दे झाक बालक - भुवन्धर मीश्रक दौहीत्र — भुवनधु झा पाजी - 16

झींगुर मीश्रक बालक — बेनी झाक दौहीत्र — शीधँवाआड़ पाजी - 17

ग्राम भटपुरा - 18 — फलाही झाक दौहीत्र — रुद्रपती झा पाजी 19

आत्माराम झाक बालक - — जगदीश मीशर पाजी 20

श्री सत्यनाराएन मीशरक बालक - कुमदी झाक दौहीत्र

धनानन्द मीशाक बालक - तोताई झाक दौहीत्र - जीवनाथ झा पाजी - 21

कुनजी झाक बालक — कनटू झाक दौहीत्र — वीर ठाकुर पाजी 22

ग्राम भगवोली - 23

श्री जनार्दन झाक बालक . कनटू झाक दौहीत्र = वीर ठाकुर पाजी 24

श्री जादव झाक बालक — जुमन झा क दौहीत्र — भीखारी झा पाजी - 25

श्री खिगपैनी झाक बालक — वीशवनाथ झा क दौहीत्र = रामदेव मीशर - पाजी 26

श्री शुलपैनी झाक बालक — आत्माराम झाक दौहीत्र : शुरगन झा पाजी - 27

श्री हीरा झाक बालक — बौकु झाक दौहीत्र — मोती झा पाजी - 28

श्री कलाहर(ध)र झाक बालक — मीत्रनाथ झाक दौहीत्र — पीताम्बर झा पाजी - 29

श्री कुलाह-(ध)र झाक बालक - पुहपी झाक दौहीत्र — रुद्रपती झा पाजी - 30

श्री गदापानी झाक बालक — हीदएमन झाक दौहीत्र — हेमीगतर(द) राए पाजी 31

(15) (14)

[illegible] — 1

[illegible] = [illegible]	[illegible] =	2
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	3
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	4
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	5
[illegible] — [illegible]	[illegible]	

[illegible] = 6

[illegible] — [illegible]	[illegible] =	7
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	8
[illegible] — [illegible]	[illegible] =	9
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	10
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	11
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	12
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	13
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	14
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	15
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	16
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	17
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	18
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	19
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	20
[illegible] = [illegible]		

[illegible] = 21

[illegible] = [illegible]	[illegible] =	22
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	23
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	24
[illegible] = [illegible]	[illegible] =	25

[illegible] = — 26

[illegible] = [illegible]	[illegible] =	27
[illegible] — [illegible]	[illegible] =	28

(B)

ग्राम - चनौर - 1

(15)

श्री झलना झाक बालक = गोपाल मीशरक दौहीत्र - मंजन झा - पाँजी - 2

मुप शीर झाक बालक = ~~कुरुण~~ कृशनदत्त मीशरक दौहीत्र मंजन झा पाजी - 3

रूपनारायन रायक बालक शयाम नाथ ठाकुरक दौहीत्र शुरगन शाखा - 4

वेद नारायन रायक बालक श्री जा(या)र झाक दौहीत्र शुरगण(ड़) पाजी - 5

टूमनी झाक बालक धीरनाथ मीशरक दौहीत्र मंजन झा पाजी - (6)

ग्राम शरीशब = 6

अमृतकर झाक बालक = जैनारायण झाक दौहीत्र दशाघ मीशा पाँजी 7

अमृतका झाक बालक = मुलीया झाक दौहीत्र दशाघ मीशा पाजी 8

जीवधर मीशाक बालक = हरखमैनी मीशाक दौहीत्र - वीर ठाकुर = 9

देवधर मीशाक बालक = बाला मीश्रक दौहीत्र भीरवारी झा पाजी = 10

भुवनदा मीशाक बालक = महीनाथ मीश्रक दौहीत्र - भीरवारी झा पाजी = 11

धर्मनाथ झाक बालक = परशमैन झाक दौहीत्र रुद्रपती झा पाजी = 12

गुणा(ड़)पति झाक बालक = मनपति झाक दौहीत्र सेहाड़ पाजी = 13

मोदनाथ झाक बालक = भीरवीआ झाक दौहीत्र शंका राए पाजी = 14

झोटन झाक बालक = मीत्रनाथ झाक दौहीत्र वीर ठाकुर पाजी = 15

कल्यान का झाक बालक = जालपादत्त झाक दौहीत्र दशाघ मीशा पाजी = 16

श्री मनमोहन झाक बालक = महराजकुमार बाबु बासुदेव सींहक दौहीत्र रुद्रपती झा पाजी = 17

श्री नेना मीशाक बालक = पतवीआ झाक दौहीत्र वीर ठाकुर पाजी = 18

गोपीनाथ झाक बालक = लछमीदत्त झाक दौहीत्र भीरवारी झा पाजी = 19

कारी झाक बालक = गंगाधर झाक दौहीत्र शुबनधु झाक पाजी = 20

ग्राम पाहीटोल = 21

चन्द्रमणी ठाकुरक बालक = मतीनाथ झाक दौहीत्र गुणाकर झा पाजी - 22

हेमपति झाक बालक = ठेंगनी झाक दौहीत्र शंकर राए पाँजी - 23

श्री लूपाई मीशरक बालक = गोपाल झाक दौहीत्र सेहाड़ पाजी - 24

केशी लाल मीशरक = गोवीनद झाक दौहीत्र सेहाड़ पाजी - 25

ग्राम - 26

कमलादत झाक बालक = ~~धनानन्द झाक दौहीत्र रामदेव मीशा पाजी~~ =
गोविन्द झाक दौहीत्र शंका राए - पाजी 27

धरानाथ झाक बालक धनानन्द झाक दौहीत्र रामदेव मीशा - पाजी 28

ग्राम - ईशहपुर - 1

(C) (17)

रघुवंर झाक बालक = नाथनाथ झाक दौहित्र माधवझा पाजी 2

किशोर झाक बालक = हीरा मीशक दौहीत्र = पीताम्बर(२) - पाजी 3

नयन झाक बालक = बंगाली मीशक दौहीत्र - मनजन झा पाजी - 4

दामोदर झाक बालक = दामोदर झाक दौहित्र - हेमांगत राए - 5

~~मनमोहन झाक बालक~~ - 6

~~गोनी झाक बालक~~ = महाराज छत्र सिंह श्रींहक दौहित्र - रुद्रपती झा - 7

गनी झाक बालक भोलानंद मीशक दौहीत्र - मोती झा पाँजी - 8

प्रीत मोहन झाक बालक कुधीकर झाक दौहीत्र - माधव मीशर पाजी - 9

ग्राम - हटार(रु) - 10

गणपती झाक बालक = वीदयानाथ झाक दौहीत्र = भोलन झा पाजी - 11

धर्मानन्द झाक बालक = पारशमनी झाक दौहीत्र - रुद्रपती झा पाजी - 12

श्री कृश्न दत्त झाक बालक = बाबु श्री गणेश दत्त श्रींहक दौहीत्र = मोती झा पाजी - 13

ग्राम - रैआम - 14

श्री आदीनाथ झाक बालक = लोकनाथ मीशक दौहीत्र मोती झा पाजी - 15

खगन झाक बालक = भोलानाथ झाक दौहीत्र रुद्रपती झा पाजी - 16

तुलाई झाक बालक = लक्ष्मी दत्त झाक दौहीत्र - जीवनाथ झा पाजी - 17

ग्राम - लोहना - 18

धतानन्द झाक बालक = बाबु रमादत्त श्रींहक दौहीत्र - रामदेव मीशर पाजी - 19

श्री फेकु झाक बालक = महाराज रुद्र श्रींहक दौहीत्र शंकर राए पाजी - 20

भोलानन्द झाक बालक = मोहनलाल झाक दौहीत्र जीवनाथ झा पाजी - 21

श्री मनमान झाक बालक = भागपती झाक दौहीत्र शंकर राए पाँजी - 22

टीकानन्द झाक बालक = हीदयमन झाक दौहीत्र हेमांगत राए पाजी - 23

मनपती झाक बालक = गोबीनद झाक दौहीत्र रोहाड़ पाजी - 24

खगपती झाक बालक = भागमन झाक दौहीत्र रोहाड़ पाजी - 25

जोगपती झाक बालक = परवीजा झाक दौहीत्र रोहाड़ 26

बबुजन झाक बालक = भागीथ झाक दौहीत्र दशरथ मीश्र - 27

बबुजन झाक बालक = बाबु प्रजापत श्रींह दौहीत्र शुरगण पाजी - 28

लोकानंद झाक बालक = मनमान झाक दौहीत्र शुरगण पाजी - 29

(17) (18)

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

16

- सोनपुर

17

18

19

- 20

21

22

(D) (19)

ग्राम - खोलगंज -1

दुर्गानाथ मिश्रक बालक = दुखीआ झाक दौहीत्र - पाञी जीवनाथ झा -2

~~पाञी जीवनाथ झा -2~~

श्रीनाथ मीश्रक बालक = दुखीआ झाक दौहीत्र पाञी - जीवनाथ झा -3

रघुवीर मीश्रक बालक = लोकनाथ मीश्रक दौहीत्र पाञी - मोती झा -4

ग्राम - उजान शारदापुर - 5

श्री भैबी (वौ) झाक बालक - ध्वकन झाक दौहीत्र पाञी - भोलन झा -6

ग्राम - उजान -7

उमापती झाक बालक - हरखी ठाकुर दौहीत्र पाञी भीवानी झा -8

भवानंद झाक बालक = जीवपती झाक दौहीत्र पाञी भीवानी झा -9

बीकन झाक बालक = अभये मीश्रक दौहीत्र - पाञी मोती झा -10

बर्म्म झाक बालक = बधान झाक दौहीत्र पाञी भीवानी झा - 11

लक्ष्मीदत्त झा क बालक = परवीआ झाक दौहीत्र - पाञी भीवानी झा 12

रजनीदत्त झा के बालक जीधर मीश्रक दौहीत्र - पाञी भीवानी झा -13

श्री दामोदर झा क बालक - गोशाँइ मीश्रक दौहीत्र - पाञी - भीवानी झा -14

श्री दामोदर झा क बालक - श्री बाबु गणेशदत्त शींहक दौहीत्र पाञी मोती झा -15

श्री बबै झा के बालक कारी मीश्रक दौहीत्र - पाञी रुद्रपती झा -16

शौनपुर O

श्री तारानाथ ठाकुर बालक - गदापाणी झाक दौहीत्र भीवानी झा पाञी - उजान - धर्मपुर -17

श्री रघुनाथ झाक बालक बाबु श्री डोलपती शींहक दौहीत्र - पाञी खोखो पाठक -18

श्री भीखा झा के बालक कीशो झाक दौहीत्र - पाञी शुकन्धु झा -19

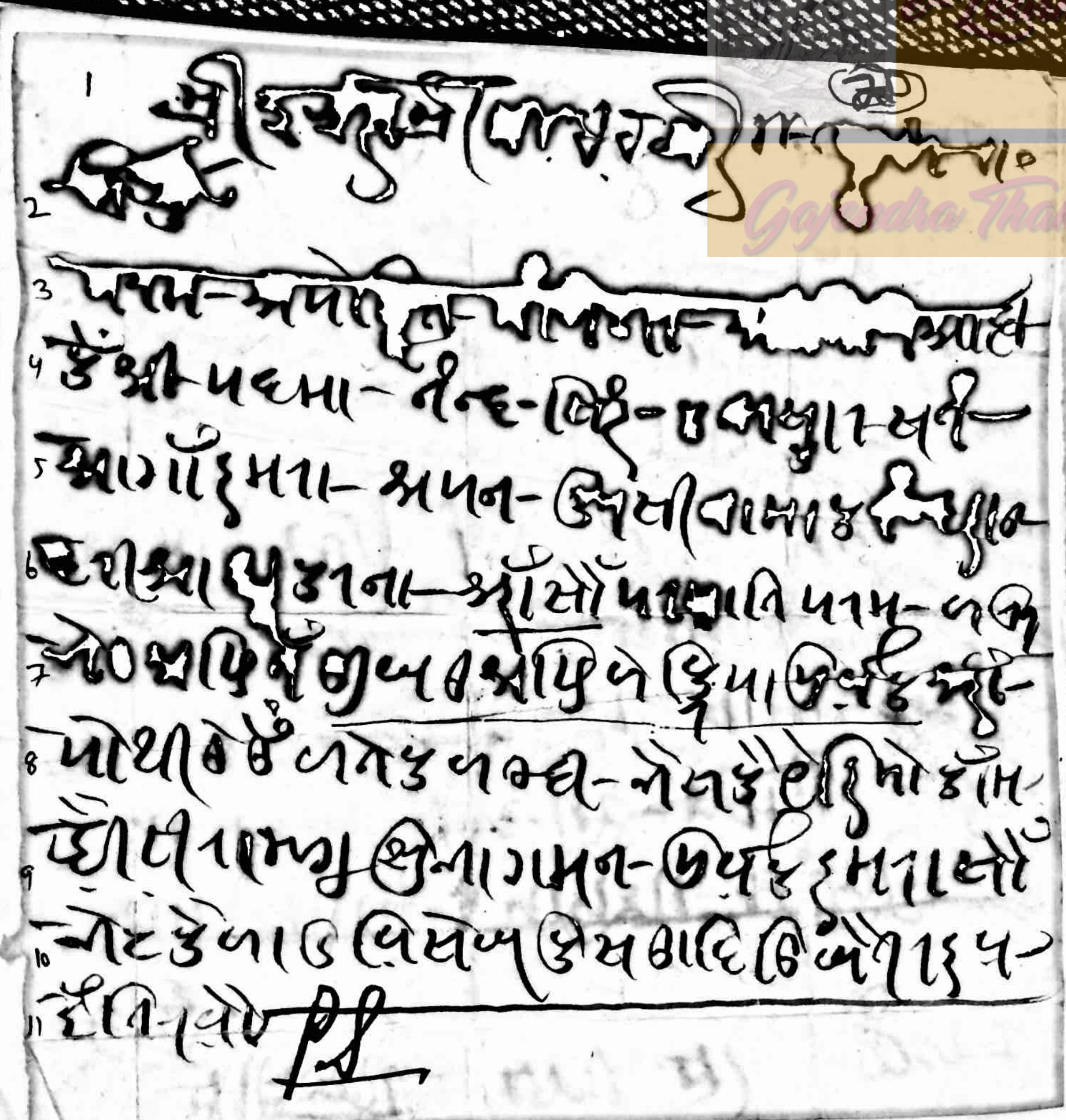
ग्राम - शर्वशीमा बो शौनपुर - 20

शोभ ठाकुर क बालक - बनी झाक दौहीत्र नीशोत्र - पाञी -21

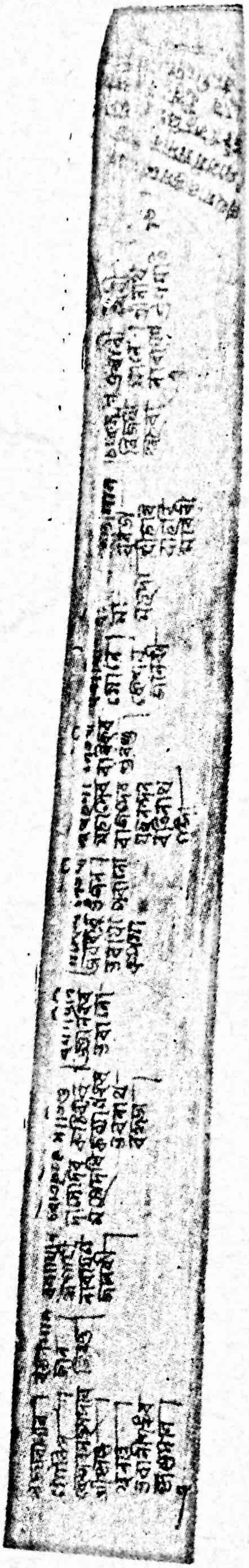
महेश्वर ठाकुर के बालक श्यामु झाक दौहीत्र भीवानी झा पाञी -22

श्री रघुनन्दन ठाकुर बालक - हृषीकेश ठाकुर के दौहीत्र - भीवानी झा पाञी -23

श्री शशीनन्दन ठाकुर बालक = लोकनाथ मीश्रक दौहीत्र - पाञी मोती झा -24

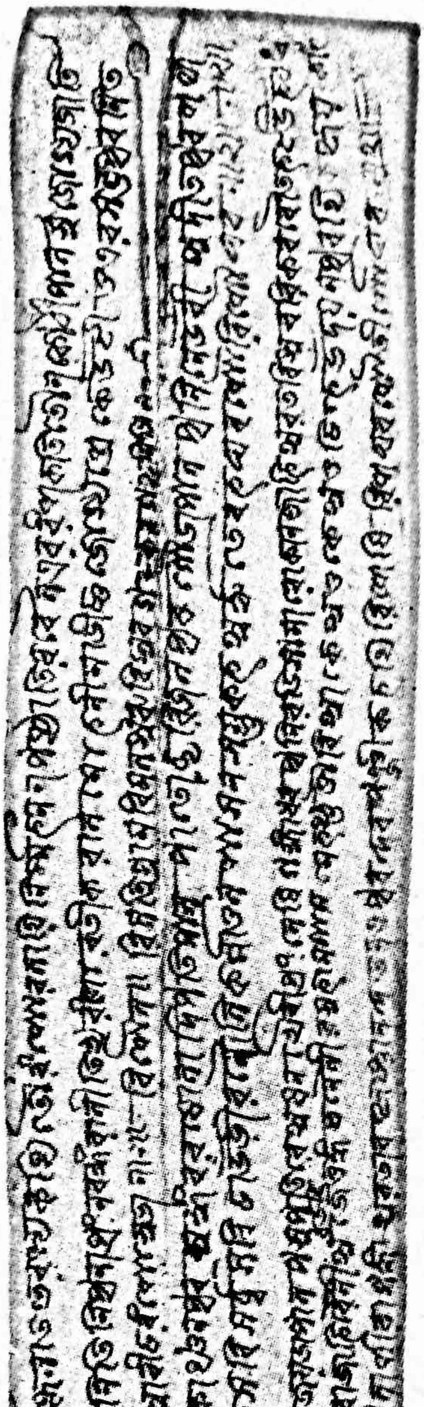


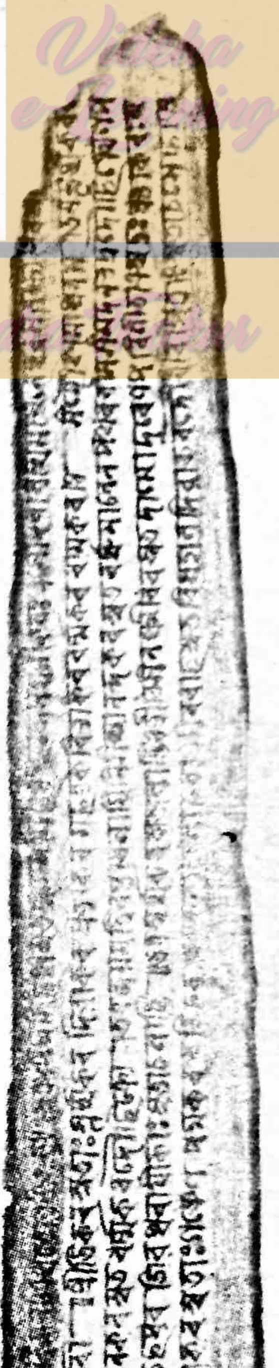
1 श्री दुर्गा श्री मार्कण्ड श्री गणेशा: पान्तु ॥
3 परम अपेक्षित
4 कें श्री पदमा नन्द सिंह -क नमस्कार सतं
5 आगाँ हमरा - अपन - कुरसीनामाक
6 अहाँ सौं
7 [illegible] अधिक जे कृपा पूर्वक अहाँ
8 पोथी लेलें जतेक नुदो · मैं सुके रहि मोकाम
9 ड्योढ़ी रामनग्र(?) सुभागमन - पूर्वक हमरा सौं
10 भेंट कै जाउ बिसेख कुसलादि लिखैत रहब ·
11 इति रबौ





चित्र सं०–२





Learn Mithilakshara



Learn Mithilakshara



GAJENDRA THAKUR

श्रुति प्रकाशन

दिल्ली



Ist edition 2009 of **Learn Mithilakshara**

author Gajendra Thakur

published by SHRUTI PUBLICATION
21/8, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi-110008
Tel.: (011) 25889656-58 Fax: 011-25889657

ISBN : 978-93-80538-55-6

Price: Rs. 5/- (INR)

SHRUTI PUBLICATION
Website: http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Designed by: Prity Thakur

Printed & Typeset at: Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor :
M/S AJAY ARTS
4393/4-A, Ist Floor, Ansari Road,
Darya Ganj, New Delhi-110002
(O) 011-23288341, 9968170107



Mithilakshara

The following alphabets exist in MithilakShara (devanagari followed by MithilakShara)

Vowels

Devanagari	MithilakShara
अ	অ
आ	আ
इ	ই
ई	ঈ
उ	উ
ऊ	ঊ
ए	এ
ऐ	ঐ
ओ	ও
औ	ঔ
अं	অং
अः	অঃ
अँ	অঁ
ऋ	ঋ
ॐ	ওঁ
Consonants	
क	ক

ख	খ
ग	গ
घ	ঘ
ङ	ঙ
च	চ
छ	ছ
ज	জ
झ	ঝ
ञ	ঞ
ट	ট
ठ	ঠ
ड	ড
ढ	ঢ
ण	ণ
त	ত
थ	থ
द	দ
ध	ধ
न	ন
प	প
फ	ফ
ब	ব
भ	ভ

म	𑒧
य	𑒨
र	𑒩
ल	𑒪
व	𑒫
श	𑒬
ष	𑒭
स	𑒮
ह	𑒯
क्ष	𑒏𑓂𑒭
त्र	𑒞𑓂𑒩
ज्ञ	𑒖𑓂𑒘

Nukta Consonants

य़	**𑒨𑓃**
ड़	𑒙𑓃
ढ़	𑒛𑓃

Consonants with Matra

क	𑒏
का	𑒏𑒰

कि	কি
की	কী
कु	কু
कू	কূ
के	কে
कै	কৈ
को	কো
कौ	কৌ
कं	কং
कः	কঃ
कँ	কঁ
कॉ	ক◌ॉ
कॅ	ক◌ॅ
कृ	কৃ
क्र	ক্র

SOME COMPLEX ALPHABETS in MithilakShara

Devanagari	Mithilakshara
क्त्य	ক্ত্য
क्त्र	ক্ত্র
त्क	ত্ক
न्य	ন্য
ल्व	ল্ব

श्च	শ্চ
क्र	ক্র
श्र	শ্র
प्र	প্র
ल्व	ল্ব
र्क	র্ক
त्	ত্
त्य	ত্য
त्त्य	ত্ত্য
ङ्क्य	ঙ্ক্য
त्त्व	ত্ত্ব
सु	সু
यु	যু
र्ग	র্গ
र्क	র্ক
ष्ट	ষ্ট
मु	ম্ব (ক্ম)
हु	হ্ম (হু)
खु	খু
घु	ঘু
चु	চু
छु	ছু
टु	টু

ठु	𑒙𑒳
थु	𑒟𑒳
बु	𑒥𑒳
भु	𑒦𑒳
गु	𑒑𑒳
जु	𑒖𑒳
दु	𑒠𑒳
नु	𑒢𑒳
पु	𑒣𑒳
भु	𑒦𑒳
यु	𑒨𑒳
लु	𑒪𑒳
शु	𑒬𑒳
सु	𑒮𑒳
कु	𑒏𑒳
णु	𑒝𑒳
तु	𑒞𑒳
धु	𑒡𑒳
रु	𑒩𑒳
षु	𑒭𑒳
हु	𑒯𑒳 (𑒯𑓂)
त्रु	𑒞𑓂𑒩𑒳
कृ	𑒏𑒵

चू	𑒔𑒴
जू	𑒖𑒴
दू	𑒠𑒴
तू	𑒞𑒴
धू	𑒡𑒴
भू	𑒦𑒴
हू	𑒯𑒴
खृ	𑒐𑒵
गृ	𑒑𑒵
जृ	𑒖𑒵
पृ	𑒣𑒵
सृ	𑒮𑒵
कृ	𑒏𑒵
तृ	𑒞𑒵
दृ	𑒠𑒵
बृ	𑒥𑒵
भृ	𑒦𑒵
हृ	𑒯𑒵
र	𑒩
र	**ৰ**
ब	𑒥
य	𑒨
य़	**য়**

क्क	𑒏𑓂𑒏
क्ख	𑒏𑓂𑒐
क्त	𑒏𑓂𑒞
क्न	𑒏𑓂𑒢
क्म	𑒏𑓂𑒧
क्य	𑒏𑓂𑒨
क्र	𑒏𑓂𑒩
क्ल	𑒏𑓂𑒪
क्व	𑒏𑓂𑒫
क्स	𑒏𑓂𑒮
ख्त	𑒐𑓂𑒞
ख्य	𑒐𑓂𑒨
ख्र	𑒐𑓂𑒩
ख्व	𑒐𑓂𑒫
ग्ग	𑒑𑓂𑒑
ग्द	𑒑𑓂𑒠
ग्ध	𑒑𑓂𑒡
ग्न	𑒑𑓂𑒢
ग्व	𑒑𑓂𑒫
ग्र	𑒑𑓂𑒩
ग्ल	𑒑𑓂𑒪
ग्य	𑒑𑓂𑒨
घ्घ	𑒒𑓂𑒒

घ्न	𑒒𑓂𑒢
घ्र	𑒒𑓂𑒩
घ्य	𑒒𑓂𑒨
ङ्क	𑒓𑓂𑒏
ङ्ख	𑒓𑓂𑒐
ङ्ग	𑒓𑓂𑒑
ङ्घ	𑒓𑓂𑒒
च्च	𑒔𑓂𑒔
च्छ	𑒔𑓂𑒕
च्य	𑒔𑓂𑒨
च्छ्र	𑒔𑓂𑒕𑓂𑒩
च्छृ	𑒔𑓂𑒕𑒵
च्छ्व	𑒔𑓂𑒕𑓂𑒫
ज्ज	𑒖𑓂𑒖
ज्झ	𑒖𑓂𑒗
ज्र	𑒖𑓂𑒩
ज्य	𑒖𑓂𑒨
ज्व	𑒖𑓂𑒫
ञ्च	𑒘𑓂𑒔
ञ्छ	𑒘𑓂𑒕
ञ्ज	𑒘𑓂𑒖
ञ्झ	𑒘𑓂𑒗
ट्ट	𑒙𑓂𑒙

ट्य	𑒙𑓂𑒨
ट्र	𑒙𑓂𑒩
ठ्ठ	𑒚𑓂𑒚
ठ्य	𑒚𑓂𑒨
ड्ग	𑒛𑓂𑒑
ड्ड	𑒛𑓂𑒛
ड्र	𑒛𑓂𑒩
ढ्य	𑒜𑓂𑒨
ण्ट	𑒝𑓂𑒙
ण्ठ	𑒝𑓂𑒚
ण्ड	𑒝𑓂𑒛
ण्ण	𑒝𑓂𑒝
ण्य	𑒝𑓂𑒨
ण्व	𑒝𑓂𑒫
त्क	𑒞𑓂𑒏
त्ख	𑒞𑓂𑒐
त्न	𑒞𑓂𑒢
त्प	𑒞𑓂𑒣
त्म	𑒞𑓂𑒧
त्स	𑒞𑓂𑒮
त्त	𑒞𑓂𑒞
त्य	𑒞𑓂𑒨
त्र	𑒞𑓂𑒩

त्व	𑒞𑓂𑒫
थ्र	𑒟𑓂𑒩
थ्य	𑒟𑓂𑒨
थ्व	𑒟𑓂𑒫
द्ग	𑒠𑓂𑒑
द्द	𑒠𑓂𑒠
द्ध	𑒠𑓂𑒡
द्भ	𑒠𑓂𑒦
द्म	𑒠𑓂𑒧
द्य	𑒠𑓂𑒨
द्र	𑒠𑓂𑒩
द्व	𑒠𑓂𑒫
ध्य	𑒡𑓂𑒨
ध्र	𑒡𑓂𑒩
ध्व	𑒡𑓂𑒫
न्त	𑒢𑓂𑒞
न्द	𑒢𑓂𑒠
न्ध	𑒢𑓂𑒡
न्न	𑒢𑓂𑒢
न्य	𑒢𑓂𑒨
न्व	𑒢𑓂𑒫
प्त	𑒣𑓂𑒞
प्न	𑒣𑓂𑒢

प्प	𑒣𑓂𑒣
प्य	𑒣𑓂𑒨
प्र	𑒣𑓂𑒩
प्ल	𑒣𑓂𑒪
प्व	𑒣𑓂𑒫
प्स	𑒣𑓂𑒮
फ्र	𑒤𑓂𑒩
फ्ल	𑒤𑓂𑒪
ब्ज	𑒥𑓂𑒖
ब्द	𑒥𑓂𑒠
ब्ध	𑒥𑓂𑒡
ब्य	𑒥𑓂𑒨
ब्र	𑒥𑓂𑒩
भ्य	𑒦𑓂𑒨
भ्र	𑒦𑓂𑒩
भ्व	𑒦𑓂𑒫
म्न	𑒧𑓂𑒢
म्प	𑒧𑓂𑒣
म्फ	𑒧𑓂𑒤
म्ब	𑒧𑓂𑒥
म्भ	𑒧𑓂𑒦
म्म	𑒧𑓂𑒧
म्य	𑒧𑓂𑒨

म्र	𑒧𑓂𑒩
म्ल	𑒧𑓂𑒪
म्व	𑒧𑓂𑒫
य्य	𑒨𑓂𑒨
य्व	𑒨𑓂𑒫
र्क	𑒩𑓂𑒏
र्ग	𑒩𑓂𑒑
ल्य	𑒪𑓂𑒨
ल्व	𑒪𑓂𑒫
ल्क	𑒪𑓂𑒏
ल्प	𑒪𑓂𑒣
व्य	𑒫𑓂𑒨
व्र	𑒫𑓂𑒩
व्व	𑒫𑓂𑒫
व्ल	𑒫𑓂𑒪
श्च	𑒬𑓂𑒔
श्छ	𑒬𑓂𑒕
श्न	𑒬𑓂𑒢
श्म	𑒬𑓂𑒧
श्य	𑒬𑓂𑒨
श्र	𑒬𑓂𑒩
श्ल	𑒬𑓂𑒪
श्व	𑒬𑓂𑒫

श्श	𑒬𑓂𑒬
ष्क	𑒭𑓂𑒏
ष्ट	𑒭𑓂𑒙
ष्ठ	𑒭𑓂𑒚
ष्ण	𑒭𑓂𑒝
ष्प	𑒭𑓂𑒣
ष्म	𑒭𑓂𑒧
ष्य	𑒭𑓂𑒨
ष्व	𑒭𑓂𑒫
स्क	𑒮𑓂𑒏
स्ख	𑒮𑓂𑒐
स्त	𑒮𑓂𑒞
स्थ	𑒮𑓂𑒟
स्य	𑒮𑓂𑒨
स्ल	𑒮𑓂𑒪
ह्न	𑒯𑓂𑒢
ह्म	𑒯𑓂𑒧
ह्य	𑒯𑓂𑒨
हृ	𑒯𑒵
ह्ल	𑒯𑓂𑒪
ह्व	𑒯𑓂𑒫
क्त्य	𑒏𑓂𑒞𑓂𑒨
क्त्र	𑒏𑓂𑒞𑓂𑒩

त्क	ত্ক
त्र्य	ত্র্য
त्क्र	ত্ক্র
ङ्क्र	ঙ্ক্র
ङ्क्त्र	ঙ্ক্ত্র
ङ्त्र	ঙ্ত্র
ङ्क्य	ঙ্ক্য
ङ्ख्य	ঙ্খ্য
ङ्ग्य	ঙ্গ্য
ङ्ग्र	ঙ্গ্র
ङ्घ्र	ঙ্ঘ্র
ङ्घ्य	ঙ্ঘ্য
च्छ्य	চ্ছ্য
च्छ्र	চ্ছ্র
च्छ्व	চ্ছ্ব
ण्ड्र	ণ্ড্র
ण्ड्य	ণ্ড্য
ण्ड्व	ণ্ড্ব
त्म्य	ত্ম্য
त्र्य	ত্র্য
त्त्य	ত্ত্য
द्ध्य	দ্ধ্য
द्ध्र	দ্ধ্র

द्भ्य	দ্ভ্য
द्भ	দ্ভ্র
न्त्र	ন্ত্র
न्त्य	ন্ত্য
न्त्व	ন্ত্ব
न्द्य	ন্দ্য
न्ध्य	ন্ধ্য
ब्ध्य	ব্ধ্য
ब्ध्व	ব্ধ্ব
म्भ्य	ম্ভ্য
त्र्य	ত্র্য
स्त्य	স্ত্য
त्स्य	ৎস্য
स्त्र	স্ত্র
त्स्न	ৎস্ন
स्थ्य	স্থ্য
क्त्र्य	কত্র্য
र्द्ध्व	র্দ্ধ্ব
म्र्य	ম্র্য
क्ष्ण	ক্ষণ
क्ष्म	ক্ষ্ম
क्ष्य	ক্ষ্য
क्ष्व	ক্ষ্ব

श्च्य	শচ্য
ष्प्र	ষপ্র
ष्ट्र	ষ্ট্র
ष्ठ्यू	ষ্ঠ্যূ
मु	ম্ব (হ্ম)
हु	হ্ন (হ্)
ड़	ড়
ड़ि	ড়ি
ड़ी	ড়ী
ड़ै	ড়ৈ
ढ़	ঢ়
ढ़ि	ঢ়ি
ढ़ी	ঢ়ী
ढ़ै	ঢ়ৈ
कॉ	ক◌ॉ
डॉ	ড◌ॉ
ऋ	ঋ
ॠ	ৠ
ऌ	ঌ
ॡ	ৡ
क़	ক়
ख़	খ়

ग़	ग़
ज़	ज़
फ़	फ़

Conjuncts	
द + halant + द द्द द + halant + ध द्ध	দ + halant + দ দ্দ দ + halant + ধ দ্ধ
द + halant + व द्व	দ + halant + র দ্র
द + halant + म द्म	দ + halant + ম দ্ম
द + halant + य द्य	দ + halant + য

	𑒛𑓂𑒨
द + halant + ब द्ब	𑒠 + hal ant + 𑒥 𑒠𑓂𑒥
द + halant + न द्न	𑒠 + hal ant + 𑒢 𑒠𑓂𑒢
द + halant + ग द्ग	𑒠 + hal ant + 𑒑 𑒠𑓂𑒑
द + halant + घ द्घ	𑒠 + hal ant + 𑒒 𑒠𑓂𑒒
ह + halant + म ह्म	𑒯 + hal ant + 𑒧 𑒯𑓂𑒧
ह + halant + ल ह्ल	𑒯 + hal ant + 𑒝 𑒯𑓂𑒝
ह + halant + व ह्व	𑒯 + hal ant + 𑒩 𑒯𑓂𑒩
ह + halant + न ह्न	𑒯 + hal ant + 𑒢 𑒯𑓂𑒢

ह + halant + य ह्य	হ + hal ant + য হ্য
ष + halant + ट ष्ट	ষ + hal ant + ট ষ্ট
ष + halant + ठ ष्ठ	ষ + hal ant + ঠ ষ্ঠ
त + halant + त त्त	ত + hal ant + ত ত্ত
क + halant + त क्त	ক + hal ant + ত ক্ত
श + halant + च श्च	শ + hal ant + চ শ্চ
श + halant + व श्व	শ + hal ant + র শ্র
श + halant + र श्र	শ + hal ant + ব শ্ব

ऽ (*avagraha*)	ঽ (*avagraha*)
ॐ	ওঁ

Punctuation/ Quotation Marks:
The English symbols [ ] { } ( ) - + * / = । ; : . , " ? ! % \ ~ _ ` '

translate into the same symbols Marks.

PRACTISE AGAIN AND AGAIN:

Vowel :

Devanagari followed by MithilakShara:-

अ , आ , इ , ई , उ , ऊ , ऋ , ॠ , ऌ , ॡ , ए , ऐ , ओ , औ

অ , আ , ই , ঈ , উ , ঊ , ঋ , ৠ , ঌ , ৡ , এ , ঐ , ও , ঔ

Consonants: Devanagari followed by MithilakShara:-

क , ख , ग , घ , ङ

ক , খ , গ , ঘ , ঙ



च , छ, ज, झ, ञ

𑒔 , 𑒕, 𑒖, 𑒗, 𑒘

ट , ठ, ड, ढ, ण

𑒙 , 𑒚, 𑒛, 𑒜, 𑒝

त , थ, द, ध , न

𑒞 , 𑒟, 𑒠, 𑒡 , 𑒢

प , फ , ब , भ , म

𑒣 , 𑒤 , 𑒥 , 𑒦 , 𑒧

य , र, ल , व , श , ष , स , ह

𑒨 , 𑒩, 𑒪 , 𑒫 , 𑒬 , 𑒭 , 𑒮 , 𑒯

क का कि की कु कू कृ कॄ क्लृ क्लॄ कॅ के कॆ कै



कॉ को कौ कौ कंकः

ক কা কি কী ক্ব কূ ঞ্চ ক◌ৃ ক্ল ক্লৃ ক◌ঁ কে ক◌ৌ কৈ

ক◌া কো ক◌ৌ কৌ কং কঃ

◌॒ *(anudatta)*

◌॑ *(udatta)*

◌॓ *(swarita)*

ँ (chandrabindu)

ं (anusvara)

ः (visarga)

ঽ (avagraha) ॐ (aum)

শ্রী (shree) ◌় (nukta)

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः अँ आँ ऋ ॠ ॡ

ष स ह क्ष ज्ञड़

অ আ ই ঈ উ ঊ এ ঐ ও ঔ অং অঃ অঁ আঁ ঋ, ৠ, ঌ, ৡ

ষ স হ ক্ষ জ্ঞ ড◌়

म् म मा मि मी मु मू मे मै मो मौ मं मः म्र त्म र्म मॅ

मॅ मँ माँ मृ मॄ मॢ मॣ म॑ म॒ म॓ म॔ म़
ळ

ম্ ম মা মি মী ম্ব(ম্ল) মৃ মে মৈ মো মৌ মং মঃ ম্র ক্ম র্ম
মॅ মॉ মঁ মাঁ মৃ মॄ মॢ মॣ ম॑ ম॒ ম॓ ম॔ ম়
ळ

(udaatta): ॒ (anudaatta): ॓ (grave): ॔
(accute): ़ (nukta) ॐ : श्री
ঋ২ : ~ (avagraha) ॰ : (abreviation)
। : (ardhacharana,khada danda)
॥ : (poornacharan)
১২৩৪৫৬৭৮৯০ 1234567890

REVISE:-

स्वर

अः अ । आ । इ । ई । उ । ऊ । ए । ऐ ।

ओ । औ । अं । अः । ऋ । ॠ । ऌ । ॡ ।

स्वर

অঃ অ । আ । ই । ঈ । উ । ঊ । এ । ঐ ।
ও । ঔ । অং । অঃ । ঋ । ৠ । ঌ । ৡ

व्यंजन

ঝ্যংজন

क: क । का । कि । की । कु । कू । के ।

कै । को । कौ । कं । कः

ক: ক । কা । কি । কী । কু । কূ । কে ।
কৈ । কো । কৌ । কং । কঃ

ख: ख । खा । खि । खी । खु । खू । खे ।

खै । खो । खौ । खं । खः

খ: খ । খা । খি । খী । খু । খূ । খে ।
খৈ । খো । খৌ । খং । খঃ

ग: ग । गा । गि । गी । गु । गू । गे । गै ।

गो । गौ । गं । गः

গ: গ । গা । গি । গী । গু । গূ । গে । গৈ
। গো । গৌ । গং । গঃ

घ: घ । घा । घि । घी । घु । घू । घे । घै ।

घो । घौ । घं । घः

ঘ: ঘ । ঘা । ঘি । ঘী । ঘু । ঘূ । ঘে । ঘৈ
। ঘো । ঘৌ । ঘং । ঘঃ

ङ: ङ । ङा । ङि । ङी । ङु । ङू । ङे । ङै ।

ङो। ङौ। ङं। ङः

𑒢: 𑒢 । 𑒢𑒰 । 𑒢𑒱 । 𑒢𑒲 । 𑒢𑒳 । 𑒢𑒴 | 𑒢𑒹 | 𑒢𑒺 | 𑒢𑒼 | 𑒢𑒾 | 𑒢𑓀 | 𑒢𑓁

च: च । चा । चि । ची । चु । चू। चे। चै।

चो। चौ। चं। चः

𑒔: 𑒔 । 𑒔𑒰 । 𑒔𑒱 । 𑒔𑒲 । 𑒔𑒳 । 𑒔𑒴 | 𑒔𑒹 | 𑒔𑒺 | 𑒔𑒼 | 𑒔𑒾 | 𑒔𑓀 | 𑒔𑓁

छ: छ । छा । छि । छी । छु । छू। छे। छै।

छो। छौ। छं। छः

𑒕: 𑒕 । 𑒕𑒰 । 𑒕𑒱 । 𑒕𑒲 । 𑒕𑒳 । 𑒕𑒴 | 𑒕𑒹 | 𑒕𑒺 | 𑒕𑒼 | 𑒕𑒾 | 𑒕𑓀 | 𑒕𑓁

ज: ज । जा । जि । जी । जु । जू। जे। जै।

जो। जौ। जं। जः

𑒖: 𑒖 । 𑒖𑒰 । 𑒖𑒱 । 𑒖𑒲 । 𑒖𑒳 । 𑒖𑒴 | 𑒖𑒹 | 𑒖𑒺 | 𑒖𑒼 | 𑒖𑒾 | 𑒖𑓀 | 𑒖𑓁

झ: झ । झा । झि । झी । झु । झू। झे।

झै। झो। झौ। झं। झः

𑒗: 𑒗 । 𑒗𑒰 । 𑒗𑒱 । 𑒗𑒲 । 𑒗𑒳 । 𑒗𑒴 | 𑒗𑒹 | 𑒗𑒺 | 𑒗𑒼 | 𑒗𑒾 | 𑒗𑓀 | 𑒗𑓁

ञ: ञ । ञा । ञि । ञी । ञु । ञू। ञे।

ञै। ञो। ञौ। ञं। ञः

𑒘: 𑒘 । 𑒘𑒰 । 𑒘𑒱 । 𑒘𑒲 । 𑒘𑒳 । 𑒘𑒴 | 𑒘𑒹 |
𑒘𑒺 | 𑒘𑒼 | 𑒘𑒾 | 𑒘𑓀 | 𑒘𑓁

ट: ट । टा । टि । टी । टु । टू। टे। टै।

टो। टौ। टं। टः

𑒙: 𑒙 । 𑒙𑒰 । 𑒙𑒱 । 𑒙𑒲 । 𑒙𑒳 । 𑒙𑒴 | 𑒙𑒹 | 𑒙𑒺
| 𑒙𑒼 | 𑒙𑒾 | 𑒙𑓀 | 𑒙𑓁

ठ: ठ । ठा । ठि । ठी । ठु । ठू। ठे। ठै।

ठो। ठौ। ठं। ठः

𑒚: 𑒚 । 𑒚𑒰 । 𑒚𑒱 । 𑒚𑒲 । 𑒚𑒳 । 𑒚𑒴 | 𑒚𑒹 | 𑒚𑒺
| 𑒚𑒼 | 𑒚𑒾 | 𑒚𑓀 | 𑒚𑓁

ड: ड । डा । डि । डी । डु । डू। डे। डै।

डो। डौ। डं। डः

𑒛: 𑒛 । 𑒛𑒰 । 𑒛𑒱 । 𑒛𑒲 । 𑒛𑒳 । 𑒛𑒴 | 𑒛𑒹 | 𑒛𑒺
| 𑒛𑒼 | 𑒛𑒾 | 𑒛𑓀 | 𑒛𑓁

ढ: ढ । ढा । ढि । ढी । ढु । ढू। ढे। ढै।

ढो। ढौ। ढं। ढः

𑒜: 𑒜 । 𑒜𑒰 । 𑒜𑒱 । 𑒜𑒲 । 𑒜𑒳 । 𑒜𑒴 | 𑒜𑒹 | 𑒜𑒺
| 𑒜𑒼 | 𑒜𑒾 | 𑒜𑓀 | 𑒜𑓁

ण: ण । णा । णि । णी । णु । णू। णे। णै।

णो। णौ। णं। णः

ণ: ণ । ণা । ণি । ণী । ণু । ণূ | ণে | ণৈ | ণো | ণৌ | ণং | ণঃ

तः त । ता । ति । ती । तु । तू। ते।

तै। तो। तौ। तं। तः

ত: ত । তা । তি । তী । তু । তূ | তে | তৈ | তো | তৌ | তং | তঃ

थः थ । था । थि । थी । थु । थू। थे। थै।

थो। थौ। थं। थः

থ: থ । থা । থি । থী । থু । থূ | থে | থৈ | থো | থৌ | থং | থঃ

दः द । दा । दि । दी । दु । दू। दे। दै।

दो। दौ। दं। दः

দ: দ । দা । দি । দী । দু । দূ | দে | দৈ | দো | দৌ | দং | দঃ

धः ध । धा । धि । धी । धु । धू। धे। धै।

धो। धौ। धं। धः

ধ: ধ । ধা । ধি । ধী । ধু । ধূ | ধে | ধৈ | ধো | ধৌ | ধং | ধঃ

नः न । ना । नि । नी । नु । नू। ने। नै।

नो। नौ। नं। नः

ন: ন । না । নি । নী । নু । নূ | নে | নৈ |
নো | নৌ | নং | নঃ

प: **प । पा । पि । पी । पु । पू । पे । पै ।**
पो । पौ । पं । पः

প: প । পা । পি । পী । পু । পূ | পে | পৈ
| পো | পৌ | পং | পঃ

फ: **फ । फा । फि । फी । फु । फू । फे ।**
फै । फो । फौ । फं । फः

ফ: ফ । ফা । ফি । ফী । ফু । ফূ | ফে |
ফৈ | ফো | ফৌ | ফং | ফঃ

ब: **ब । बा । बि । बी । बु । बू । बे । बै ।**
बो । बौ । बं । बः

র̆: র̆ । র̆া । র̆ি । র̆ী । র̆ু । র̆ূ | র̆ে | র̆ৈ
| র̆ো | র̆ৌ | র̆ং | র̆ঃ

भ: **भ । भा । भि । भी । भु । भू । भे ।**
भै । भो । भौ । भं । भः

ভ: ভ । ভা । ভি । ভী । ভু । ভূ | ভে |
ভৈ | ভো | ভৌ | ভং | ভঃ

म: **म । मा । मि । मी । मु । मू । मे । मै ।**
मो । मौ । मं । मः



ম: ম । মা । মি । মী । ম্ব(ম্)। মূ | মে |
মৈ | মো | মৌ | মং | মঃ

य: य । या । यि । यी । यु । यू। ये। यै।

यो। यौ। यं। यः

য: য । যা । যি । যী । যু । যূ | যে | যৈ
| যো | যৌ | যং | যঃ

र: र । रा । रि । री । रु । रू। रे। रै।

रो। रौ। रं। रः

ব: ব । বা । বি । বী । বু । বূ | বে | বৈ
| বো | বৌ | বং | বঃ

ल: ल । ला । लि । ली । लु । लू। ले। लै।

लो। लौ। लं। लः

ন: ন । না । নি । নী । নু । নূ | নে | নৈ
| নো | নৌ | নং | নঃ

व: व । वा । वि । वी । वु । वू। वे। वै।

वो। वौ। वं। वः

র: র । রা । রি । রী । রু । রূ | রে | রৈ |
রো | রৌ | রং | রঃ

स: स । सा । सि । सी । सु । सू। से।

सै। सो। सौ। सं। सः

𑒮: 𑒮 । 𑒮𑒰 । 𑒮𑒱 । 𑒮𑒲 । 𑒮𑒳 । 𑒮𑒴 | 𑒮𑒹 | 𑒮𑒻
| 𑒮𑒼 | 𑒮𑒾 | 𑒮𑓀 | 𑒮𑓁

ष: ष । षा । षि । षी । षु । षू । षे।

षै। षो। षौ। षं। षः

𑒭: 𑒭 । 𑒭𑒰 । 𑒭𑒱 । 𑒭𑒲 । 𑒭𑒳 । 𑒭𑒴 | 𑒭𑒹 | 𑒭𑒻
| 𑒭𑒼 | 𑒭𑒾 | 𑒭𑓀 | 𑒭𑓁

श: श । शा । शि । शी । शु । शू । शे। शै।

शो। शौ। शं। शः

𑒬: 𑒬 । 𑒬𑒰 । 𑒬𑒱 । 𑒬𑒲 । 𑒬𑒳 । 𑒬𑒴 | 𑒬𑒹 | 𑒬𑒻
| 𑒬𑒼 | 𑒬𑒾 | 𑒬𑓀 | 𑒬𑓁

ह: ह । हा । हि । ही । हु । हू । हे। है।

हो। हौ। हं। हः

𑒯: 𑒯 । 𑒯𑒰 । 𑒯𑒱 । 𑒯𑒲 । 𑒯𑒳(𑒯𑓂) । 𑒯𑒴 | 𑒯𑒹 |
𑒯𑒻 | 𑒯𑒼 | 𑒯𑒾 | 𑒯𑓀 | 𑒯𑓁

क्ष: क्ष । क्षा । क्षि । क्षी । क्षु । क्षू । क्षे।

क्षै। क्षो। क्षौ। क्षं। क्षः

𑒏𑓂𑒭: 𑒏𑓂𑒭 । 𑒏𑓂𑒭𑒰 । 𑒏𑓂𑒭𑒱 । 𑒏𑓂𑒭𑒲 । 𑒏𑓂𑒭𑒳 । 𑒏𑓂𑒭𑒴 | 𑒏𑓂𑒭𑒹 |
𑒏𑓂𑒭𑒻 | 𑒏𑓂𑒭𑒼 | 𑒏𑓂𑒭𑒾 | 𑒏𑓂𑒭𑓀 | 𑒏𑓂𑒭𑓁

त्र: त्र । त्रा । त्रि । त्री । त्रु । त्रू । त्रे। त्रै।

त्रो | त्रौ | त्रं | त्रः

ত্র: ত্র । ত্রা । ত্রি । ত্রী । ত্রু । ত্রূ | ত্রে | ত্রৈ
ত্রো| ত্রৌ |ত্রং | ত্রঃ

ज्ञः ज्ञ । ज्ञा । ज्ञि । ज्ञी । ज्ञु । ज्ञू | ज्ञे | ज्ञै | ज्ञो | ज्ञौ | ज्ञं | ज्ञः

জ্ঞ: জ্ঞ । জ্ঞা । জ্ঞি । জ্ঞী । জ্ঞু । জ্ঞূ | জ্ঞে

| জ্ঞৈ | জ্ঞো | জ্ঞৌ | জ্ঞং | জ্ঞঃ

संख्य ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
९

সাংখ্য
০ । ১ । ২ । ৩ । ৪ । ৫ । ৬ । ৭ | ৮ |
৯

क का कि की कु कू कृ कॄ कॢ कॣ कॅ **के के कै**
कॉ को कौ कौ कं कः

ক কা কি কী কু কূ কৃ কৄ কৢ কৣ কॅ কে কॆ কৈ
কॉ কো কॊ কৌ কং কঃ

<u>সিদ্ধিরস্তু</u>

Learn Braille through Mithilakshara




Videha
e-Learning
Gajendra Thakur



Learn Braille through Mithilakshara

GAJENDRA THAKUR

श्रुति प्रकाशन

दिल्ली



Ist edition 2009 of **Learn Braille through Mithilakshara**

author Gajendra Thakur

published by SHRUTI PUBLICATION
21/8, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi-110008
Tel.: (011) 25889656-58 Fax: 011-25889657
ISBN : 978-93-80538-56-3

Price: Rs. 5/- (INR)

SHRUTI PUBLICATION
Website: http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Designed by: Prity Thakur

Printed & Typeset at: Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor :
M/S AJAY ARTS
4393/4-A, Ist Floor, Ansari Road,
Darya Ganj, New Delhi-110002
(O) 011-23288341, 9968170107


Videha
e-Learning
Gajendra Thakur

Devanagari, Mithilakshara and Braille

देवनागरी, मिथिलाक्षर आ ब्रेल लिपि

দেরনাগরী, মিথিনাক্ষর আ ব্রেন নিপি

फ्रांसक लुइस ब्रेल -अठारह सए नौ ई. मे जन्म आ अठारह सए बावन ई.मे मृत्यु- जे अपने आन्हर छलाह पन्द्रह बर्खक अवस्थामे ब्रेल लिपिक आविष्कार आँखिसँ विहीन लोकक लेल कएने रहथि। एहि लिपिमे कागजपर विशेष प्रिंटरसँ उठल-उठल बिन्दुक माध्यमसँ -जकरा हाथक स्पर्शसँ अनुभव कएल जा सकए- भाषाक संप्रेषण होइत अछि। एकरा दुनू हाथक स्पर्शसँ पढ़ल जाइत अछि। दहिना हाथ संदेशकेँ रूपान्तरित कए संप्रेषित करैत अछि आ वाम हाथ अगिला पंक्तिक प्रारम्भक अनुभव करैत अछि। एहि लिपिकेँ सामान्यतः डेढ़ सए शब्द प्रति मिनटक गतिसँ पढ़ल जा सकैत अछि जे आँखि द्वारा पढ़ल जाएबला सामान्य शब्द संख्या तीन सए शब्द प्रति मिनटक अदहा अछि।

एहि लिपिक आधारकेँ सेल कहल जाइत अछि। एकटा सेलक निर्माण छह टा बिन्दुक संयोजनसँ होइत अछि। एहिसँ तिरसठि प्रकारक विभिन्न वर्णक अक्षर-संख्या आ विराम-अर्द्धविराम आदि चेन्ह- निर्माण होइत अछि।

ফ্রাংসক নুইস ব্রেন -অঠারহ সএ নৌ ই. মে জন্ম আ অঠারহ সএ বারন ই.মে মৃত্যু- জে অপনে আন্হর ছনাহ পন্দ্রহ বর্খক অরস্থামে ব্রেন নিপিক আরিষ্কার আঁখিসঁ রিহীন নোকক নেন কএনে রহথি। এহি নিপিমে কাগজপর রিশেষ প্রিংটরসঁ উঠন-উঠন রিন্দুক মাধ্যমসঁ -জকরা হাথক স্পর্শসঁ অনুভর কএন জা সকএ- ভাষাক সংপ্রেষণ হোইত অছি। একরা দুনূ হাথক স্পর্শসঁ পঢ়ন জাইত অছি। দহিনা হাথ সংদেশকেঁ রূপান্তরিত কএ সংপ্রেষিত করৈত অছি আ রাম হাথ অগিনা পংক্তিক প্রারম্ভক অনুভর করৈত অছি। এহি নিপিকেঁ সামান্যতঃ ডেঢ় সএ শব্দ প্রতি মিনটক গতিসঁ পঢ়ন জা সকৈত অছি জে আঁখি দ্বারা পঢ়ন জাএরনা সামান্য শব্দ সংখ্যা তীন সএ শব্দ প্রতি মিনটক অদহা অছি।

এহি নিপিক আধারকেঁ সেন কহন জাইত অছি। একটা সেনক নির্মাণ ছহ টা রিন্দুক সংযোজনসঁ হোইত অছি। এহিসঁ তিরসঠি প্রকারক রিভিন্ন রর্ণক -অক্ষর-সংখ্যা আ রিরাম-অর্দ্ধরিরাম আদি চেন্হ- নির্মাণ হোইত অছি।

[illegible]

Devanagari	MithilakShara	Braille
'अ','आ', 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ'	'অ','আ', 'ই', 'ঈ', 'উ', 'ঊ'	[illegible]
'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ', 'ऋ'	'এ', 'ঐ', 'ও', 'ঔ', 'ঋ'	[illegible]
one byte nukta varnas "क़","ख़","ग़","ज़", "ड़","ढ़","फ़","य़"	one-byte nukta varnas "ক়","খ়","গ়","জ়", "ড়","ঢ়","ফ়","য়"	one-byte nukta varnas [illegible]
two-byte nukta varnas "क़", "ख़", "ग़", "ज़", "फ़"	two-byte nukta varnas "ক়", "খ়", "গ়", "জ়", "ফ়"	two-byte nukta varnas [illegible]
'क', 'ख', 'ग', 'घ', 'ङ'	'ক', 'খ', 'গ', 'ঘ', 'ঙ'	[illegible]
'च', 'छ', 'ज', 'झ', 'ञ'	'চ', 'ছ', 'জ', 'ঝ', 'ঞ'	[illegible]
'ट', 'ठ', 'ड़', 'ड', 'ढ़', 'ढ', 'ण'	'ট', 'ঠ', 'ড়', 'ড', 'ঢ়', 'ঢ', 'ণ'	[illegible]
'त', 'थ', 'द', 'ध', 'न'	'ত', 'থ', 'দ', 'ধ', 'ন'	[illegible]
'प', 'फ', 'ब', 'भ', 'म'	'প', 'ফ', 'ব', 'ভ', 'ম'	[illegible]

'य', 'र', 'ल', 'ळ', 'व'	'𑒨', '𑒫', '𑒪', 'ळ', '𑒩'	'⠽', '⠗', '⠇', '⠸', '⠧'
'श', 'ष', 'स', 'ह'	'𑒬', '𑒭', '𑒮', '𑒯'	'⠩', '⠯', '⠎', '⠓'
'क्ष', 'ज्ञ'	'𑒏𑓂𑒭', '𑒖𑓂𑒘'	'⠟', '⠱'
'ऽ', '्', 'ा', 'ॉ', 'ि', 'ी', 'ु', 'ू', 'े', 'ै', 'ो', 'ौ', 'ं', 'ँ', 'ृ', 'ः', '.', '।'	'𑓄', '𑓂', '𑒰', 'ॉ', '𑒱', '𑒲', '𑒳', '𑒴', '𑒹', '𑒻', '𑒼', '𑒾', '𑓀', '𑒿', '𑒵', '𑓁', '.', '।'	'⠂', '⠈', '⠜', '⠻', '⠊', '⠔', '⠥', '⠳', '⠑', '⠌', '⠕', '⠪', '⠰', '⠄', '⠐⠗', '⠠'
० १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९	𑓐 𑓑 𑓒 𑓓 𑓔 𑓕 𑓖 𑓗 𑓘 𑓙	0 1 2 3 4 5 6 7 8 9

Learn International Phonetic Alphabet through Mithilakshara




Videha
e-Learning
Gajendra Thakur

Learn International Phonetic Alphabet through Mithilakshara



GAJENDRA THAKUR

श्रुति प्रकाशन

दिल्ली



Ist edition 2009 of **Learn International Phonetic Alphabet through Mithilakshara** author Gajendra Thakur

published by SHRUTI PUBLICATION
21/8, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi-110008
Tel.: (011) 25889656-58 Fax: 011-25889657
ISBN : 978-93-80538-57-0

Price: Rs. 5/- (INR)

SHRUTI PUBLICATION
Website: http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Designed by: Prity Thakur

Printed & Typeset at: Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor :
M/S AJAY ARTS
4393/4-A, Ist Floor, Ansari Road,
Darya Ganj, New Delhi-110002
(O) 011-23288341, 9968170107


Videha
e-Learning
Gajendra Thakur

Devanagari, Mithilakshara and International Phonetic Alphabet

Devanagari	Mithilakshara	International Phonetic Alphabet
अ	অ	ə
आ	আ	ɑ ː
इ	ই	i
ई	ঈ	i ː
उ	উ	u
ऊ	ঊ	u ː
ए	এ	e ː
ऐ	ঐ	a ː i
ओ	ও	o ː
औ	ঔ	a ː u
ऋ	ঋ	ɹ̩
ॠ	ৠ	ɹ̩ ː
ऌ	ঌ	l̩
ॡ	ৡ	l̩ ː
अं	অং	^{n}
अः	অঃ	h
क	ক	kə
क़	ক়	qə
ख	খ	k ə
ख़	খ়	xə
ग	গ	gə
ग़	গ়	ɣə
घ	ঘ	g ə
ङ	ঙ	ŋə
च	চ	cə
छ	ছ	c ə
ज	জ	ɟə
ज़	জ়	zə
झ	ঝ	ɟ ə

ञ	ঞ	ɲə
ट	ট	ʈə
ठ	ঠ	ʈ ɵ
ड	ড়	ɖə
ड़	ড়	ɽə
ढ	ঢ	ɖ ɵ
ढ़	ঢ়	ɽ ɵ
ण	ণ	ɳə
त	ত	t̪ə
थ	থ	t̪ ə
द	দ	d̪ə
ध	ধ	d̪ ə
न	ন	nə
प	প	pə
फ	ফ	p ə
फ़	ফ়	fə
ब	ব	bə
भ	ভ	b ə
म	ম	mə
य	য	jə
र	ব	rə
ल	ল	lə
व	ৱ	ʋə
श	শ	ɕə
ष	ষ	ʂə
स	স	sə
ह	হ	ɦə
क्ष	ক্ষ	kʃə
त्र	ত্র	t̪ɾə
ज्ञ	জ্ঞ	gjə
श्र	শ্র	ɕɾə
्	্	◌
ा	া	ɑ ː

𑒱	𑒱	i
𑒲	𑒲	iː
𑒳	𑒳	u
𑒴	𑒴	uː
𑒵	𑒵	ɹ
𑒹	𑒹	eː
𑒻	𑒻	aːi
𑒼	𑒼	oː
𑒾	𑒾	aːu
𑓀	𑓀	n
𑒿	𑒿	n
𑓀	𑓀	n
𑒿	𑒿	n
𑓁	𑓁	h